Hygiene

in.

Bengali

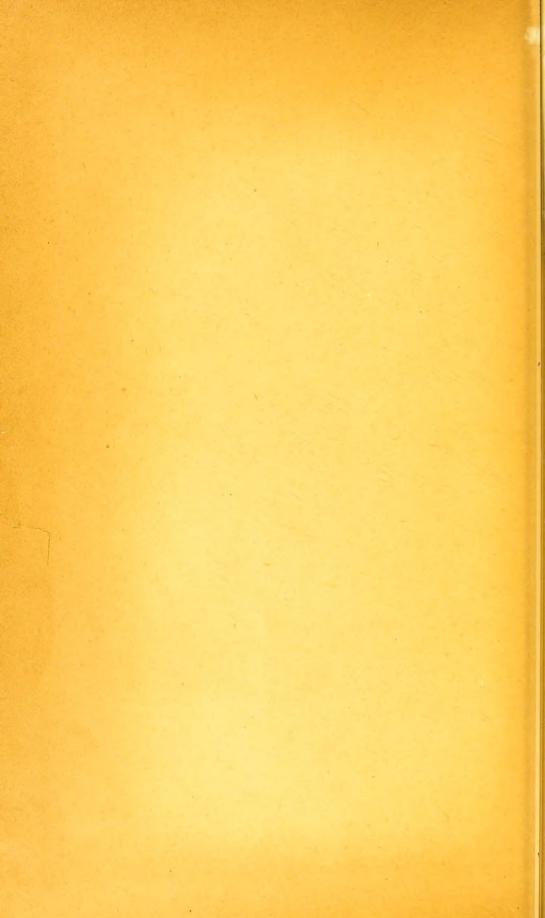


#### LIBRARY

Date 11th December 1933

Class Mark 6.50 Accession No. 20547





# स्रास्रा-विकान।

কলিকাতা মেডিকেল স্কুলের হাইজীন-অধ্যাপক, কলিকাতা মিউনিসিপালিটীর মেডিকেল ইন্ম্পেক্টর, "সিটি-জেন্স্ স্থানিটারী গাইড্," "মিউনিসি-পাল দর্পণ" প্রভৃতির প্রণেতা

# শ্রীস্থন্দরীমোহন দাস এম্, বি,

প্রণীত।

#### HYGIENE

IN

#### BENGALI.

BY

#### SUNDARI MOHAN DAS, M. B.,

Lecturer in Hygiene, Calcutta Medical School; Medical Inspector, Calcutta Municipality; author of "Citizen's Sanitary Guide," "Municipal Darpan," &c. &c.

Right of reproduction and translation reserved.

-00:0:00-

PRICE Rs. 2 ONLY.

20547

# PRINTED BY A. C. BASU, AT THE MONICA PRESS, 51/2 SUKBA'S STREET, CALCUTTA.

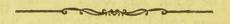
AND

Published by the Sanskrit Press Depository 20 Cornwalli's Street, Calcutta. Tresented 6- De H. J. Simpson M.D. MACO. Editor, Indian Merical Gaze

#### PREFACE, les seconds

THE want of a concise yet sufficiently complete hand-book on Hygiene in Bengali, has been long felt. This want is to a great extent removed by the publication of Svásthya-Bijnán by Dr. Das. In its pages the author has interwoven facts and figures compiled from the works of the standard authorities on the subject, with his personal experience in both urban and rural districts in Bengal. The subject matter has been very scientifically arranged and brought up to date. The book has been divided into two parts: Individual Hygiene and Public Hygiene. In the latter, the author has gone into the science of bacteriology with special reference to its practical application for the prevention of Cholera, Small-pox and other preventible diseases, and has treated the subject of vaccination at considerable length, refuting arguments generally advanced to detract from its value. The book has been written in plain Bengali, while the technical terms, instead of being translated, have been merely transliterated and placed side by side in most cases with the corresponding terms in English types, so that readers may be able to familiarise themselves with the current English terms, instead of committing to memory Bengali or Sanskrit words which are usually coined differently by different authors. The subjects of the work have been so arranged as to enable medical students intending to go up for their examinations, to find out at a glance the points that are most important. The portion of the book containing rules for the Inspection of Food, Analysis of Air, Water and Food, and Vaccinal Operation, will be very useful as a guide to the Medical Officers of Local Boards and others who may be entrusted with the charge of village sanitation. The few diagrams which illustrate the book have been very neatly executed; those of *Comma bacilli* in connection with the spread of Cholera through the medium of water, and of the apparatus for separating the volatile acids of ghee being of peculiar interest to every Bengali reader. The book will be very useful to the general public as well as to the student and practitioner of the Medical Science.

May 31, R. SEN, MB., L.F.P.S., L.S.A., L.M., Offg. Health Officer, Calcutta Municipality.



shit other preventible diseases, and has
to of viscolnation at considerable length.

of being translated, have been

naidy on with the current 15og

intending to go up for their a glance the points that one

### সূচিপত।

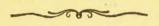
উপক্রমণিকা

10-110

8

প্রথম ভাগ

## স্বাস্থ্য বিজ্ঞান।



#### প্রথম অধ্যায়।

জল ।

জলের প্রয়োজনীয়তা ...
প্রথম পরিচেছদ।
ইম্পিওরিটা।

বিশুদ্ধ জলের সাধারণ লক্ষ	50	***		
ইম্পিওরিটি, সম্পেণ্ডেড্,		***		
		ইনর্গানিক,		***
	Pla	অৰ্গানিক,		***
		_	(কৃমি)	***
— ডিসল্ভ্ড্,		***		***
_	197.4	গেযাস্,		***
	* - 4	অৰ্গানিক		***
_		ইনর্গানিক,		***
হাড'্নেস্,		***		*1.1
_		অস্থায়ী,		***
_		স্থায়ী,		

विषय ।			शृंश ।	
পেয় জল	***	***		6
অপেয় জল	***	***		9
উৎপত্তিস্থানজনিত ময়লা	***			9
স্রোত-মিশ্রিত ময়লা	***			ь
সঞ্যস্থানজনিত ময়লা	***			a
পুষ্ণরিণী-জল বিকৃতির কার	49			8
কূপ-জল বিকৃতির কারণ	***	***		۵
কুপের 'ভে ণেজ্ কোন্"				۵
চৌবাচ্চা-জল বিকৃতির কা	त्रव	4-200		30
জালা–জল বিকৃতির কারণ	0 + 0	0.01		50
কলসী-জল বিকৃতির কারণ	***	***		20
ভিস্তির জলের বিকৃতির ক	ারণ •••			20
পিপা ও গাড়ীর জলের বি	কৃতির কারণ			50
জলের নলের বিষাক্ততা	***   57		•	30
জল কষ্টজনিত রোগ	***		The same transfer	22
দুষিত জলজনিত রোগ	***	89		>>
Effects	ডিস্পেপ্শিয়া,	F	12	22
1 %-	ডায়েরিয়া,	13		22
-	<b>जि</b> ष्मि	111	or remarks as	25
9	ব্রক্ষিয়েল কেটার,	***	The state of the s	25
	ইউরিথা ইটিস্,	eri 0	-	25
d = 17	এক্সস্টোসিস্,	and few as	•	23
	कानिकिछेनाम्,			25
· —	গয়টার্,	***	The state of the s	25
9	<b>मि</b> नी वरत्रन्,			20
a -	ফুণ্টিয়ার অল্সার,		_	30
g —	প্যারেসাইটিক,	100000		20
	ধাতুবিষ জনিত,		·	28
a -	ম্যালেরিয়া,…			38
2 -	টাইফয়েড্ ফিভার,			30

विषग्र ।			शृष्ट्री।
_	কলেরা,	***	36
জল পরীক্ষা	0 0 0		52
-	কোয়ালিটেটিভ্,	a e e	۶۶
-	মাইক্রোদ্কোপিক্,	***	२४
_	বায়লজিকেল,		२इ
জল শোধন	0.00	0 4 6	२৫
ফিল্টার শোধন	<b>0</b> to 0	e • 4	೨೦
	দ্বিতীয় পরিয	कर्न ।	
	পরিমাণ।		
	7		
আবশুকীয় পরিমাণ	***	9 8 7	೦೦
	তৃতীয় পরিচে	छ्न ।	
জল আহরণের স্থান	8 * 4	•••	৩১
বৃষ্টির জল	978	0 = 0	৩১
निवेत कन	8 6 6	. • •	७२
বিলের জল	***		७२
খালের জল			৩২
প্রস্রবণের জল		a++	৩২
পুষ্করিণীর জল	0 1 6	d + 0	७२
কৃপের জল	9 1 0	d > 4	७२
আর্টিসিয়ান ওয়েল্	0 c e		७७
পরিক্ষত জল	411	0 + 0	७७
জল সঞ্য়ের আধার		0 + 0	98
জল বিতরণের পাত্র ও নল	1	6 + 4	96
কলিকাতা কলের জল	0 = 0	D 4 4	৩৪
	চতুর্থ পরিচে	ऋप ।	
	অজ্ঞাত স্থানে জল	गिट्ययन ।	
गर्देन हिस्टिय प्रत्यल		441	98

# দ্বিতীয় অধ্যায়।

#### বায়ু।

বিষয়।					পৃষ্ঠা।	
বায়ুর প্রয়োজনীয়তা				***		૭૯
विङक्ष वायूत উপानान	•	••		***	,	७६
	:1৫1%	ਹ ਅਤਿ	চেছদ।			
	44.	ห าเล	८०२५ ।			
	•	ইন্পিওরি	। ची			
ইম্পিওরিটা দেহে প্রবে	শর প্রণালী .	• •		***		७५
ইম্পিওরিটি	<b>6</b>	• •		***		৩৭
-	বাষ্পীয়, .	• •		***		७५
	কার্য্য বিশেষোৎ	পন্ন,		***		04
Serves	_	প্র	াাসজনিত,	411		97
_	_	पृश्	নজনিত,	***		৩১
_	-	ক্র	য়জ্জনিত,	0 4 0		8 •
	-	সম	াধিস্থান জনিত	,		83
	-	কা	রথানা জনিত,	,		83
		সহ	রজনিত,	***		85
<b>⊢</b>	- Committee	জ	াাভূমিজনিত,	***		83
		জা	হাজের থোল	গণিত,		s>
	_	খ	াজ	***		83
	দ্বিতী	ায় পরি	वेटच्छन।			
	দূ্ষিত	বায়্ সেব	নের ফল।			
কঠিন কণা জনিত রোগ				• • •		s <b>ર</b>
বাষ্পীয় পদার্থ জনিত রে	াপ .	• •		0 * *		80
কাৰ'ন ডায়ক্সাইড্ পয়	জনিং .	• •		***		৪৩
— মনক্সাইড্		• •		***		38

विषय ।			र्श ।
হাইড়োজেন্ মল্ফাইড্—		9 + 9	8 @
কার্বেটেড্ হাইড্রোজেন দেবনের	ফল্	0 + 0	8 &
য়ামোনিয়া দেবনের ফল		#10	8 @
সল্ফার ভায়ক্সাইড্ সেবনের ফল	0 + 0	010	38
হাইড্রোকোরিক বাস্পু দেবনের ফল		919	8¢
কাব'ন ভাইসল্ফাইড্ সেবনের ফল	***	0.0	8 @
নিখান প্রখান দূষিত বাষ্পা সেবনের	ফল	9 4 6	8 9
विकिश्नांनायत वांत्र् <b>मिवत्न</b> त कन	0 1 0	111	86
দহন-দূষিত বায়ু দেবনের ফল	0 + 0	***	89
নন্দানা ও চাপা পাইখানার গ্যাস ফে	বিনের ফল	0.10	89
মলজাত বাম্প সেবনের ফল		***	84
নমাধিভূমির বাম্প দেবনের ফল	***	806	86
পচা পশুদেহ জাত বাস্প দেবনের ফ	ল্ভ	414	86
ইষ্টকের পাঁজা ও চিম্নীর গ্যান্ দেব	दनत क्ल	***	86
জলাভূমির বাপ্প দেবনের ফল		***	88
তৃ	তীয় প	तिरष्ट्न।	
	বায়ু সং	क्षांनन ।	
বায়ুর বিশুদ্ধতার লক্ষণ	8.1.1	314	88
প্রয়োজনীয় বার্র পরিমাণ	* # #		Co
विङक्त वांग् गृद्द जानशत्न उपांश	* * *	***	¢ o
কিউবিক শেপুন্	***	(ii)	Co
ল্বের স্পেদ্	* 2.2	***	¢.
বারু সঞ্চালনের প্রাকৃতিক উপায়	4.1.1	***	¢2
जानां न	111	***	45
অভিট্লেট্	6.6.9	***	७२
<b>इन्</b> रविं	***	4 1 5	८२
ক্তিম বায় সঞ্চালন			4.0

# **ह**र्ज्य शतिर छन।

#### বায়ু শোধন।

বিষয়।			शृष्ट्रा ।
বায়ু শোধনের প্রাকৃতিক উপায়	***	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	2 9
তাপ	713	***	2 8
কঠিন বায়ু শোধক	0 1 7	437	6.8
তরল বায়ু শোধক	4 8 3		¢8
বাষ্পীয় বায়্,শোধক	***	•••	Q.C.
	পঞ্ম পরি	<b>र</b> ष्ट्रन ।	
	বায়ু পরী	क्।	
বায়ু সঞ্চালন পরীক্ষা	***	0 1 8	¢ 9
বায়্র বিভন্নতা পরীক্ষা	+ > >	0 + 1	৫৭
	তৃতীয় তা	ধ্যায়।	
	খাদ্য।		
খালোর প্রয়োজন	4 5 0	9 > 0	৬৽
	প্রথম পরি	इ.च.	
	খাদ্যের শ্রেণী	বিভাগ।	
প্রোটিড্	* * *	1+2	45
<b>কাটি</b>	***	***	53
কাবে'। হাইড্রেট্	***	047	७२
मण्डे	***	***	५२
	দ্বিতীয় পরি	रष्ट्रन ।	
;	থাদ্যের পরিমাণ	निर्दिभ ।	
नत्तिम् रहेम् जारशहे	***	* * 6	৬৩
রেস ট ডায়েট			68

विषय ।			शृष्ट्री ।
নাধারণ পরিশ্রমশীল বাক্তির আহ	ার	€ + 0	48
প্রক্সিমেট্ এলিমেণ্টের পরিমাণ,	দেহভারের পাউও	প্রতি,	७८
	১৫০ পাউও ভারি	ব্যক্তির উপযোগী,	৬৫
নাইট্রোজেনের পরিমাণ	***	***	৬৫
কার্বনের পরিমাণ	» • •	***	७०
	তৃতীয় পরি	: <b>छ्</b> न।	
*	াদ্যের গুণাগুণ	বিচার।	
প্রোটাডের ক্রিয়া	***		હહ
ফাট আহারের প্রয়োজনীয়তা	***	***	৬৭
হুগারের প্রয়োজনীয়তা	¢ # +	*1*	७५
অতিরিক্ত প্রোটীড্ আহারের কল		•••	७ १
সল্টের প্রয়োজনীয়তা	* 4 *	***	৬৭
আমিষ ও নিরানিব	111	***	रुप
	চতুর্থ পরি	ন্দ্ৰদ ।	
	পরিপাক ও র		
থানোর পাচাতা বিষয়ে তারতমা			
পরিপাকের উপযোগী এবস্থা	***	***	5 h
तकतन्त्र <b>डिप्क</b> र्छ <u>ः</u>	***	4.4.7	95
अताउन्त्र ७६५७	***	***	72
	পঞ্চম পরিচে	छ्र ।	
	খাদ্যের বিশেষ বি	वेवत्रण।	
खवान थवान थारतः अक्तिः नहें, अ	লিমেণ্টের পরিমাণ	***	92
,, ,, नाहेट्द्रांदिकन	ও কাবলের "	4 + +	90
ছ%	414	6.4.9	90
ছুদ্ধের ভেজাল	***	(1)	48
বিকৃত ভূপপানের ফল	-	₹ 4 €	4.2

বিষয়।			शृष्टी ।
হুগ্ধ ব্যবহারের নিয়ম	***	***	45
<b>স্</b> ত	***	4 + 4	44
সর তোলা হ্র্	£ 4 9	***	99
पि	*1*	***	99
ঘোল	***	***	49
ক্ষীর	***	•••	99
পনীর	***	***	99
ছানা	***	***	१४
অন	***	***	45
ময়দা	***	***	95
ময়দার ভেজাল	4 6 0	***	93
ভাল ময়দার লক্ষণ	***	***	95
চাপাতি	***	***	95
হাতুগড়া ক্রচী	* * *	***	৭১
न्हीं	***	111	92
পাঁওকটী	* # #	0.05	95
বিকিট	***	4 8 8	95
ভারমিস্লী	***	* * *	92
शूर्वन	***	* # 9	93
জনার ভুটা	4.00	* > *	Ve
বালি	413	* * *	bo
प्रीव	•••	***	と。
তৈল	***	110	ひろ
ডিস্ব	447	449	۶۹
ডিম্ব পরীক্ষা	***	(1)	62
মাংস	***	***	6)
মাংদ পরীকা	***	•••	63
মাংসাহারীর রোগ	***	•••	とう
কাঁকড়া ও চিংড়ী	***	* + *	७२
<b>ম</b> ৎস্থ	***	* * *	1.0

বিষয়।			शृष्ट्री।
নংস্থ পরীক্ষা	***		80
মৎস্যাহারীর রোগ	• • •	* * *	৮৩
क्रीव्	***	***	७७
হুগ†র	***	***	७५
তরকারী	***	***	ъ8
লবণ	***	***	<b>b</b> 8
ফল	***		¥8
ম্মালা	* * *	***	¥8
মুখ-ভন্ধি	***	***	<b>V</b> 8
তামূল	4.1.0	***	48
তামাক	***	0 8 0	ьe
তামাকপায়ীর রোগ	449	*1*	<b>₽</b> €
ষ্	র্ছ পরিচ্ছেদ।		
	পানীয়।		
জল ও সরবৎ	***	4++	৮৬
<b>ह</b> 1	***	* * *	৮৬
কাফি	***	***	৮৬
ককে	***	***	৮৬
মাদক	***	***	৮৬
হুরাপান সম্বন্ধে বৈজ্ঞানিক মত	***	***	৮৭
,, ,, ভাক্তার ফেরারের মত	•••	h * 0	४२
<b>य</b> हिएक न	***	***	ەھ
গাঁজা	***	0 + 0	ەھ
	थम পরিছেদ।		
অ	হার সংক্রাস্ত রোগ।		
ঘতি ভোজনের ফল	0.0	4 1 0	66
অতিরিক্ত প্রোমিড ভোলনের ফল	***	• • •	22

#### 110/0

विषश् ।			त्रृंधा ।
অতিরিক্ত ষ্টাচ' ও ফাটি্ভোজনের ফ	ল	0 6 6	2.5
অল্ল ভোলনের ফল	44*	6 * *	৯১
অকাল ভোজনের ফল		***	22
বিকৃত খাদ্য ভোজনের ফল	***	***	৯২
গাকশক্তিহীন অবস্থায় ভোজনের ফল	* * *	g 4 6	<b>क</b> २
ख	মফ্টম পরিনে	कृति ।	
আ'হার	ব সম্বন্ধে সাধা	त्रण निम्नम ।	
আহারের দাধারণ নিয়ম	***	616	৯২
74	হুৰ্থ অধ্য	ায়।	
	Z ' ''		
	<u> ভূ</u> गि।		
ভূমির গঠন		8 8 6	৯৪
<b>1</b> ⊘1	থম পরিচে	जिल्ह	
and and		211	
স্	ব্ সয়েল্ এয়	ার।	
সব্ দরেল্ এয়ারের ইম্পিওরিটী		•••	86
টেলুরিক এফু ভিয়া জনিত রোগ	•••	***	సక
সব্ সমেল্ ওয়াটার	e o o	0 4 6	20
ভূমির আর্দ্র কারণ	* * *		50
শুক ভূমি		e + 4	<b>સ્</b>
আদ্র' ভূমি		€ * 0	50
ইম্পামিরেব্ল্ সম্যেল্	•••	e » e	26
পার্মিরেব্ল্ সয়েল্		0 + 0	36
আর্দ্রতা নিবারণের উপায়	***	***	৯৬
আর্জভূমি জনিত রোগ	0.00	611	৯৬

#### 1120

#### তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

#### ভূমির গুণাগুণ বিচার।

বিষয়।			शृष्टी ।
ভূমির গঠন ও উচ্চতা	g = 6	•••	৯৭
্,, তৃণবৃক্ষাচ্ছন্নতা	• • •	<b>4 + P</b>	<b>カ</b> ピ
,, তাপ শোষণ শক্তি		***	<b>7</b> A C
" রিতেক্শন্ শক্তি	***	***	94

### পঞ্চম অধ্যায়।

#### বাদস্থান।

াসস্থানের প্রয়োজনীয়তা	0 0 0	010	55
বাদস্থানের প্রয়োজনীয় বিষয়	•••	6.9.6	66
ভূমির ওকতা ও ওজতা	3 9 0	0.00	66
বায়ু সঞ্চালন	***	0 9 0	200
ভালেকের ব্যবস্থা	0 1 0	0 4 8	202
জলের ব্যবস্থা	0 0 0	0.1.0	205
মল মৃত্তের পরিমাণ	8 1 9	0 1 0	205
মল মূত্র স্থানান্তর করণ	***	0 + 0	705
जनीय अंगानी या निक्रेड (प्रथंड	0 0 0	9 9 0	205
''নেপারেট নিন্টেন্		0.60	300
''ক্ষাইও্ নিন্টেম্"	0 2 0	0 4 9	>00
কলিকাতা ডেবুণের দোষ	***	111	300
ডু 1ই মেথড্	•••	0 1 0	2 . 8
<ul><li>(हे किश निम्हिं म्</li></ul>		9.11	200
জল বায়ুর বিশুদ্ধতা রক্ষণ		2.24	300
जावर्জन। मृतीकव्रव		010	206
প্রাদির মৃতদেহ দ্রীকরণ	* * *	0 + 0	20%
গুহের পরিকরণ	***	3 + 3	30%

# যষ্ঠ তাখ্যায়।

#### वागियाय ७ विखाम।

विषय ।				श्वी।
বাায়াদের প্রয়োজনীয়তা	***		***	>09
,	প্রথম	পরিচেছদ।		
	ব্যায়	ামের ফল।		
বাবিবের ফল, ফুসফুস্ সংক্রতি	***		***	304
— হাদয় ও ধননী	সংক্ৰান্ত		***	702
— চর্ম্ম সংক্রান্ত			***	200
— মাংসপেশী সংভ	লান্ <u>ত</u>		***	308
— স্বায়ুমণ্ডলী সংক্র	ন্ত		***	208
<del>-</del> পাক্যন্ত্ৰ সংক্ৰান্ত			***	১০৯
— অন্ত সংক্রান্ত	0.20		***	270
— কিড্নী সংক্রান্ত			• • •	220
<del></del> জননেন্দ্রিয় সংত	rান্ত		***	220
স্বাস্থ্যকর ব্যায়ামের চিরস্থায়ী ফল			***	220
प्रि	তীয়	পরিচ্ছেদ।		
	ব্যায়া	टमत निषम ।		
ব্যায়ামের নিয়ম, ফুসফুস্ সংক্রান্ত			0.4.5	220
<del></del> হাট' দংক্ৰান্ত			9 • •	222
— চর্ম্ম দংক্রান্ত				222
— সাংসপেশী সংক্রার	3		***	27.2
<del>-</del> আহার <b>সং</b> ক্রান্ত	211		***	222
Ş	হতীয়	পরিচেছদ।		
	ব্যায়ােহে	মর পরিমাণ।		
ফুটটন হিমাবে পরিশ্রম	8 1 4		***	222
ল্মণ	***		9.07	225

# ৮/° চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

#### বিশ্রাম ।

विषग्र।				शृष्टी।
বিশ্রামের প্রয়োজনীয়তা			***	275
নিস্তার কাল নির্দ্ধারণ	400			220
নিজার নিয়ম			•••	230
নিজাকর্ধণের উপায়			***	\$28
2	নপ্তম	অধ্যায়।		
	প্র	রচ্ছদ।		
পরিচ্ছদের উদ্দেশ্য			•••	27€
	প্রথম	পরিচেছদ।		
	বস্ত্রের	গুণাগুণ।		
উষ্ণত1	* # #		***	226
জল শোষকতা	*11		***	226
<b>সচ্ছিত্ৰতা</b>	6.0.0		• • •	336
গন্ধাকৰ্ষণ শক্তি	* ***		0.0	226
সংক্রামকরোগ-বীজ-আকর্ষণ শক্তি	***			226
দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।				
	পরিচ্ছদে	রে শুণাগুণ।		
ষ্টেদ্ পরিধানের ফল	* * *		***	229
বেণ্ট	***		* 4 0	559
মন্তক্ৰিরণ -			***	>>9
জুতা	* 4 *		***	>>9

#### noto

# অফ্টম অধ্যায়।

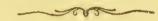
#### শিক্ষা।

विषय् ।			शृष्ट्री।
বিকৃত শিক্ষার ফল	0.00	***	556
শিক্ষার অনিয়মজনিত রোগ	4 2 4	***	558
দিবাভাগের সঙ্গে পাঠাভ্যাদের সম্বন		***	338
তিথির সঙ্গে মানসিক শক্তির সম্বন্ধ	***	***	558
ঋতু পরিবর্ত্তনের সঙ্গে মানসিক শক্তি	त मचक	080	555
শারীরিক বিকাশের সঙ্গে মানসিক বি	কাশের সম্বন্ধ	***	३२०
যৌবনের প্রারম্ভে অধ্যয়ন সম্বন্ধে সত	ৰ্কতা	4.5.0	১২৽
ঋতুকালে বালিকাদের বিদ্যালয় গমন	400 .	000	১২০
ন	বম অধ্যায়।		
,			
	ব্যবসায়।		
ব্যবসায় অনুসারে আয়ুর তালিকা	***,	220	ऽ२ऽ
অল্লায়ুর কারণ	***	***	ડરર
ধর্ম্মযাজকদের দীর্ঘায়ুর কারণ	* * 0	***	ऽ२०
উকীল ও ডাক্তারদের অলায়ুর কারণ	177	***	250
Ti di	শ্ম অধ্যায়।		
,			
·	সামাজিক রীতি।		
স্তিকাগার নির্মাণ	***	489	\$28
স্তিকাগারের বায়ু	err	***	320
গৰ্ভাবস্থায় যানাব্যোহণ	***	***	<b>ે</b> રહ
অকাল সহবাদের ফল	### ·	***	:20
পৌণ বিবাহের ফল	***	***	३२७
শব সৎকার প্রণালী	***	***	<b>३</b> २५
দাহের শ্রেষ্ঠতা	***	q & a	३२१

#### একাদশ অধ্যায়।

#### देनिक ठ्या।

विषय ।			शृष्ट्री।
গাতোখান	414	***	3 <b>2</b> V
মল মূত্ৰ তাাগ	¢ 1 ¢	•••	· 324
পরিচ্ছন্নতা	e a •	***	254
আহার	* * *	*11	259
ব্যায়াম ও বিশ্রাম	* 4 *	* 4 ?	252
মানসিক পরিশ্রম	4 0 0	***	> 00
<b>म</b> ःयम	***	***	> 0 0



#### দ্বিতীয় ভাগ।

## সাধারণ ফাস্থ্য বিজ্ঞান।



#### প্রথম অধ্যায়।

#### এপিডেমিক, এণ্ডেমিক ও এপিরুওটিক।

এপিডেনিক	0.1.0	6.69	2 02
এ:ওমিক	***	***	505
এপিঝু ওটি ক	***	***	203
প্রাচীন ভারতে এপিডেমিক	* * *	•••	> 0 >
প্রিভেণ্টিব্ল্ডিজিজ্	***	***	3:02

#### প্রথম পরিচ্ছেদ।

#### मार्टेकारवत किया ७ रेमिडेनिটि।

विषग्न ।			पृष्ठी ।
মাইক্রোব বা বাাক্টিরিয়া	***	***	५७२
রোগোৎপাদন প্রণালী	627	*15	200
<del></del> য়াf	'টডোট্ থিওরি	***	200
<u> </u>	গাদাইটোদিদ্	* 1 *	200
ইমিউনিটি, স্থাচারেল	***	***	১৩৩
<del>.                                    </del>	* * *	***	200
ইমিউনিটির কারণ	***	***	308
	দ্বিতীয় পরি	टन्ड्न।	
	মাই <b>কোবের</b>	धर्म्म ।	
মাইক্রোবের জাতি	***	*11	300
— আকার	***	***	३७६
<del>_</del> আবরণ	***	***	300
<del>–</del> গতি	•••	•••	300
— জনন প্রণালী	***	***	206
— শ্রেণী বিভাগ	***	***	১৩৬
— আহার	***	***	205
— বৰ্দ্ধন ও ধ্বংস	* 4 *	***	১৩৬
নন্-প্যাথজিনিক মাইক্রোবের	লিক্ষণ	***	১৩৭
প্যাথজিনিক ,,	23	***	१७८
ইন্কুবেশন পিরিয়ড্	•••	***	३७१
	তৃতীয় পরিব	. छ्रम ।	
	সংক্রামক রোগ	निवांत्रव।	
নোটিফিকেশন	***	4.9.0	204
আইসোলেশন			३७४

विषय ।			शृष्ट्या ।
ডিস্ <b>ইন্ফেক্</b> শন	• • •	**1	304
ডিওডোরাইজে <b>শ</b> ন	27+	1.00	308
জামি'নাইড্		***	208
য়াণি উদেপ্টিক			२०२
ডিও <b>ডো</b> রেন্ট	* 2 *	V 0 0	১৩৯
তাপ	* * *	PPP	202
করোসিভ্ সবিুমেট্	• • •	***	५००
कार्व निक ग्रांत्रिष् वा किरनांन	***	****	>8°
কুমোল	* * *	***	>80
কার্বলিক পাউডার, ক্যাল্ভার্ট্স্	***	***	\$80
— মাক্ডুগেল্স্	***	* 1 *	280
কাৰ্বলিক সাবান	4.4.	***	787
ক্লোরীণ	* * *	***	282
<b>স</b> ল্ফার ডায়ক্সাইড্	***	***	787
সংক্রামক রোগ দূষিত গৃহের শোধন	***	* # ?	287
টীকা	• • •		\$85
रेनिकिউल्मिन, वमछ वीर्कित,	***	***	>82
— কলেৱার,	4 1 1	***	285
— — ইতিহাস,	>>>	***	>80
— — প্রণালী	619	***	>8€
<u> </u>	* * *	***	286
ভাাক্সিনেশনের ইতিহাস	***	430	\$8¢
প্রাইমারী ভাাক্সিনেশনের লক্ষণ	***	***	\$89
রী-ভাাক্দিনেশনের লক্ষণ	***	***	386
ভ্যাক্সিনেশনের প্রণালী	***	***	284
রী-ভ্যাক্দি <b>নেশ</b> রের প্রয়োজনীয়তা	***		\$05
ভ্যাক্সিনেশনের সপক্ষে যুক্তি	* * *	***	> ४२
— বিপক্ষে —	* 0 3	***	३৫२

# চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

#### ঝাইমটিক্ ডিজিজ্।

বিষয় ৷			शृष्टा ।
বনন্তের এক্সাইটিং কজ্	4.8.0	4+4	502
— বিস্তৃতি প্রণালী	•••	<b>***</b>	>9.
— নিবারণ —	0 + 6	***	262
হামের এক্দাইটিং কজ্	4+4	***	১৬৩
— বিস্তৃতি প্রণালী	***		368
<ul> <li>— নিবারণ —</li> </ul>	***	b • 4	<b>368</b>
<b>कार्ट्य</b> (हिना	***	1000	. ১৬৫
চিকেন পক্	419	***	266
টেটেনাদের এক্সাইটিং কজ্	***	•••	266
— নিবারণ প্রণালী	***	•••	১৬৭
হুপিং কফ্	Lago		`ऽ७१
হাইড্ৰে'ফে'বিয়া	***	4++	১৫৮
এপিডেমিক নিউমোনিয়া	***	***	366
এরিদেপেলাদ্	***	***	242
ডিফ্ থিরিয়া	***	***	39•
পুমার পারেল ফিভার	***	•••	. 595
টিউবার্কিউলোসিদের এক্ সাইটিং কল	£20	•••	১৭২
—— বিস্তৃতি প্রণালী	410	4 0 0	১৭২
<del></del> নিবারণ <del></del>	6.6.0	***	390
ম্যালেরিয়ার এক্সাইটিং কজ্	***	***	398
— বিস্তৃতি প্রণালী	***	***	. 598
— নিবারণ —	4 8 F	***	>99
টাইফয়েড্ ফিভারের এক্ সাইটিং কজ			396
— বিস্তৃতি প্রণালী	***	***	396
— — নিবারণ —	0 + 0	* * *	292
কলেরার এক্সাইটিং কজ্		8 0 0	24.
774 746-74-77 A-16-	***	4.0	267

বিষয় ৷			शृष्ठी ।	
কলেরার বিস্তৃতি প্রণালী	*11	***	245	
—	o # 0	* * *	200	
8	ঞ্ম পরিচ্ছেদ।			
কালজ্বর	4.64	6 0 6	286	
	ষষ্ঠ পরিচ্ছেদ।			
	এপিঝুয়টিক্।			
ফুট-য়াতি মাউথ ডিজিজ	ess	• • •	249	
রাইভার পেন্ট্	* * *		244	
আন্থানু	0.11	* * *	246	
<b>अ</b> र्जा-निউমোनिया	* * *	4 5 9	266	
গ্লাভান্'ও ফানি'	* > #	***	244	
7	াপ্তম পরিচ্ছেদ।			
পশুদেহ হই	তে নরদেহে সংক্রামিং	ত রোগ।		
ট্ৰাইকিনোসিস্	***	* 4 9	249	
টেপ্ ওয়াম্	***	* # #	249	
দ্বিতীয় অধ্যায়।				
ভ	विद्वा दिवा विक्रिं क्रिम्			
বার্ছিরেট্ও ডেৎ রেট্	* * *	*19	८८८	
मीन् এজ् शाहि (७९	***	***	১৯২	
নীন্ ডিউরেশন্ অব্ লাইফ্	***	***	285	
এক্পেক্টেশন্ অব্ লাইফ্	***	***	>>>	
ভূতীয় অধ্যায়।				
•	(ष्टें एगिषिगीन्।			
পিনেল কোডের চ চুদ্দিশ অধ্যায়	111	***	220	
কলিকাতা মিউনিদিপালিটীর আইন	***	417	<i>e</i> ।ह ८	

विषय ।			शृष्ट्या ।
বেঙ্গল মিউনিদিপাল য়াাকু	***	***	\$58
বেঙ্গল ড্রেনেজ য়াক্ট্	•••	4.8.9	\$ 28
ভাাক্সিনেশন য়াাক্ট্	***	***	866
	-		
	পরিশিফ ক।		
হুগ্ধ পরীক্ষা	***	***	220
ঘৃত পরীক্ষা	110	***	225
শরিষার তৈল পরীক্ষা	***	E & P	224
	পরিশিষ্ট খ।		
খাদ্য-ভালিকা	•••	* 1 5	724
দেশীয় দৈন্ত-রোগীর পথা	***	***	388
বঙ্গদেশীয় কয়েদীর আহার	***	***	200
মধ্যবিধ বাঙ্গালী ভদ্রলোকের আহার	449	***	205
	.00.5		
	পরিশিষ্ট গ।		
ভ্রেন ও স্থার	*17	***	२०२
ট্রাপ্	-	***	२०२
স্থার ভেণ্টিলেটার	***		२०२
	পরিশিষ্ট ঘ।		
হাসগাতাল নিশ্বাণ	*1*	***	२०२
रागाां वा विकास		***	
	পরিশিষ্ট ও।		
কলিকাতা মেডিকেল কলেজের প্রশা	वनी	***	२०७
কলিকাতা মেডিকেল স্লের প্রশাবলী	1	* 4 #	२५०

-00<>00

## डेशक्रमिका।

#### श्वाश्वा काराटक वटन ?

যে দেহে রোগের বাহ্ বিকাশ অথবা সবলতা ও স্থলতার হ্রাস প্রতীয়মান হয় নাই, সেই দেহ আপাততঃ স্থান্থ বলিয়া বোধ হয়। কিন্তু
সবল মাংসপেশী পরিবেষ্টিত বিশাল দেহের অভ্যন্তরে প্রাণনাশক হৃদ্যোগ
বা অন্তরোগ লুকায়িত থাকিতে পারে। স্থান্থ দেহের প্রত্যেক যন্ত্র আপন
আপন ক্রিয়া স্থচাক্তরপে সম্পন্ন করে। কেবল আপন ক্রিয়া সম্পন্ন করিলেই
চলিবে না, অপর যন্ত্র সমূহের সঙ্গে যোগ রক্ষা করিয়া চলিতে হইবে। জিহ্বা
কেবল আস্বাদন করিয়াই ক্ষান্ত হয় না; থাত্য-স্পৃষ্ট হইয়া স্বায়ুযোগে স্থালিভারি প্রাণ্ড সকলকে লালা প্রেরণার্থ অন্তরোধ করে। অতএব স্বাস্থ্য
বলিতে প্রত্যেক দেহ যন্ত্রের আপন আপন
খাস্থা কি?
ক্রিয়ার স্থচাক্ব সম্পোদন ও অপর যন্ত্র সমূহের সঙ্গে
যোগ সংরক্ষণ বুঝায়।

যে বিজ্ঞানের অনুশীলনে স্বাস্থ্য রক্ষার নিয়ম জানিতে পারা যায় তাহার নাম হাইজীন বা স্বাস্থ্য-বিজ্ঞান। হাইজীন বা স্বাস্থ্য বিজ্ঞান। কেবল আত্মচেষ্টায় স্বাস্থ্যরক্ষার সমুদ্য নিয়ম পালন অসাধ্য। বিশুদ্ধ বায়ু ব্যতীত জীবন ধারণ অসম্ভব; কিন্তু বায়ুর বিশুদ্ধতা রক্ষা করা একের কর্মা নহে। তুমি অভি যত্নপূর্বাক তোমার পরিচ্ছন বাদস্থানের বায়ু বিশুদ্ধ রাথিতে চেষ্টা করিতে পার; কিন্তু তোমার অজ্ঞ প্রতিবাসী কর্তৃক নিক্ষিপ্ত মল বা সংক্রামকরোগ-বীজদংলিপ্ত পদার্থ ছারা তোমার বিশুদ্ধ গৃহবায়ু দূষিত রোগগ্রস্ত হইতে পারে। এইরূপে একের দোষে জন পরিক হাইজীন,প্রিভেণ্টিব পীড়া ও মৃত্যু সংখ্যার বৃদ্ধি। যে শাস্ত্রের অনু-মেডিদীন বা দাধারণ স্বাস্থ্য মোদিত উপায় অবলম্বন করিলে জন সাধারণের विछान। পীড়া নিবারিত, স্বাস্থ্য স্থরক্ষিত ও আয়ু সংবর্দ্ধিত হয়, তাহার নাম সাধারণ স্বাস্থ্য বিজ্ঞান। (Public Hygiene or Preventive medicine)

জন সাধারণের অজ্ঞতা, অনবধানতা বা শিথিলতা বশতঃ পীড়া ও মৃত্যুসংখ্যার বৃদ্ধি হইতে থাকিলে, রাজা প্রজাপুঞ্জের
হিতসাধনোদেশ্রে স্বাস্থ্য সংক্রান্ত বিধি প্রণয়ন
করিয়া থাকেন; সেই সমুদয় বিধি সমষ্টির নাম ফেট্ মেডিসীন বা
রাজকীয় স্বাস্থ্যবিধি।

স্বাস্থ্যরক্ষার নিয়ম বহুকাল হইতে প্রচলিত। মানবধর্মসংহিতার কেবল ব্রাহ্মণ শৃদ্রের অধিকার ভেদ মীমাংদিত হয় নাই; কিন্তু "অতি ভোজন করিবে না'', "জলে মল,মৃত্র,নিষ্ঠীবন,রক্ত বা বিষ ক্ষেপন অথবা মলমৃত্র লিপ্ত বন্ত্রাদি প্রকালন করিবে না'', ইত্যাদি বাক্যে ব্যক্তিগত ও সাধারণ স্বাস্থ্য বিজ্ঞানের মূল হত্র অতি সংক্ষেপে অথচ বিশদরূপে ব্যাখ্যাত হইয়াছে। এই সমুদ্র নিয়ম গার্হস্থ্য ধর্মের অঙ্গীভূত। "পরিচ্ছন্নতা স্বর্লের চাবি," "ঈশ্বরের আদেশ পালনের পরেই জীবনরক্ষার নিয়ম পালন" ইত্যাদি বাক্যে মুসলমান শাস্ত্রকারেরাও স্বাস্থ্যরক্ষার অত্যাবশ্রকতা প্রতিপন্ন করিয়া গিয়াছেন। প্রাতন মুসার বিধিতেও স্বাস্থ্যরক্ষা সম্বন্ধে স্পনেক কথা রহিয়াছে।

আমাদের পূর্বপ্রষণণ শরীরকে সর্বশ্রেষ্ঠ পদার্থ মনে করিতেন। "অগ্রে শরীর পরে ধর্ম দাধন", "স্বাস্থ্যই ধর্মার্থ কাম মোক্ষের মূল" ইত্যাদি মহাবাক্যে তাঁহারা শারীরধর্মের শ্রেষ্ঠতা প্রচার করিয়া গিয়াছেন। "স্বস্থ শরীর অভাবে সমুদয় বিফল, অতএব অন্য সমুদয় পরিত্যাগ করিয়া শরীর রক্ষা কর", এই তাঁহাদের অমূল্য উপদেশ।

এত পুরাতন উপদেশ লিপিবদ্ধ থাকিতেও আমাদের দেশে স্বাস্থ্য বিজ্ঞানর প্রতি ওদাসীল্য কেন ? ইহার তিনটী কারণ আছে। প্রথমতঃ, অনেকের ধারণা এই যে, রোগ ও মৃত্যু অদৃষ্টের ফল, কোন চেষ্টা দ্বারা নিবারিত হইবার নহে। এই কথার উত্তরে মহর্ষি আত্রেয় বলিয়াছেন যে, বিষম পথ গমন ও অধিক ভার সহন বশতঃ যেমন শকটের চক্র অসময়ে ভগ্ন হইয়া পড়ে, তক্রপ অক্ষ্ধায় ভোজন প্রভৃতি কারণে অকাল মৃত্যু হয়, এবং উপযুক্ত সময়ে সাবধান হইয়া দেহের হিতাচরণ করিলে এই অকালমৃত্যু নিবারিত হয়। শুণুন ও কলিকাতার বর্ত্তমান অবস্থা মহর্ষি বাক্য সপ্রমাণ করে। রাণী

এলিজাবেণের সময় বিলাতে বসন্ত মহামারী প্রভৃতি ভীষণ রোগে জনপদ উৎসন্ন প্রায় হইত এবং কুষ্ঠ ম্যালেরিয়া প্রভৃতি রোগে বহুলোক অশেষ যন্ত্রণা ভোগ করিত। কিন্তু এখন পরম শ্রদ্ধেয়া মহারাণী ভিক্টোরিয়ার রাজত্বে নানাবিধ স্বাস্থ্যবিধির প্রবর্ত্তন বশতঃ মহামারী প্রভৃতি তিরোহিত এবং কুষ্ঠ ম্যালেরিয়া প্রায় দৃষ্টিপথের অতীত হইয়াছে। বিগত ২৫বৎসরের মধ্যে কলিকাতার থাদ্য ও পানীয় প্রভৃতির উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে সাধারণ স্বাস্থ্যের এত উন্নতি হইয়াছে যে ১৮৬৫ সালে কলিকাতাবাসীর প্রত্যেক সহস্রের মধ্যে ৫৪ জন মরিয়াছিল, কিন্তু ১৮৯০ সালে প্রতি সহস্রে ২৬ জন মরিয়াছে। ১৮৫৭ দাল পর্য্যন্ত ভারতীয় ত্রিটিদ্ দৈয়দের বার্ষিক মৃত্যু সংখ্যা হাজারে ৬৯ ; এখন হাজারে ১২। দ্বিতীয়তঃ, কাহারও কাহারও মনে এই ধারণা যে, আমাদের शृक्षभूक्रस्वता এত रिवङ्गानिक निष्ठम शानन ना क्रिया अ स्व ७ नीर्घ जीवी ছিলেন। কিন্তু শাস্ত্রাদি পাঠ করিলে দেখিতে পাওয়া যায় আমাদের পূর্ব্ব-পুরুষেরা দেহকে দেবমন্দিরের তায় শুদ্ধ রাথিতে অতিশয় যত্ন করিতেন এবং আহার বিহার সম্বন্ধে নানাবিধ নিষেধ ও বিধি পালন করিতেন। আর একটা কথা মনে রাখা উচিত। সে কালে ও একালে তুলনা হয় না। এখন জনতা বুদ্ধির সঙ্গে সংস্ক ভূমি ও বায়ুর মলিনতা বৃদ্ধি হইয়াছে, এবং খাদ্যের পরিমাণ হাস হওয়াতে জীবন ধারণের জন্ম নানাপ্রকার চিন্তা ও কার্য্যে রত থাকিয়া ও প্রতিকূল অবস্থার সঙ্গে সংগ্রাম করিয়া সকলের শরীর ক্ষয় হই-তেছে। বিশেষতঃ অনেক নদী ও থাল বিশুষ ও ভরাট হওয়াতে পার্শ্বর্জী জনপদ আর্দ্র থ ম্যালেরিয়ার আবাস ভূমিতে পরিণত হইয়াছে। এখন দেশ ও কাল পরিবর্ত্তনের সঙ্গে সঙ্গে স্বাস্থ্য বিজ্ঞানের নবাবিষ্কৃত বিধি অনুশীলন করিতে হইবে।

তৃতীয়তং, কেহ কেহ এই বলেন যে, ইতর শ্রেণীয় লোকেরা স্বাস্থ্যবিধি লজন করিয়াও স্থস্থ ও সবল থাকে। কলিকাতার স্থপ্রসিদ্ধ স্বাস্থ্যতত্ত্বদর্শী ডাক্তার দিমসনের স্বাস্থ্যবিবরণী পাঠ করিলে এই ভ্রম দূর হয়। তিনি বলেন বিস্থৃচিকা রোগে অট্রালিকায় যত মৃত্যু হয়, অস্বাস্থ্যকরকুটীরবাসী গরিবদের মৃত্যু তদপেন্দা তিনগুণ অধিক। পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন, মাঠের নির্দাল বায়ু সেবন ও সচ্ছন্দ চিত্তে শারীরিক শ্রমসাধন বশতঃ গ্রাম্য কৃষকদের



# स्राज्याविकान।

#### প্রথম অধ্যার।

#### जल।

জলের প্রয়োজন কি ? (১) দেহের ই অংশ জল, স্ক্তরাং জল ব্যতীত

দেহ গঠন হয় না; (২) ঘর্মা, মৃত্র ও প্রশাসবায়্র

সঙ্গে প্রতিদিন ৬ পাউও ( /৩ সের ) বহির্গত হয়,

দেহের এই ক্ষতি পূরণ আবশ্যক; (৩) জল ব্যতীত পরিপাক ক্রিয়া অসম্ভব।

কঠিন থাদ্য জলের দারা তরলীকৃত এবং জলীয় পাকরস সমূহ দারা দ্বীভূত

হইয়া রক্তের সঙ্গে মিশ্রিত হয়; (৪) পান, রন্ধন, স্নান, বস্ত্র পাত্র গৃহাদি

প্রক্ষালনের জন্ম জলের প্রয়োজন।

জলের ময়লা (impurities) কি কি; কি পরিমাণ (Quantity)
জল আবশ্যক, আহরণ সঞ্চয় ও বিতরণ প্রণালী
জল সমকে ৪টা বিবেচ্য (Storage and distribution) কি এবং অজ্ঞাত
বিষয়।
স্থানে ইহার অন্থেষণ প্রণালী (Search) কি,
এই সমুদয় বিষয়ে বিচার করা কর্ত্রা।



#### প্রথম পরিচ্ছেদ।

#### ময়লা।

#### ১। ময়লার (Impurities) প্রকৃতি ও উৎপত্তি:-

হাইড্রোজেন ও অক্সিজেনের রাসায়নিক সংযোগে জল হয়; কিন্তু এই জল
পানের অযোগ্য। আমরা যাহাকে বিশুদ্ধ জল বলি
বিশুদ্ধ জলের সাধারণ তন্মধ্যে এমন অনেক পদার্থ থাকে যদ্ধারা ইহার
আম্বাদের বৃদ্ধি হয় অথচ স্বাস্থ্যকারিতার হ্রাস হয়
না। যে জল স্বচ্ছ, বায়ু পুরিত, বর্ণহীন, গন্ধহীন এবং স্বাদহীন, যাহাতে কোন
প্রকার অন্তবীভূত (suspended) পদার্থ নাই এবং কঠিন পদার্থ কিম্বা কোন
দ্রবীভূত (dissolved) পদার্থের আধিক্য নাই, সাধারণতঃ সেই জলকে
বিশুদ্ধ জল বলা যায়।

কে) অদ্রবীভূত ময়লা (Suspended impurities) হুই প্রকার—ইনইনর্গানিক অদ্রবীভূত ময়লা। গাঁনিক (inorganic) ও অর্গানিক (organic)।
বালু (silica), কাদা (clay), থড়ি, লোহ, ম্যাগনিসিয়্ম কার্বনেট্ (Magnesium carbonate) ইত্যাদি ধাতুর ক্ষম কণা
জলের ইনর্গানিক (inorganic) অদ্রবীভূত ময়লা।

মৃত দেহ ও উদ্ভিদের গলিতাংশ, জীবিত কীটাণু ও উদ্ভিদ, ডিম্ব ও অর্থানিক অন্তর্বীভূত ময়লা। বীজ, মল মূত্রাদি দেহনিঃস্থত পদার্থ, এবং সংক্রামক রোগ বীজ, জলের অর্গানিক অদ্রবীভূত
ময়লা (Organic suspended impurities)। পানীয় জলের সঙ্গে নিম্ন
লিখিত ক্বমি সমূহ দেহাভ্যন্তরে প্রবেশ করে:—

এদ্বিলেষ্টোমন্ ডুয়োডিনেলী (Anchylostomum duodenale), রাউগু জলের কৃমি ( ৯প্রকার)

ওয়ার্ম (ascaris lumbricoides), থ্রেড ওয়ার্ম (Oxyuris Vermicularis), বিলহার্জ কৃমি (Bilharsia haematobia), ব্যুয়োকেফেলান্ লেটান্ (Bothriocephalus Latus), যক্ত্ কৃমি (Distoma haepaticum), গিনি-কৃমি (Filaria dracunculus), এবং রক্ত কৃমি (Filaria Sanguinis Hominis)। কৃদ্র কৃদ্র জোঁক কথনও কথনও জলের সঙ্গে মুথের কিমা গলার অভ্যন্তরে প্রবেশ করিয়া কষ্ট উৎপাদন করে।

থে) দ্বীভূত ময়লা (Dissolved impurities) ছই প্রকার। বাজীয়
(gaseous) এবং কঠিন (solid)। কঠিন দ্রবীফ্রনাভূত ময়লা (Dissolved impurities.)
ভূত ময়লা ছই প্রকার, অর্গানিক (organic)
এবং ইন্যানিক (inorganic)।

वायु, कार्वनिक ग्रामिड (carbonic acid), ग्रामिनिया (ammonia) হাইডে জেন সলফাইড (Sulphuretted hydrogen) বাসীয় এবীত্ত মলা এবং মার্ষ্যাদ (marsh gas) এই পাঁচটি বাজীয় (Dissolved gaseous impurities.) দ্রবীভূত মলা। বায়ু-বিহান জল কিরূপ বিস্বাদ,তাহার প্রমাণ পরিস্রুত জল (distilled water)। বায়ু জলের স্থতার বৃদ্ধি করে এবং বায়ুর অক্সিজেন পচা প্রাণিদেহ ও উদ্ভিদের দোষ সংশোধন করে। কার্বনিক য়ােদিড কথনও কথনও বা ভূমি হইতে গৃহীত,কখনও বা ভূমধ্য তাপ কর্ত্তক कार्स्वारन ममूर रहेरा विदासिक, ववः कथन अवा जनश्चि आ विराह किया উত্তিদের অঙ্গারের সহিত অক্সিজেন সংযোগে উৎপাদিত হইয়া থাকে। এই গ্যাস জলের স্থতার এবং চাকচক্য বৃদ্ধি করে এবং কেবল অধিক পরিমাণে ক্যাল-সিয়ম কার্বোনেট প্রভৃতি ধাতুর সংমিশ্রনেই অস্বাস্থ্যকর হইয়া থাকে, নতুবা ইহার দারা কোন অনিষ্ঠ হয় না। য়ােশ্মেশ্নিয়া (free ammonia) ক্থন্ত পচা উদ্ভিদ হইতে এবং প্রধানতঃ পচা প্রাণিদেহ হইতে উৎপন্ন হইয়া জলের সঙ্গে মিশ্রিত হয়, কিম্বা ভূমি বা বায়ুর সঙ্গে মিশ্রিত হইয়া পরে জলস্রোতে মিশ্রিত হয়। নাইট্রেট প্রভৃতির সঙ্গে য়্যামোনিয়া থাকিলে জল পচাপ্রাণিদেহদূষিত বলিয়া অনুমান করা যায়। য়্যামোনিয়ার সঙ্গে প্রচুর পরিমাণে নাইট্রাইট থাকিলে এই বুঝায় যে পচা প্রাণিদেহ প্রভৃতি অল্প দিন হইল জলে মিশ্রিত হইয়াছে। প্রচুর য়ামোনিয়া গল্পের ছারা ধরা পড়ে। হাইডে 'জেন সলকাইড (Sulphuretted Hydrogen) পঢ়া উদ্ভিদ ও প্রাণিদেহ, ক্যালিদিয়ম দল্ফেট বা দোডিয়ম দল্ফেট (Calcium or sodium sulphate) এবং অন্ন (free acid) সংযোগে উৎপন্ন হয়। ইহা অনিষ্টকর। মার্ষ্ গ্যাদ পচা উদ্ভিদ হইতে উৎপন্ন হয়; বড় সহরে কখনও বা ভগ্ন গ্যাদ নল (coal gas pipe) হইতে নিকটবর্ত্তী ভগ্ন জলের নলে প্রবেশ করে। পচনশাল লতাপাতাপূর্ণ ডোবার নিম্ন হইতে যে সমুদ্য বৃদ্ধ উথিত হয় তাহার কারণ মার্ধ্ গ্যাদ। ইহা অনিষ্টকর নহে; কিন্তু যে জলে ঐ বাষ্প আছে, তাহা পচনশীল-উদ্ভিদ-দ্যিত মনে করিতে হইবে।

অর্গানিক দ্রবীভূত মলা (organic dissolved solids) ৪ প্রকার; यथा, ग्रामन्त्रिनरग्रह ग्राप्तभानिश् (al-অর্গানিক দ্রবীভূত মলা buminoid ammonia), नाइरिं हे (nitrate), (Organic dissolved solids.) ৪ প্রকার। নাইটাইট (nitrite) ও অক্সিজেন দারা শোধনীয় পদার্থ ( oxidisable organic matter)। উদ্ভিদ ও প্রাণিদেহ জাত পদার্থ হইতে এই সমুদয় ময়লা উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই উভয়ের মধ্যে প্রাণিদেহজাত পদার্থই অত্যন্ত অনিষ্টকর। নাইটেটের আধিক্য, এবং নাইট্রাইট্ কিম্বা অক্সিজেন ছারা শোধনীয় পদার্থের অভাব, পুরাতন পচা প্রাণিদেহের অন্তিত্ব জ্ঞাপন করে। নাইট্রোজেন ঘটিত অর্গানিক পদার্থ অক্সিজেন সংযোগে য়্যালবুমিনয়েড য়্যামোনিয়ায় পরিণত হয়। অর মুক্ত ষ্যামোনিয়া ও কোরাইড এবং অধিক য়াল বুমিনয়য়ড য়ামোনিয়া, ওটিদ পদার্থের আধিক্য বুঝায়। নাইট্রাইট্পচনক্রিয়া জ্ঞাপক ও অল প্রিমাণেও অনিষ্টকর।

কোরিন, সলফিউরিক য়াদিড, নাইট্রাদ্ য়াদিড, ফন্ফরিক্ য়াদিড ইনর্গানিক দ্রবীভূত মলা কার্কনিক য়াদিড কিম্বা দিলিদিক্ য়াদিড এই (Inorganic dissolved ৭ পদার্থের কোন একটীর সঙ্গে সোডিয়ম, পটাদিয়ম, impurities) ক্যালিদিয়ম, ম্যাগ নিদিয়ম, লোহ বা সীমা, সংযুক্ত হইয়া জলের সহিত মিশ্রিত হয়। ইহাদিগকে ইনর্গানিক দ্রবীভূত ময়লা কহে। সোডিয়ম বা ক্যালিদিয়ম ক্লোরাইড স্তর হইতে, কোন স্থলে বা সম্দ্র-জল-দিক্র ভূমি হইতে এবং কোন স্থলে বা স্য়েজের বা

নর্দামার মল মূত্রাদি হইতে ক্লোব্রন (Chlorine) উৎপন্ন হয়। স্থেজ জাত क्लातिरात महत्र नारेष्ट्रे । हेष्ट्रे, नारेर्ष्ट्रेष्ट्रे, ग्रारमानिया, ववः कथन । कमकतिक অক্সি-ডাইজেবল অর্গানিক পদার্থ পাওয়া যায়।

ষে জলে ক্যালসিয়ম, ম্যাগনিসিয়ম ও লোহ ধাতুঘটিত পদার্থনিচয় কাব নিক য়াসিড্ সংযোগে দ্বীভূত থাকে, তাহাকে কাঠিনোর কারণ কঠিন (hard) জল বলে। এই কাঠিনা বশতঃ ৩ প্রকার। জলে দাবান ফেণীভূত হয় না; স্থুতরাং দাবানের বুথা ক্ষয় হয়, পরিচ্ছন্নতার পক্ষে বিশেষ ব্যাঘাত ঘটে এবং তরকারী সিদ্ধ হইতে অনেক বিলম্ব হয়। "কাঠিগু" হুই প্রকার, অস্থায়ী এবং স্থায়ী। উত্তাপ দারা যে কাঠিগ্য দূরীভূত হয় তাহাকে (Temporary hardness) অস্থায়ী কাঠিন্য <sup>বলে।</sup> ক্যালসিয়ম কার্বনেট অন্তায়ী কাঠিনোর কারণ। অস্থায়ী কাঠিন্সের কারণ। জল ফুটাইলে কার্বনিক য়্যানিড বাষ্পাকারে উত্থিত হইয়া যায় এবং ক্যালসিয়ম কার্বনেট পৃথক হইয়া অধঃস্ হয়। সলফেট অব লাইম প্রভৃতি Fixed hardness 3 ক্যালসিয়ম ধাতব, ম্যাগনিসিয়ম কার্বনেট স্থায়ী কাঠিনোর কারণ। প্রভৃতি ম্যাগনিদিয়ম ধাতব, এবং ফেরি কার্বনেট প্রভৃতি লোহ ধাতব এই ত্রিবিধ পদার্থ কর্তৃক জলের স্থায়ী কাঠিত উৎপাদিত হয়। স্থায়ী এবং অস্থায়ী মোট কাঠিনা কাঠিত্যের সমষ্টিকে মোট কাঠিতা বলা যায়।

সোভিয়ম, ক্লোরাইড ও সলফেট আকারে, জলে মিশ্রিত থাকে। দীসা কখনও কখনও জলে দ্বীভূত হয়। সলফিউরিক য়ৢৢাসিড এবং ফদফরিক য়্যাদিড, সলফেট্ ও ফদ্ফেট্ আকারে गिथिত থাকে। मिलिमिक ग्रामिष्, मिलिका (বালু) এবং मिलिकि (কাচ) আকারে দ্রবীভূত হয়। তাম, আর্দেনিক, দন্তা প্রভৃতি বিযাক্ত পদার্থ ও জলে মিশ্রিত হইতে পারে।

(Total hardness).

(গ) উপরোক্ত পদার্থ সমূহ প্রথমশ্রেণীর বিশুদ্ধ জলে নিয়লিধিত পরি-মাণে থাকিতে পারে:—

রাসায়নিক প	দার্থ		লকাংশে
১। ক্লোরাইডস্থিত ক্লোরিণ · · ·		•••	১.৪ এর কম
২। কঠিন পদার্থ (দ্রবীভূত) · · ·	0 0 0 7	• • •	9.58 " "
৩। মুক্ত ফ্যামোনিয়া	•••	• • •	۰۰۰۶ " "
<ul> <li>8 । ग्रानिव्सिनत्त्रण् ग्रात्मिनिया</li> </ul>	• • •	•••	,000 w w
৫। নাইট্রোজেন (নাইট্রেটস্থিত	)	•••	.0 38 m
৬। নাইটুাইট	•••		•
৭। পটাস পার্মে স্পেনেট হইতে শে	াষিত অক্সিজেন		
	—অৰ্দ্ধ ঘণ্টায়		٠٠২٤ " "
	—৪ ঘণ্টায়		.o. 20
৮। কাঠিন্স, মোট ···	• • •	• • •	b°.c ,, ,
ঐ স্থায়ী · · · · · · ·	. •••	•••	ა°. " ¤
৯। ফদফেট ও দলফেট	•••	•••	লেশমাত্র
			(traces)

দ্বিদ্য জল বর্ণহীন বা ঈষৎ নীলাভ, স্বচ্ছ, চাকচক্য বিশিষ্ট, বায়ুপূর্ণ, স্থাদ, গন্ধ বিহীন এবং সেডিমেণ্ট (sediment) বিহীন। অণুবীক্ষণ যন্ত্রে ইহাতে ধাতব পদার্থ, ওদ্ভিদ পদার্থ এবং জীবদেহ দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু কোন প্রকার পচনশীল অর্গানিক পদার্থ দৃষ্ট হয় না। এরূপ জল পান করা বিধেয়। সর্বাত্র উপরোক্ত আদর্শ ধরিয়া নির্বাচন করিলেই যে জলের গুণাগুণ বুঝিতে পারা যায় এমন নহে। সাধারণতঃ অধিক ক্লোরিণ অনিষ্টকর বিলায় ধরা যাইতে পারে; কিন্তু সকল স্থলে এই নিয়ম থাটে না। সমুদ্র জল মিশ্রিত বা সোডিয়ম ও ক্যালসিয়ম ক্লোরাইড স্তরোভূত জলে অধিক ক্লোরিণ থাকে, তাহাতে বিশেষ কোন অনিষ্ট হয় না। অধিক ক্লোরাইডের সঙ্গে নাইট্রাইট, নাইট্রেট, য্যামোনিয়া, অর্গানিক পদার্থ ও ফদ্ফেট থাকিলেই

জল নদামার ময়লা মিশ্রিত এবং অনিষ্টকর বলিয়া অনুমান করিতে হইবে।
নিম্নলিথিত পরিমাণে দৃষিত পদার্থ থাকিলে জল সম্পূর্ণরূপ পানের অযোগ্য :—

রাসায়নিক পদার্থ	नक्ष १९८%।
১। ক্লোরিণ (ক্লোরাইডের) ···	৪.২ ও তদ্র্জ
২। কঠিন পদার্থ (দ্রবীভূত)	8२.৮ " "
৩। মুক্ত য়ামোনিয়া	.00Cn n
8। য়ৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢয়ৢৢৢৢৢ৸৻য়৸ঀয়৸ৢ৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽৽	۰۰۶ " "
<ul> <li>। নাইট্রোজেন (নাইট্রেট) · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·</li></ul>	., ه د.
७। नार्रेष्ट्रे । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	0
৭। পটাস্ পামে স্থেনেট হইতে গৃহীত অক্সিজেন	
—অর্দ্ধ ঘণ্টায়,	.> " "
—৪ ঘণ্টায়	.30 ,, ,,
৮। काठिंग, त्यां ।	0°-9€
ञ ञ्राष्ट्री	«°9 " "
৯। ফদ্ফরিক য়াদিড্(ফদফেট্)	লেশ মাত্র
১०। मनिक्छितिक ग्रामिष् (मनिक्छे )	৩ ও তদ্র্র
১১। ভারি ধাতু—লোহ	লেশ মাত্র
১২। সুলফিউরেটেড ্হাইড্রোজন (সলফাইড্) ···	0

# (ঘ) ময়লার উৎপত্তি ৪ প্রকার:-

(২) জলের উৎপত্তি স্থানে—চাখড়িময় ভূমিজাত জলে অতি অৱ লোহ, দিলিকা, পটাদ্, নাইট্রিক ও ফদফরিক্ য়্যাদিড এবং অর্গানিক পদার্থ থাকে। অনেক পরিমাণে কার্বনিক য়্যাদিড থাকা প্রযুক্ত এই জল অতিশয় চাকচক্য বিশিষ্ট,পরিকার ও স্থতার। ক্যালিদ্য়ম কার্বনেটের আধিক্য ইহার কাঠিত্যের কারণ; কিন্তু তাপ দ্বারা এই কাঠিত্য অনেক পরিমাণে বিদ্রিত হয়। গ্রেনাইট প্রভৃতি প্রস্তরময় ভূমিতে অর্গানিক পদার্থ অতি অয়। বালুকাময় ভূমির জল সাধারণতঃ বিশুদ্ধ; কথনও কথনও

ইহাতে সোডিয়ম কার্দ্ধনেট, সোডিয়ম দলফেট প্রভৃতি কঠিন পদার্থ ও অর্গানিক পদার্থ অধিক পরিমাণে থাকে। চূণ্ময় ভূমির জলে কালসিয়ম দলফেট অধিক কিন্তু অর্গানিক পদার্থ অল্ল; তাপ সংযোগে ইহার কাঠিন্ত

জলোৎপত্তিস্থানজাত ময়লা। বিদ্রিত হয় না। **দিলিনাইট** ভূমির জল ক্যাল-সিয়ম দল্ফেট পূর্ণ ও কঠিন। কর্দ্দমম্য় ভূমির জলে দ্রবীভূত পদার্থ অতি অল্প, কিন্তু অদ্রবীভূত

পদার্থের পরিমাণ অধিক। য়্য়ালুভিয়েল (alluvial) ভূমির জলে ক্যালিসিয়ম कार्वत्न ७ मन् एक है, मार्गनिमियम मनएक है, त्मा जियम द्वादा इंड वर कार्वरन है, त्नीह, मिनिका विदः अर्जानिक अनीवर्षंत्र अतिमान अधिक। মাঠের উপরিস্থ জলে সাধারণতঃ অধিক পরিমাণে অর্গানিক ও ধাতব পদার্থ থাকে। বাসভূমির নিক্টস্থ অগভীর কুপজলে ক্যালিসিয়ম ও দোভিয়ম্ নাইট্রাইট, নাইট্রেট, স্লফেট, ফদ্ফেট্, এবং ক্লোরাইড্ ও অর্গানিক পদার্থ অধিক পরিমাণে থাকে। গভীর কুপজল প্রায় বায়্হীন। জলাভূমির জলে ওডিদ পদার্থ এবং অদ্রবীভূত অর্গানিক পদার্থ অধিক; অল্প পরিমাণে কার্বনিক ও সলফিউরিক য়াসিড, এবং ক্লোরিণ সংযুক্ত ক্যালসিয়ম ও সোডিয়ম থাকে। ইহাতে ম্যালেরিয়ার বীজ পাওয়া যায়। সমাধিভূমির নিকটম্ব জলে অধিক পরিমাণ য়্যামোনিয়ম ও ক্যালিসিয়ম সমুদ্রের নিকটস্থ কৃপজলে অধিক পরিমাণে লবণ থাকে। বৃষ্টির জলে বায়ুন্তিত, ভূমিন্তিত এবং গৃহের ছাদন্তিত ময়লায় পরিপূর্ণ হয়। ইহাতে য়্যামোনিয়া ও দলফিউরিক য়্যাসিড ("বায়ুর স্থেজ") এবং অস্তান্ত পদার্থ थांदक।

(২) স্বোতপ্রবাহে—নদী থাল প্রভৃতির স্রোতজনে ছই প্রকার
ময়লা মিশ্রিত হয়, বাসভূমি হইতে প্রবাহিত মলক
স্ত্রেও মিশ্রিত ময়লা।
মৃত্র ও মলিন জল ইত্যাদি (Sewage) এবং কারখানার ময়লা (manufacturing impurities) যথা রং, চর্মা, কাগজ, পশম,
ধাতু ইত্যাদি। এতদ্বিল্ল কর্ষিত ভূমির কর্দ্দম, বালু, খড়ি, প্রাণিদেহজ্ঞাত

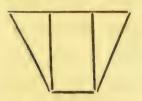
ময়লা ও বৃক্ষপত্রাদি ইন্তিদ ময়লা মিশ্রিত হয়। স্রোতস্বতী জলের ময়লা অধঃস্থ হইয়া (Subsidence), এবং জল-উন্তিদ ও অক্সিজেন কর্জ্ব বিশোধিত হইয়া বিদ্বিত হয়। পার্কস্ বলেন ভারতবর্ষে নদীস্রোতের প্রবলতা বশতঃ জলের ময়লা অনেক পরিমাণে শোধিত হয়।

(৩) সঞ্চয় স্থানে—পুষ্বিণী, কৃপ ও চৌবাচ্চার (Cistern) জল
নানাপ্রকারে দ্বিত হয়। এ দেশে পুষ্বিণীর জল
পুষ্বিণী বিকৃতির
চতুর্বিধ কারণে বিকৃত হয়; প্রথমতঃ, চতুষ্পার্যস্থ
ভূমির ময়লা ধৌত হইয়া মৃত্তিকা ভেদ করিয়া (by

percolation) জলে প্রবেশ করে; বিতীয়তঃ, স্নান ও বস্ত্র তৈজসাদি প্রক্ষাল
লণ বশতঃ জল দ্বিত হয়; তৃতীয়ত খুঁটী, বাঁশ, পাট, বেত, নৌকা ও
রঞ্জিত দেব প্রতিমা প্রভৃতি জলে নিমজ্জিত হয়; চতুর্থতঃ, তীরস্থ বৃক্ষপত্রাদি
পতিত হইয়া পচিতে থাকে। শীত ও বসন্তকালে বাষ্পাকার ধারণ
(evaporation) বশতঃ জলের পরিমাণের হ্রাস, অতএব সমলতার বৃদ্ধি হয়।
কলিকাতার পুকরিণী প্রভৃতির জলের ২৪ ঘন্টায় ২॥০ ইঞ্চি হ্রাস হয়।
কুপজল বিকৃতির কৃপ জল চতুঃপার্যস্থ ভূমির ময়লা গ্রহণ করে।
কারণ।

কারণ। অনুচ্চ পাট বিশিষ্ট কূপে বায়ুতাড়িত বা বৃষ্টিধৌত ময়নাদি ও প্রবিষ্ট হয়। জলোত্তনন পাত্রের ময়লা কিম্বা প্রকালিত তৈজ্পাদির ময়লা ও কূপ জলে মিশ্রিত হইতে পারে কৃপ যে ভূমির ময়লা

কুপের "ড্ৰেণ্ডে কোণ" (Drainage Cone.)



আকর্ষণ করে, তাহার আকার বিপর্যান্ত "কোণ" বা মোচার (inverted cone) ন্তায়। ইহাকে ক্পের ড্রেণজ কোণ (drainage cone) কহে। বালুকাময় ভূমির অনেক দূর পর্যান্ত এই "কোণ" প্রসারিত হয়। অধ্যাপক আনষ্টেড ্বলেন কৃপ সাধারণতঃ অর্দ্ধ মাইলের অধিক দূরস্থ ভূমির ময়লা

আকর্ষণ করিতে পারে না। ডাক্তার কিং বলেন ৮০ হটকে ১০০
ফুট গভীর কৃপ চতুর্দিকে ৫০ ফুট পর্য্যন্ত "আলগা" মাটির
ময়লা আকর্ষণ করিতে পারে। বিলাতে দস্তা কিম্বা গ্যালভেনাইজড্
লোহের (galvanized iron) চৌবাচ্চায় (cistern) পানীয় জল সঞ্চিত

ধাতুনির্শ্বিত জলাধারস্থিত জলের বিকৃতির কারণ।

জালা ও কলসীর জল বিকৃতির কারণ। থাকে। এই চৌবাচ্চা সংলগ্ন নল দিয়া কথনও
কথনও স্থার গ্যাস(sewer gas)জলে প্রবেশ করে।
এ দেশে জালা এবং কলসীতে জল সঞ্চিত করা হয়।
জালা ও কলসীর ময়লা জলে মিশ্রিত হইতে পারে।
কথনও কথনও জালা মৃত্তিকায় প্রোথিত হয়।
চতুপ্রার্শস্থ ভূমির ময়লা মৃত্তিকা ভেদ করিয়া ভগ্ন

জালার ছিদ্র দিয়া জলে প্রবেশ করিতে পারে।

(৪) বিতরণকালে—এই দেশে সাধারণতঃ কল্সী মসকে পূরিয়া জল আনা হয়। অনেক সময় চর্ম্মের ন্মদক ও কলদীর ময়লা। মদকে কিম্বা মৃৎ কলদীর অভ্যন্তরে ময়লা থাকে,ভারী কিম্বা ভিস্তি, জলের সঙ্গে, সংক্রামক রোগের বীজ এবং কখনও কখনও বিতরণ করিয়া থাকে। কোন কোন স্থানে কাষ্ঠনির্ম্মিত পিপা ও গাড়ীর ময়লা। পিপা **কিমা** গাড়ীতে প্রিয়া জল বিতরণ করা হয়। नाना कांत्ररा এই जल पृषिठ হरेग्रा थारक। य ममूपग्र खारन भीमा पछा প্রভৃতি ধাতুনির্দ্মিত নল দিয়া জল বিতরিত হয়, ধাতৃনির্শ্বিত নলের বিষ। তথাকার জল ঐ সমুদয় ধাতু দারা বিষাক্ত হইতে পারে। বৃষ্টির জল, হদ এবং উচ্চ ভূমিবাহিনী স্রোতস্বতীর অতি বিশুদ্ধ এবং অক্সিজেনপরিপূর্ণ জল, ক্লোরাইড্ পূর্ণ জল, অর্গানিক পদার্থ নাইট্রাইট ও নাইটোট পূর্ণ জল, এবং অম বিশিষ্ট জল, এই কি প্রকার জলে দীসা ৫ প্রকার জলে भीमा-নলের সীমা দ্রবীভূত হয়। দ্ৰবীভূত হয় ? গভীর কৃপজল কার্বনেট ফদফেট এবং দলফেট প্রভৃতি ভৌম সণ্টে (earthy salts) পরিপূর্ণ; এই জলে দীসা দ্রবীভূত হয়না। अन्न পরিমাণ কার্বনিক য়্যাসিড পূর্ণ জলে সীসা দ্রবীভূত হয় না। সীসা, দস্তা লোহ কিম্বা টিন মিশ্রিত থাকিলে জলে দ্রবীভূত হয়। পার্কস্ বলেন এক গ্যালন জলে ঽ গ্রেণের অতিরিক্ত সীসা কি পরিমাণ সীসা অনিষ্টকর; কিন্ত ইহা অপেক্ষা অল্ল পরিমিত সীসা অনিষ্টকর ? মিশ্রিত জল পানেও কোন কোন ব্যক্তির অনিষ্ট

হইয়া থাকে। ভগ্ন নলের ছিদ্র দিয়া স্থার গ্যাস প্রভৃতি দ্বিত পদার্থ পানীয় জলে মিশ্রিত হইতে পারে।

# ২। জলকফ ও দূষিত জলপান নিবন্ধন রোগ।

জলাল্লতা বা জলক্ষ্ট বশতঃ দেহ, বস্ত্র. তৈজসপত্র, বাসভবন, পয়ঃঅণালী রাস্তা প্রভৃতি অপরিষ্কার থাকে এবং চশ্মরোগ,
চক্লুরোগ, উদরাময়, টাইফয়েড জর প্রভৃতি নানা
প্রকার রোগের প্রকোপ হয়। অনেক কাল জল পান না করিলে তৃষ্ণা
অনিবার্য্য হয়,শারীরিক ও মানসিক বলের হ্রাস হয়, এবং ফুস্ফুসের কার্বনিক
য্যাসিড, মল এবং মৃত্র প্রভৃতি নিঃসরণের ব্যাঘাত হয়। জর শোথ প্রভৃতি
রোগে জলপান নিষেধ করা মূর্থ তার কার্য্য।

মল প্রভৃতি প্রাণিদেহ জাত পদার্থ মিশ্রিত জল সর্বাপেক্ষা অনিষ্টকর। জলাভূমি জাত ওদ্ধিদ পদার্থ, এবং কোন কোন সল্ট্ ও ধাতুর মিশ্রণ বশতঃ জল অস্বাস্থ্যকর হয়। দূষিত জল পান বশতঃ নিম্লিথিত রোগ সমূহ উৎপন্ন হয়:—

#### (১) ঝিল্লি সংক্রান্ত।

অজীর্ণতা (Dyspepsia)—লক্ষাংশে ১১ভাগ কিম্বা তদধিক ক্যালসিয়ম্ সল্ফেট ও ক্যালসিয়ম ক্লোরাইড্ এবং ম্যাগনিসিয়া সল্ট মিশ্রিত জল সাধারণতঃ এই রোগ উৎপাদন করিয়া থাকে। লোহাম্বাদ বিশিষ্ট জল পানে, প্রথমতঃ অল্ল অজীর্ণতা, কোষ্ঠকাঠিন্স, শিরঃশূল প্রভৃতি রোগ উৎপন্ন হয়, কিন্তু পরে অভ্যাস বশতঃ তত অনিষ্ট হয় না।

উদরাময় (Diarrhæa)—(ক) কর্দম ও অত্রকণা প্রভৃতি অদ্রবীভূত ধাতব পদার্থ এই রোগ উৎপাদন করে। অত্রকণা মিশ্রিত জল দার্জিলিং ধর্মশালা প্রভৃতি পার্কব্য প্রদেশের পার্কব্য উদরাময়ের(hill diarrhæa)কারণ বিলয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। (থ) মল প্রভৃতি অদ্রবীভূত প্রাণিদেহ জাত পদার্থ, (গ) অদ্রবীভূত ঔত্তিদ্ পদার্থ, (য়) ক্রবীভূত অর্গানিক পদার্থ, য়থা সমাধিভূমিজাত পদার্থ, (৪) সলফিউরেটেড্ হাইড্রোজেন ও স্থয়ার গ্যাম প্রভৃতি গ্যাম, এবং (চ) ক্যালসিয়ম নাইট্রেট ও সলফেট, ম্যাগনিসিয়ম সল্ফেট এবং লবণ প্রভৃতি দ্রবীভূত ধাতব পদার্থ জলে মিশ্রিত হইয়া উদরাময় উৎপাদন

আমাশায় (Dysentery)—যে সম্বয় ময়লা উবরাময় উৎপাদন করে, তদারা আমাশয়ও উৎপর হয়। পার্কস বলেন আমাশয় রোগীয় মল মিপ্রিত জল আমাশয় উৎপাদন করে, এরূপ প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে। গঙ্গাজল ও পুছরিণীজল পানবশতঃ ইতিপূর্ব্বে কলিকাতায় উদরাময় ও আমাশয় রোগের অত্যস্ত প্রাত্তাব ছিল। কলের জল প্রবৃত্তিত হইবার পর এই রোগয়য়-জনত মৃত্যু সংখ্যার হাস হইয়াছে।

সদ্দি (Bronchial catarrh)—দূষিত জল পান জনিত আমাশয়ের বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে বৃদ্ধিয়েল কেটারের প্রাবল্য কথনও কথনও পরি-লক্ষিত হয়।

কেহ কেহ অনুমান করেন দ্যিত জল সংস্পর্শে মূত্র নালী প্রভৃতির প্রদাহ হইতে পারে; কিন্তু এই কথা প্রমাণ সাপেক্ষ।

#### (২) অস্থি রোগ।

দৃষিত জল পান বশতঃ গো অশ্ব প্রভৃতির অস্থিরোগ হয়। অধিক ক্যালসিয়ম কার্কনেট এবং সলফেট মিশ্রিত জলপান করিয়া অশ্বগণ এক্সোদ্-টোসেস্ (exostoses) রোগাক্রাস্ত হইতে দেখা গিয়াছে; এবং ঐ জলের ব্যব-হার রহিত করিবামাত্র রোগ তিরোহিত হইয়াছে।

#### (৩) পাপুরী রোগ।

কেহ কেহ মনে করেন ক্যালিসিয়ম কার্বনেট্ মিশ্রিত "কঠিন" জলপানে লিভার কিড্নী সংক্রান্ত ক্যালিসিয়ম ফদ্ফেট ও অক্সেলেট প্রস্তর উৎপন্ন হয়।

#### (8) গলগও (GOITRE.)

অতি পুরাতন আয়ুর্বেদ শাস্ত্রে দৃষিত জল গলগণ্ড (Bronchocele),
শ্লীপদ (Elephantiasis arabum) প্রভৃতি রোগের কারণ বলিয়া উল্লিখিত
হইয়াছে। জলের কোন দৃষিত পদার্থ গলগণ্ড উৎপাদন করে এই বিষয়
এখনও মীমাংসা হয় নাই। অযোধ্যার কুমাওন প্রদেশে এবং পঞ্জাবের বারি
দো-আব্ প্রদেশে গলগণ্ড রোগ অতিশয় প্রবল। তথাকার জলে ক্যালদিয়ম ও ম্যাগনিসিয়ম সল্ট অধিক পরিমাণে পাওয়া যায়। ধর্মশালা প্রভৃতি

স্থানে গলগণ্ড অতিশয় প্রবল। ডাক্তার উইল্সন বিশেষরূপে পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন তথাকার জল অতি বিশুদ্ধ।

#### (৫) ठर्चातांशांनि।

দৃষিত জল দিল্লীন্দোটক (Delhi boil) এবং ভারত সীমান্ত ক্ষতের (frontier ulcer) কারণ বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। লুইস্ ও কনিংহাম বলেন দিল্লী জলের "কাঠিত্ত" এবং সল্টাধিক্য বশতঃ এই রোগ উৎপন্ন হয়। কৃপজলের পরিবর্ত্তে য়মুনাজল ব্যবহারের পর হইতে দিল্লী ন্দোটকের হ্রাস হইয়াছে। ফ্রাঙ্কলোর্টে একদা বছলোক ন্দোটকাক্রাস্ত হয়। তথা-কার পানীয় জলে হাইড্রাজেন সলফাইড্ পাওয়া গিয়াছিল।

#### (৬) কৃমিজাত রোগ।

বিদ্রো কেফেলাস লেটাস ডিম্বাকারে কিম্বা এদ্রিয়ো(Embryo) অব-स्राय त्रिया, स्टेरिजन, त्राने ७ ७ स्टेकान ७ अप्तर्भत नमीकरन व्यवस्थि करत । এ দেশে এই কৃমি নাই। যক্তং-কৃমি বা ডিফৌমা হিপেটিকম এস্থিরো অবস্থায় জলে সন্তরণ করে। এই কৃমি মানব যক্ততে কদাচিৎ পাওয়া যায়, কিন্তু রট্ (rot) নামক রোগ উৎপাদন করিয়া অসংখ্য মেষের প্রাণনাশ করে। রাষ্ট্র ও ওয়ৢয় (অক্সিইউরিস্ লম্ব্রিকয়ডিস্) ডিম্বাকারে জলে থাকে। থে ড্কুমি কখনও কখনও পানীয় জলের সঙ্গে দেহে প্রবেশ করে। গিনি কুমি ড্রেকণ্টায়েদিদ্ নামক রোগ উৎপাদন করে; সম্ভবতঃ জলে অবগাহন কিম্বা অবতরণ কালে চর্ম্ম ভেদ করিয়া সব্ কুটেনিয়াদ্ দেলিউলার টিস্থতে প্রবেশ করে। ফেড্দেঙ্গে বলেন ইহারা এম্ব্রো অবস্থার সাইক্রপ্স্ (cyclops) নামক জলকীটের দেহে প্রবেশ করিয়া বর্দ্ধিত হয় এবং পানীয় জলের সঙ্গে মনুষ্যদেহে প্রবেশ করে। तुल-कृति वा कारेलितिया तम्बूरेनिम् द्यामिनिम् कारेल्तिया এवः श्लीभन (Elephantiasis) রোগ উৎপাদন করে। ডাক্তার ম্যান্সন্ বলেন এই ক্রমির এম্বিরো কাইলুরিয়া রোগী কিম্বা শ্লীপদ রোগী দংশনকারী মশকের উদরে রোগীর রক্তের সহিত প্রবেশ করিয়া তথায় বর্দ্ধিত হয়। তৎপর **रमरे गगक পানীय जल পতিত इरेल रेरात अन्न निर्गठ कृपि जलात महन्**  মানব দেহে প্রবেশ করে। বিলহার্জ কুমি বা বিলহার্জিয়া হিমেটোরিয়া এম্বিরো আকারে জলে থাকে এবং জলের সঙ্গে দেহে প্রবেশ করে। কেহ কেহ এ বিষয়ে সন্দেহ প্রকাশ করেন। এই ক্রমির দরুণ মিদর, মরিসাস প্রভৃতি দেশে স্থানবিশেষে বহুলোক ব্যক্তমূত্রবোগে(Endemic haematuria) আক্রান্ত হয়। এক্ষিলোফোমম্ ডুয়োডিনেলি লম্বাদীপের বেরি-বেরি রোগ উৎপাদন করে, ডাক্তার কিন্দির এই ধারণা। ডাক্তার জাইল দ্ এই কৃমি আসামের কালা-জরের কারণ বলিয়া নির্দেশ করিয়াছেন। এই জন্ম তিনি কালা-জরের এক্ষিলোফোরিয়েসিস নামকরণ করেন। এই রোগে আসামে প্রতি বৎসর ১০,০০০ সহস্রের অধিক মৃত্যু হইয়া থাকে। এঙ্কিলোষ্টোমন্, ডুওডিনন্ ও জুজুনমের উর্দ্ধভাগে অবস্থিতি করে এবং ইহার ডিম্ব রোগীর মলে পাওয়া যায়। ডাক্তার জাইল্স্ বলেন ইহারা মৃত্তিকায় বর্দ্ধিত হয় এবং ধূলার সঙ্গে খাদ্য দ্রব্যে মিশ্রিত হইয়া শরীরে প্রবেশ করে। কথনও বা পানীয় জলের সঙ্গেও প্রবিষ্ট হইয়া থাকে। জেঁক ফ্যারিংস এবং পোষ্টিরিয়র ন্যারিসে প্রবেশ করিয়া কফ্, নসিয়া, রক্তবমন প্রভৃতি উৎপাদন করে। একদা ৪০০ ফ্রেঞ্চ দৈন্ত এই কারণ বশতঃ হাঁদপাতালে ভর্ত্তি হইয়াছিল এবং অনেকের হিম্প টিসিসের স্থায় বারংবার ল্যারিংসের त्रज्याव रहेशां हिल।

#### (৭) ধাতুবিষ।-

দীদা, পারদ, আর্দেনিক, তাত্র এবং দস্তা পানীয় জলে মিশ্রিত হইয়া স্বস্থ লক্ষণ প্রকাশ করে।

## (৮) বৈজিক রোগ (SPECIFIC DISEASES) :-

#### ग्रांतियां ज्ता

এ বিষয় ছুইটা পরস্পর বিরোধী মত প্রচলিত রহিয়াছে। একদিকে অধ্যাপক কলিন, হার্য, প্রভৃতি পণ্ডিতগণ দ্বিত জল হইতে ম্যালেরিয়ার উৎপত্তি অস্বীকার করেন। অপরদিকে অতি বৃদ্ধ হিপোক্রেটিস্ হইতে আধুনিক মূর পর্যাস্ত অনেকে দ্বিত জল জরের কারণ বলিয়া নির্দেশ

করিয়াছেন। মাক্রাজের বেটিংটন বলেন তথাকার কতিপয় গ্রামে জরের প্রাহ্রাব ছিল, কতিপয় গ্রামে ছিল না। পানীয় জলের ব্যবস্থা ব্যতীত অভ সমুদয় বিষয়ে এই গ্রাম সমূহ সমভাবাপর ছিল। জরপ্রধান গ্রাম সমূহে জলার এবং নালার উদ্ভিদ পদার্থ পূর্ণ জলের ব্যবহার হইত। একটা গ্রামে ছই প্রকার জলের ব্যবস্থা ছিল; কেহ বা জলাজাত-জল পূর্ণ পুষ্করিণা এবং কেহ বা নিঝ রিণীর জল পান করিত। যাহারা পুষ্করিণীর জল ব্যবহার করিত কেবল তাহারাই জরাক্রান্ত হইত। টুল্লিবারী নামক গ্রামে জরের অত্যন্ত প্রাহ্নভাব ছিল; বেটিংটন তথায় কূপ খনন করিবার পর জর অন্তর্হিত হইয়াছিল। মধাভারতবর্ষের স্থানিটারী কমিশনর ডাক্তার টাউন্দেও বলেন যে যাহারা জাঙ্গল প্রদেশ ও ধান্তক্ষেত্রবাহিনী স্রোতস্বতীর জন পান করে তাহারা "এগু" (ague) দারা ভীষণরূপে আক্রান্ত হয়। হিমালয়ের পাদদেশে টেরাই প্রদেশে দকলের এই সংস্থার যে পানীয় कन रहेट गारनित्रा बरतत उर्পेखि। ह्कार्लान जीर्ग मस्यात कानीन ৩০ জন কুলী ঐ নদীর জল পান করিয়া, ৩ জন ব্যতীত, সকলেই প্রবল জ্রা-ক্রান্ত হইয়াছিল। ঐ পোলের সন্নিকটে একটা কূপ খনন করিবার পর হইতে সে স্থান অতিশয় স্বাস্থ্যকর হইয়াছে। আমাদের দেশে জন সাধারণের মনে এই সংস্থার আছে যে নদী ও পুন্ধরিণীর প্রথম বর্ষার জলপান মাত্র জর হয়। ডাক্তার ধর্মানাস বস্থ বলেন, তাঁহার ছোটনাগপুর অঞ্চলে ভ্রমণ কালে পাল্কী বেহারাগণ পাহাড়িয়া নদীর জল পান করিয়া জরাক্রান্ত হইত; কিন্তু তিনি ঐ জলবর্জনবশতঃ জরের হস্ত হইতে অব্যাহতি পাই-তেন। আমি ১৮৮৫ সালে গ্বর্ণমেণ্ট কর্ত্তক শ্রীহট্টের একটা ম্যালেরিয়া-कां ख थारा मार्गित्रपात कात्र निर्मात्र कत्रितात कल नियुक्त रहेग्राहिलाम। গ্রামে গ্রামে অনুসন্ধান করিয়া আমি এই স্থির করিয়াছিলাম যে (১) ক্ষুদ্র পার্ব্বতীয় নদীর তীরে জরের যত প্রাহর্ভাব, গ্রামের অভ্যন্তরে তত ছিল ন। ; (২) বৃহৎ নদীর তীরে জরের প্রকোপ ছিল না; (৩) ক্ষুদ্র পার্ব্ধতীয় নদীর জলে ঔডিদ পদার্থের আধিক্য ছিল এবং (৪) বর্ধার প্রারম্ভে জরের আরম্ভ হইয়াছিল। কলিকাতার নিকটবর্ত্তী মাালেরিয়াক্রান্ত গ্রাম সমূহে অনুসন্ধান করিয়া দেখিয়াছি চৈত্র বৈশাথ মাদে নদী পুকরিণী প্রভৃতি শুক হইয়া যায়

এবং তৃণবৃক্ষাদিতে সমাবৃত হয়। বর্ষার জলে সেই বৃক্ষলতাদি পচিয়া যায়।
এই দ্রবীভূত এবং অদ্রবীভূত উদ্ভিদ পদার্থপূর্ণ জল পান বশতঃ বর্ষারম্ভে
অরের অত্যন্ত প্রাহ্রভাব হয়। বালীগঞ্জ অঞ্চলে একটা দ্বিতল গৃহে কতিপয়
মৃক্তিফোজের সাহেব বাদ করিতেন। ঐ বাটীর মধ্যে একটা পুকরিণী
ছিল। সাহেবেরা পুনঃ পুনঃ জরে আক্রান্ত হইয়া কারণ অনুসন্ধানের জন্ত
হেল্থ আফিসে আবেদন করিয়াছিলেন। উক্ত পুকরিণীর জলে "লাভিরাণের জীবাণু" বা ম্যালেরিয়া বীজ পাওয়া গিয়াছিল।

জল হইতে ম্যালেরিয়ার উৎপত্তি সম্বন্ধে প্রমাণ যে কেবল ভারতবর্ধেই পাওয়া যায় এমন নহে। "আর্গো" কাণ্ড এ বিষয়ের একটা প্রসিদ্ধ উদাহরণ। একদা অল্ জিয়ার্স্ (Algiers) হইতে ৮০০ সৈন্ত লইয়া তিন থানি জাহাজ সমুদ্র যাত্রা করে। ছইথানি জাহাজের ৬৮০ জন সৈন্ত নির্বিদ্ধে মার্সেলিসে (Marseilles) পঁছছিল। "আর্গো" নামক জাহাজের ১২০ জন সৈত্রের মধ্যে ৯ জন ব্যতীত সকলেই ম্যালেরিয়া জরে আক্রান্ত হইয়াছিল এবং ১০জনের মৃত্যু হইয়াছিল। উক্ত জাহাজের নাবিকেরা এবং অপর ছইটা জাহাজের সৈত্রেরা বিশুদ্ধ জল পান করিত; তাহাদের একজনও জরাক্রান্ত হয় নাই। "আর্গো"র সৈত্রেরা একটা জলার জল পান করিত। সেই জলে এক প্রকার বিশ্বাদ ও ছর্গদ্ধ ছিল।

পার্কদ্ বলেন উদরাময় এবং আমাশয়ের বীজের ন্যায় ম্যালেরিয়ার বীজ জলে অতি শীঘ বর্দ্ধিত হইয়া সাংঘাতিক হয়। জলস্থ ম্যালেরিয়া বিষের জরোৎপাদন করিবার শক্তি অধিক; অথবা ইহা যত শীঘ রক্ত মিশ্রিত হইয়া প্রীহায় পরিচালিত হয়, বায়ুর দঙ্গে ফুসফুসে গিয়া তত শীঘ পরিচালিত হইতে পারে না।

ফিন্ধ, কলিন প্রভৃতি বিরুদ্ধ মতাবলম্বিগণ বলেন, অনেক স্থানে জলা-জল নিত্য ব্যবহৃত হইয়া থাকে, তথাচ জ্বর উৎপাদন করে না।

# **टे**† हेक्ट्सर्ड् ज्वत ।

টাইফয়েড্রোগীর মল দৃষিত জল দারা টাইফয়েড জ্বর ব্যাপ্ত হয়,এই কথা স্থাসিদ্ধ জেনার, বড, সাইমন্ ও হার্শ্ শ্বীকার করিয়াছেন। আর্নোল্ড্ বলেন উক্ত জলের টাইফয়েড্ জরোৎপাদন শক্তি অধিকক্ষণ থাকে না, কারণ টাইফয়েড্ব্যাসিলাস্ জলস্ত অপর ব্যাসিলাস দারা বিনষ্ট হয়।

স্থান তথাকার একটা নিঝ রিণীর জল যাহারা পান করিত তাহারাই আক্রান্ত হয়। তথাকার একটা নিঝ রিণীর জল যাহারা পান করিত তাহারাই আক্রান্ত হইয়াছিল। পর্বতের অপর পার্শ্বে একটা ক্ষুদ্র স্রোতস্বতী ছিল। ঐ জলেটাইফয়েড্ মল নিক্ষিপ্ত হইয়াছিল। ঐ স্রোতস্বতী "বাঁধ" দিবার পর পূর্ব্বোক্ত নিঝ রিণীর জল বিস্থাদ ও ঘোলা হইয়া পড়িল। তৎপর একদিনে ১০ জন এবং পরবর্তী নয় দিনে ৫৭ জন টাইফয়েড্ জ্বরে আক্রান্ত হয়। স্রোতস্বতীর জলে লবণ নিক্ষেপ করিয়া ঐ নিঝ রিণীর জলে লবণাস্বাদ পাওয়া গিয়াছিল। স্বতরাং স্রোতস্বতীর সঙ্গে নিঝ রিণীর যে যোগ ছিল তাহাতে সন্দেহ নাই।

১৮৭৮ দালে বিলাতের কেটারহাম ও রেড্হিল স্থান্থরে টাইফরেডের অত্যন্ত প্রাত্ত বি হয়। ডাক্তার থন্ থন্ অনুসন্ধান করিয়া স্থির করিলেন যে তথাকার কৃপজলে একজন টাইফয়েড্রোগীর মল নিক্ষিপ্ত হইয়াছিল। সেই জল যাহারা পান করিয়াছিল তাহারা টাইফয়েড্রোগে আক্রান্ত হয়। দমকল দ্বারা জল তুলিয়া ফেলিয়া কৃপ পরিস্বার করিবার পর রোগ অন্তর্হিত হইল।

ডহামের অন্তবর্ত্তী নিউ হ্যারিংটনে ১৮৮৯ দালে ছই মাদে ২৭৫ ব্যক্তিটাইফয়েড্জরে আক্রান্ত হয়। গবর্ণমেন্টের বিবরণীতে প্রকাশ হয় যে, একটা স্থাজ (sewage) পূর্ণ পুকরিণীর স্থাজে মৃত্তিকার চিড় দিয়া একটা গভীর কূপে প্রবেশ করিয়াছিল। ঐ কূপজল হইতে রোগের উৎপত্তি। ঐ চিড়ে লবণ নিক্ষেপ করিয়া দেখা গেল কূপের জলে ৫ গুণ ক্লোরিণ বৃদ্ধি হইয়া-ছিল। স্থতরাং ঐ চিড়ের সঙ্গে যে কূপের যোগ ছিল তাহাতে সন্দেহ নাই।

এইরপে দৃষিত জলজনিত টাইফয়েড্ বিস্তারের ভূরি ভূরি উদাহরণ দেওয়া ঘাইতে পারে। দৃষিত জল মিশ্রিত ছগ্ধ হইতে টাইফয়েড্ জরের উৎপত্তি সম্বন্ধে যথেষ্ঠ প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে।

জলজাত টাইফয়ডের লক্ষণ অতি শীঘ্র প্রকাশিত হয়। বায়ুজাত টাই-ফ্রেডের ইন্কুবেদন্ পিরিয়ড্ ৮ হইতে ১৪ দিন, জলজাত টাইফ্য়েডের, ২০০ দিন মাত্র।

#### कत्नता।

সর্ক্রপ্রথমে জেম্পন ১৮২০ সালে বঙ্গদেশ বিবরণীতে প্রকাশ করেন যে দ্যিত জল দারা কলেরা ব্যাপ্ত হইয়াছে। ১৮৪৯ এবং ১৮৫৫ সালে ডাক্তার স্নো বিলাতের ঘটনাবলী অবলম্বন পূর্ব্বক এই প্রমাণ করেন যে পানীয় জল হইতে কলেরার উৎপত্তি হইয়া থাকে। ১৮৬৫ সালের টাইন নদীর দ্বিত জলপান বশতঃ ঐ নদীর তীরবর্ত্তী নিউক্যাস্ল্ নগরে ওলাউঠার প্রান্তর্গার হইয়াছিল। পর বৎসরে লণ্ডনের পূর্ব্ব ভাগে এই রোগের প্রকোপ হয়। অনুসকানে প্রকাশ পায় তথাকার পানীয় জল দূষিত।

পেটেনকফার প্রভৃতি জর্মণ পণ্ডিত এবং এই দেশীয় কনিংহাম ও লুইস্ জলের ওলাউঠা-উৎপাদন শক্তি অস্বীকার করেন। কিন্তু ভারতবর্ষে এ বিষয়ে ভূরি ভূরি প্রমাণ পাওয়া যায়।

কলিকাতার স্থপ্রসিদ্ধ স্বাস্থ্যরক্ষক ডাক্তার সিমসন বলেন, পৃথিবীর নানা স্থানে অন্নসনান করিয়া তিনি এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন যে, সাধারণতঃ জল হইতেই ওলাউঠার বীজ শরীরে প্রবেশ করে এবং ঐ বীজ জলেতেই বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। যে পুদ্ধরিণীর চতুষ্পার্শস্থ বস্তিতে ওলাউঠার প্রাত্তবি হয়, তাহার জলে ওলাউঠার বীজ পাওয়া যায়। ডাক্তার সিমসন্ সম্প্রতি ১০০০ সহস্র পুদ্ধরিণীর জল পরীক্ষা করিয়া ওলাউঠা বিষদ্ধিত অনেক পুদ্ধরিণীর জলে "কমা" ব্যাসিলাস্ প্রাপ্ত হইয়াছেন।

কলিকাতা গড়পারে পরম্পরের সন্নিকটবর্ত্তী তিনটী পুন্ধরিণী ছিল। আমি ছুইটী পুন্ধরিণীর জল সংগ্রহ করিয়াছিলাম, এবং যে ছুইটী পুন্ধরিণীর জলে মলদূষিত বস্ত্রাদি প্রক্ষালিত হইয়াছিল, কেবল তাহাতেই "কমা" ব্যাসিলাস ১৪
দিন পর্যান্ত দেখিতে পাইয়াছিলাম। সেই জল ব্যবহার রহিত করিবার পর
ওলাউঠা প্রশ্মিত হইয়াছিল।

পুঁঠা বাগান কলিকাতার একটা বুহৎ পল্লী। মধাস্থানে একটা বুহৎ পুকরিণী। পুকরিণীর চতুর্দ্ধিকে দারি দারি খোলার ঘর। কলের জলের সম্পূর্ণ অভাব। এই পল্লীনিবাদী একজন ছত্র বিক্রেতা হাড়োয়ার মেলায় ছত্র বিক্রয় করিতে গিয়াছিল। তথায় লক্ষাধিক মুসলমান সমবেত হইয়া- ছিল; তন্মধ্যে বহুসংখ্যক যাত্রী ওলাউঠায় আক্রান্ত হয়। তথাকার একমাত্র পানীয় নদীজল দ্যিত হইল এবং ইহার ব্যবহার বশতঃ রোগ ক্রমশঃ
ব্যাপ্ত হইয়া পড়িল। ছত্র বিক্রেতা ভয়ে পলায়ন করিয়া পথিমধ্যে ওলাউঠায়
আক্রান্ত হয় এবং রুয় অবস্থায় পুঁঠা বাগানে প্রত্যাগমন করে। আগমনের
পরদিন তাহার মৃত্যু হইল। তাহার মল দ্যিত বস্ত্রাদি পুন্ধরিণীজলে প্রক্ষালিত হয়। সেই জলের ব্যবহার বশতঃ পুন্ধরিণীর তীরবাদী দশ ব্যক্তি
ওলাউঠায় আক্রান্ত হইয়াছিল। স্বাস্থ্যবিভাগীয় কর্মচারিগণ কর্তৃক পুন্ধরিণী
জলের ব্যবহার নিবারিত এবং মলবমনদ্যিত স্থানসমূহ ডিসইনফেক্টেণ্ট দারা
শোধিত হইবার পর ওলাউঠা দ্রীভূত হইল। মিউনিদিপালিটা কর্তৃক ঐ
পুন্ধরিণী ভরাট হইবার পর সেই পল্লিতে কথনও ওলাউঠার প্রান্ত্র্ভাব
হয় নাই।

বিবিবাগান কলিকাতা মিউনিদিপালিটীর একটী নবাধিকত পল্লী। ঐ পিলিনিবাদী একজন নাগরদোলা ব্যবসায়ী থড়দহ রাসমেলায় গমন করে এবং তথায় ওলাউঠা-আক্রান্ত হইয়া গৃহে প্রত্যাগমন করে। তাহার মল-সংযুক্ত বস্তাদি বস্তিপুদ্ধরিণীতে প্রকালিত হয়। অতি অল্প সময়ের মধ্যে পুদ্ধরিণী-তীরবাদী সাত ব্যক্তি ওলাউঠা-আক্রান্ত হইল। সর্ব্ধ ঐ জলের ব্যবহার নিবারিত এবং ডিদ্ইন্ফেকটেণ্ট ব্যবহৃত হইবার পর ওলাউঠা ঐ পল্লী পরিত্যাগ করে। পুদ্ধরিণী ভরাট হইবার পর হইতে তথায় ওলাউঠার প্রকোপ লক্ষিত হয় নাই।

কৃষ্ণবাগান কলিকাতার একটা প্রধান বস্তি। একদা ঐ পল্লীতে একজন ওলাউঠা রোগী চিৎপুর হইতে আনীত হয় এবং তাহার মল-লিপ্ত বস্তাদি বস্তিপুক্রিণীতে ধৌত হয়। অতি অল্ল দিনের মধ্যে পুক্রিণীর নিকটবর্ত্তী কুটারাবলিতে ১৬ ব্যক্তি ওলাউঠা-আক্রান্ত হয় এবং তন্মধ্যে ৯ জনের মৃত্যু হয়। স্বাস্থ্যবিভাগের উদ্যোগে অল্লকাল মধ্যে পুক্রিণী দমকল দ্বারা জল-শৃত্য করিয়া ভরাট করা হইয়াছিল। তদবধি কৃষ্ণবাগানবাসিগণ ওলাউঠা-ভয় শৃত্য হইয়াছে।

হবিগঞ্জ শ্রীহট্ট জেলার অন্তঃপাতী একটা প্রধান মহকুমা। ১৮৮৬ সালে তথায় একটা মেলা হয়। মেলাস্থানে ওলাউঠার প্রাছর্ভাব হইবামাত্র ভয়ে সকলে চারিদিকে পলায়ন করিতে লাগিল। পলাতকদিগের মধ্যে এক ব্যক্তিবিধাণা নামক নদীর তীরবর্তী এক প্রামে ওলাউঠার আক্রান্ত হইল। সেই সময়ে বিষণা নদী স্রোতবিহীন, শৈবালপূর্ণ এবং স্থানে স্থানে আবদ্ধ। প্রামের সমুদ্য মলমূত্রবাহিনী নালা ঐ নদীতে প্রবাহিত হইত। প্রামানাসিকণ নদীর তীরে মলমূত্র ত্যাগ করিত এবং জলে গো মহিষাদির সঙ্গে স্থান করিত। সে প্রামে এই জল ভিন্ন অন্ত পানীয় জলের ব্যবহা ছিল না। এই স্থান হইতে ওলাউঠা চতুর্দ্দিকে ব্যাপ্ত হইয়া যথন ভীষণ আক্রার ধারণ করিল, আমি ম্যাজিষ্ট্রেট কর্তৃক কারণ অনুসন্ধানে নিযুক্ত হইলাম। আমি স্পাষ্টরূপে এই প্রমাণ করিয়াছিলাম যে ওলাউঠা বিষণানদীর ছই পার্ম্বে গ্রাম হইতে গ্রামান্তরে উত্তরাভিমুথে অগ্রসর হইয়া এবং অন্ত একটা নদীর তিরোবর্তী গ্রাম পর্য্যন্ত উত্তীর্ণ হইয়া তিরোহিত হইয়াছিল। সেই নদী প্রশন্ত ও বিশুদ্ধ ছিল।

১৮৯১ সালের অর্জোদয় যোগে ১৫০০০০ দেড় লক্ষাধিক যাত্রী কালীঘাটে গঙ্গামানার্থ সমবেত হইয়াছিল। গঙ্গার তীরবর্ত্তী শ্বেতথানা হইতে প্রবাহিত এবং অসংখ্য নৌকারোহীদের পরিত্যক্ত মল জলে মিশ্রিত হইয়া ইহার য়্যালবুমিনয়েড য়্যামোনিয়ার বিগুণ বৃদ্ধি করিয়াছিল। এই জলে একটা ওলাউঠা রোগীর শব নিক্ষিপ্ত হয়। এই জলে মান ও এই জল পান করিবার জন্ম যাত্রীদের বিশেষ আগ্রহ। এই আগ্রহের বিষময় ফল কলিকাতাবাসী দিগকে তিনমাসকাল পর্যান্ত ভোগ করিতে হইয়াছিল। তিন মাসে ১০৬০জন ওলাউঠা রোগে প্রাণত্যাগ করে, তম্বধ্যে ৬২৮ জন অর্জোদয়যোগের যাত্রী। ডাক্তার সিমসন বলেন,কালীঘাটবাসী প্রায় সকলেই কলের জল পান করিত; তাহাদের মধ্যে অতি অল্প লোকেরই ওলাউঠা হইয়াছিল; কিন্ত বহুসংখ্যক বিশুদ্ধ জলপায়ী পুলিস ইন্স্পেইর, মিউনিসিগালিটার ইন্স্পেইর ও কুলী, যাত্রীদের পরিচর্যায় নিযুক্ত হইয়াও ওলাউঠাক্রান্ত হয় নাই; এই কারণে টলী নালার দ্যিত জলই রোগ প্রকোপের প্রধান কারণ বলিয়া প্রতীত হয়। ( ডাক্তার সিমসনের "তার্থযাত্রী ও কলেরা," ৬ পৃষ্ঠা )

দৃষিত জল হইতে ওলাউঠার বিস্তৃতি সম্বন্ধে এইরূপ অনেক দৃষ্টান্তের উল্লেখ করিতে পারা যায়। কলিকাতায় যে অংশে এখনও পু্দরিণী বিদ্যমান আছে, তথার প্রায় প্রতিবৎসর ওলাউঠার প্রাহ্রভাব হইয়া থাকে, কিন্তু যে সমুদ্র প্রার পুন্ধরিণী ভরাট হইয়াছে, তথায় ওলাউঠার অল্ল আবির্ভাব হইলেও এপিডেমিক আকার ধারণ করিতে পারে না।

কলিকাতায় জল-কল প্রতিষ্ঠার পর হইতে ওলাউঠা হ্রাদের বিবরণ আলোচনা করিলে জলের ওলাউঠা বর্দ্ধন শক্তি সম্বন্ধে আর সন্দেহ থাকে না। ১৮৬৯ সালের নবেম্বর মাদে জল-কলের প্রতিষ্ঠা হয়। এই ঘটনার পর কলেরার অকস্মাৎ হ্রাস হইয়াছে এবং পূর্ব্বের ন্তায় কথনও বৃদ্ধি হয় নাই। নিম্নলিখিত তালিকা ইহার প্রমাণঃ—

জ	ন-কল প্রতিষ্ঠার পূর্বে	জ	ল কল প্রতিষ্ঠার পর	
সাল	প্রতি সহস্রে ওলালঠা মৃত্যু	সাল	প্রতি সহস্রে ওলাউঠা মৃত্যু	
2696	>>.9	26-90	٥,٠	
১৮৬৬	>৫.9	2642	5.6	
১৮৬৭	¢.2	<b>১</b> ৮१२	₹.৫	
<b>३७७</b> ७	৯.৬	১৮৭৩	₹.৫	
तर प <b>र</b>	b.2	2646	2.5	

ভবানীপুর অঞ্চলেও জল-কল প্রতিষ্ঠার পর ওলাউঠার হাস হইয়াছে।

#### ७। यशना निर्फ्न वा जन भरीका खनानी।

পরীক্ষণীয় জল সাধারণতঃ অর্দ্ধ গ্যালন উইঞ্চেপ্তর কোয়ার্ট বোতলে সংগ্রহ করা হয়। সংগ্রহের পূর্ব্বে এই জলে বোতল বারম্বার ধৌত করা উচিত। জল পরীক্ষা হই প্রকার, কেশ্য়েশলিটেটিভ (qualitative) বা গুণনির্দ্দেশক এবং কেশ্য়েশণিটিটিভ (quantitative) বা পরিমাণ নির্দেশক।

## কোয়ালিটেটিভ্ পরীকা।

এই পরীক্ষা চারি প্রকার, যথা ফিজিকেল (Physical) বা ভৌতিক, কেমিক্যাল (Chemical) বা রাসায়নিক, মাইজোক্ষোপিক (Microscopic) বা আণুনীক্ষণিক, এবং বৃণয়লজিক্যাল (Biological) বা বৈজিক।

#### ভৌতিক পরীক্ষা।

একটী তিন ফিট উচ্চ কাঁচের গ্লাস পরীক্ষণীয় জলে পূর্ণ করিয়া এবং তত্ত্বা আর একটা গ্লাস পরিক্রত জলে পূর্ণ করিয়া আলোকিত স্থানে শুত্র কাগজের উপর পাশাপাশি রাখিতে হয়, এবং জলের উপরদিক দিয়া নিমে দৃষ্টি করিয়া উভয় জলের তুলনা করিতে হয়। বর্ণ—অতি বিশুদ্ধ জল নীলাভ। নীল বর্ণের কারণ ঔদ্ভিদ পদার্থ; এইরূপ জল সাধারণতঃ অনিষ্টকর নহে। অনিষ্টকর জল হরিদ্রা বর্ণ বা পিঙ্গলবর্ণ। সাধারণতঃ স্বয়েজ প্রভৃতি অর্গানিক পদার্থ মিশ্রিত হইয়া এই হুই বর্ণ উৎপাদন করে। কথনও কথনও "পীট" নামক সোলার স্থায় উদ্ভিদ অথবা লোহ হইতে এই বর্ণের উৎপত্তি হয়; তদ্রপ জল তত ভয়ের কারণ নহে। স্বচ্ছাস্বচ্ছতা—অদ্রবীভূত পদার্থের আধিক্য বশতঃ জল ঘোলা হয়। উজ্জলতা—উৎকৃষ্ট জল বায়ুপূর্ণ বলিয়া উজ্জল দেথায়। গন্ধ— কাচকর্কবদ্ধ বোতল কিয়ৎকাল স্বর্যালোকে বা গ্রম জলে রাখিয়া উন্মুক্ত করিলে হাইড্রোজেন সলফাইড্বা বিক্বত অর্গানিক পদার্থের তুর্গন্ধ অনুভব করা যায়। জল ফুটাইলে অনেক সময় তুর্গন্ধ বাহির হইয়া পড়ে। আস্মাদ —উৎকৃষ্ট জলে কার্যনিক য্যাসিড্ জনিত এক প্রকার স্থাদ পাওয়া যায়; পরিক্রত জলে তাহার সম্পূর্ণ অভাব। সর্ব্ধ প্রফার বিস্বাদ জল বর্জনীয়। দ্রবীভূত প্রাণিদেহজাত পদার্থের কোন আস্বাদ নাই। অতএব অতিশয় অনিষ্ট-কর জলেও অনেক সময় কোনরূপ বিকৃত আস্বাদ থাকে না। সেডিমেণ্ট (Sediment)—জলের নিমভাগে যাহা পতিত হয় তন্মধ্যে ধাতু কিম্বা উদ্ভিদ আছে কি না তাহা মোটা মোটি বুঝিতে পারা যায়। জলকীট জোঁক প্রভৃতি সহজেই দৃষ্ট হয়। কিন্তু অণুবীক্ষণ ব্যতীত ইহার ভাল পরীক্ষা হয় না।

#### রাদায়নিক পরীক্ষা।

অদ্রবীভূত পদার্থ ছাঁকিয়া লইয়া, কিম্বা নিমে স্থিত হইতে দিয়া, উপরিস্থ জল লইয়া পরাক্ষা করিতে হইবে। প্লাটিন্স্ কিম্বা রৌপ্য পাত্রে ঐ জল কিঞ্চিং লইয়া অল্প অল্প তাপ দিলে (ওয়াটার বাথে) কঠিন পদার্থ পড়িয়া থাকে। ঐ পদার্থ দীপশিথায় দগ্ধ করিলে যদি কৃষ্ণ বর্ণ হয়, তাহা হইলে অর্গানিক পদার্থের অন্তিত্ব ব্রিতে হইবে।

রি-য়্যাক্সন্ বা অমুক্ষারত্ব – লাল লিটমাস্ কাগজ ডুবাইলে যদি নীল রং হয় তাহা হইলে জল কার, এবং নীল লিটমাস্ কাগজ লাল হইলে জল অমু বুঝিতে হইবে।

ক্লোরীণ—ষ্টেট টিউবে কিঞ্চিৎ জল লইয়া দিল্ভার নাইট্রেট দলিউদন্ মিশ্রিত করিলে যদি শ্বেত প্রেদিপিটেট অধঃস্থ হয় তাহা হইলে ক্লোরীণের অস্তিত্ব বুঝায়।

চূণ প্রভৃতি ধাতুজনিত হার্ডনেস্ বা কাঠিয়—য়ালকহলে দ্বাভূত সাবানের সলিউন মিশাইলে যদি ফেণা না হয়, তাহা হইলে জল হার্ড বলিয়া বুঝিতে হইবে। যতক্ষণ পর্যান্ত ফেণা স্থায়ী না হয়, ততক্ষণ পর্যান্ত সাবানের সলিউসন্ মিশ্রিত করিতে হয়। মিশ্রিত সাবান সলিউসনের পরিমাণ দ্বারা প্রতি গ্যালন জলে কত গ্রেণ ক্যালিসিয়ম কার্বনেট্ আছে তাহা নির্ণয় করা যায়। ইহার প্রত্যেক গ্রেণ ক্লাক্সেলের এক ডিগ্রির সমান। এই স্কেল্ অনুসারে জলের "কাঠিন্য" বা হার্ড্নেস্ নিরূপিত হয়। জলের "হার্ডনেস্" ক্লার্ক স্কেলের ১০° ডিগ্রি বলিলে, এক গ্যালন জলে ১০ গ্রেণ ক্যালিসিয়ম কার্বনেট্ আছে এই বুঝিতে হইবে।

য়া নেমানিয়া — জলের সহিত নেস্লাস (Nessler's) সলিউসন্ মিশ্রিত করিলে যদি হরিদ্রাবর্ণ হয়, তাহা হইলে য়ামোনিয়ার অন্তিত্ব বুঝায়। অধিক র্যামোনিয়া থাকিলে পাটকিলা (yellow brown) বর্ণ হয়।

নাইটেট—তাপসংযোগে জল বাষ্পীভূত হইয়া গেলে যে কঠিন পদার্থ পড়িয়া থাকে, তাহার কিয়দংশ চীনের পাত্রের উপরে রাথিয়া, এক বিন্দু তীব্র সলকিউরিক য়্যাসিড্ ঢালিয়া ডাইকেনীল-আমীন (diphenyl-amine) ২০০ শরিষা প্রমাণ মিশ্রিত করিলে যদি উজ্জ্বল নীলবর্ণ উৎপন্ন হয়, তাহা হইলে নাইট্রেটের অন্তিম্ব ব্রিতে হইবে।

निष्ठि। इति च जाउन जल २। ४ विन् छाहेन् इ रहिष्प्राक्षातिक

য্যাসিড্ এবং সল্ফানেলিক য্যাসিড্ মিপ্রিত (Sulphanalie acid)
নাফ্থীল-আমীন হাইড্রোকোরাইড্ (naphthylamine hydrochloride) সলিউসনের ১০।১৫ বিন্ ঢালিলে যদি অতি স্থান গোলাপী
রং হয়, তাহা হইলে জলে নাইট্রাইট আছে, এই বুঝিতে হইবে।

হাইড্রাজেন্ সল্কাইড্—লেড্ য়্যাসিটেট্ সলিউসন্ নিপ্রিত করিলে যদি কুফ্রবর্ণ হয়, হাইড্রোজেন্ সল্ফাইড্ ইহার কারণ মনে করিতে হইবে।

সলকেট্ —কোরাইড্ অব ব্যারিয়ম এবং ডাইলুট হাইড্রোকোরিক র্যাসিড্মিপ্রিত করিলে যদি শ্বেতবর্ণ অধঃস্থ হয়, তাহা হইলে সলফেটের অস্তিস্বৃঝিতে হইবে।

লোহ—লোহিত এবং পীত পটাস্ প্রদেট এবং ডাইলুট হাইড্রোক্লোরিক ফ্রাসিড্ মিপ্রিত করিলে যদি নীলবর্গ হয় তাহা হইলে লোহের অন্তির বুঝায়।

অর্গানিক পদার্থ—ডাইলুট দলফিউরিক্ য়্যাসিড্ মিশ্রিত করিয়া পটাদ্ পার্ম্যাঙ্গেনেট্ দলিউদন ঢালিলে যদি দলিউদনের লেশহিত বর্ণ অদৃশ্য হয়, তাহা হইলেই জলে অর্গানিক পদার্থের অন্তিত্ব বুঝিতে হইবে।

#### পরিমাণনির্দ্দেশক পরীক্ষা।

এই পরীক্ষা ব্যয়সাধ্য; স্কৃতরাং সর্ব্বত অসম্ভব।

# আণুবীক্ষণিক পরীক্ষা।

এই পরীক্ষা ঝাইদের 💃 অণুবীক্ষণের সাহায্যে হইতে পারে।

#### বায়লজিক্যাল পরীক্ষা।

এই পরীক্ষার জন্মও অগুবীক্ষণের প্রয়োজন। পেপ্টোন নামক ব্যাক্টিরিয়ার থাদ্যে অল্ল জল নিক্ষেপ করিয়া ২৪ ঘণ্টা ইনকুবেটর যত্ত্বে রাথা আবশ্যক। তৎপর উক্ত পেপ্টোনে কাঁচের স্থল কাঠি বা ব্রিদ্ল্ (bristle) ভূবাইয়া টেইটিউবে পূরিত আগার আগারে ব্রিদল্ মৃহভাবে ব্লাইতে হয়। তংপর ২৪ ঘণ্টাকাল এই টেপ্টটিউব ইনকুবেটর নামক যন্ত্রের মধ্যে রাথা আবশুক। জলের ব্যাদিলাসপুঞ্জ শ্বেত নীল পীত বা লোহিত বর্ণের বিন্দু বা সরের স্থায় আগার আগারের উপর দৃষ্ট হয়। ব্রিস্লের অগ্রভাগে ঐ ব্যাদিলাস পুঞ্জের কিঞ্চিৎ লইয়া একখানা পরিষ্কার কাঁচের স্নাইডে মাথাইতে হয়, এবং তপ্ত আলকহল-ধোত ও এনিলাইন-রঞ্জিত করিয়া অগ্রীক্ষণ যন্ত্রে পরীক্ষা করিতে হয়। টিউবের তুলার প্লগ্ খুলিবার ও বন্ধ করিবার সময় টিউবের মুথ স্পিরিট ল্যাম্পে তপ্ত করিতে হইবে।

#### 8। ८ भाषन।

জলশোধনের উপায় ১৩ ত্রয়োদশ প্রকার:-

- (২) ডিষ্টিলেশন্ বা পরিস্রাবন—এই উপায়ে শোধিত জল যে অভি বিশুদ্ধ তাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু এই উপায় ব্যয়সাধ্য এবং এই জল বিস্থাদ।
- (২) ব্য়েলিং বা অগ্নি-কথন—জল দিদ্ধ করিলে ক্যালিদিয়ম কার্বনেট্
  এবং হাইড্রোজেন দলফাইড্ দ্রীভূত হয়, এবং লৌহ ও অর্গানিক পদার্থের
  হাদ এবং ব্যাক্টিরিয়ার বিনাশ হয়। পল্লিগ্রামে যদি দর্মদা এই সহজ উপায়
  অবলম্বিত হইত তাহা হইলে ওলাউঠা প্রভৃতি সংক্রোমক রোগের এত প্রাহ্ভাব পরিল্ফিত হইত না। অতি বৃদ্ধ স্থাত দ্বিত জল শোধনের দর্মকি
  প্রথম উপায় বলিয়াছেন "অগ্নি-কথনং" বা অগ্নিতাপে দিদ্ধ করা, তৎপরে
  বলিয়াছেন "স্থ্যাতপ প্রতাপনং" অর্থাৎ স্থ্যোতাপে প্রতপ্ত করা। দিদ্ধ
  জল ব্যবহারের নিমিত্ত আর্নেষ্ট হার্ট ভারতবর্ষে ও অন্যত্র অনেক স্থাম্মি বক্তৃতা
  করিয়াছেন; কিন্তু এ দেশে দিদ্ধ জলের ব্যবস্থা অতি প্রাচীন। এই প্রাচীনত্ব
  স্থাবণার্য "ব্য়েলিং" কথার অনুবাদ করা গেল "অগ্নি-কথন"।

- (৪) ফটকিরি প্রক্ষেপন—ফটকিরি দারা জলশোধনের প্রথা বছকাল হইতে প্রচলিত। ক্যালসিয়ম কার্বনেট ক্যালসিয়ম সলফেটে পরিণত হয়। এই ক্যালসিয়ম সল্ফেট ও য়্যালুমিনম্ হাইড্রেট ভাসনান পদার্থ-জড়িত হইয়া অধঃস্থ হয়। এক গ্যালন জলে ৬ গ্রেণ ফটকিরি প্রক্ষেপ করা উচিত।
- (৫) চূণজল প্রক্ষেপন বা পোর্টার ক্লার্ক প্রণালী—চূণ কার্ব-নিক য়াসিডের সঙ্গে মিশ্রিত হইয়া অধঃস্থ হয়। তৎপর পরিস্কার জল ছাঁকিয়া লইতে হয়। এই উপায়ে অর্গানিক পদার্থ অনেক পরিমাণে বিদ্রিত করা যায়; কাহার কাহারও মতে ইহাতে লোহও দ্রীভূত হয়।
- (৬) সোডিয়ম্ কার্বনেট প্রক্ষেপন—জল সিদ্ধ করিয়া সোডিয়ম কার্বনেট প্রক্ষেপ করিলে চূণ এবং কিয়ৎ পরিমাণে সীনা অধঃস্থ হয়।

মেগনেন প্রণালী অনুসারে লাইম, সোডিক কার্বনেট এবং ফটকিরি
মিশ্রিত "এণ্টি-কেন্কের" (anti-calcaire) চূর্ণ প্রক্ষেপ করিলে ইহার ফটকিরি
সংযোগে অর্গানিক পদার্থ অধঃস্থ হয়, এবং সোডিক কার্বনেট সংযোগে চূর্ণ
এবং ম্যাগনিসিয়া পৃথক্ হইয়া পড়ে।

- (१) লোহ ক্ষেপ্ন—বৃদ্ধ স্থশত তপ্ত লোহ ক্ষেপনের ব্যবস্থা করিয়া-ছেন। মেডুক প্রণালী অনুসারে লোহ তার এবং ম্যাগনেটিক অক্সাইড্
  অব্ আয়রণ জলে ডুবাইয়া রাখিতে হয়। এতদ্বারা নাকি অর্গানিক পদার্থ
  ডিকম্পোজ বা বিশ্লেষিত হয়। কখনও বা ফেরিক অক্সাইডের সঙ্গে অঙ্গার
  মিশ্রিত হয়। হলও প্রদেশের কর্দম ও অদ্রবীভূত অর্গানিক পদার্থ
  মিশ্রিত জলে পার্কের্গরাইড অব্ আয়রণ (এক গ্যালনে ২২ গ্রেণ) প্রক্ষেপ
  করিয়া ইহার উদরাময় উৎপাদন শক্তি বিনাশ করা হইত। আয়রণ
  পার্কের্গরাইডের অক্সিডাইজ্ বা দহন করিবার শক্তি অতি প্রবল। য়্যাণ্ডাসনের প্রণালী অনুসারে স্পঞ্জি আয়রণ বা স্ক্রাপ আয়রণ টুকরা টুকরা করিয়া
  জলের সঙ্গে খ্ব নাড়িতে হয়। এই প্রণালীতে কার্ননেট অব্ আয়রণ
  উৎপন্ন হয় এবং বায়ুর অক্সিজেন সংযোগে দগ্ধ হইয়া অধঃস্ব হয়।
- (৮) কণ্ডিস্ ফু ইড প্রেক্সেপন—০।৪ গ্যালন, ছর্গন্ধর ও দ্বিত জলে এক এক টি-স্পুন্ত্ল (tea-spoonful) করিয়া বিশুদ্ধ কণ্ডিস ফু ইড্ প্রাক্ষেপ করিতে হয় এবং ক্রমাগত নাড়িতে হয়। জলের বর্ণ

জীবং লাল হইবামাত্র ৫ মিনিট কাল বিরাম করিতে হয়; লোহিত বর্ণ যদি অদৃশ্য হয়, ৩৬ বিন্দু এবং আবশ্যক হইলে আরও ৩০ বিন্দু কণ্ডিস ফ্লুইড্ মিশ্রিত করিয়া ৬ ঘণ্টাকাল জল এক স্থানে রাখিয়া দিতে হইবে। তৎপর প্রতি গ্যালনে ৬ গ্রেণ ফটকিরি প্রক্ষেপ করিবে। যদি জল "সফ্ট্" হয় তাহা হইলে তাহাতে অল্প ক্যালসিয়ম কোরাইড ও সোডিয়ম কার্বনেট মিশ্রিত করিয়া ১২—১৮ ঘণ্টা কাল রাখিয়া দিতে হইবে। বিশুদ্ধ কণ্ডিস্ ফ্লুইড্ জলের হাইড্রোজেন সল্ফাইড্ ও নানাপ্রকার হুর্গন্ধ বিনাশ করে। ইহা দারা অর্গানিক পদার্থ কিয়ৎ পরিমাণে শোধিত হয়। ইহার দক্ষণ যে ঈষৎ হরিদ্রাবর্ণ উৎপন্ন হয় তাহা অনিপ্তকর নহে। ফটকিরি সংযোগে এই বর্ণ কথনও কথনও তিরোহিত হয়।

- (৯) ট্যানিনপ্রধান য়্যাঞ্জিণ্টে উদ্ভিদ প্রক্ষেপন—চা বা কাইনো নিক্ষেপ করিয়া সিদ্ধ করিলে দূষিত জল বিশুদ্ধ হয়। চীন দেশে এই প্রথা আছে। মিশরে তিক্ত বাদাম এবং বার্করি দেশে লরিয়ার গোলাপ নামক ফুল পাত্রে ঘর্ষণ করিয়া জল শোধিত করা হয়।
- ( > ) নির্মালী ঘর্ষণ—নির্মালীর বীজ ২।১ মিনিট পাত্রের অভ্যন্তরে ঘর্ষণ করিয়া জল কিয়ৎক্ষণ রাথিয়া দিলে অদ্রবীভূত ময়লা অধঃস্থ হয়।
- ( >> ) অঙ্গার দারা শোধন—জলে অঙ্গার নিক্ষেপ করিলে, কিষা কার্চ পিপার অভ্যন্তর দগ্ধ করিয়া তন্মধ্যে জল রাখিলে, জলের অর্গানিক পদার্থ শোধিত হয়। কিন্তু সময়ে সময়ে অঙ্গার পরিবর্ত্তিত কিষা পিপার অভ্যন্তর পুনদ গ্ধ করা উচিত। ফ্রাঙ্কল্যাণ্ড বলেন কোক (Coke) কয়লার ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র টুকরা ফেলিয়া নাড়িলে জলের য়্যানিমেল ম্যাটার দূরীভূত হয়।
- (১২) উদ্ভিদ দ্বারা শোধন—পাট শেওলা, লালপদ্ম, শুষণা প্রভৃতি হইতে অক্সিজেন নির্গত হইয়া জল শোধিত করে। স্থপ্রসিদ্ধ ফেরার এবং ইউয়ার্ট বলেন পুন্ধরিণীতে কুন্তিকা (পানা) এবং শৈবাল নিক্ষেপ করিলে দ্রবীভূত অর্গানিক পদার্থ বিনষ্ট হয়।
- (১০) ফিল্টুশন্বা ছাঁকন—ফিল্ট্শনের উদ্দেশ্য ত্রিবিধঃ—(১) জনের অদ্রবীভূত পদার্থ ফিলটারের ছিত্রে সংলগ্গ হইয়া থাকে;

(২) দ্রবীভূত পদার্থ ও কিয়ৎ পরিমাণে ছিদ্র সংলগ্ন হয়; (৩) কিলটারো-ৎপর অথবা জলে-মিশ্রিত-পার্যাক্লেনেটোৎপর অক্সিজেন্ সংবোগে জলের অর্থানিক পদার্থ দগ্ধীভূত (oxidised) হয়।

किल्होतिः त्यिवितिरम्न व किल्होत्तत छेशानाम-नाधातपङः ৯ প্রকার। শ্বেত বালুকা দারা হল্ম কর্দমকণা ভিন্ন সমুদন্ন অন্তবীভূত পদার্থ দ্রীভূত হয়; বালুকা তার পুরু হইলে দ্রীভূত ধাতব পদার্থ ও আকর্ষণ করিয়া থাকে। ডাক্তার পাদি ক্রান্ধ্লাও বহু ফিলটারের উপাদান গবেষণার পর স্থির করিয়াছেন যে স্থল্ম খেত বালুকা (Filtering ভালরপে ধৌত এবং অগ্নি-তপ্ত হইলে জল হইতে material) কিয়ৎ পরিমাণে ব্যাকটিরিয়া আকর্ষণ করিতে পারে। কিন্ত সাধারণ বালুকা অপেকা লোহ মিশ্রিত সবুজ বালুকার এই গুণ অধিক। বালুকার দকে কল্পর মিশ্রিত ইইয়া থাকে। স্প্রপ্ত অদ্রবীভূত পদার্থ, আকর্ষণ করে, কিন্তু ইহা কীটজ পদার্থ এবং শীঘ্র ময়লাপূর্ণ হয়; এইজন্ত ফিলটারের অনুপ্যোগী। অস্থি-অঙ্গার সংযোগে জলের অদ্রবীভূত পদার্থ, দ্রবীভূত গ্যাস, এবং সীসা প্রভৃতি দ্রবীভূত ধাতব পদার্থ দূরীভূত হয়, এবং কিয়ৎকাল পর্য্যন্ত দ্রবীভূত অর্গানিক পদার্থ ও ইহা দ্বারা সম্পূর্ণরূপে দগ্ধীভূত ( oxidized ) হয়। কিছুকাল পরে, ইহার এই দহন শক্তির হ্রাস হয়। অন্থি-অঙ্গারের ব্যাকটিরিয়া-আকর্ষণ শক্তি নাই। কার্চ্চ অঞ্চারের এই শক্তি আছে; কিন্তু অস্থি-অঙ্গারের ন্থায় ইহার রাসায়নিক শক্তি নাই। পার্ক স্ বলেন (১) জলে কার্বন ফিল্টার অধিকক্ষণ রাখা উচিত নয়, কারণ কিছুকাল পরে কার্বন জলের অর্গানিক পদার্থ আকর্ষণ করিতে থাকে; (২) অঙ্গার-শোধিত জল অধিকক্ষণ সঞ্চিত করিয়া রাখা উচিত নয়; রাখিলে স্ক্র স্ক্র জীবাণু ও উদ্ভিদণুতে পরিপূর্ণ হয়; (৩) রোগ-বীজ-দূষিত জল অঙ্গার দ্বারা শোধিত হয় না ; (৪) প্রতি সপ্তাহে কিম্বা প্রতি পক্ষে অঙ্গার পরিষ্ঠত কিম্বা পরিবর্ত্তিত করা উচিত; কারণ অঙ্গারের শোধন-শক্তি ক্ষণস্থায়িনী। কোকের প্রথমতঃ জীবাণু ও উদ্ভিদণু আকর্ষণ শক্তি খুব অধিক থাকে, কিন্তু কিরৎক্ষণ পরে এই শক্তির হ্রাস হয়। স্পঞ্জি আগ্যারণের ফিলটার-শক্তি অঙ্গার অপেক্ষা অধিক। ইহা দারা শোধিত জল, অনেক কাল সঞ্চিত থাকিলেও,

দ্বিত হয় না। গেরি মাটী দগ্ধ করিলে এই পদার্থ উৎপন্ন হয়। ইহা চুম্বক মিশ্রিত সচ্ছিদ্র লোহ মাত্র। এই গেরিমাটি সমভাগ করাতের গুঁড়া সহ-বোগে দগ্ধ করিলে ম্যাণগনেটিক কাব হিড্ প্রস্তুত হয়। ইহার চূর্ণ বালুকা-মিশ্রিত করিয়া ফিলটারে ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ক্রীসের ফিলটারে (Crease's Filter) কাবে লাইট নামক এক প্রকার পদার্থ ব্যবহৃত হইয়া থাকে। ইহার অর্গানিক পদার্থ শোধন শক্তি নাকি অতিশন্ন প্রবল। পোলারাইট নামক, বালুকা (Silica) ম্যালুমিনা এবং আমরণ অক্সাইড মিশ্রিত পদার্থ স্পঞ্জি লোহের সমত্বা।

উৎকৃষ্ট ফিলটাবের নিম্নলিথিত গুণু থাকা আবশ্রক:—

- ১। ফিলটারের প্রত্যেক অংশ খুলিয়া পরিষ্কার করিবার এবং ফিল্টারের উপাদানসমূহ পরিবর্ত্তিত করিবার ব্যবস্থা থাকা চাই।
- ২। ফিলটারের উপাদান অধিক পরিমাণে থাকা চাই। ইহার অর্গানিক পদার্থ শোধন এবং ব্যাকটিরিয়া প্রভৃতি আকর্ষণ করিবার শক্তি থাকা আবশুক।
- (২) ফিল্টারিং মেটিরিয়েলের অভ্যন্তর হইতে এমন কোন পদার্থ নিঃস্থত হওয়া উচিত নয় যাহাতে জীবাণু ও উদ্ভিদণুর বৃদ্ধি হয়।
  - (8) শোধন শক্তি স্থায়ী হওয়া আবশ্যক।
- (৫) ফিল্টার এমন কোন দ্রব্যে প্রস্তুত হওয়া উচিত নয় যাহা পচিতে পারে অথবা কোন প্রকারে জল দূষিত করিতে পারে।
- (৬) ফিল্টারিং মেটিরিয়েল ময়লায় বুজিয়া যাইবে না এবং ইহার ভিতর দিয়া জল আদিতে অধিক বিলম্ব হইবে না।

স্পঞ্জি আয়রণ, ম্যাগ্নেটিক কার্বাইট্, এবং পোলারাইটে এই সমুদয় গুণই প্রায় বিদ্যমান। শীঘ্র জল পরিষ্কার করিতে হইলে অস্থি-অঙ্গারের ফিল্টার ব্যবহার করা উচিত।

গৃহস্থগণ সচরাচর নিম্নলিথিত প্রণালীতে জল ফিল্টার করিয়া থাকেন।
কাষ্ঠ বা বংশনির্দ্মিত ত্রিপদ ফ্রেমের উপর ৪টা কলসী উপর্য্যুপরি রাখা হয়।
স্থান উপরিস্থ তিনটা কলসীর নিম্নে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ছিদ্র থাকে।
সর্ব্বোচ্চ বা প্রথম কলসীর অর্দ্ধভাগে পরিকার খেত বালুকা
এবং অঙ্গার চূর্ণে পূর্তি; দিতীয় কলসীর অর্দ্ধভাগে ক্ষুদ্র ক্ষুর ও

অঙ্গার, এবং তৃতীয় কলসীর অদ্ধিভাগে বৃহৎ কম্বর এবং অঙ্গার। চতুর্থ কলসীর মুথ একথানা পরিষ্ণার বস্ত্রে আচ্ছাদিত হয়। প্রথম কলসীতে জল দিদ্ধ করিয়া ঢালিলে, বিশোধিত হইয়া, চতুর্থ কলসীতে পড়ে।

ফিলটার শোধন—ন্তন ফিল টার ১০।২০ গ্যালন ভাল জল ধারা, ধৌত করা উচিত এবং ধূলা প্রভৃতি সমুদয় ময়লা পরিকার করা উচিত। অঙ্গার চূর্ণ বা দানা তিন মাস অন্তরে পোড়াইয়া লাল করিয়া পরিস্কার জলে ধৌত করা আবশুক। অল্ল য়্যাসিড ও কণ্ডিস্ ফ্লুইডে ধুইয়া রৌজে শুক করিলেও চলিতে পারে। স্পঞ্জি লোহ প্রায় এক বৎসরকাল অবিকৃত থাকে। যাহা হউক, ইতিপূর্ব্বে ইহার শক্তিক্ষয়ের আভাস পাইলে অয়ি ঘারা শোধিত করা উচিত।

# দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

#### পরিমাণ।

প্রতিদিন কি পরিমাণ জলের প্রয়োজন? ডাক্তার পার্ক্ বলেন প্রত্যেক ব্যক্তির প্রতিদিন ১২ গ্যাশলন জলে এক রকম চলে। কিন্তু ভাল রূপ স্নানের জন্য আরও ৪ গ্যালন, স্বতরাং স্ব্রিশুদ্ধ ১৬ গ্যাশলন জলের প্রয়োজন।

	পার্দের জল	া ব্যবস্থা ;—	গ্যালন
পানের জন্ম	•••	•••	.08
तकत्नत जना	• • •	• • •	.90
স্নানের জন্ম ( স্প	ন্বাথ)		
তৈজদ পত্ৰ ও গৃহ	প্রকালনে	র জন্ম	٥.0
বস্ত্র প্রকালনের জ	ন্থ . • •		٥. ٥
		-	

त्गां ३२.०४

#### জল আহরণ।

এই	দেশের	পকে	ডাক্তার	কিং	নিয়লিথিত	ব্যবস্থা	করিয়াছেন	°
----	-------	-----	---------	-----	-----------	----------	-----------	---

			ग्रां वन
পানের জন্ম	• • •	•••	.8
রন্ধনের জন্ম 🗀 🐪		***	٠.৬
মানের জন্ম ( কলসী ধৃত	জলে)		\$2.0
গৃহ প্রকালনের জন্ম			2.0
তৈজ্য পত্র প্রকালনের জ	য	•••	٥.٥
		-	মোট ১৮ গ্যালন

অভাব প্রেক্ক (Minimum) সর্বশুদ্ধ ৪ গ্যাপ্রন চাই। হাসপাতালে প্রত্যেক রোগীর জন্ম অন্যুন ৩০ গা**শলন** জলের ব্যবস্থা থাকা উচিত।

# তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

#### আহরণ, সঞ্চয় ও বিতরণ।

- (ক) সাধারণতঃ বৃষ্টি, নদী, থাল, বিল, প্রস্রবণ, পুষরিণী ও কুপের জল এবং পরিস্রুত জল, এই জন্ন প্রকার জল আহত ও ব্যবহৃত হইয়া थादक।
- বৃষ্টি—বৃষ্টির জল অতি বিশুদ্ধ। কিন্তু সর্বাদা এই জল পাওয়া যায় না, এবং ইহার পরিমাণেরও কিছু স্থিরতা নাই। যে সমুদায় স্থানে কূপ বৃষ্ট জল সংগ্রহের প্রস্তাব প্রভৃতির জল অব্যবহার্য্য, তথায় এই জল ব্যবহৃত সহজ উপায় হয়। চারিটা বংশ স্তম্ভ মৃত্তিকায় প্রোথিত করিয়া তত্নপরি একথানা পরিষার বস্ত্র বিস্তৃত করিতে হয় এবং মধ্যস্থলে একটা প্রস্তর চাপাইতে হয়। মধ্যস্থলের নিমে রক্ষিত একটী টব, গামলা বা জালায় জল সংগৃহীত হইতে পারে।

- (২) নদী—যে দেশে স্থরক্ষিত পুন্ধরিণী কিম্বা কুপ নাই, তথায় শোধন পূর্বাক নদীজল পান করা যাইতে পারে। স্রোতজল চর্মের টনিক, এইজন্ত নদীজলে স্নান প্রশস্ত। মল মৃত্র ত্যাগ, মৃত দেহাদি নিক্ষেপ প্রভৃতি যে সমুদ্য কারণে নদীজল বিক্বত হয়, নগর ও গ্রামবাসীদের চেষ্টায় তাহা নিবারিত হইতে পারে।
- (৩) খাল—জনাল্লতা ও স্রোতাভাব বশতঃ খালের জন সাধারণতঃ বিক্বত এবং অপেয়।
- (8) বিল—বিলের জল সাধারণতঃ স্থতার ও লঘু, কিন্তু নানা কারণ-বশতঃ ইহা বিকৃত হইয়া পড়ে।
- (৫) প্রস্রবণ—যে স্তর ভেদ করিয়া প্রস্রবণ উৎসারিত হয়, জল তাহারই গুণ গ্রহণ করে। প্রস্রবণ জল সাধারণতঃ স্থস্বাত্। প্রস্রবণ ক্পের স্থায় স্থরক্ষিত হওয়া উচিত।
- (৬) পুক্ষরিণী—ফান্তুণ, চৈত্র কিম্বা বৈশাথ মাদে বিশুন্ধ ভূমিতে পুক্ষরিণী থনন করিবে; যাহাতে সমস্ত বংসর জল থাকে এরপ গভীর হওয়া উচিত। উপরিস্থিত বালুকাস্তরের নিম্নে যে "জাটাল মাটী"র স্তর, তাহার নিম্নন্থিত বালুকাস্তর থনন করিতে হয়। পাড় উচ্চ রাথা আবশুক। পাড়ে কোন প্রকার বৃক্ষ রোপন অবিধেয়। জলে পাট শেওলা, লালপদ্ম, শুষণা প্রভৃতি থাকিতে পারে। কিন্তু পানা প্রভৃতির ভিতর হইতে এক প্রকার উগ্রকটু (Acrid) পদার্থ বহির্গত হইয়া জল দ্বিত করে। পুক্রিণীর ৫০ ফুটের মধ্যে শ্বেতথানা রাথা অন্তুতি। ১০০২ বংসর অন্তর পুক্রিণী ঝালান উচিত। জনিষ্টকারী বা পচা উদ্ভিদ্দ উঠাইয়া ফেলিতে হয়।
- (৭) কুপ কৃপ তিন প্রকার, গভীর, অগভীর এবং আর্টি সিয়ান।
  ১০০ ফুট বা তদধিক গভীর কুপকে, গভীর কুপ (Deep well) বলা যায়।
  তীপ্ত খালো ওয়েল
  (Deep & shallow well) শ্রেণীর অন্তর্গত। আর্টি সিয়ান্ ওয়েল বা
  well)
  তিউব্ ওয়েল প্রথমতঃ ফ্রান্সের অন্তর্গত আর্টয়েদ্
  প্রদেশে প্রচলিত হয় বলিয়া ঐ স্থানের নামেই আ্থ্যাত। ইহা এক প্রকার

ট্যাপু করিবার প্রকাণ্ড ট্রোকার্ ক্যানিউলা বিশেষ। স্থলীর্ঘ লৌহ ক্যানিউলা वा ि छैदवत वाम २।० इकि। इंशत निम्न हार जातन আটি সিয়ান ওয়েল গুলি ছিদ্র থাকে এবং মুথে ট্রোকারের অগ্রভাগ মাত্র (Artesian well সংলগ্ন। টিউবের অভ্যন্তর শৃত্ত। ট্যাপ্করিয়া যজপ টোকার উঠাইয়া লইতে হয়, ইহাতে তদ্রপ করিতে হয় না। টোকার-মুখ জলের স্তর ভেদ করিবামাত্র টিউবের ছিদ্র দিয়া জল উদ্ধে উত্থিত হয়। এই ক্ষত্রিয় প্রস্রবণের জল কখনও কখনও টিউব অতিক্রম করিয়া উঠে। জল ডত উর্দ্ধে উথিত না হইলে, দমকল দারা তুলিতে হয়। উদ্ধ স্রোতের বেগ অতিশয় প্রবল বলিয়া জলের সঙ্গে বালু প্রভৃতি উথিত হয়। দৈত্তদলের সঙ্গে এই প্রকার "টিউব ওয়েল" (Nortons' tube-well) প্রায় নীত হইয়া থাকে। কূপ জলের স্থায়িত্ব নির্দারণ করা আবশ্যক। পার্ব্ধত্য প্রদেশে পর্ব্ধতের নিম্নদেশে এবং চৃণপ্রস্তরময় ভূমিতে কৃপ স্থামী হয় এবং বালুকা প্রস্তর স্তরে খনিত গভীর কৃপেও প্রায় সর্ব্বদাই জল থাকে। চাথড়ি স্তরে কৃপ প্রায় স্থায়ী হয় না। বৈশাথ মাসে বিশুদ্ধ ভূমিতে কৃপ খনন করিবে। নিকটে যেন কোন সমাধিভূমি, ডোবা, কুপ খনন। थाना निकाम, ता मयनाशृर्व द्यान ना थारक। कृष अर्कमारेन পর্য্যন্ত ময়লা আকর্ষণ করিতে পারে, এই কথাটী স্মরণ রাখা কর্ত্তব্য। কৃপ মুখের তিন ফুট উর্দ্ধ এবং কুপের নিম্নদেশ পর্য্যন্ত পাট থাকা আবশুক। ব্যাস অন্ততঃ ৩ হস্ত পরিমিত হওয়া উচিত। পাটের বাহিরের দিক ঢালু করিয়া বাঁধাইতে হইবে। কুপের তলায় চূণ, কন্ধর এবং বালু ঢালিতে হয় এবং প্রতি বৎসর বর্ধার পূর্ব্বে তলা পরিষ্কার করিয়া বালু ও কঙ্কর পরিবর্ত্তন করিতে হয়। দমকল দারা জলোত্তোলন করা বিধেয়। জল তুলিবার জন্ম একটী সাধারণের গ্যালভানাইজ্ড লৌহ কিম্বা কাষ্ঠের বাল্তি রাখা যাইতে পারে; কিন্ত কাহারও নিজের ঘটি ব্যবহার করা উচিত নয়। ওলাউঠা রোগীর ঘটি হইতে এইরূপে ওলাউঠার বীজ কূপজলে প্রবেশ করিতে পারে।

(৮) পরিস্রত জল—জাহাজে সামুদ্র জল পরিস্রত করিয়া ব্যবহার করা হয়। পরিস্রত জল বায়ুহীন ও স্বাদংীন। এইজন্ম সচ্ছিদ্র পিপায় ঢালিয়া বায়ু মিশ্রিত করা হয়। (খ) এই দেশে সাধারণতঃ ইষ্টক নির্দ্ধিত চৌবাচ্চা, ও মৃত্তিকা নির্দ্ধিত
জালা, কলসী এবং কুঁজায় জল সঞ্চিত হয়। পানীয়জলাধার অনাবৃত রাখা অনুচিত।

(গ) সাধারণতঃ ভিস্তির মসকে কিম্বা কলসীতে পূরিয়া জল আনীত হয়। কলিকাতার স্থায় বৃহৎ নগর সমূহে দমকল ও ধাতুনল দারা জল গৃহে গ্রহে সঞ্চালিত হয়। কলিকাতার ১৬ মাইল উত্তরে বিতরণ। পলতা নামক গ্রামে দমকল দারা গঙ্গা হইতে ভটী ইপ্তক নির্মিত পুষরিণীতে জল উত্তোলিত হয়। তথায় ৩৬ ঘণ্টা স্থিতির (Subsidence) পর অদ্রবীভূত পদার্থ অধঃপতিত হয়। তথা হইতে জল লোহ নল দিয়া একটী ইষ্টক নির্শ্বিত ফিল্টার পুষ্করিণীতে আইসে। এই কলিকাতার জলের কল পুন্ধরিণীর সর্বোপরি খেত বালু, তাহার নিয়ে মগরার হরিদ্রাবর্ণ বালু,এবং তাহার নিম্নে কঙ্কর। এই স্থানে জল শোধিত হইয়া লোহনল দ্বারা বারাকপুর ও টালায় আনীত হয় এবং টালা হইতে ওয়েলিংটন স্কোয়ারে. হালিডে খ্রীটে ও ভবানীপুরে আবৃত পু্ক্ষরিণীতে সঞ্চিত হইয়া থাকে। এই সমুদ্য আরত পুষ্করিণী হইতে লোহনল ও সীসানল দ্বারা গৃহে গৃহে জল সঞ্চালিত হয়। ডাক্তার আঙ্গাদ্ স্মিথের বার্ণিদ্ যুক্ত লোহনল কলিকাতায় ব্যবহৃত হয়। এই নলের জলে প্রথমতঃ আল্কাত্রার গন্ধ পাওয়া যায়, কিন্তু কিছুকাল পরে তিরোহিত হয়।

# চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

#### অজ্ঞাত স্থানে জলাৱেষণ।

সমভূমির অপেক্ষাকৃত নিম্ন স্থানে নর্টণ টিউব-ওয়েল ( Norton's tube-well ) দ্বারা মৃত্তিকা ভেদ করিয়া জল অন্বেষণ করিতে হইবে। পার্ব্বত্যি প্রেদেশে পর্বতের নিম্ন দেশে এবং ছইটা উপত্যকার সংযোগ স্থানে কৃপ থনন করিবে। নর্টণ টিউব-ওয়েল দ্বারা মিনিটে ৭ গ্যালন জল সংগৃহীত হয়।

# দ্বিতীয় অধ্যায়।

#### বায়ু।

নিশাস প্রখাদের জন্ম প্রতি মুহুর্ত্তে বায়ুর প্রায়োজন। বিশুদ্ধ বায়ুই রক্তশোধনের একমাত্র উপায়। মাঠের নির্মাল বায়ু সেবনে ক্লযকদের দীর্ঘায়ুলাভ, বায়ুর প্রয়োজনীয়তা লাভ এবং বায়ু পরিবর্ত্তনে কঠিন রোগীদের স্বাস্থ্যলাভ, বিশুদ্ধ বায়ুর উপকারিতার উজ্জ্ঞল দৃষ্টান্তস্থল। যে সমুদ্ধর স্থানে লোক সমাগম ও মলমূত্রের আধিক্য বশতঃ মৃত্যু সংখ্যা অধিক ছিল, তথায় পরিকার প্রশন্ত রাজপথ ও মলমূত্র নিগমনের প্রণালী নির্মাণ করিবার পর, মৃত্যু সংখ্যার অনেক হ্রাম হইয়াছে। বিশুদ্ধ বায়ুই এই হ্রাসের একমাত্র কারণ। ক্ষুদ্ধ শিশু এবং পশু পক্ষী বৃক্ষলতাদি পর্য্যন্ত বায়ুর নিয়মাধীন। দেশীয় স্থতিকাগারে নবজাত শিশুদের মৃত্যুর প্রধান কারণ দৃষিত বায়ু। ক্ষুদ্ধ এবং অপরিক্ষার অস্থশালা ও গোশালার পশুগণ নানাবিধ রোগে আক্রান্ত হয়। বায়ু ও আলোক হীন স্থানে বৃক্ষলতাদি বিবর্ণ হইয়া মরিয়া যায়।

#### विखन्न वायुत छेथानान :--

			সহস্র ঘন ফুটে
অক্সিজেন	•••	• • •	২০৯.৬ ঘন ফুট
নাইট্রোজেন	* * *		950.0 "
কাৰ্বণ ডায়ক্সাইড		* * *	ور 8، ٥
জলীয় বাষ্প		• • •	অনিশ্চিত
য়্যামোনিয়া	• • •		লেশ মাত্র
অর্গানিক ম্যাটার	• • •		অনিশ্চিত
ওঝোন	• • •	• • •	ঐ
নোডিয়ম সল্ট্স্ ও অন্ত ধাতব পদা	. }		· 3
ও অন্ত ধাতব পদা	र्थ		

অকসিজেন সংযোগে রক্ত শোধিত হয়। ইহার পরিমাণ বিশুদ্ধ পার্বাতীয় বায়ুতে অধিক ও জনাকীর্ণ সহরে অন্ন।

নাইট্রোজেন না থাকিলে বায়ু অক্সিজেনাধিক্য বশতঃ অতিশয় উষ্ণ ও অসহনীয় হইত।

কার্বন ডায়ক্ সাইড, সামুদ্রিক বায়ু অপেক্ষা ভৌমিক বায়ুতে, এবং গ্রাম অপেক্ষা জনাকীর্ণ নগরে অধিক। ১০০০ ঘন ফুট প্রশ্বাস বায়ুর ৪০ ঘন ফুট কার্বন ডায়ক্সাইড্। এই গ্যাস বৃক্ষ লতা কর্তৃক বিশ্লিষ্ট হইয়া কার্বন এবং অক্সিজেন উৎপাদন করে। ঐ কার্বন বৃক্ষলতার পুষ্টিসাধন করে এবং অক্সিজেন আমাদের রক্ত শোধন করে।

জলীয় বাচ্প স্বাস্থ্যকর বায়ুর শতাংশের ৬৫ হইতে ৭৫ ভাগ। ইহার কার্য্য উত্তম গাত্রাবরণের গ্রায় পৃথিবীর তাপ রক্ষা করা। জলীয় বাম্পের দরুন স্থা্যের প্রথর কিরণে ভূমি অত্যধিক উত্তপ্ত হয় না, এবং রাজ্রি-কালে ভূমি হইতে যে তাপ বিকীর্ণ হয় তাহা জলীয় বাষ্প কর্ভূক শোষিত হইয়া নিকটে থাকে বলিয়া ভূমি অত্যধিক শীতল হইয়া পড়ে না।

য়্যামোনিয়া ও অর্গানিক ম্যাটার বায়ুতে প্রায় সর্বাদাই বিদ্যমান ; কিন্তু অনিষ্টকর কি না তাহা নিশ্চয় বলা যায় না।

# প্রথম পরিচ্ছেদ।

# ইম্পিওরিটী বা ময়লা।

নানাবিধ কঠিন ও বাষ্পীয় পদার্থ দারা বায়ু সতত দ্বিত হইতেছে। বাষ্পীয় পদার্থ বায়ুর সঙ্গে ফুসফুসের বায়ু কোষে (air cells) প্রবেশ করিয়া রক্তের সঙ্গে মিশ্রিত হয়। সমুদয় বায়ুকোষ পাশাপাশি সংলগ্ন করিলে ১০ হইতে ২০ বর্গ ফুট স্থান অধিকার করে। এই বিস্তীর্ণ স্থান দিয়া বায়ুর দ্বিত ৰাষ্ণ অতি শীঘ ও সহজে রক্তে প্রবেশ করিতে পারে। কৃঠিন কণা সমূহ বায়র সঙ্গে গিয়া মুথে কিম্বা নাসিকায় লগ্ন হয় অথবা ফুসফুসে প্রবেশ করে। ফুসফুসে গিয়া বিশ্লিষ্ট (decomposed) হয়, কিম্বা (ধাতব হইলে) দ্রবীভূত হয়, অথবা যতক্ষণ না স্থানান্তরিত হয় ততক্ষণ (irritation) ইরিটেসন্ উৎপাদন করিয়া থাকে; কথনও বা কয়লা-খনকের ফুসফুসলগ্ন কার্বন কণার স্থায় এপিথিলিয়ম দ্বারা আবৃত হইয়া থাকে, কথনও বা এপিথিলিয়ম ভেদ করিয়া লিক্ষাটিক দিয়া দেহে প্রবেশ করে। স্ক্রে কণা মুথ কিম্বা নাসিকায় লগ্ন হইয়া অবশেষে এলিমেন্টারী কেনালে প্রবেশ করে।

বায়ুর ইম্পিওরিটী তিন প্রকার, (১) সম্পেত্তেড্ (suspended) বা কঠিন (২) ভলেটাইল (volatile) বা বাক্সীয় এবং (৩) স্পেসিয়াল (special) বা কার্য্যবিশেষোৎপন্ন।

## ১। কঠিন ইম্পিওরিটি।

- (১) গৃহের বহিস্থিত বায়ুর (External Air) কঠিন ময়লা :—
- কে) ধূলা ও ধাতুকণা—ধ্লাবৃষ্টি বশতঃ উত্তর পশ্চিম অঞ্চল প্রভৃতির বায়তে ধূলা উজ্ঞীয়মান হয়। মৃত্তিকা শুক হইলে তথা হইতে ধূলা, মৃত্তিকা কণা, চা-থড়ি কণা প্রভৃতি নানাবিধ ধাতুকণা উথিত হইয়া বায়তে মিলিত হয়।
  - (य) कोवां पू ७ উ फिन् पू अवः ই हा राम त व्य ७ वीक ।
  - (ग) श्रुक्माएम ७ श्रुक्म (त्र्व ।
- (य) কীটাদি কিম্বা ইহাদের অংশ বিশেষ; যথা পালক, পা, মাকড্সার জাল ইত্যাদি।
  - (ঙ) শুক মল, শ্লেমা, এপিথিলিয়ম্ প্রভৃতির কণা।
- (২) গৃহের আভ্যন্তরিক বায়ুর (Enclosed Space) কঠিন ময়লাঃ—
  - (ক) ভুস্থ ব্যক্তির বাদগৃহের আবদ্ধ বায়ুতে এপিথিলিয়ম (epi-

thelium), গোল সেল (cell), স্থতা, পশম, থান্য দ্রব্য, চুল, কণ্ঠি, কয়লা প্রভৃতির কণা এবং জীবাণু ও উদ্ভিদণু প্রভৃতি পাওয়া যায়।

- (খ) রোগীর গৃহের বায়তে প্রশাসনির্গত পদার্থ ব্যতীত মল কণা, শ্রেমা কণা, রোগ বীজ প্রভৃতি থাকে। এরপ গৃহে ওঝোন (ozone) থাকে না। ডাক্তার ওয়াটসন্ নেটলীর যক্ষা ওয়াডের বায়তে টিউবার্কল্ (tubercle) ব্যাসিলাস প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। বেক্ওয়েল বসন্ত হাসপাতালের বায়তে পূঁম কণা দেখিতে পাইয়াছিলেন।
- <sup>(গ)</sup> কল, কারখানা, দোকান প্রভৃতির বায়তে লোহ, দন্তা, প্রস্তর, রং, স্থতা, পশম প্রভৃতির কণা থাকে।

#### ২। বাষ্পীয় পদার্থ।

- (১) C—কার্বন ভায়ক্সাইড, কার্বন মনক্সাইড, কার্রেটেড হাই-ডোজেন, এবং স্থার গ্যাস।
- (२) S—সল্ফার ডায়ক্সাইড, সল্ফিউরিক্ য়াসিড, হাইড্রোজেন্ সল্ফাইড, য়ামোনিয়ন্ সলফাইড এবং কাবনি ডাইসল্ফাইড।
  - (৩) C1 হাইড্রোক্রোরিক্ য়াসিড্।
- (8) N—য়ামোনিয়া ও য়ামোনিয়ম্ য়াসিটেট, য়ামোনিয়া ও য়ামো-নিয়ম সল্ফাইড ও কার্নেট, এবং নাইট্রাস ও নাইট্রক দ্রাবক।
  - (e) P-হাইডো, জেন ফস্ফাইড
- (৬) Organic Vapour—অর্গানিক ভেপার—পচনশীল প্রাণিদেহোৎ-পন্ন এই তুর্গন্ধী বাষ্পের উপাদান নির্ণীত হয় নাই।

#### ৩। কার্য্যবিশেষোৎপন্ন ময়লা।

(১) প্রশাস দূষিত বায়ুতে কার্বন ডায়ক্সাইড, জলীয় বাঙ্গ ও অর্গানিক ম্যাটার থাকে।

কাব ন ডায়ক সাইড — সাধারণতঃ ফুসফুস ও চর্ম হইতে ২৪ ঘণ্টার ১২ হইতে ১৬ ঘন ফুট কাব ন ডায়ক্সাইড নির্গত হয়। গৃহাভান্তরত্ব বায়্র সহস্র ঘন ফুটে ৬ ঘন ফুট ও তদল্ল কাবনি ডায়ক্সাইড্থাকিলে কোন অনিষ্ট হয় না।

জলীয় বাষ্পা – চর্মা ও ফুসফুস হইতে ২৪ ঘণ্টায় ২৫ হইতে ৪০ আউস জল নির্গত হয়। এই জল বাষ্পীয় আকার ধারণ করিতে হইলে ২১১ ঘন ফুট বায়ুর প্রয়োজন।

অর্গানিক ম্যাটার—এই পদার্থ বাঙ্গীয় আকারে মুথ ও ফুসফুস হইতে
নির্গত হয় এবং এপিথিলয়ন কণা ও তৈল বিন্দুরূপে চর্ম্ম ও মুথ হইতে নিঃস্বত
হয়। ইহার পরিমাণ অনির্ণীত। এই পদার্থ নাইট্রোজনময়, এবং অক্সিজেন্
কর্জুক বিলম্বে শোধিত হয়। ক্রন্ধ নার জানালা সমুদ্য় খুলিয়া দিলেও ৪ ঘণ্টা
পর্য্যন্ত ইহার ছর্গন্ধ অনুভব করা যায়। জলশোষক পদার্থ এই বিষ অধিক
পরিমাণে শোষণ করে। সর্কাপেক্ষা অধিক অর্গানিক-ম্যাটার-শোষক পশ্ম,
তৎপর পক্ষীর পালক, তৎপর সোঁতা দেয়াল, তৎপর সিক্ত কাগজ; খড় ও
চুলের এই শক্তি সর্কাপেক্ষা অন্ন। ক্ষাবর্ণ পদার্থ সর্কাপেক্ষা অধিক অর্গানিক-ম্যাটার-শোষক, তৎপর নীল, তৎপর পীত, তৎপর খেত। পার্কস্
বলেন বিশুন্ধ বায়ু প্রশ্বাস দূষিত হইলে এবং তাহার সহস্র ঘন ফুটে ৮ ঘন
ফুট পরিমিত কার্ব ন ডায়ক্সাইড থাকিলে, অর্গানিক ম্যাটারের গন্ধ অন্তব্
করা যায়; সহস্রে এক ভাগ কার্ব ন ডায়ক্সাইড্ থাকিলে বায়ুন্থ অর্গানিক
ম্যাটারের ছর্গন্ধ অতিশয় তীত্র হয়।

- (২) দহন দূষিত বায়ুতে নিম্লিখিত পদার্থ থাকে:--
- কো কাব্ন—দগ্ধ কয়লার প্রায় শতকরা একভাগ কাব্ন ও আল-কাতা কণারূপে উথিত হয়।
- (থ) কার্বন ডায়কদাইড্—বত কয়লা দগ্ধ হয় তাহার প্রায় ০ গুণ কার্বন ডায়কদাইড্ উৎপন্ন হয়। লগুননগরে প্রতিদিন ৩০,০০০ টনের অধিক কয়লা দগ্ধ হইয়া থাকে।
- (গ) কার্ব মনক্সাইড্—কার্চ কয়লা প্রভৃতির অসম্পূর্ণ দহনে এই গ্যাস উৎপন্ন হয়।
  - (ঘ) গন্ধক, দলফার ডায়ক্ দাইড, এবং দলফিউরিক

য়্যাদিড। কয়লার মধ্যে গন্ধক আছে। স্কতরাং দগ্ধ কয়লা হইতে এই সমুদয় গন্ধকজনিত গ্যাস উৎপন্ন হয়।

- (७) कार्वन् छाहमन् काहेछ्
  - ( চ ) श्रारिमानियम् मल्का हेफ् वा कार्व ति ।
  - (ছ) **হাই**ড্রোজেন সলফাইড কথনও কথনও থাকে।
  - (জ)জল।

দগ্ধকার্চ হইতে অধিক পরিমাণে কার্বন ডায়ক্সাইড, কার্বন মনক্সাইড্ ও জল উৎপন্ন হয়। সলফার কম্পাউগু অতি অল্পই বহির্গত হয়। এক পাউগু গুদ্ধ কার্চ ১২০ ঘন ফুট বায়ুতে সম্পূর্ণরূপে দগ্ধ হয়।

দগ্ধ কাষ্ঠ হইতে অধিক পরিমাণে কার্বন ডায়ক্সাইভ, কার্বন মনক্সাইড্ ও জল উৎপন্ন হয়। সলফার কম্পাউগু অতি অল্পই বহির্গত হয়। এক পাউগু শুদ্ধ কাষ্ঠ ১২০ ঘন ফুট বায়ুতে সম্পূর্ণরূপে দগ্ধ হয়।

দেশ্ধ কয়লা হইতে কোল গ্যাদ উৎপন্ন হয়। বিশুদ্ধ কোল-গ্যাদে হাইড্রোজেন, মার্ষ গ্যাদ, কার্বন মনক্সাইড্, ইথিলীন,(Ethylene) য়্যাদি-টিলীন (Acetylene) হাইড্রোজেন দল্ফাইড্, নাইট্রোজেন, কার্বন ডায়ক্সাইড্, সলফার ডায়ক্সাইড্, য়্যামোনিয়া বা য়্যামোনিয়ম দল্ফাইড্, ও কার্বন ডাইদল্ফাইড্ থাকে। এক ঘন ফুট কোল গ্যাদ ৮ ঘন ফুট বায়ুর অক্সিজেন দগ্ধ করে, ও ২ ঘন ফুট কার্বন ডায়ক্সাইড্ উৎপাদন করে। একটী গ্যাদের আলোকে সাধারণতঃ ঘণ্টায় ৩ ঘন ফুট কোল গ্যাদ দগ্ধ হয় ও ৬ ঘন ফুট কার্বন ডায়ক্সাইড্ উৎপাদ হয়। স্কুতরাং একটী গ্যাদ ল্যাম্প ১০ ব্যক্তির সমান কার্বন ডায়ক্সাইড্ উৎপাদন করে।

এক পাউও তৈল ঘণ্টায় ১৪০ হইতে ১৬০ ঘন ফুট বায়্র অক্সিজেন দগ্ধ করে।

পাউগু বাক্সের একটা মোমবাতি ঘণ্টায় ৪ ঘন ফুট বায়ুতে সম্পূর্ণরূপে দগ্ধ হয়।

(৩) সংয়েজ দ্যিত বায়ু, সূয়াব গ্যাপে বা ভূমধ্যস্থিত নদিবার বায়তে হর্গন্ধ অর্গানিক ম্যাটার, কাবেনিয়াবোনায়েকেল (Carbo-ammoniacal)

পদার্থ, কার্বন ভায়ক্দাইড্, নাইট্রোজেন ও হাইড্রোজেন সল্ফাইড্, থাকে। এতদ্ভিন্ন ইহাতে ম্যামোনিয়ম সল্ফাইড্ ও অসংখ্য ব্যাকটিরিয়া পাওয়া যায়।

- (৪) সমাধিস্থানের বায়তে অতাধিক কার্বন ডায়ক্সাইড্।
  সমাধিভূমির আভ্যন্তরিক বায়ুতে কার্বন ডায়ক্সাইড্, য়্যামোনিয়ম
  কার্বেনেট্ বা সলফাইড্, নাইট্রেজেন, হাইড্রোজেন সল্ফাইড্, অর্গানিক
  পদার্থ ও ব্যাক্টিরিয়া থাকে। কথনও কথনও হাইড্রোজেন সলফাইড্ও
  ফসফাইড ও সায়েনোজেন (Cyanogen) পাওয়া যায়।
- (৫) কারখানার দূষিত বায়ু—দোডা প্রভৃতি য়্যাল্কালির কারথানা হইতে হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড্ গ্যাস, তামের কারথানা হইতে সল্ফার ডায়ক্সাইড্, এবং সল্ফিউরিক য়্যাসিড্, য়্যামোনিয়া প্রভৃতির রাসায়নিক কারথানা হইতে হাইড্রোজেন সলফাইড্, ইইকের "পাঁজা" হইতে কার্বন ডায়কসাইড্ কার্বন মনক্সাইড্ ও হাইড্রোজেন সলফাইড্, পিত্তল কারথানা হইতে দস্তার ধূম, তাম গালান-কারথানা হইতে আর্মেনিক ধূম,দেশলাই কারথানা হইতে ফস্ফারাস্ ধূম। রবার কারথানা হইতে কার্বন ডাইসল্কাইড্, এবং কসাইথানা হাড়ের কারথানা প্রভৃতি হইতে অর্গানিক ভেপার উথিত হইয়া বায়ু দ্ধিত করে।
  - (৬) সহরের বায়ু—জনাকীর্ণ নগরের বায়ু প্রশ্বাস জাত দহন জাত ভূমিজাত, নর্দামাজাত ও কার্থানাজাত পদার্থ দারা দূ্যিত হয়।
  - (৭) জলাভূমির বায়ুতে—অধিক কার্বন ডায়কসাইড, জলীয় বাষ্প হাইড্রোজেন সল্ফাইড্ এবং মার্ম গ্যাস থাকে। কথনও কথনও মুক্ত হাইড্রোজেন, য়ামোনিয়া, হাইড্রোজেন ফদ্ফাইড্, অর্গানিক ম্যাটার এবং ব্যাকটিরিয়া থোকে। ডাক্তার বালেস্তা রোমের জলাবায়ুস্থিত এক প্রকার উদ্ভিদণু ম্যালেরিয়া জ্বের কারণ বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন।
  - (৮) জাহাজের খোলের বায়ুতে—কার্চ প্রভৃতি হইতে উৎপন্ন বাষ্প এবং হাইড্রাজেন সলফাইড্ইত্যাদি থাকে।
    - (৯) খনির বায়ুতে—গতিরিক্ত কার্বন ডায়কদাইড্ ও অর্গানিক

ম্যাটার প্রভৃতি প্রশাস ও দহন ক্রিয়াজাত পদার্থ, কার্বন মনক্সাইড্ হাইড্রোজেন, হাইড্রোজেন সলফাইড্, ধাতুকণা ইত্যাদি থাকে।

## দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

### দূষিত বায়ু দেবনের ফল।

### ১। কঠিন কণাজনিত রোগ :-

(১) জড পদার্থ কণা (Inanimate substances), যথা ধূলা প্রভৃতি, নিশ্বাদের সহিত গ্রহণ করিলে ইণ্ডাইজেশ্চন (Indigestion) পুনঃ পুনঃ সৃদ্ধি, ব্রঙ্কাইটিস, এন্ফিসীমা (Emphysema) এবং নিউমোনিয়া হয়; কখনও নন্ টিউবার্কিউলার থাইদিস (non-tubercular phthisis) হইয়া থাকে। কুন্তকারদের "পটার্দ্ য়্যাজ্মা" (Potter's asthma) নামক একপ্রকার এন্ফিদীমা হইয়া থাকে। বোতাম নির্শাতাদের ক্রনিক ব্রন্ধাইটিদ ও হীমপ -টিসিস্ হয়। পূর্ব্বে দেশলাই কারথানার লোকদিগের ফস্ফর্স ধূত্র সেবনবশতঃ জর নিক্রসিস্ (necrosis of the jaw) হইত। এখন ফসফরাসের পরিবর্তে য়্যামর্ফাস্ ফস্ফরাস্ ব্যবহারবশতঃ এই রোগ নিবারিত হইয়াছে। পিতল ঢালাইকারীদের ব্রন্ধাইটিদ্, য়্যাজ্মা, এবং "ব্রাস্ফাউণ্ডার এণ্ড" (Brassfounder's ague) হইয়া থাকে। ঝিঙ্ক অক্সাইড্ ধূম ইহার কারণ বলিয়া কেহ কেহ অনুমান করেন। এই এগুর লক্ষণ—বুক চাপা, কম্প, উষ্ণতা, ঘর্ম ইত্যাদি। কেহ কেহ বলেন পিত্তলস্থিত তাম্রের দরুণ ক্রনিক কন্ষ্টিপেদন্ ও ডিসপেপ্ দিয়া জিনায়া থাকে। তাম ব্যবসায়ীদের এই সমুদয় রোগ হইয়া থাকে। সীসা ব্যবসায়ীদের লেড্ অক্সাইড ধূম গ্রহণ , বশতঃ নদিয়া, বুকচাপা, কলিক (Lead colic) এবং সর্কশেষে লেড প্যাল ্সি

(Lead palsy) হয়। সাদা বং ব্যবসায়ীদেরও এই সমুদ্র রোগ হইরা থাকে। আরশি ব্যবসায়ীদের মার্কিউরিয়েলিজ ম্ ( Mercurialism ) হয়। কয়লা খননকারীদের "কলিয়াদ্ থাইদিদ্" (Collier's Pthisis) হয়। হতাব্যবসায়ী-দের "কটন্ য়ৢাজমা" (Cotton asthma) এবং "কটন্ থাইদিদ্" (Cotton pthisis) হয়।

- (২) সজীব পদার্থ (Living substance)—যথা ব্যাকটিরিয়া, পুষ্পরেণ্
  ইত্যাদি, নিশ্বাস বায়ুর সঙ্গে প্রবেশ করিয়া, সর্দ্দি, হাঁপানি প্রভৃতি রোগ
  উৎপাদন করে। ডাক্তার ব্লেকী তৃণপুষ্পরেণু-পূরিত বায়ু সেবন করিয়া
  "হে ফিবার" (hay-fever) নামক সর্দ্দি দ্বারা আক্রান্ত হইয়াছিলেন।
  এইরূপে যে "হে-ফিবার" ও "হে-য়্যাজ্মা" (hay-asthma) হইয়া
  থাকে তাহাতে সন্দেহ নাই। টীনিয়া (Tinea) ও ফেবাস্ (Favus) নামক
  দক্রুকীট বায়ু চালিত হইয়া চর্ম্মে প্রবেশ করে।
- (৩) কোন কোন সংক্রোমক রোগের বীজ বায় চালিত হইয়া রোগ ব্যাপ্ত করে, যথা বসন্ত, পানবসন্ত, হাম, স্বালেটি্ ফিবার, ইন্ফুরেঞ্জা, টাই-ফাস্, প্লেগ্, ছপিং কফ্, ডিপ্থিরিয়া, টিউবার্কিউলার থাইসিস্, আন্ত্রাক্স্, অক্থালমিয়া, এরেসেপেলাস্ ও হস্পিটাল গ্যান্তিন ইত্যাদি।

#### ২। বাষ্পায় পদার্থজনিত রোগ।

- (>) কার্বন ডায়ক্সাইড্ সেবনের ফল—সহস্রে ৫০ হইতে ১০০ আয়তন কার্বন ডায়কসাইড্ প্রাণনাশক। সহস্রে ১৫।২০ আয়তন কার্বন ডায়কসাইড্ কোন কোন স্থলে কঠিন শিরঃপীড়া উৎপাদন করে। অন্ধিক ১.৫ হইতে ৩ আয়তন (সহস্রে) থাকিলেও শিরঃপীড়া ও মন্তক ঘূর্ণন হয়; কিন্তু ইহার কারণ একমাত্র কার্বন ডায়কসাইড্ নহে, অর্গানিক বাষ্প ও অন্তান্ত বাষ্পের বৃদ্ধি এবং অক্সিজেনের হ্রাস ও ঐ সমুদ্য অস্থ্রের কারণ।
- (২) কার্ব মনক্সাইড্ বায়ুর সহস্রাংশে ৫ অংশের ন্যুন হইলেও বিয়াক্ত হয়, এবং ১০ অংশের অধিক হইলে অতি শীঘ প্রাণ নাশ করে। ইহার দক্ষন রক্তের লোহিত কণার পেরালিসিস্ ( Paralysis ) ও ইহার

অক্সিজেন আকর্ষণ শক্তির ব্রাস হয়, সংজ্ঞা লুপ্ত হয়, স্নায়ুমণ্ডলীর রিফ্লেক্স্
ক্রিয়া স্থগিত হয়, রক্তের নাড়ীসমূহ শিথিল হয়, রক্তের গুরুত্বের হ্রাস হয়,
রক্ত সঞ্চালন মন্দীভূত হয়, এবং অবশেষে হার্ট পেরেলাইজ্ড্ (paralysed)
হয়। কার্বন মনক্সাইড্-আধিক্যের সঙ্গে গৃহবায়ুর উত্তাপ বৃদ্ধি হইলে
কন্তল্শন্ (convulsion)হয়। সম্প্রতি কলিকাতায় কার্বন মনক্সাইড্
পয়জনিং সম্বন্ধীয় (Carbon Monoxide poisoning) চারিটা ঘটনা সংঘটিত
হইয়াছিল। (১) বাহুড় বাগান অঞ্চলে কোন বালিকা একটা একমাত্র দার
ও গবাক্ষ বিশিষ্ট একতল ইপ্টক গৃহে মন্তান প্রস্ব করে। বালিকার মতো

প্রস্বাগারের দার ও গবাক্ষ রুদ্ধ করিয়া বৃদ্ধ প্রমাতা-রুদ্ধ গৃহে স্বাগ্ন প্রস্থাননের ফল। করিয়াছিলেন। ইহার অল্লফণ পরেই আমার নিকট

প্রস্তির মাতার আসন মৃত্যুর সংবাদ আসিল। তাঁহার মুথ নীলবর্ণ, চকু পলকহীন এবং সংজ্ঞা সম্পূর্ণরূপে লুপ্ত হইয়াছিল। অবশেষে বাহিরের মুক্ত বায়ুতে আনীত হইবার পর তিনি ক্রমশঃ চেতনালাভ করিয়াছিলেন। (২) চোরবাগানে কোন ভদ্র পরিবারে একটা একতল ইষ্টকগৃহে একটা সন্তান প্রস্থত হয়। প্রসবের তিন দিবস পর আমার নিকট সংবাদ আসিল প্রস্থতি ও তাঁহার শুশ্রমাকারিণী মৃতপ্রায়। শুশ্রমাকারিণী দার জানালা রুদ্ধ করিয়া একটা গামলায় অঙ্গারের অগ্নি প্রজ্ঞলিত করিয়া শিশুর নাভিদেশে তাপ দিতে দিতে হতচেতন হইয়া পড়িয়াছিলেন। প্রস্থতির গোঁ গোঁ শব্দে পার্শ্বর্ত্তী গৃহের লোকেরা আসিয়া কপাট ভগ্ন করিয়া উভয়ের ভয়ানক অবস্থা দেখিতে পাইল। আমি গিয়া দেখিলাম উভয়ের সংজ্ঞা সম্পূর্ণ লুপ্ত, হার্টের গতি মন্দীভূত, চক্ষু পলকহীন, নাড়ী ক্ষীণ, অঙ্গ হিম কিন্তু মন্তক অতিশয় উষ্ণ ; এবং ঘন ঘন কন্তলশন্ হইতেছে। রোগীদের সম্পূর্ণরূপে চৈত্ত সম্পাদন করিতে ৩ ঘণ্টার অধিক সময় লাগিয়াছিল। (৩) শিবনারায়ণ দাদের গলিতে এইরূপে বিপদগ্রস্ত একজন প্রস্থৃতি অনেক কণ্টে মৃত্যুর হস্ত হইতে অব্যাহতি লাভ করিয়াছিল। (৪) একদা শীতকালে বীড্ন খ্রীটের একটা গৃহে কতিপয় লোক দার জানালা রুদ্ধ করিয়া কয়লা প্রজ্ঞলিত করিয়া নিদ্রিত হইরাছিল। প্রভাতে প্রতিবাসিগণ তাহাদের গাত্রোখানের বিলম্ব

দেখিয়া কপাট ভগ্ন করিয়া দেখিতে পাইল তাহারা চিরনিদ্রিত হইয়া রহিয়াছে।

- (৩) হাইড়োজেন সল ফাইড ্মন্বনে নিশ্চয় কিছুই বলা যায় না।
  আন পরিমাণ সেবনে কুকুর ও অথ উদরাময়াক্রাক্ত হইয়া অতিশয় ছর্ম্মল হইয়া
  পড়ে, কিন্তু তদপেক্ষা অধিক পরিমাণ গ্যাস সেবনেও মনুষ্যের কোন রোগ
  হয় না। হার্চ বলেন যাহারা ক্রমাগত এই বাস্প সেবন করে তাহাদের ক্রনিক
  পয়জ্নিংএর (chronic poisoning) লক্ষণ প্রকাশিত হয়, য়থা, ছর্ম্মলতা,
  অক্স্ধা, নাড়ীর ক্ষীণতা, জিহ্বার অপরিচ্ছয়তা, মুগ ও মুথ-ঝিল্লির বিবর্ণতা।
  কথনও কথনও ক্ষোটক,মন্তক ঘূর্ণন, শিরঃপীড়া, বমনেচ্ছা, উদরাময়,
  কশতা, ইত্যাদি হইয়া থাকে।
- (৪) কাবুরেটেড্ হাইড্রোজেন, সহস্রে ২০০।১০০ ভাগের অধিক হইলে শিরঃপীড়া, বমন, কন্তল্শন্, প্রার্টর (stertor), ডাইলেটেড্ পিউপিল (dilated pupil) ইত্যাদি লক্ষণ প্রকাশিত হয়।
- (৫) য়া/নেশ্নিয়শ্র বৃষ্প কঞ্টাইভার প্রদাহ (conjunctivitis) উৎপাদন করে।
- (৬) সল্কার ডায়কসাইড ্বন্ধাইটিদ্, বিবর্ণতা ও রক্তহীনত। উৎপাদন করে। যাহারা স্থা, পশম প্রভৃতির বর্ণ শুভ্র (bleach) করে এবং পশমের কর্ম করে তাহাদের এই প্রকার রোগ হইয়া থাকে।
- (৭) হাইড্রোক্লোরিক বাজা সেবনবশতঃ ব্রন্ধাইটিদ্, নিউমোনিয়া, কুসকুস-ক্ষয় এবং চকুরোগ হয়। গিল্টির দোকানে নানাপ্রকার য়্যাসিড্ গ্যাস-উৎপন্ন হয়।
- (৮) কার্ব ডাইসল্ফাইড্—অনেকের ধারণা এই যে রবারের লোকানে এই গ্যাস উৎপন্ন হয়। ইহার দক্তন শিরঃপীড়া, মস্তকঘূর্ণন, হাত পা কান্ডান, গা ঝিম্ ঝিম্, অনিদ্রা, অকুধা, এবং ধাতু দৌর্জন্য হয়। কথনও বা বধারতা, ডিস্প্নিরা (dyspnæa), কফ্, জর, অন্তা এবং প্যারালিসিদ্ হইয়া থাকে।

#### ৩। মিশ্রপদার্থজনিত রোগ।

(১) নিশ্বাদ প্রশাদ দূষিত বায়ু দেবনে গা ভারি ভারি, শিরঃপীড়া,

জড়তা, এবং কখনও বা বমনেচ্ছা হয়। এই বায়ুতে আবদ্ধ মৃষিকের ৪৫ মিনিটের মধ্যে মৃত্যু হয়; এবং এ৪ ঘণ্টা এই বায়ু দেবন করিলে ২।১ দিন ব্যাপিয়া জরের লক্ষণ প্রকাশিত হয়। অত্যন্ত দূষিত বায়ু সেবনে মৃত্যু হয়, এবং মৃত্যু অতিক্রম করিলে ৩।৪ দিন ব্যাপী জ্বর, স্ফোটক ইত্যাদি হয়। কলিকাতার স্থাসিদ্ধ "অন্ধকূপ" একটা ১২ ঘন হস্ত পরিমিত কুঠরীমাত্র। বায়ু ও আলো প্রবেশার্থ উপরে হুইটীমাত্র ক্ষুদ্র ছিদ্র ছিল। এই কুঠরীতে ১৪৬ জন বন্দীকে রাত্রে আবদ্ধ করা হইয়াছিল। প্রাতে দেখা গেল ১২৩ জন মৃত ও ২৩ জন অর্দ্ধ মৃত বন্দী ঐ অন্ধকৃপে পড়িয়া রহিয়াছে। অষ্টার্লিজ যুদ্ধে পরাজিত ৩০০ সৈতাকে একটা ক্ষুদ্র কারাগৃহে রুদ্ধ করা হইয়াছিল, তন্মধ্যে ২৬০ জনের মৃত্যু হয়। একদা একথানা জাহাজ হলও হইতে ভেড়া বোঝাই করিয়া সমুদ্র পথে যাইতেছিল। একটা আবদ্ধ কুঠরীতে ভেড়া রাথা হইয়াছিল। কুঠরী খুলিয়া দেথা গেল ৬৪০টী ভেড়ার মৃতদেহ পড়িয়া রহিয়াছে। দূষিত বায়ু সেবনে সর্বাথা এইরূপ আকস্মিক মৃত্যু হয় না বলিয়া অনেকে ইহার অনিষ্ঠকারিতা বুঝিতে পারেন না। কিন্তু দূষিত বায়ু সেবনে শরীর বদন্ত, হাম, ওলাউঠা প্রভৃতি দংক্রামক রোগে সহজে আক্রান্ত (predisposed) হয়। দূষিত বায়ু দীর্ঘকাল সেবনের গোণ ফল বিবর্ণতা, অক্ষুধা, শারীরিক ও মানসিক ছর্ব্বলতা, ফুসফুস রোগ ও স্তু ফিউলা। ক্রীমীয় যুদ্ধের সময় সিপাহীদের বারাকে বায়ু সঞ্চালনের উপায় ছিল না। যক্ষা ও নানাবিধ রোগে বিস্তর দৈত্য ক্ষয় হইতে লাগিল। অবশেষে বায়ু স্ঞালনের উপায় সম্যকরূপে অবলম্বিত হইবার পর রোগের হ্রাস হইল এবং সৈম্যদের এত ক্ষুধাবৃদ্ধি হইল যে তাহাদের রসদ বৃদ্ধি করিতে হইয়াছিল। একটী বোডিংএ ৬০ ফুট দীর্ঘ ও ১৮ ফুট প্রশস্ত একটী কুঠরীতে ১৫২ জন বালক শয়ন করিত। সেই গৃহের বায়ু প্রাতঃকালে অসহনীয় হইয়া পড়িত। বালক-দের এত স্কু ফিউলা হইত যে সকলে ঐ রোগ সংক্রামক বলিয়া মনে করিত।

দূষিত বায়ু ইতর প্রাণী ও বৃক্ষলতাদিরও অনিষ্ট সম্পাদন করে। ক্ষুদ্র স্থানে আবদ্ধ গো অশ্বাদি যক্ষা, প্লুরো-নিউমোনিয়া প্রভৃতি রোগে আক্রান্ত হয় এবং বৃক্ষলতাদি বিবর্ণ হইয়া মরিয়া যায়।

(২) চিকিৎসালয়ের বায়ুতে অর্গানিক ম্যাটারের আধিক্য বশতঃ

রোগীদের রোগ বৃদ্ধি হয় এবং আরোগ্য অতি বিলম্বে সম্পাদিত হয়। বায়ু অত্যন্ত দূষিত হইলে হস্পিটাল গ্যাঙ্গীন ( Hospital gangrene ) ও ইরি-দেপেলাদের ( Erysipelas ) প্রাহর্ভীব হয়।

- (৩) দগ্ধ কাষ্ঠ কয়লাদিজাত কার্ব্বন চূর্ণ ও সলফার ডায়ক-সাইড্ ফুসফুসরোগ উৎপাদন করে। ব্রন্ধাইটিস্ ও এক্ষিদীমা রোগী, জনা-কীর্ণ সহরে প্রবেশ করিবামাত্র, কণ্ঠ অনুভব করে। গ্যাদালোকে যাহারা সর্বাদা কার্য্য করে, তাহাদের রক্ত হীনতা, ছর্ব্বালতা, শিরঃপীড়া, জড়তা এবং নিশ্বাদ-কণ্ঠ হয়।
- (৪) নদ্দামা ও চাপা শ্বেতখানা নিঃস্ত গ্যাদ দেবনে নিখাস রোধ (asphyxia) হয়। বিলাতের একটা চাপা শ্বেতথানা পরিষ্ণার করিবার সময় ২০টী বালক বালিকার ভয়ানক ভেদ, বমি, শিরঃপীড়া, ছর্বলতা, এবং कन जन्मन् इरेशा हिन। जनात्था २ जातत २८ घणीत मात्या मृजू इरेशा हिन। যাহাদের শয়নাগারের বায়ুতে স্থার গ্যাদ্ মিশ্রিত হয়, তাহাদের শিরংপীড়া, মানি (malaise) জর এবং রক্তহীনতা হয়; শিশুদের অকুধা, বিবর্ণতা, তুর্বলতা, এবং উদরাময় হয়। একদা যোড়াসাঁকো কোন ভদ্র পরিবারের সকল শিশু একমাদ ধরিয়া ক্রমাগত জর ও উদরাময়রোগে পুনঃ পুনঃ আক্রান্ত হইতেছিল। অনুসন্ধানে জানা গেল তাহাদের শয়নাগারে পার্শ্ববর্ত্তী গৃহের নিমস্থ একটা "কৃয়া পাইখানার" গ্যাদ প্রবেশ করিত। দেই পাই-থানায় ২৫ বংসরের মল সঞ্চিত ছিল। চূণ ও শুক্ত মৃত্তিকা দ্বারা পাইথানা ভরাট করিবার পর উক্ত পরিবারের শিশুগণ রোগের হস্ত হইতে নিম্বতিলাভ করিয়াছিল। ইটালী পদ্মপুকুরে আমার একজন বন্ধুর বাস ভবনের ভিতরে একটা সরকারী নর্দামা ছিল। বহুকাল পরে সেই নর্দামা উন্মুক্ত ও পরিষ্কৃত করিবার সময় তাঁহার জর হইয়াছিল। কেহ কেহ অনুমান করেন স্মার গ্যাদ দারা টাইফরেড্ ফিবার এবং ডিপ্থিরিয়া ব্যাপ্ত হয়। আমার কোন বন্ধুর বাড়ীতে ড্রেণ পাইখানার ছিদ্র দিয়া স্থারগ্যাস-নিঃসরণ হেতু ১১টী ডিপ্থিরিয়া কেদ্ হইরাছিল। টাইফরড, ডিপ্থিরিয়া প্রভৃতির ব্যাদিলাদ্ ড্রেণের ভিতর প্রবেশ করিয়া স্থার গ্যাদের সহিত মিপ্রিত হয় এবং ইহার সঙ্গে উথিত হইয়া বায়ু দূষিত করে।

- (৫) মলজাত বাষ্পা সময়ে সময়ে উদরাময় উৎপাদন করে। মাঠে পরিত্যক্ত মল মৃত্তিকা, বায়্ ও রৌদ্র সংযোগে শোধিত হয় কিন্তু আবদ্ধ স্থানে সঞ্চিত মলের বাষ্পা স্থার গ্যাসের স্থায় অনিষ্টকর। স্রোত জলে নিক্ষিপ্ত মলের বাষ্পা অনিষ্টকর কি না এ বিষয়ে মতভেদ আছে। কিন্তু অয়জল বিশিষ্ট ও স্রোতবিহীন নদীতে নিক্ষিপ্ত মল যে অনিষ্টকর তাহাতে সন্দেহ নাই। বিক্রত সারজাত বাষ্পা ভয়ানক অনিষ্টকর। আর্থর নামক একটা জাহাজে সায়, বোঝাই করিয়া লইয়া যাইবার সময়, পথিমধ্যে পিটিয়া যায়। তাহায় দক্রন অর্দ্ধেক সংখ্যক নাবিকের মৃত্যু হয়, অবশিষ্ট অর্দ্ধেক কয় হইয়া পড়ে এবং যাহায়া জাহাজ হইতে মাল উঠাইয়াছিল তাহায়াও পীড়িত হইয়াছিল।
  - (৬) সমাধিভূমির বাচ্পে দেবনে নানাপ্রকার রোগ হইয়। থাকে।
    সমাধিভূমির নিকটয় স্থানে রোগের প্রাত্মভাব অপেকাক্বত অধিক। মুদলমানদের একটা সমাধিভূমির উপর একদা ইংরাজেরা একটা দৈয়গারদ স্থাপিত
    করেন। দেই গারদে জরের অত্যন্ত প্রকোপ হইয়াছিল। পচনশীল শবপূর্ণ সমাধির রক্ষকদের প্রায়্ম সর্বাদা সাজ্যাতিক জর, শ্বাদরোধ এবং
    শ্বাসরোধক সাদ্ধি হইয়া থাকে।
  - (৭) প্রচনশীল পশুদেহজাত বাষ্পের অনিষ্টকারিতা সম্বন্ধে মৃতভেদ আছে; কেহ কেহ বলেন ইহার অনিষ্টকারিতার কোন প্রমাণ পাওয়া যায় না। আবার কেহ কেহ বলেন ইহার উদরাময় ও আমাশয় উৎপাদন শক্তির যথেষ্ট পরিচয় পাওয়া গিয়াছে।
  - (৮) ইফাকের পাঁজা ও চিম্নী হইতে যে গ্যাস উথিত হয় তাহা নাসিকা রন্ধে প্রবেশ করিলে তৎক্ষণাৎ মৃত্যু হইয়া থাকে। কিন্তু ইহা অতি শীঘ্র উর্দ্ধে উথিত ও ডাইলুট হইয়া যায়; এইজগ্র স্বাস্থ্যের হানি করিতে পারে না। ফ্রান্সে এই নিয়ম আছে যে কোন সদর রাস্তার ৫৪২ গজের মধ্যে কোন পাঁজা থাকিতে পারিবে না এবং দিবাভাগে পোড়াইতে দেওয়া হইবে না। সিমেণ্ট-কারথানা-উদ্ভূত গ্যাস নিকটবর্ত্তী বৃক্ষলতাদি বিনষ্ট করে এবং ইহার তুর্গন্ধ বহুদূর পর্যান্ত ব্যাপ্ত হয়।

- (৯) দগ্ধ চর্ব্বি ও অস্থিজাত বাষ্প অত্যন্ত হুর্গম্বজনক কিন্ত ইহার দক্ষন কোন রোগ হয় কি না তাহা জানা যায় নাই।
- (১০) জলাভূমির বাষ্প নেবনে ম্যালেরিয়া জ্বর, উদরাময় (Serous diarrhœa) এবং রক্ত আমাশয় হয় বলিয়া অনেকে অনুমান করেন। এই বায়ু দেবনবশতঃ পুষ্টির ব্যাঘাত, প্লীহার বৃদ্ধি ও আয়ুর স্থাম হয়।

# তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

### বায়ু সঞ্চালন।

দূষিত বায়ু দেবনের বিষময় পরিণাম চিন্তা করিলে গৃহে বিশুদ্ধ বায়ু
সঞ্চালনের প্রয়োজনীয়তা দম্বন্ধে আর সন্দেহ থাকে না। কি উপায়ে গৃহে
বিশুদ্ধ বায়ু সঞ্চালিত হইতে পারে, তাহা সম্যকরূপে বুঝিতে হইলে, তৎপূর্ব্বে
ছইটী বিষয় জানা আবশুক; (১) প্রত্যেক ব্যক্তির জন্ম প্রতি ঘণ্টায় কি
পরিমাণ বাহিরের বিশুদ্ধ বায়ুর প্রয়োজন ? (২) ঐ পরিমাণ বায়ু কি উপায়ে
গৃহাভ্যন্তরে আনিতে পায়া যায় ?

### ১। প্রতি ঘণ্টায় কি পরিমাণ বায়ু চাই ?

বাহিরের মুক্ত বায়ুর স্থায় গৃহাভান্তরস্থ আবদ্ধ বায়ু সম্পূর্ণরূপ বিশুদ্ধ হইতে পারে না। তবে মুক্ত স্থান হইতে গৃহে প্রবেশ করিবামাত্র যদি ক্ষিত্রার লক্ষণ।

দ্যিত পদার্থের হুর্গন্ধ অনুভব না করা যায়, তাহা হইলেই বায়ু বিশুদ্ধ মনে করিতে হইবে। যে পরিমাণ মুক্ত বায়ু গৃহে প্রবেশ করিলে এইরূপ হুর্গন্ধ অনুভূত হয় না, তাহাই নির্দ্ধারণ করিতে হইবে। সাধারণতঃ বায়ুন্থিত কার্বন ভায়ক্ সাইডের পরিমাণ দ্বারাই বায়ুর দ্বণীয়তার নিরাকরণ হইয়া থাকে। স্থপ্রসিদ্ধ চমণ্টের গবেষণায় স্থিরীক্বত হইয়াছে যে, সহস্র ঘন কৃত বাহিরের বায়ুতে .২ কৃট (নিয়মিত .৪ কৃট বাতীত) কার্বন ভায়কসাইড থাকিলে কোন হুর্গন্ধ অনুভব করা যায় না; অর্থাৎ, .২ ঘন কৃট কার্বন ভায়কসাইডের বিষ নাশ বা শোধন করিতে হইলে ১০০০ ঘন ফুট মুক্ত

বায়্র প্রয়োজন। প্রত্যেক ব্যক্তি প্রতি ঘণ্টায় ৬ ঘন দুট কার্বন ডায়ক্সাইড্ উৎপাদন করে। অতএব, ২ ঘন দুট কার্বন ডায়ক্ সাইড্ শোধন করিতে যদি ১০০০ ঘন দুট মুক্ত বায়ুর প্রয়োজন, তবে ৩ ঘন দুট কার্বন ডায়ক-সাইড্ শোধন করিতে তি ২০০০ ঘন ফুট মুক্ত বায়ুর প্রয়োজন। দাদশ বর্ষের নিম্ন বয়স্ক বালকের জন্ম ইহার অর্ক্ষেক পরিমাণ বিশুদ্ধ বায়ু চাই।

প্রদীপের দূষিত পদার্থ শোধনের জন্ত মুক্ত বায়ুর প্রয়োজন। তৈল প্রদীপ কিম্বা মোম বর্ত্তিকার জন্ত অতিরিক্ত মুক্ত বায়ুর প্রয়োজন নাই; কিম্ব একটা গ্যাসালোকের জন্য ঘণ্টায় অতিরিক্ত ৫৪০০ ঘন ফুট মুক্ত বায়ুর প্রয়োজন। একটা গৃহে এক ব্যক্তি এবং একটা গ্যাসালোক থাকিলে প্রতি ঘণ্টায় ৩০০০ + ৫৪০০ = ৮৪০০ ঘন ফুট মুক্ত বায়ু গৃহে আনয়ন করিতে হইবে।

প্রত্যেক রোগীর জন্ম সাধারণতঃ ঘণ্টায় ৪০০০ ঘন ফুট বায়ুর প্রয়োজন। উৎকট রোগে আরো অধিক চাই।

পার্ক দ্বলেন, প্রত্যেক গো অশ্বের ঘন্টায় ১০,০০০ হইতে ২০,০০০ ঘন ফুট মুক্ত বায়ুর প্রয়োজন। তাঁহার মতে, মন্ন্যের পক্ষে দেহ ভারের পাউও প্রতি ২০।২৫ ঘন ফুট বায়ু ব্যবস্থার যে নিয়ম, ইতর প্রাণী সম্বন্ধেও সেই নিয়ম থাকা উচিত।

২ ৷ কি উপায়ে গৃহাভ্যন্তরে মুক্ত বায়ু আনিতে পারা যায় ?

বায়ু স্ঞালনের উপকারিতা চারিটী বিষয়ের উপর নির্ভর করে; (১) প্রত্যেক ব্যক্তির নির্দ্দিষ্ট স্থানের পরিমাণ,(২) বহিব যুর বিশুদ্ধতা,(৩) বহিব যুর তাপ, এবং (৪) সঞ্চালনের সমতা। (১) প্রত্যেক ব্যক্তির কি পরিমাণ স্থানের প্রয়োজন তাহা জানিতে হইলে কত বড় ঘরে ৩০০০ ঘন ফুট বায়ু প্রতি ঘণ্টায় সঞ্চালিত হইলে বায়ু প্রোতের আঘাতে কন্টবোধ বা জনিষ্ট হয় না, তাহা নির্দ্ধারণ করিতে হইবে। ১০০ ঘন ফুট পরিমিত গৃহে ঘণ্টায়ে ৩০০০

কিউবিক ম্পেদ্
বর্ত্তি হয়, এবং বায়ু স্থোতের আঘাতে কন্ট বোধ
ও ফ্লোর ম্পেদ্।
হয়। শীত প্রধান দেশে ঘণ্টায় তিন বারের অধিক

পরিবর্ত্তিত হইলে বায়ু কষ্টদায়ক হয়; এইজন্ম বিলাত প্রভৃতি স্থানে প্রত্যেক

ব্যক্তির জন্য ১০০০ঘন ফুট আয়তনের স্থান বা কিউবিক স্পেদ্(Cubic space)
নির্দিপ্ত হইয়াছে। আমাদের দেশে ঘণ্টায় ৪।৫ বার বায়ু পরিবর্ত্তিত হইলেও ক্ষতি
নাই। কলিকাতার বাসগৃহ আইন অনুসারে প্রত্যেক ব্যক্তির ৮০০ ঘন ফুট
কিউবিক্ স্পেদ্ এবং ৮০ বর্গ ফুট মেজে বা ফ্লোর স্পেদ্ (floor space)
চাই। সৈন্য আবাদে প্রত্যেকের জন্য ১৮০০ ঘন ফুট কিউবিক স্পেদ ও
৯০ বর্গ ফুট ফ্লোর স্পেদ্, হাঁসপাতালে প্রত্যেকের জন্য ১৫০০।২০০০ ঘন ফুট
কিউবিক স্পেদ্ ও ১০০।১২০ বর্গ ফুট ফ্লোর স্পেদ্ নির্দেশ করা উচিত।
পার্ক্স্ বলেন, জন্তর দেহ ভারের পাউও প্রতি ২ ঘন ফুট স্থানের ব্যবস্থা
করা উচিত। এই হিসাবে ৬০০ পাউও ওজনের গরুর ১২০০ ঘন ফুট
স্থানের প্রয়োজন। কলিকাতার আইন অনুসারে প্রত্যেক গো অখের
জন্য ৮০০ ঘন ফুট কিউবিক স্পেদ্ ও ৮০ ঘন ফুট ফ্লোর স্পেদ্ নির্দিপ্ত।

- (২) সঞ্চালিত বায়ু বিশুদ্ধ না হইলে বায়ু সঞ্চালনে উপকার না হইরা অপকার হয়। অতএব যে স্থান হইতে বায়ু গৃহে প্রবাহিত হয়, তাহা অতি পরিষ্কার পরিচ্ছন রাখা আবশুক।
- (৩) অতি উষ্ণ কিম্বা শীতল বায়ু গৃহে প্রবাহিত হইরা ক্লেশ ও রোগ উৎপাদন করে। জানালার সম্মুখে খসখসীর টাটী জলে সিক্ত করিয়া রাখিলে বাহিরের উত্তপ্ত বায়ু শীতল হইয়া গৃহে প্রবেশ করে। শীতপ্রধান দেশে বায়ু প্রবেশ-পথে উষ্ণ জলের নল অথবা অগ্নি রাথিয়া বায়ু উত্তপ্ত করা হয়।
- (৪) বাহিরের বিশুদ্ধ বায়ু গৃহের সর্বাত্ত সমভাবে সঞ্চালিত হওয়া আব-শুক। যাহাতে প্রশাসদূষিত বায়ু পুনঃ পুনঃ সেবিত না হইয়া বহির্গত হইয়া যায়, এবং তাহার স্থান বিশুদ্ধ বায়ু দায়া অধিকৃত হয়, এরূপ ব্যবস্থার প্রয়োজন।

উপরোক্ত বিষয় চতুষ্ঠয়ের প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া বায়ু সঞ্চালনের ব্যবস্থা করিতে হইলে বায়ু সঞ্চালনের প্রাকৃতিক নিয়ম অধ্যয়ন করিতে হয়। তিনটী প্রাকৃতিক নিয়মে বায়ু সঞ্চালিত হইয়া থাকে; (১) ডিফিউশন (Diffusion) বা বিকারণ, (২) বাত্যা প্রবাহ (winds) এবং (৩) বায়ুর তাপের ও গুরুত্বের তারতম্য। (১) ডিফিউশন-শক্তিবশতঃ গৃহের লঘু বায়ু দেয়ালের স্থায় স্থা ছিদ্র দিয়া গিয়া বহিব বায়ুতে মিশ্রিত হয়। এই নিয়মে বায়ু শোধন অতি অলই শ্রহা থাকে; অর্গানিক ম্যাটার কিছুমাত্র শোধিত হয় না। (২) বাত্যা প্রবলবেগে মুক্তদারগবান্ধ-বিশিষ্ট গৃহে প্রবাহিত হইলে গৃহবায়ু তাড়িত হয় এবং বায়ুস্রোতের ফুইধার শৃত্য হয় (V acuum); এই শৃত্য স্থান পূর্ণ করিবার জন্য নিকটস্থ বায়ু সঞ্চালিত হয়। এইরূপে গৃহবায়ু অতি শীঘ্র পরিবর্ত্তিত হয়। ঘণ্টায় ২ মাইল (২×৫২৮০ কূট) গতি বিশিষ্ট বায়ু যদি ২০ কূট প্রশস্ত একটা গৃহে প্রবাহিত হয়, তাহা হইলে ঐ গৃহবায়ু ঘণ্টায়  $\frac{2 \times 6 \times 6^{\circ}}{20} = 6 \times 6$  বার পরিবর্ত্তিত হয়। (৩) গৃহস্থ বায়ু প্রশাসাদি ক্রিয়া বশতঃ উষ্ণ ও লযু হইয়া উপরিস্থিত ছিদ্র দিয়া বহির্গত হয়। এই বায়ুর স্থান অধিকার করিবার জন্য বাহিরের শীতল বায়ু নিম্নিত্ত ছিদ্র দিয়া গৃহে প্রবেশ করে।

এই সমুদয় প্রাকৃতিক নিয়ম অনুসারে গৃহে বায়ু সঞ্চালিত করিতে হইলে, প্রথমতঃ ডিফিউশনের জন্য গৃহ বায়ুর সহিত বহিব গু মিশ্রিত হইবার পথ রাখা উচিত। দ্বিতীয়তঃ, বায়ু প্রবাহের জন্য পরম্পর সমুখীন জানালা রাথা কর্ত্তব্য। গ্রীষ্মপ্রধান দেশে সর্দির ভয় নাই; স্ক্তরাং তথার দেয়াল সচ্চিদ্ হইলে ক্ষতি নাই। পার্ক্র বলেন, বাঁশের বেড়া অতিশয় স্বাস্ত্র । বেডার ভিতর দিয়া বহিবায়ু গৃহে প্রবেশ করিতে পারে, অথচ ইহার স্রোতের আঘাত শরীরে লাগে না। ভারতবর্ষের শীতপ্রধান স্থানেও দেয়ালের উপরিভাগ এইরূপে সচ্ছিদ্র রাখা যাইতে পারে। এই সচ্ছিদ্র স্থান শীতকালে আবৃত করিবার ব্যবস্থা করিয়া রাথিলেই চলে। তৃতীয়তঃ, উত্তপ্ত লবু বায়র উদ্ধিপথে নির্গমন এবং বাহিরের শীতল গুরু বায়ুর নিম্নদিকে আগমনের জন্ম দেয়ালের উর্দ্ধে ও নিমে ফোকর রাথা আবশ্যক। বিশেষতঃ বর্ষা-কালে কিয়া শীতাধিক্যে দার জানালা রুদ্ধ করিতে হয়, এই কারণেও ফোক-রের প্রয়োজন। কড়িকাঠের কিঞ্চিৎ নিমে নির্গমন ফোকর (outlet) এবং মেজের কিঞ্চিৎ উপরে আগমন-ফোকর (inlet) রাখিতে হইবে। নির্গমন-ফোকর এক বর্গ ফুট এবং আগমন-ফোকর ৪৮ বর্গ ইঞ্চির অধিক বড় হওয়া উচিত নহে।

কেবল প্রাকৃতিক নিয়মে সর্বাত্ত বায়ু সঞ্চালিত হইতে পারে না। গ্রীল প্রধান

দেশের উষ্ণ ও অচল বায়ু এবং বহু লোক সমাকীর্ণ গৃহের আবদ্ধ বায়ু সময় বিশেষে কৃত্রিম উপায়ে সঞ্চালিত করিতে হয়। কৃত্রিম বায়ু কুত্রিম বায়ু সঞ্চালন। সঞ্চালন হুই প্রণালীতে হইয়া থাকে; (১) এক ষ্ট্রাক শন (Extraction)বা আকর্ষণ প্রণালী এবং প্রপ্ল শ্ন(Propulsion)বা তাড়ন প্রণালী। (১) এক ষ্ট্রাকশন প্রণালী অনুসারে গৃহে অগ্নি প্রজ্বলিত হইলে উত্তপ্ত বায়ু চিমনি দিয়া নির্গত হয়, এবং তাহার স্থান অধিকার একট্রাক্শন। করিবার জন্ম বাহিরের বায়ু গৃহের অন্ম ছিদ্র দিয়া ভিতরে আকৃষ্ট হয়। (২) প্রপল শন প্রণালী অনুসারে বাহিরের বায়ু যন্ত্রবিশেষ দারা তাড়িত হইয়া ভিতরে প্রেশ করে। থার্মাণ্টিডোট্ নামক যন্ত্র দারা এই প্রণা-লীতে কোন কোন আফিসে বায়ু সঞ্চালিত হইয়া থাকে। মুক্তদারগবাক্ষ-বিশিষ্ট গৃহে টানা পাথা সঞ্চালিত হইলে গৃহবায়ুর কিয়দংশ পাগা। বহিষ্কৃত হয়, এবং বহিষ্কৃত বায়ুর স্থান অধিকার করিবার জন্য চতুর্দ্দিক হইতে বায়ু আদে। ইহা দারা বায়ু সঞ্চালন অতি অল্লই হইয়া থাকে; শরীরের নিকট হইতে যে বায়ু তাড়িত হয়, তাহার পরিবর্ত্তে গৃহের বায়ুই আদিয়া থাকে। তবে ইহার অন্য প্রকার উপকারিতা আছে। ইহা ৰারা শরীরের নিকট হইতে প্রস্থাস-তপ্ত বায়ু তাড়িত হয় এবং বায়ু-প্রবাহ-বশতঃ শরীর হইতে জলীয় বাষ্প উত্থিত হয় এবং বাষ্পোদামের (Evaporation) দঙ্গে দঙ্গে শরীর শীতল হয়।

# ততুর্থ পরিচ্ছেদ।

### বায়ু শোধন।

বায়ুর দূষিত পদার্থ তরল হইয়া বিশুদ্ধ বায়ুতে, ডিফিউশন শক্তির নাহায্যে মিশ্রিত হইতেছে, কথনও অপর্যাপ্ত বিশুদ্ধ বায়ুর সঙ্গে মিশ্রিত হইয়া ডাইলুট বা তেজ-রহিত হইতেছে, কথনও বা প্রবল বাত্যাপ্রবাহে তাড়িত, কিমা বায়র অক্সিজেন দারা দগ্ধীভূত হইতেছে, অথবা বৃষ্টি জলে বিধোত হইয়া অধঃপতিত হইতেছে। বায়ু সঞ্চালনের ব্যবস্থাই গৃহ বায়ু শোধনের সর্কোৎকৃষ্ট উপায়; কিন্তু সময়ে সময়ে অন্য প্রকার উপায়ও অবলম্বন করিতে হয়।

- বায়ুর সর্কোৎকৃষ্ট শোধক তাপে। শুক তাপে কিম্বা তপ্ত জলীয় বাপে
   ব্যাকৃটিরিয়া বিনষ্ট হয়।
  - २। কঠিন বায়ু-শোধক ৫ প্রকার ঃ—
- (ক) শুক মৃত্তিক।—মলের ছর্গন্ধ ও দোষ নিবারণ করিবার জন্য শুক মৃত্তিকা ব্যবহৃত হয়।
- (থ) চূণ—ইহা দারা বায়ুর কার্বন ডায়ক্সাইড ও সম্ভবতঃ সলকার কম্পাউ গুসমূহ বিনষ্ট হয়।
- গে) চার্কোল বা অঙ্গার সর্বোৎকৃষ্ট কঠিন বায়ু শোধক। ইহা দারা বায়ুন্থিত নানা প্রকার দ্বিত বাষ্প শোষিত ও শোষিত হয়। স্থার গ্যাস, রোগীদের দেহ নিঃস্ত বাষ্প, এবং হাইড্রোজেন স্ল্ফাইড্ প্রভৃতি বাষ্পের হুর্গন্ধ ইহা দারা অতি শীঘ্র বিনষ্ট হয়। অস্থি-অঙ্গারের (Animal charcoal) এই সমুদ্য গুণ অত্যন্ত অধিক। ক্ষুদ্র কুড়িতে অঙ্গার ঝুলাইয়া রাখিলে হাঁমপাতালের বায়ু অনেক পরিমাণে শোষিত হয়। কাঠ-অঙ্গার চূর্ণীকৃত করিয়া ব্যবহার করা উচিত।
- (ঘ) ক্যালসিয়ম ও ম্যাগনিসিয়ম কার্বলেট হইতে কার্বলিক য্যাসিড ্বাষ্প নির্গত হইয়া বায়ু শোধিত করে।
- (ঙ) আপলকপত্রা (Coal tar) মিপ্রিত চূণ অনেক সময় ব্যবদ্ধত হইয়া থাকে।
  - ৩। তর্ল (liquid) বায়ু শোধক তিন প্রকার :—
- (ক) লাল কণ্ডিস্ ফু ইড্ (Red Condy's fluid) (এ) বিস্ন ক্লোরাইড্ লোশন (Zinc chloride lotion)এবং (গ)লেড্ নাইট্রেট লোশন (Lead nitrate lotion)বড় থালায় রাথিয়া কিম্বা এ লোশনে সিক্ত

বস্তু ঝুলাইয়া, বায়ু শোধিত করা হইয়া থাকে। কণ্ডিদ্ ফ্লুইড্ দারা গৃহের আবদ্ধ বায়ুর এবং হাইড্রোজেন সলফাইড্ প্রভৃতি বাপ্পের ছুর্গন্ধ বিনষ্ট হয়। বার্ণেট্দ্ ফুলুইড্রের (Burnett's fluid) প্রতি দ্রানে ২৫ গ্রেণ ঝিক কোরাইড্থাকে। এই লোশন এক পাইণ্ট এক গ্যালন জলে মিপ্রিত করিয়া ব্যবহার করিতে হয়। ইহারও হাইড্রোজেন ও য়্যামোনিয়ম সলফাইড নাশ করিবার শক্তি আছে। লেড নাইট্রেট মিপ্রিত লেডোয়েন্দ্ ফ্লুইড্ (Ledoyen's fluid) স্থার প্রভৃতির হাইড্রোজেন সলফাইড্ অতি শীঘ্র বিনষ্ট করে। এক পাউও লিথার্জ (Litharge) অল্প জল ও ৭ আউন্স নাইট্রিক য্যাসিডে ক্রমশঃ মিশাইয়া, জলমিপ্রিত করিয়া ছুই গ্যালন প্রস্তুত করিতে হয়।

(৪) বাচ্পীয় বায়্-শোধক দশ প্রকার, ক্লোরীণ, আয়োডীন ও ব্রোমীন ধূত্র, নাইট্রাস ও সলফিউরাস্ য়্যাসিড্, কার্বলিক য়্যাসিড্, আলকাত্রা ধূত্র, য়্যাসেটিক য়্যাসিড্, য়্যামোনিয়া ও ওবোন।

ক্রোরীণ সর্বোৎকৃষ্ট বাজীয় বায়ু শোধক। ইহা দারা অর্গানিক
ম্যাটার ও হর্গন বিনষ্ট হয়। শতকরা ১ ভাগ ক্রোরীণে পূর্ণ বায়ু ২৪ ঘণ্টায়
সমুদয় মাইক্রোব্ বিনষ্ট করে। ১০০০ ঘন ফুট বায়ু শোধনের জন্য এই
পরিমিত ক্রোরীণ উৎপাদন করিতে হইলে, ২ পাউগু ব্লীচিং পাউডারে (bleaching powder) ৩ পাউগু হাইড্রোক্রোরিক বা সলফিউরিক য়্যাসিড্
টালিতে হয়। মাধারণতঃ ১ পাউগু ব্লীচিং পাউডারই মথেষ্ট। এই গ্যাস পরনা
কার্পেট প্রভৃতির শোধন করিতে পারে না, কেবলমাত্র বর্ণ বিনাশ করে। অয়
মাত্রায় ক্রোরীণ উগ্র এবং খাস-রোধক, অধিক মাত্রায় প্রাণনাশক। অতএব
গৃহে ক্রোরীণ উৎপাদনের উন্যোগ করিয়া ঘরায় পলাইয়া আমা কর্ত্রব্য।
ক্রোরাদ্ য়্যাসিড্ মিশ্রিত ক্রোরীণ বা ইউক্রোরীন কথনও কথনও ব্যবস্থত
হইয়া থাকে। ইহার গন্ধ ভাল এবং উৎপাদন প্রণালী সহজ, কিন্তু শোধন গুণ
ক্রোরীণ অপেক্ষা নিকৃষ্ট।

আারোডীন্ হাইড্রোজেন দল্ফাইড্ প্রভৃতির ছর্গন্ধ বিনাশ এবং পচনক্রিয়া নিবারণ করে। কিন্তু ইহা শীঘ্র জমাট হয় বলিয়া বায়ুতে দমভাবে মিশ্রিত হয় না। গ্রম থালায় আয়োডীন রাথিয়া বাষ্পীক্কত করিতে হয়।

ব্রোমীন বাষ্প শ্বাস-ক্রেশ উৎপাদন করে এবং সমভাবে বায়তে মিপ্রিত হয় না; এই হেতু ক্লোরীণের স্থায় ইহার ব্যবহার হয় না। ব্রোমাইড অব পটাসিয়মে ব্রোমীন বিগলিত করিয়া বায়ুতে রাখিতে হয়।

নাইট্রাদ্ য়য়াদিড্ অর্গানিক পদার্থ দগ্ধ করে এবং ডেড্ হাউদের ছর্গন্ধ অতি শীঘ নিবারণ করে। কিন্তু ইহা দ্বারা শ্বাস-ক্লেশ, মন্তক ঘূর্ণন, ব্মনেচ্ছা ও বমি, এমন কি মৃত্যু পর্যান্ত সংঘটিত হয়; এইজন্ম অতি সাবধানে ব্যুবহার করা উচিত। ৩ আউন্স নাইট্রিক য়য়াসিড্ ও ৩ আউন্স জল মিশ্রিত করিয়া তাহাতে ১ আউন্স তাম্রথণ্ড নিক্ষেপ করিলে নাইট্রাদ্ য়য়াসিড্ উৎপন্ন হয়।

সল্ফার ডায়কসাইড্ কোরীণ অপেক্ষা নিরুপ্ট। ১০০০ ঘন ফুট বায়ু শোধন করিতে ১ পাউগু গন্ধক দগ্ধ করা হইয়া থাকে। ইহা দারা হাইড্রোজেন দল্ফাইড্ ও য়ৢৢৢামোনিয়া দ্রীভূত হয়, এবং অর্গানিক পদার্থ শোধিত হয় বলিয়া অনুমান করা যায়; কিন্তু রোগবীজ বিনপ্ট হয় কি না এ বিষয় সন্দেহ আছে।

কার্বলিক য়্যাসিড্ একভাগ এবং ঈথার ছই ভাগ মিশ্রিত করিয়া রাখিলে কার্বলিক য়াসিড্ বাঙ্গীভূত হয়।

ওবোদন দারা কেহ কেহ পশু-মড়ক-দৃষিত বায়ু শোধিত করিয়া থাকেন। ২ ভাগ পটাসিয়ম্ পার্ম্যাঙ্গেনেটে ৩ ভাগ ষ্ট্রং সল্ফিউরিক য্যাসিড্ ক্রমশঃ মিশ্রিত করিলে ওঝোন উৎপন্ন হয়।

আলকাত্রা থূমে কাব লিক য়্যাসিডের গুণ আছে।
ভিনিগার বাষ্প দারা সম্ভবতঃ পচন ক্রিয়া নিবারিত হয়।
য়্যামোনিয়া কঠিন পদার্থের পচনক্রিয়া নিবারণ করিতে পারে।

### পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

### বায়ু পরীক্ষা।

### ১। বায়ু সঞ্চালন প্রীক্ষা।

প্রথমতঃ গৃহের কিউবিক স্পেস্ ও ফ্লোর স্পেস্ লোক সংখ্যা দ্বারা ভাগ করিয়া লোক প্রতি কত স্পেস্ পড়ে তাহা দেখিতে হইবে। প্র্যান্থপুর্জ্জনপ গণনা করিতে হইলে বিছানা ও শরীর যে পরিমাণ স্থান অধিকার করে তাহা বাদ দেওয়া উচিত। বিছানা প্রভৃতির জন্ত গড়ে ১০ ঘন ফুট ও শরীবরের জন্ত ২৯ হইতে ৪ ঘন ফুট বাদ দিতে হয়। শরীর যত ষ্টোন ভারি, তাহাকে ৪ দিয়া ভাগ করিলে যাহা হয়, শরীরের আয়তন তত ঘন ফুট। বায়ুর পরিমাণ নির্দারণের পর, বায়ু সঞ্চালনের কিরূপে ব্যবস্থা আছে তাহা দেখিতে হইবে। দার জানালাদি কত দূরে দূরে আছে এবং কোন দিকে খুলে; ফোকর ইত্যাদি কত বড়, এবং গৃহের ধুয়া কোন দিকে নির্গত হয়, অর্থাৎ বায়ু কোন দিকে প্রবাহিত হয়, ইত্যাদি সমুদয় বিষয় নির্ণয় করিতে হইবে।

### ২। বায়ুর বিশুদ্ধতা পরীক্ষা।

- (২) ঐন্দ্রিক, (২) রাসায়নিক, (৩) আণুবীক্ষণিক এবং (৪) বৈজিক, এই চারি প্রকারে বায়ুর বিশুদ্ধতার পরীক্ষা হয়।
- (১) ঐন্দ্রিক বা চকু নাসিকা ত্বক প্রভৃতির দ্বারা পরীক্ষা অতি সহজ।
  কোন ছিদ্র দিয়া গৃহে স্থারে আলো প্রবেশ করিলে বায়ুর উড্ডায়মান কঠিন
  পদার্থ দেখিতে পাওয়া বায়। বাহিরের বিশুদ্ধ বায়ু দেবন করিয়া গৃহাভ্যভরে প্রবেশ করিলে যদি গৃহ বায়ুতে ছর্গন্ধ ও অতিশয় উষ্ণতা বোধ হয়, তাহা
  হইলে বায়ু দ্যিত মনে করিতে হইবে। গৃহ প্রবেশের কিয়ৎক্ষণ পরই গন্ধান্ত্রত

শক্তির হ্রাস হয়; অলফ্যাকটরী নার্ভ স্মৃহের ক্রমিক প্যারালিসিমই ইহার কারণ।

- (२) রাসায়নিক পরীক্ষা দারা কাবন ডায়ক্ সাইড, য়ামো-নিয়া, অর্গানিক ম্যাটার, নাইট্রাইট, ও নাইট্রেট, জলীয় বাষ্পা, হাইড্রোজেন সলফাইড্ প্রভৃতি তুর্গন্ধী বাষ্পা এবং ওঝোনের ন্যাধিক্য নির্গন্ধ করিতে হয়।
- (ক) কার্ব ন ডায়কসাইড্ যে গৃহের বায়ু পরীক্ষা করিতে হইবে, তন্মধ্যে একটী এক গ্যালন পরিমিত ট্যাপ্রিশিষ্ট (জল পাইপের মুথের কল) কাঁচের বোতল জলে পূর্ণ করিয়া, ট্যাপ্ খুলিয়া দিয়া, ক্রমশঃ সমুদ্য জল নির্গত করিতে হইবে এবং বোতলের মুখ এক খণ্ড রবারের দারা আরুত করিতে হইবে। তৎপর রবারের আবরণ তাড়াতাড়ি খুলিয়া তাহাতে ৬০ কিউবিক সেণ্টিমিটার চূণের জল ঢালিয়া আবার বোতলের মুথ রবারে আবৃত করিতে হইবে। তৎপর পাত্রটী কিছুক্ষণ ভালরূপ নাড়িয়া ৭।৮ ঘণ্টা রাখিয়া দিতে হয়। বায়ুস্থিত কার্বন ভায়ক্সাইড্ চূণের জলে মিশ্রিত হইয়া জল ডায়ক্সাইড শোষিত হয় সেই পরিমাণে চুণের ক্ষারত্ব ক্রাস হয়। স্কুতরাং এই ক্ষারত্ব হ্রাদের পরিমাণ দ্বারা কার্বন ডায়ক সাইডের পরিমাণ নির্দারণ করা যায়। অক্সালিক য়্যাসিড্ সলিউশন্ ঘারা এই ক্ষারত্ব নাশের পরিমাণ নির্দারিত হয়। চূণের ক্ষারত্ব নাশক অক্সালিক্ য্যাসিড্ সলিউ-শনের > কিউবিক দেণ্টিমিটার ৫ কিউবিক দেণ্টিমিটার কার্বন ভায়ক্ দাই-ডের সমান। দৃষ্টান্ত:—৩০ কিউবিক দেণ্টিমিটার চূণের জলে ২৭ কিউবিক **নে** ভিমিটার অক্যালিক য়াসিড্ সলিউশন্ মিপ্রিত করিয়া লিটমাস্ কাগজ তুবাইয়া দেখা গেল চূণের ক্ষারত্ব সম্পূর্ণরূপ বিনষ্ট হইয়াছে। বায়ু-মিশ্রিত চূণের জলের ৩০ কিউবিক সেণ্টিমিটারে ২০ কিউবিক সেণ্টিমিটার অক্-সালিক য়্যাসিড্ সলিউশন মিশ্রিত করিয়া ক্ষারত্ব সম্পূর্ণরূপে বিনষ্ট করা হইল। অর্থাৎ বায়ু-মিশ্রিত বা কার্বন ডায়ক্ সাইড্মিশ্রিত চূণের জলের ক্ষারম্ব, ২৭ – ২৩ = ৪ কিউবিক দেণ্টিমিটার, অথবা ৪ কিউবিক দেণ্টিমিটার

অক্সালিক য়্যাসিড সলিউশনের সমান কার্বন ভায়কসাইড, বা ৪ × ৫ = ২ কিউবিক সেণ্টিমিটার কার্বন ভায়কসাইড। এই ২ কিউঃ সেণ্টিমিটার কার্বন ভায়কসাইড। এই ২ কিউঃ সেণ্টিমিটার কার্বন ভায়কসাইড বায়ু হইতে গিয়া চূণের জলে মিশ্রিত হইয়াছে। কাঁচের পাতে ২০৬০ কিউবিক সেণ্টিমিটার বায়ু ধরে; ইহার ৬০ কিঃ সেণ্টিমিটার চূণের জল দ্বারা অধিকৃত। স্থতরাং ঐ বোতলে ২০০০ কিউবিক সেণ্টিমিটার বায়ু ছিল। তন্মধ্যে ২ কিউবিক সেণ্টিমিটার কার্বন ভায়কসাইড্। অর্থাৎ বায়ুর সহস্রে ১ ভাগ কার্বন ভায়কসাইড্। স্বাস্থ্যকর গৃহ-বায়ুতে ঐ বাষ্প্র সহস্রে ১ ভাগের অধিক থাকিতে পারে না; কিন্তু এই বায়ুতে ১৪ ভাগ অধিক।

(খ) (২) য়্যামোনিয়া, আর্গানিক পদার্থ, নাইট্রাইট ও নাই-ট্রেট, এবং হাইড্রোজেন সলফাইড্ পরীক্ষা করিতে হইলে পরিস্রুত জলে বায়ু মিশ্রিত করিয়া জল পরীক্ষা করিতে হয়।

জলীয় বাষ্প হাইগ্রোমিটার যন্ত্রের দারা পরীক্ষা করা হয়।
ত। আণুবীক্ষণিক পরীক্ষা।

পরিস্রুত জলে বায়ু মিপ্রিত করিয়া ঐ জলের এক বিন্দু কাঁচ-থণ্ডে লইয়া অণুবীক্ষণ দারা পরীক্ষা করিতে হয়।

8। देविकिक वा वर्गाक्रिति उनिकिद्वन भतीका।

একটা জলপূর্ণ পাত্রের সঙ্গে একটা পেপ্টোন-পূর্ণ কাঁচের টিউব সংযুক্ত করিয়া জল ক্রমশঃ ছাড়িয়া দিলে বায়ুস্থিত ব্যাকটিরিয়া পেপটোনে প্রবিষ্ট হয়। জলের স্থায় ঐ পেপটোনের ব্যাকটিরিওলজিকেল পরীক্ষা করা হইয়া থাকে।

## তৃতীয় অধ্যায়।

#### थाना।

যে সমুদয় পদার্থ অক্নিজেন-দগ্ধ বা অক্সিডাইজ ড্ হইয়া দেহের পুষ্টি-সাধন করে, তাহাই "থাদ্য" পদবাচ্য হইয়া থাকে। ইংরাজী "ফুড" বলিতে জল, বায়ু, প্রভৃতি দেহের ক্ষয় নিবারক, পুষ্টিসাধক ও শক্তি-উৎপাদক সমুদয় পদার্থ ই বুঝাইতে পারে। থাদ্যের অর্গানিক ম্যাটার খাদ্যের প্রয়োজন। নিঃখাদ বায়ুর অক্সিজেন দারা দগ্ধ হইবার সময় তাপ উৎপন্ন হয়। ঐ তাপ হইতে নানাপ্রকার দৈহিক ক্রিয়ার উৎপত্তি। এক শক্তি অন্ত শক্তিতে পরিণত হয়। ঘর্ষণোৎপন্ন তাপ, গতির তাপে পরিণতির দুষ্টান্তস্থল। আবার তাপ গতিতে পরিণত হয়; দুগ্ধ ক্য়লার তাপে জাহাজ রেলওয়ে প্রভৃতির গতি ইহার দৃষ্টান্তত্ব। এইরূপে খান্য পরিপাকের ফল স্বরূপ তাপ, বৈহ্যতিক ক্রিয়া, অঙ্গ:সঞ্চালন প্রভৃতি নানাপ্রকার শক্তির বিকাশ হইয়া থাকে। তাপ ও নানাবিধ দৈহিক ক্রিয়ার শক্তি উৎপাদনের জন্ম থাদ্যের প্রয়োজন, কেবল এই মাত্র জানিয়া আমরা নিশ্চিত্ত নহি: কিন্তু কি পরিমাণ তাপ ও ক্রিয়া-শক্তি উৎপাদনের জন্ম কি পরিমাণ থাদ্যের প্রয়োজন তাহাও জানিতে সক্ষম হইয়াছি। ইঞ্জিনিয়ারেরা যেমন গণনা করিয়া বলিতে পারেন কতটুকু কয়লা পোড়াইলে কত মণ ভারি এঞ্জিন কতদ্র চলিতে পারে, তদ্রপ কি পরিমাণ থাদ্যের তাপে আমরা কত পরিশ্রম করিতে পারি, তাহাও বলিতে পারা যায়। অধ্যাপক ফ্রাঙ্কলাণ্ড বলেন ১ আউন্স নির্জ্বল মাংদের তাপে ৪৯ টন, ১ আউন্স চিনির তাপে ১২৬ টন এবং ১ আউন্স মাথনের তাপে ৩৩৯ টন ভারি বস্তু ১ ফুট উর্দ্ধে তুলিতে পারা যায়।

## প্রথম পরিচ্ছেদ।

### খাদ্যের শ্রেণী বিভাগ।

লাইবিগ ছই শ্রেণীতে থাদ্যের বিভাগ করিয়াছিলেন, (১) মাংস-সংগঠক ও (২) তাপ এবং গতি উৎপাদক। এই শ্রেণী বিভাগ ভ্রমমূলক; কারণ অঙ্গ সংগঠন কালেও রাসায়নিক ক্রিয়া এবং তাপ উৎপন্ন হয়।

পার্ক্ স্তুণ ও উপাদান অনুসারে খাদ্যের নিম্লিখিত শ্রেণী বিভাগ করিয়াছেন:—

#### (अभी।

### ১। প্রোটীড (proteid)—আলব্মি-নের স্থায়, ২ ভাগ নাইট্রোজেন, ৭ ভাগ কার্বন। ম্যানিমাল প্রোটীডের দৃষ্টান্ত, আলব্মিন (albumin), ফাইব্রিন (fibrin), সিণ্টোনিন (syntonin) মাইওসিন (myosin), গ্লোবিউলিন (globulin) ও কেজিন (casein); ভেজিটেবল প্রোটীডের দৃষ্টান্ত,

> (ক) জিলেটিন শ্রেণী—অধিক নাইট্রোজেন বিশিষ্ট প্রোটীড; ২ ভাগ নাই-ট্রোজেন ৫২ ভাগ কার্বন। দৃষ্টান্ত, জিলেটিন (gelatin)ওদিন(ossein) কণ্ডিন (chondrin) ও কিরেটিন (Keratin)। অল্ল পুষ্টিকর।

ধুটিন (glutin) ও লিগুমিন (legumin)।

<sup>২ (থ)</sup> এক ট্রা ক্টিভ্ ম্যাটার (extractive matter), যথা মাংস যুষ।

#### গুণ বা ক্রিয়া।

- (১) দেহ তন্ত (tissue) এবং রসসমূহের গঠন ও ক্ষতি পূরণ।
- (২) বায়ু হইতে অক্-সিজেন গ্রহণ।
- (৩) কোন কোন স্থলে চরবীর গঠন ও শক্তির (energy) বিকাশ।

উপরোক্ত ক্রিয়াত্রয়ের কিয়ৎ পরিমাণে সাধন।

জিলেটিন শ্রেণীর পরিপাক সাধন। পাবে হাইডেট্স (carbohydrates)—জল ও ভাগ, কার্বন ২ ভাগ। দৃষ্টান্ত, ষ্টার্চ (starch), ডেক্ খ্রীন (dextrin), কেন্ স্থার (cane sugar), গ্রেপ স্থার (grape sugar), ল্যাকটিন (lactin) বা মিক্ স্থার (milk sugar)।

8। সল ট্স্ (Salts)—দৃষ্ঠান্ত, সোডি য়ম কোরাইড প্রটাসিয়ম কোরাইড, ক্যাল-সিয়ম ফদ্ফেট, ম্যাগ্নিসিয়ম ফদ্ফেট, আয়রণ, ইত্যাদি।

- (১) ফ্যাটি টিগু গঠন, (২) তাপ ও শক্তি উৎপাদন, (৩) স্নায়ু-মণ্ডলীর পুষ্টিদাধন।
- (১) অকসিজেনদগ্ধ হইয়া তাপ ও শক্তি
  উৎপাদন করা; (২)
  অক্সিজেন রহিত
  হইয়া ফ্যাটে পরিণত
  হওয়া।
  - (১)কার্ব নেটে পরি-ণত হইয়া রক্তের কারত্বরক্ষা করা; (২) অক্সিজেন-দগ্ধ হইয়া তাপ ও শক্তি উৎ-পাদন করা।
  - (১) অস্থি গঠন (২)
    পাকক্রিয়া সাধনার্থ
    হা ই ড্রোক্রো রি ক
    য়্যাসিড উৎপাদন,
    (৩) পুষ্টিসাধন, শক্তি
    পরিচালন ইত্যাদি
    নানাবিধ ক্রিয়া।

প্রোটীড বা আলব্মিনেট (albuminate), ফ্যাট, কাবে িহাইডেট

মিনারেল বা ধাতব (Mineral)

এবং সল্ট্ এই চারি প্রকার খাদ্য শ্রেণী প্রক্সিমেট এলিমেণ্ট (proximate aliment) বা এলিমেণ্টারী প্রিন্সিপ্ল্ (alimentary principle) নামে খ্যাত।

## দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

### थारिनात शित्रमांग निर्द्मम ।

পরিশ্রম ও দেহ ভারের পরিমাণ,জল বায়ুর অবস্থা, লিঙ্গ ও বয়স অনুসারে থাদ্যের পরিমাণ নির্দ্ধারিত হয়।

পরিশ্রেম অতিরিক্ত হইলে আহার অতিরিক্ত চাই; বিশেষতঃ প্রোটীড্ ও ফ্যাটের পরিমাণ বৃদ্ধি করা আবশ্রুক। কিছুমাত্র পরিশ্রম না করিয়া, বক্বল মাত্র রক্ত সঞ্চালন প্রভৃতি আভ্যন্তরিক ক্রিয়া, সাধনার্থ যে পরিমাণ খাদ্যের প্রয়োজন হয়, তাহাকে সব্সিফৌন্ ডায়েট বা জীব্নধারণোপ্যোগী আহার বলে।

অল্প পরিশ্রমশীল মধ্যমাকার পুরুষের (১৫০ পাউও ভারি) যে পরিমাণ আহারের প্রয়োজন, তাহাকে রেফ্ট্রীড়ায়েট বা রেষ্ট্র ডায়েট। বিশ্রোসোপযোগী আহার বলে।

থাদ্য ছই প্রকার, কঠিন এবং তরল। কঠিন থাদ্যের নিজ'ল অবস্থা কল্পনা করিয়া তাহার নাম ওয়াটার ফ্রী ফুড্ (water-free food) বা নিজ'ল থাদ্য রাখা হইয়াছে। কিন্তু এই অবস্থা কাল্পনিক; মাংদের হু অংশ

এবং রুটীর টু অংশ জল। সাধারণ খাদ্যের প্রায় শতকরা সবসিষ্টেস ডায়েটের পরিনাণ।

প্রতি .১ আউন্স বা সমুদ্য় দেহভারের দুটুভ ভাগ নিজ্ল

খাদ্য প্রতিদিন জীবন ধারণের জন্ম আবশ্বক; অর্থাৎ ১৫০ পাউও ভারি

ব্যক্তির ১৫ আউন্স নির্জ্ব থাদ্যের প্রয়োজন। প্রতি দিনের বিশ্রোধাপ-রেষ্ট ডায়েটের পরিমাণ। বোগী আহার দেহ ভারের পাউও প্রতি ১ আউন্সের কিঞ্চিদধিক; অর্থাৎ অল্প পরিশ্রমশীল ১৫০ পাউও ভারি ব্যক্তির প্রতিদিন ১৬ আউন্স নির্জ্ব থাদ্যের প্রয়োজন।

সাধারণ পরিশ্রমশীল ১৫০ পাউণ্ড ভারি ব্যক্তির প্রতিদিন ২৩ আউন্স নির্জন খাদ্য বা ৪৮ হইতে ৬০ আউন্স কঠিন খাদ্য, এবং ৫০ হইতে ৮০ আউন্স জলীয় খাদ্য চাই। তাহার দেহ ভারের পাউণ্ড সাধারণ পরিশ্রমশীল প্রক্তির আহার। খাদ্যের প্রয়োজন।

অনেকের এই ধারণা যে শীতপ্রধান দেশে অধিক দেহ তাপের প্রয়োজন বশতঃ এবং অধিক পরিশ্রমের স্থযোগ বশতঃ অধিক আহারের এবং অধিক তৈলময় থাদ্যের প্রয়োজন। স্ত্রীলোকের আহার পুরুষের অপেক্ষা অল্ল। (ক) প্রক্সিমেট এলিমেণ্টের পরিমাণ—পার্ক্স্ আকার ও পরিশ্রম অনুসারে নিজ'ল থাদ্য পরিমাণের নিম্নলিথিত তালিকা প্রস্তুত করিয়াছেনঃ—

প্রক্সিমেট এলিমেণ্ট	দেহ ভারের পাউগু প্রতি থাদ্যের পরিমাণ।				
	জीवन सांत्रतां शरां शी	সাধারণ পরিশ্রমোপযোগী			
প্রোটীড	. ০১৭ আউন্স	.৩০১ আউন্স			
ফ্যাট্	. 009 20	٠ ٥ ١٥ ،			
কাবে 1-হাইডে ুট্	٠ ٥ كره ،	a 260.			
मण्डे	,	. 009 ,,			
যোট	. > 9 ,,	. >@? "			

১৫০ পাউও ভারি ব্যক্তির জন্ম নিম্নলিখিত খাদ্য-পরিমাণ প্রতিদিনের উপযোগী বলিয়া স্থিরীকৃত হইরাছে;—

প্রক্সিমেট এলিমেণ্ট	সাধারণ পরিশ্রমের উপযোগী	দৈন্ত প্রভৃতি অতি পরিশ্রম -শীল ব্যক্তির উপযোগী
প্রোটীড	৪.৫৯ আউন্স	৬ হইতে ৭ অউন্স
चीएक	२.३७ "	o.c , 8.c ,
কাৰ্বে1-হাইড্ৰেট	\$8.25 "	٥७ ,, ١٠ ,,
मन हे	5.06 "	5.2 ,, 5.0 ,,
<b>ে</b> মাট	२२.৮१ "	২৬.৭ হইতে ৩১ "

### (খ) নাইটোজেন ও কার্বনের নির্দিষ্ট পরিমাণ।

নাইট্রোজেনের ১৫ গুণ কার্ব্ধন স্বাস্থ্যের পক্ষে প্রয়োজনীয়। ডাক্তার কিং বলেন প্রত্যেক ব্যক্তির ২৪ ঘণ্টায় ৩০০ প্রেণ নাইট্রোজেন ও ৪৫০০ প্রেণ কার্বিনের প্রয়োজন। ডাক্তার পার্ক্ সের গবেষণায় এই স্থির হইয়াছে যে প্রতিদিন ২৯৩ হইতে ৩০৫ গ্রেণ নাইট্রোজেন ও তাহার ১৫ গুণ কার্ব্ধন সংযুক্ত থাদ্য আহার করিলে স্বাস্থ্য স্কুর্ক্ষিত হয়।

(গ) সোডিয়ম প্রভৃতি মূল পদার্থ প্রতিদিন নিয়লিথিত পরিমাণে আহার করা আবশ্যক :—

নোডিয়ম · · ·	১০ থ্রেণ
পটাসিয়ম	¢° ,,
क्रांनिमिय्य	0 .,,
ম্যাগনিসিয়ম •••	۹ ,,
त्नीर	
द्भाती <b>।</b> >	١٠ ,,
ফসফরাস	२७ ,,
मनक्त्रं	۲۰ ,,

বয়স অনুসারে আহারের মাত্রা নির্দ্ধারিত হয়। ৯ বৎসর পর্য্যন্ত দেহ

ভারের পাউত্ত প্রতি ৯০ গ্রেণ কার্বান (পূর্ণবয়ন্ধ ব্যক্তির অপেক্ষা ৩ গুণ অধিক), এবং ১২ গ্রেণ নাইট্রোজেন (পূর্ণবয়ন্ধ ব্যক্তির অপেক্ষা ৬ গুণ অধিক; ১০ম ইইতে ১৩শ বৎসর পর্যান্ত, পূর্ণ বয়ন্ধ ব্যক্তির অর্দ্ধেক মাত্রা; ১৪শ বৎসর হইতে পূর্ণ মাত্রা।

## তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

### थारितात खनाखन विहात।

নাইট্ৰেজিনাদ্ থান্য স্নায়, মাংসপেশী এবং ওভারী, গ্লাণ্ড, ভক্ত ও নানা-বিধ রস সংক্রান্ত সেল (cell) সমূহ সংগঠন করে। এই সমুদয় দেহাংশ তাপ, রাসায়নিক ও বিহ্যতিক ক্রিয়া এবং গতি প্রভৃতি শক্তির কার্য্যক্ষেত্র স্বরূপ। প্রোটীড্থাদ্য যে কেবল শক্তিসমূহের কার্য্যক্ষেত্র বা ক্রীড়াভূমি প্রস্তুত করে তাহা নহে; কিন্তু ইহার কিয়দংশ প্যানক্রিয়েটিক রস সংযোগে ফ্যাটে পরিণত হয় এবং কিয়দংশ স্থগার হয়। আবার লালা রস ও প্যানক্রিয়েটিক রস সংযোগে ষ্টার্চ শর্করায় পরিণত হয় এবং শর্করা বিউটারিক য্যাসিড্ ফার্মেণ্টেশন বশতঃ (Butyric acid fermentation) ফ্যাটে পরিণত হয়। শৃকরকে স্থল করিবার জন্ম যে থাদ্য দেওয়া হয়, তন্মধ্যে যে পরিমাণ ফ্যাট থাকে, সুলীকৃত শুকর দেহে তদপেক্ষা অনেক অধিক ফ্যাট জন্মায়। তৃণ প্রভৃতি গো-খাদ্যে যে সামান্ত ফ্যাট থাকে, তাহার তুলনায় গো-ছুগ্নের মাখন অনেক অধিক। অতএব কেবল ফ্যাটি খাদ্য হইতেই যে দেহ-ফ্যাটের উৎপত্তি হয় এই সংস্কার ভ্রমাত্মক। মাংসাহার বৃদ্ধির দঙ্গে দক্ষে কুকুরীর ছুগ্ধে মাথন বুদ্ধি হয়, কিন্তু ইহার ফ্যাটি খাদ্যের পরিমাণ বুদ্ধি করিলে ভূগ্নে বরং মাখনের হ্রাস হইয়া পড়ে। ল্যাক্টিয়েল য়াগু-সেলে য়্যালবুমিন পরিবর্ত্তিত হঁইয়া মাখনে পরিণত হয়।

এখন প্রশ্ন এই, যদি প্রোচীড ও কার্বে হাইড্রেট হইতে হাইড্রেকার্বন উৎপন্ন হইতে পারে, তবে বৃথা কতকগুলি ফ্যাট আহারের প্রয়োজন কি ? কুকুর ইন্দুর কেবল ফ্যাটহীন মাংস আহার করিয়া জীবিত থাকিতে পারে, কিন্তু মন্থ্যার পারে না। মাংসভুক্ জন্ত ও সর্বাভুক্ মন্থ্যার পাক যন্ত্রের প্রকৃতি এক নহে। প্রোচীড্ছারা ফ্যাটের কিন্তা কার্বেহিট্রেটের অভাব পূরণ হয় না; বরং অতিরিক্ত প্রোচীডের অতিরিক্ত নাইট্রোজেন দ্বারা দেহ বিষাক্ত হয়। অতএব নাইট্রোজিনাদ্ থাদ্যের স্থায় ফ্যাটেরও প্রয়োজনীয়তা আছে।

কাবেনিহাইড্রেট হইতেও ফ্যাটের উৎপত্তি হয়। কাবেনিহাইড্রেট পরিবর্ত্তিত হইয়াই ফ্যাটে পরিবত হউক, আর কাবেনিহাইড্রেটের দর্শন ফ্যাটি থাদ্যের অক্সিডেশন্ বা পরিবর্ত্তন স্থগিত হউক, যে কারণেই হউক না কেন, কাবেনিহাইড্রেট ভোজন বশতঃ যে দেহে ফ্যাট উৎপন্ন হয় তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। কিন্তু তাই বলিয়া কাবেনিহাইড্রেট দারা ফ্যাটের অভাব পূরণ হয় না। ফ্যাটের প্রধান কার্য্য ফ্যাটি টিগু সংগঠন; কাবেনিহাইড্রেটের বিশেষ কার্য্য ল্যাকটিক্ ফ্যাসিড্ ও তত্ত্ল্য ফ্যাসিড উৎপাদন। ঐ ফ্যাসিড্ সমূহ কর্ত্তক রক্তের ক্ষারত্ব ও ঘর্ম মূত্রাদির অমত্ব উৎপাদিত হয়। অতএব ফ্যাট ও কাবেনিহাইড্রেট, এই উভয়বিধ থাদ্যেরই প্রয়োজন আছে। সমুদ্য দেশে ও সমুদ্য জাতিতে কোন না কোন আকারে ফ্যাট ও কাবেনিহাইড্রেট আহার প্রচলিত আছে। কিন্তু ষ্টার্চ অপেক্ষা ফ্যাট অন্ন পরিমাণে ব্যবহৃত হয়।

পোটীড ্হইতে স্থগার উৎপন্ন হইতে পারে। কোন কোন স্থল ডায়েবিটিদ্ রোগে প্রোটীড বা ফ্যাটি খাদ্য হইতে স্থগার উৎপাদনের প্রমাণ পাওনা গিয়াছে। তাই বলিয়া কাবেনি-হাইড্রেট পরিত্যাগ করিয়া কেবল প্রোটীড আহার ব্যবস্থা করা যায় না। অতিরিক্ত প্রোটীড আহারবশতঃ নাইট্রোজেন পয়জনিং (Nitrogen poisoning) হয়।

সল্ট নাইট্রোজিনাস্ থাদ্যের ভার অত্যাবশুকীর। প্রত্যেক টিগুতেই লাইম (প্রধানতঃ ফদ্ফেট অব্ লাইম আকারে) বর্ত্তমান আছে। কোন সেল (cell) ইহা ব্যতীত বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয় না। উদ্ভিদের সঙ্গে এই পদার্থ দেহে প্রবেশ করে।
স্যাণানিশিয়া কোন কোন টিগুর পুষ্টিসাধন করে।
পটাস বুড সেল (blood cell) ও সাংসপেশীর কাইবার প্রভৃতি টিগুতে আছে; সোডা সলট সমুদর টিগু বা সেলের বহিত্ব রসে বিদ্যমান। আমিষ ও নিরামিষ খাদ্যে এবং প্রায় সমুদর পানীয় জলে এই সন্ট্রন্থ থাকে। ক্লোরীণ হইতে হাইড্রোক্লোরিক য়্যাসিড উৎপর হইয়া প্রোটাড খাদ্য পরিপাক করে।
প্রায় সমুদর খাদ্যেই ক্লোরীণ আছে, বিশেষতঃ লবণে। রেড বুড কর্পসল (red blood corpuscle) এবং মাংসপেশীর বর্ণোৎপাদক পদার্থ (colouring matter) গঠনের জন্ম লোহের প্রয়োজন। প্রায় প্রত্যেক টিগুও খাদ্যে লোহ আছে। প্রোটাড খাদ্যে সলফার ও ফসফরাস থাকে। কপি,পেয়াজ প্রভৃতি কোন কোন নিরামিষ খাদ্যে সলফার আছে। ল্যাকটেট্, টার্টেট, সাই-টেট এবং য়্যাপিটেট্ ব্যতীত দেহের ক্ষারত্ব রক্ষিত হয় না। ইহাদের অভাবে স্বর্ভি (Scurvy) হয়। এই সমুদয় সন্ট প্রধানতঃ টাটকা তরকারীতে থাকে। স্বতরাং প্রতিদিন টাটকা তরকারী আহার করা উচিত।

চতুর্বিধ খাদ্যের কোন একটা পরিত্যাগের ফল কি তাহা এখনও বিশেষরূপে জানা যায় নাই। কেবল প্রোটীড আহার করিলে দেহ ফ্যাট
শীঘ্র অক্সিডাইজ্ড বা দগ্ধ হয় এবং শরীর ক্লশ হয়; কেবল ফ্যাট বা প্রাচ
আহার করিলে দেহের ফ্যাট এবং নাইট্রোজিনাস টিশুর অক্সিডেশন বা
পরিবর্ত্তন স্থগিত হয় এবং স্থলতার বৃদ্ধি হয়। ব্যাণ্টিং সাহেব প্রাচ নিষেধ
এবং অধিক মাংসাহার ও ব্যায়ামের ব্যবস্থা করিয়া স্থলতার চিকিৎসা
করেন। ইহাতে দেহ-ফ্যাট দগ্ধ হইয়া যায়।

আদমিষ ও নিরামিষ—কেবল বে ভিন্ন ভিন্ন শ্রেণীয় থাদ্যের ভিন্ন ভিন্ন গুণ তাহা নহে, কিন্তু এক শ্রেণীয় থাদ্য সমূহের মধ্যেও গুণের তারতম্য রহিয়াছে। আমিষ ও নিরামিষ প্রোটাডের রাসায়নিক উপাদান ও পৃষ্টিকর গুণ এক; কিন্তু ডাক্তার বোমণ্ট বলেন নিরামিষ অপেক্ষা আমিষ শীঘ্র পরিপাক হয়। কেহ কেহ মনে করেন মাংশাশীদের ক্ষিপ্রকারিতা অধিক। পার্ক্ স্

বলেন এই কথা প্রমাণ সাপেক্ষ। বন্য হরিণ গাভী ও শৃকর, কি ব্যাঘ্র অপেক্ষা ক্রতগামী ও শ্রমসহিষ্ণু নহে ? দালাহারী ভারত সৈন্য মাংসাহারী ব্রিটিস সৈন্য অপেক্ষা যে কিছুতেই ন্যুন নহে এ কথা কে না জানে ? নিরামিষ ফ্যাট অপেক্ষা আমিষ ফ্যাট শীঘ্র পরিপাক হয়; অর্থাৎ তৈল অপেক্ষা ঘৃত মাথন লঘুপাক।

# চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

#### পরিপাক ও রন্ধন।

এক শ্রেণীয় থান্যের মধ্যেও পাচ্যতা সম্বন্ধে অনেক প্রভেদ আছে। অর নর্বাপেক্ষা স্থপাচ্য, এমন কি সাপ্ত অপেক্ষাও অল সময়ে জীর্ণ হয়, কিন্তু তর-কারী-মিপ্রিত ও আকণ্ঠ-পূরিত হইয়া গুরুপাক হইয়া পড়ে। কোন কোন থান্য কত সময়ে জীর্ণ হয়, ডাক্তার বোমন্ট তাহার নিয়লিখিত তালিকা প্রস্তুত করিয়াছেন :—

ভাত	১ ঘণ্টা	সিদ্ধ গোমাংস	২% ঘণ্টা
বায়ু মিশ্রিত কাঁচা ডিম	١ <del>١</del>	मिक्त त्यव गाःम	9 ,,
मा छ	> <del>8</del> ,,	भग्नात कृषी	७ <del>३</del> "
দিন্ধ ব্ৰেণ (brain)	١ <del>١</del> ,,	পনীর বা ছানা	०३ "
বালি	٠, ١	আধ সিদ্ধ ডিম্ব	ण हे w
त्मरहे (liver)	2 ,	मूत्रशी निक.	8 .,,
হ্দ	२ च छोत कि क्षिमिक	यूत्रशी द्वाष्ट	8 "
ডিম্ব-রোষ্ট	२३ घछ।	কার্টিলেজ	8 3 ,,
আৰু	, <del>3 3</del> , n . ,	<b>ट्यांना</b> (गांगांश्म	-3.
ভাজা মুরগীর ছানা	₹ ,,	বা শ্কর মাংস	8 8 ,,

থান্য ও য়্যালিম্যান্টারী ক্যানেলের অবস্থার উপর পরিপাক নির্ভর করে।

(১) থান্য যে পরিমাণে কাঠিন্য রহিত ও থণ্ডীকৃত হয়, সেই পরিমাণে পরিপাকের উপযোগী হয়। কৃত্রিম পাকরদে অর্দ্ধ সিদ্ধ আলবুমেন যত শীঘ্র জ্বীর্ম, অতি সিদ্ধ আলবুমেন তত শীঘ্র হয় না; এবং থণ্ড থণ্ড সিদ্ধ আলবুমেন যত শীঘ্র জীর্ণ হয়, অথণ্ড আলবুমেন তত শীঘ্র হয় না।(২) অন্য সমুদ্র রাসায়নিক কিয়ার ন্যায় পাককিয়া অল্প তাপে (১৯°—১০৮°F) শীঘ্র সম্পন্ন হয়; স্কতরাং ঈষত্র থান্য সহজে জীর্ণ হইয়া থাকে। (৩) ভিন্ন ভিন্ন খাপেরের পরস্পার সংমিশ্রেণে পাচ্যতার বৃদ্ধি হয়। মাংস ও ময়দা, য়ত মাথন সংযোগে স্থপাচ্য হয়,এবং নানাপ্রকার মসালা সংস্পর্শে দেলাইভা,গ্যান্ত্রিক যয়,ও ইন্টেষ্টিনেল য়য় নিংসত হইয়া থান্য দ্রব্য শীঘ্র জীর্ণ করে। (৪) খাদ্য পরিবর্ত্তন পরিপাকের সাহায্য করে, প্রধান পণ্ডিতদের এই মত। কেহ কেহ মনে করেন হিন্দুশাস্ত্রে তিথি বিশেষে খাদ্য বিশেষ নিষেধের উদ্দেশ্য তাহাই। প্রতিদিন এক প্রকার থাদ্য অক্রচিকর। নিত্য নৃতন খান্য আহারে বিশেষভাবে শিশুদের স্বাস্থ্যের উন্নতি হইয়া থাকে।

এলিমেণ্টারী কেনালের মদ্কিউলার ফাইবারের খাদ্য পরিচালন
শক্তি ও এলিমেণ্টারী রসসমূহের স্বাভাবিকতার উপরে পাকক্রিয়া
নির্ভর করে। ইসফেগাদ্, প্রমাক্ প্রভৃতির মদ্কিউলার ফাইবারের শিথিলতা
বশতঃ পেরিপ্রলিটক ক্রিয়া বা ক্রমিগতি, এবং চর্নিং (churning) বা মন্থন
ক্রিয়ার ব্যাঘাত হয়; এবং গ্যাপ্ত্রিক যূযের য়্যাদিডিটির (শতকরা ২) হ্রাস ও
পেপদিনের অভাব হইলে প্রোটীড পরিপাক স্থগিত হয়। এই জন্ত পেপদিন ও
য়্যাদিড প্রভৃতির প্রয়োগে মন্দীভূত পাকশক্তি পুনরুদ্দীপিত হয় এবং পেপটোনাইজিং (peptonising) পাউডার প্রভৃতি মিশ্রিত করিলে হয় সহঙ্গে জীর্ণ
হয়। আবার পেরিপ্রলিটক য়্যাক্রমন, রস নিঃসরণ প্রভৃতি ক্রিয়া রক্ত মস্তিক্
ও স্বায়্মগুলীর অবস্থার উপর নির্ভর করে। দূষিত বায়ু সেবনে রক্ত
দূষিত হইলে, কিয়া চিন্তা ভয় ক্রোধ প্রভৃতি কারণে পাক রস নিঃসরণ স্থগিত
হইলে, পাকক্রিয়ার বিশেষ ব্যাঘাত হয়।

কাঠিন্য-দূরীকরণ, থণ্ডীকরণ (division) তপ্ত করণ (heating)
ভিন্ন ভিন্ন থাদ্য দেব্যের সংমিশ্রণ, পাকরস-নিঃসারক মসালা
সংমিশ্রণ, এবং নিত্য থাদ্য পরিবর্ত্তন, এই বড়বিধ
উদ্দেশ্ত রন্ধন দারা বিশেষরূপে সাধিত হয়। স্থতরাং
রন্ধন কেবল পাচকের কর্ত্তন্য শ্রেণীভুক্ত নহে, কিন্তু স্থচিকিৎসকের ও
চিন্তার বিষয়ীভূত। উপরোক্ত বড়বিধ উদ্দেশ্রের প্রতি দৃষ্টি রাথিয়া রন্ধন
করিলে স্বাস্থ্য স্থরকিত হয়; কিন্তু স্থণন্ধ ও স্থসাদের অন্থরোধে অনেক সময়ে
এত অধিক ঘৃত মদালা ব্যবন্ধত হয় যে লঘুপাক সামগ্রী গুরুপাক হইয়া
পডে।

থাদ্যের পাচ্যতা আলোচনা করিবার সময় অপাচ্য অংশের কথা স্মরণ রাথা কর্ত্তব্য। প্রায় সমুদয় থাদ্যেরই শতকরা ৫ হইতে ১০ অংশ ইলাষ্টিক টিশু থণ্ড, নিরামিষ থাদ্যের সেলিউলোজ (cellulose), আমিষ থাদ্যের কনেক্টিভ টিশু, মদ্কিউলার ফাইবার থণ্ড, ফ্যাট্ দেল, এবং অজীর্ন ষ্টার্চ কর্পদল প্রভৃতি অপাচ্য পদার্থ। এই সমুদয় পদার্থে মল বাঁধে। শাক, তরকারী, দাল প্রভৃতিতে অপাচ্য ফাইবার ও দেলিউলোজ অধিক; এইজন্ত আমিষভোজী অপেক্ষা নিরামিষভোজী অধিক মলত্যাগ করিয়া থাকে। তৃণা-হারী পশুর লার্জ ইণ্টেষ্টিনের দেলিউলোজ জীর্ণ করিবার শক্তি আছে; এই শক্তি নিরামিবাশী মন্থারও থাকিবার সন্তাবনা; স্বতরাং তাহাদের থাদ্যের সমুদয় সেলিউলোজ মলরূপে নির্গত হইয়া পড়ে না। নিত্য মাংসভোজীদের কোষ্ঠ প্রায় কঠিন থাকে; ছগ্ন ও ফল মূল আহারে এই কাঠিন্ত দূরীভূত হয়।

পরিপাক শক্তি অনেক স্থলে অভ্যাস ও ব্যক্তিগত বিশেষত্বের উপর নির্ভর করে। মাংস বাহাদের প্রধান থাদা, তাহাদের পক্ষে প্রচুর অন্ন ব্যঞ্জন পরি-পাক করা কঠিন। অনাহারীর পক্ষে পশ্চিম অঞ্চলের চাপাতী পরিপাক করা অসম্ভব। আবার কাহারও পক্ষে মংসা মাংস স্থপাচ্য, কিন্তু হুগ্ধ ও তরকারী হুপাচ্য। অতএব থাদ্য ব্যবস্থার সময় জাতি ও অভ্যাস প্রভৃতির প্রতি লক্ষ্য রাথা কর্ত্ব্য।

- Lacusianca

## পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

### थात्मात वित्नव विवत् ।

কোন কোন থান্যে কি কি পরিমাণ দার পদার্থ আছে, তাহা নিম্নলিখিত তালিকা পাঠে জানা যায়ঃ—

খাদ্য		শতকরা				ति नाम
জল	প্রোগিড	ফাট	কাৰ্বো-হাই- ড্ৰেট	मल् उ	গৃষ্ধৰ্	
চাউল	30.0		0.6	৮৩.২	0.0	
শয়দা _	\$4.0	22.0	₹.0	95.2	0.4	
মাছ (বাটাজাতীয়)	97,0	34.5	২.৯		٥.٠	
উৎকৃষ্ট মাংস(কাচা)	98.8	₹0.€	७.०		5.6	
निर्द्ध गांश्म	₹8.•	२१.७	>0.80		2.50	
प्रक्र	26.8	8.0	৩,৭	8.8	•.9	
মাধনতোলা হ্ৰ	. P.P	8.0	2.4	6.8	0.5	भार्क्स
মাথন	9.0	3.0	2.06		5.0	4
र्थानू :	98,0	₹.0	٥.٥٤	२३.०	3.0	
বাঁধা কপি	,85.0	2.8	٥.٥	¢.8	0.9	
<b>हिनि</b>	৩.•			৯৬.৫	0.0	
দাল (শুক্ষ)	>0.0	२२.०	٧.٥	60.0	₹.8	
দলি (মোট)	33.0	२७.८	२.२৯	66.9	915	
_ ्रक्षक्र "	30.8	२२.२	ર.૧	48.5	30.2	j
<sup>भूग</sup> (त्नाना	\$ 2.8	२०.४	₹.∘	68.6	৯ (ফসফরিক	
					য়াদিড ১)	
মহর	22 A	२৫.১	0.6	CF.8	৩.৪(ফন্ফঃ .৮)	्रां
<b>অড়</b> হর	30.0 .	39.5	ર.હ	¢ ¢-9	১১.७(फम्फः .२)	७३।एड्न
থে্সারী	٥.٥٥	۵۵.۵	۵.	6.00	७,२ (क्रम्कः ॰)	8)
মাৰ	20.5	२२.१	ર.૨	GG.A.	२.२(फम्फः ३.२)	
ছোলা	>>.৫	२১.१	8.२	0,69	৩.৬(ফস্ফঃ ১.১)	

এক আউন্স পরিমিত কোন থাদ্যে কত গ্রেণ নাইট্রোজেন, কার্বন প্রভৃতি পদার্থ আছে, তাহার নিম্নলিখিত তালিকা প্রস্তুত করা গেলঃ—

১ আড্রেল পরিমিত	জন গ্ৰেণ	নাইট্রো- জেন গ্রেণ	কার্বন গ্রেণ	হাইড্ৰো- জেন গ্ৰেণ	সল্ফার গ্রেণ	সল্ট গ্ৰেণ
চাউল	88	۵.0	\$9¢	0.6	0.0	2
ময়দা	৬৬	9.9	200	۵.۵	0.9	8
মাছ	೨೦.೨	\$0.5	<b>८५.</b> २			0.0
কাঁচা মাংস	৩২৬	\$8.9	10	७,२	5.2	9
পক মাংস	२७७	\$3.0	220	5.9	3.9	. 50
মুরগী প্রভৃতি পক্ষী মাংস	७३८	>8.9	69	D.C	5.0	0
হ্ম	000	4.5	20	۶.۶	٥,२ .	0
মাখন	೨೨	.9	२२२	80.5	د.	8
আলু	<b>७</b> २8	5.8	8.4	0.0	0.3	.8
তরকারী (মোট)		2:0	20			1
पान ( ७ <b>६</b> )	৬৬	> 0.8	268	2.5	5.0	30
ডিম্ব	७२२	৯.৪	৬৮	৬.9	٠.৮	8

নাইট্রোজেন ও কার্ব্ধনের পরিমাণ অনুসারে আহারের পরিমাণ নির্দেশ করা হইয়া থাকে। সাধারণতঃ প্রতিদিন কোন থাদ্য কি পরিমাণ ভোজন করা উচিত তাহার তালিকা থ পরিশিষ্টে দেওয়া গেল।

১। দুগ্ধ—ছগ্ধ থাদ্যের আদর্শ। ইহাতে প্রোটীড প্রভৃতি চতুর্বিধ
দার পদার্থ যথোচিত পরিমাণে রহিয়াছে। ইহা সপ্তম মাস পর্যান্ত শিশুর
একমাত্র থাদ্য; কিন্তু পূর্ণবিয়য় ব্যক্তির একমাত্র থাদ্য হইতে পারে না। এক
পাইন্ট ছগ্ধে ২২ আউন্স নির্জাল থাদ্য আছে; স্মৃতরাং ১৫০ পাউও ভারি
ব্যক্তিকে, তাহার উপযোগী ২০ আউন্স নির্জাল থাদ্য প্রাপ্তির জন্ত, ৯২ পাইন্ট
বা ৴৫৮ সের ছগ্ধ, স্মৃতরাং অতিরিক্ত পরিমাণ জল, প্রোটীড এবং ফ্যাটও
আহার করিতে হয়। বঙ্গদেশে সাধারণতঃ গো ছগ্ধের,এবং উত্তর পশ্চিম অঞ্চল

ও বিহারে মহিষ হঞ্জেরই ব্যবহার।গাধা ও ছাগলের হুগ্ধ শিশুর ও রোগীর পথা। বিলাতী গরু প্রতিদিন গড়ে ২০া২৫ পাইন্ট বা ১২া১৫ সের ছগ্ধ দান করে। ভারতবর্ষের গরু গড়ে ২ সের (কিংএর মতে) এবং বাঙ্গালী পরু গড়ে /২। হ্র দেয়। হ্রের পরিমাণ ও উপাদান, (১) গাভীর জাতি, (২) বয়দ ও (৩) গর্ভ দংখ্যা, (৪) গাভী বৎদের বয়দ (৫) গাভীর ষ্মাহার, (৬) দোহনের সময় এবং (৭) স্বাস্থ্যের উপর নির্ভর করে। (১) হিন্দুখানী গরু বঙ্গীয় গরু অপেক্ষা অধিক হ্রগ্ধ দান করে। স্থইডেন দেশীয় হুত্বে অধিক সার থাকে। কেহ কেহ বলেন কুষ্ণুবর্ণ থর্ককায় গরুর তুদ্ধে সার অধিক, এবং দীর্ঘ শৃঙ্গী গাভীর হল্পে ছানা অধিক। (২) অন্ন বয়স্ক কিম্বা বুদ্ধ গাভী অপেক্ষা মণ্য বয়স্ক গাভীর হুদ্ধ ভাল। (৩) গর্ভ সংখ্যা বুদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে হুগ্নের পরিমাণ হ্রাস হয়। (৪) প্রস্বের অব্যবহিত পরে হুগ্নে অধিক কোলষ্ট্রম (colustrum) ও ফ্যাট্ থাকে। (৫) মূলা বীট প্রভৃতি আহারে হুগ্নের চিনি বৃদ্ধি পায়; টাটকা ঘাস প্রভৃতি আহারে অধিক মাথন হয়। (৬) বৈকালে যে ত্রন্ধ দোহন করা হইয়া থাকে, তাহাতে শতকরা ১১ অধিক মাথন ও ই অধিক পনির থাকে। শেষ দোহান তুগ্নে মাথন অধিক। (৭) ক্ম গাভীর ছার শীঘ্র বিক্বত হয়; ইহাতে কল্বন্ত্রম, পূ্য, রক্ত, এপিথিলিয়ম প্রভৃতি থাকিতে পারে। যক্ষাগ্রস্ত গাভীর ছগ্নের পরিমাণ প্রথমতঃ वृक्ति रुग्र।

গো ছগ্গের সার পার্ক দের মতে শতকরা ১৩.২। এ দেশীয় ছগ্গের সার ডাক্তার সিমসনের মতে ১৪.৬৭, ডাক্তার ম্যাকনামারার মতে ১৩.০৭ এবং আনালিষ্ট ডাক্তার যোগীক্রনাথ দত্তের মতে ১২.৮৪। বিগত কলিকাতা মেডিকেল কঙ্গেনে যোগীক্র বাবু এই প্রস্তাব করিয়াছিলেন যে, যে ছগ্গে শতকরা ১১২ ভাগের ন্যন সার থাকে, তাহা ভেজাল বলিয়া ধরা উচিত। বাঙ্গালী গো ছগ্গে বিলাতী গো ছগ্গ অপেক্ষা কেজিন অধিক কিন্তু মাথন ও চিনি অল্প।

হুদ্ধে সাধারণতঃ জল ভেজাল ( কলিকাতায় শতকরা ২০ হইতে ৬০ )
থাকে। লঘুত্ব হ্রাস করিবার জন্ম বাতাসা, থড়ি,
ভেজাল।
আরারুট, পানিফলের পালো প্রভৃতি মিপ্রিত হয়। মাথন
ভোলা হুগ্নও জনেক সময়ে বিক্রীত হইয়া থাকে।

ত্থা পরীক্ষা—সাধারণতঃ ল্যাকটোমিটার দারা গুরুত্ব পরীক্ষিত হয়।
কিন্তু তুষ্ঠ গোয়ালারা বাতাসা মিপ্রিত করিয়া জলপরীক্ষা।
মিপ্রিত ত্থাের গুরুত্ব বৃদ্ধি করে। মাথন তুলিলেও ত্থাের
গুরুত্ব বৃদ্ধিত হয়। ল্যাকটোকোপ্ যন্তের দারা সহজে ত্থাের মাথন পরীক্ষা
করা যায়। কিন্তু রীতিমত পরীক্ষা করিতে হইলে রাসায়নিক উপায় অবলম্বন
করা আবশ্রক।

বিকৃত হ্র পানের ফল (১) যুক্ষা। যক্ষাগ্রস্ত গাভীর হ্র পানে মন্ত্য্য-দেহে যক্ষা সংক্রামিত হইবার প্রমাণ কথঞ্চিৎ পাওয়া গিয়াছে। (২) ভৌবেটাইটিদ্। ফুট-য়্যাগু-মাউথ (foot-and-mouth disease) রোগ-গ্রস্ত গাভীর গুর্ম পানে মন্ত্রোর ঐ প্রকার রোগ জন্মিয়াছে বিকৃত হুগ্ধ পানজনিত এরূপ প্রমাণ পাওয়া যায়। কলিকাতার কোন ভদ্র রোগ। পরিবারে এই কারণ বশতঃ ৭টী শিশুর মুখে য়্যাপ্থি (apthae), রক্তিনা (redness), ডিপ্থিরিয়ার স্থার কোটিং (coating) হইয়া-ছিল এবং জিহবা স্ফীত হইয়াছিল। শিশুদের পিতা মনে করিয়াছিলেন ডে.নই সমস্ত অনর্থের মূল; কিন্তু অনুসন্ধানক্রমে তাঁহার গাভীর ফুট-র্য়াগু-মাউথ রোগ বাহির হইরা পড়িল। ১৮৮৪ সালে ডোভারে (Dover) এই রোগগ্রস্ত গাভীর ত্বর পান বশতঃ ২০৫ ব্যক্তি এক সপ্তাহের মধ্যে রোগাক্রান্ত হইয়াছিল। তাহা-দের সোর থোট (sore throat) এবং থোটে ও ওচে কোঁকার ভাষ ইরপ শন্ হইরাছিল, এবং টনসিল্ (tonsil) ও গলার গ্রাওসমূহ ফ্রাড হইরাছিল। (৩) বা†**ইমে†টিক বা সংক্রোমক রোগ—টাইফয়েড** ফিবার, ডিপ্থিরিয়া, কলেরা এবং স্কালে টিনা প্রভৃতি। হার্ট मारहत विनारक मृतिक- इक्षकानिक हो हेकर अफ किनात अभिरक्षित कत ८० ही, क्षार्ट्न हे किवारतत २० हो ७ छिन् थितियात १ है। हु हो छ थानर्भन कित्रयाहिन। ১৮৮৭ সালে "আডে ংকু থা" নামক জাহাজের ৯টা নাবিক ওলাউঠাক্রান্ত হয়;

তলধ্যে ৪ জনের মৃত্যু হয়। ডাক্তার সিমসনের অন্ত্রসন্ধানে এই প্রকাশ পায় যে রোগিগণ সকলেই হাবড়াবাসী জনৈক গোয়ালার আনীত হগ্ধ পান করিয়া-ছিল। একটা পুদ্ধরিণার জলে একজন ওলাউঠা রোগীর মল নিক্ষিপ্ত ও মল-দ্ধিত বস্ত্র ক্ষালিত হয়। ঐ জল মিশ্রিত হ্র জাহাজে বিক্রীত হইয়াছিল।

(৪) টাইরো-টক্সিকন প্রজনিং(tyro-toxicon poisoning)—বহুকালের
বাসি হ্রে, পনিরে, এবং আইস্-ক্রীমে (ice-cream) টাইরো-টক্সিকন বা
পনির-বিষ উৎপন্ন হয়। (৫) ব্রুমিক্র্ বা নীলপ্র্য্য প্রজনিং—জন্নডিন্ন
নামক (oidium) ফঙ্গাস্ (fungas) দারা হ্রের নীলবর্ণ উৎপাদিত হয়।

এই হ্র্য্য পানে গ্যাষ্ট্রাইটিস্ হয়। অয়ডিয়ম পূর্ণ হ্র্য্য নীলবর্ণ না হইলেও
কথনও কথনও কলেরার লক্ষণ এবং শিশুদের মুথে ক্ষত উৎপাদন করে।

(৬) একদা রস্ টক্স ব্ক্ষাহারী গরুর হ্র্য্য পান বশতঃ শিশুদের দৌর্ম্বল্য,
বিমি, তাপক্ষয়, শুক্ত ও ক্রীত জিহ্বা এবং কোষ্ঠ কাঠিত্য হইয়াছিল।

মহিষ-তুশ্ধে গোতৃগ্ধ অপেক্ষা সার অধিক এবং মাথন প্রায় দিগুণ।
ছাগতুশ্ধে ও মাথন অধিক এবং হার্সিক্ য়্যাসিড (hircic acid) নামক
একপ্রকার গন্ধবিশিষ্ট য়্যাসিড আছে। গাধার তুগ্ধ প্রায় মাতৃত্গ্ধ তুলা।
ইহাতে সার অল্প কিন্তু চিনি অধিক। যোড়ীর তুগ্ধে অত্যন্ত চিনি;
ইহার দ্বারা ক্ষমিয়ায় কোমিন্ (Koumiss) নামক একপ্রকার মন্য প্রস্তুত্ব্য়।

তৃগ্ধ ফুটাইয়া বোতলে পূরিয়া তৎক্ষণাৎ ছিপিবদ্ধ করিলে অনেক
দিন পর্যান্ত অবিকৃত থাকে। কিঞ্চিৎ সোডা ও চিনি মিশ্রিত করিয়াও ১০।
১৫ দিন রাথা যায়। টিনবদ্ধ ঘনীভূত তৃগ্ধ শিশুদের পক্ষে
প্রিজার্ভ করা
অপেক্ষাকৃত স্থপাচ্য, কিন্তু টাটকা তৃগ্ধের যে স্কর্ভিনিবারিণী
শক্তি থাকে, টিনন্থ তৃগ্ধের তাহা নাই।

সাহেবেরা অনেক সময় কাঁচা হ্রগ্ধ পান করেন; কিন্তু হ্রগ্ধ না ফুটাইয়া পান করা উচিত নয়। গোয়ালার নিকট প্রত্যহ জানা আবশুক, তাহার হ্রগ্ধ ব্যবহারের বাড়ীতে কিম্বা দোকানে কোন সংক্রামক পীড়া আছে কি নিয়ম না, বা তাহার গো-শালায় মড়কের আবির্ভাব হইয়াছে কি না। নব প্রস্তুত কিম্বা রুগ্ধ গাভীর হ্রগ্ধ ব্যবহার করা অনুচিত। রুগ্ধ শিশুদের জন্ম এক গাভীরই হ্রগ্ধ দেখিয়া আনা কর্ত্তব্য।

(২) মাখন- ছই প্রকার মাখন ব্যবহৃত হয়, গাওয়া ও ভৈষা। মাখন

সহজে পরিপাক হয়, কিন্ত বিক্বত হইলে অম্বল ও উদরাময় উৎপাদন করে।
ইহাতে শতকরা ৮৮ হইতে ৯২ ভাগ কেন্দ্রীন (casein) দল্ট ও
ফ্যাট, অবশিষ্ট জল । মাখনের দঙ্গে কিঞ্চিৎ ছগ্ধ চলিয়া আদে
বলিয়া কেন্দ্রীন থাকে। ডাক্তার যোগীন্দ্র নাথ দত্ত অনেক প্রকার
মাখন পরীক্ষা করিয়া এই সিদ্ধান্ত করিয়াছেন, যে মাখনে শতকরা ১০ হইতে
১০ ভাগের অধিক জল, ১ হইতে ২ ভাগের অধিক কেন্দ্রীন এবং ৮৬ হইতে
৮৮ ভাগের ন্যূন ফ্যাট থাকে, তাহা ভেজাল বলিয়া ধরিতে হইবে। মাখনে
সাধারণতঃ জল, গক ও শৃকরের চরবী, কলার শাঁদ, নটকন ইত্যাদি ভেজাল
দেওয়া হয়। কখনও কখনও শতকরা ৭৫ ভাগ জল মিশ্রিত হইরা থাকে।

- (৩) ঘুত ছই প্রকার, গাওয়া ও ভৈষা। কলিকাতার বাজারে যে তিন প্রকার মৃত বিক্রীত হয়, তন্মধ্যে "চন্দ্রকোণা" মৃত সর্ব্বোৎকৃষ্ট। সাধা-রণতঃ চরবী, মউয়া তৈল, চিনে বাদাম তৈল প্রভৃতি মৃতে ভেজাল দেওয়া হইয়া থাকে।
- (8) সরতোলা তুগ্ধে (Skimmed milk) ছানা ও মাখন অল্প। ক্ষীণ পাকশক্তি বিশিষ্ট ব্যক্তি ও ডায়েবীটিদ্ রোগীদের পক্ষে এই হগ্ধ ভাল।
- (৫) দধি—ছংগ্রের চিনি বিকৃত হইয়া ল্যাক্টিক্ য়্যাসিড্ হইলে দধি
   হয়। এই য়্যাসিডের গুণে পলার প্রভৃতি য়তপক বস্ত জীর্ণ হয়।
- (৬) বোল—দিধি মহন করিলে ঘোল হয়। ঘোলে মাথন থাকে না, কেবল কেজীন ও ল্যাকটিক গ্রাসিড্ থাকে; স্থতরাং ঘোল দিধি অপেকা। লবুপাক। চিনি ও সদ্য ঘোল মিশ্রিত পকবেল অতি উপাদেয় ও উপকারী। স্থামাশা রোগে দগ্ধ কাঁচাবেল ও ঘোলের সরবত ব্যবস্থা করা হইয়া থাকে।
  - (a) ক্ষীর ঘনীভূত হগ্ধ মাত্র; অতি হুষ্পাচ্য।
- (৮) প্রীরে শতকরা ৩১ ভাগ প্রোটীড, ২৮ई ভাগ ফ্যাট ও ৪ই ভাগ সন্ট্। এক পাউও মাংদে যত নাইট্রোজেন ও ফ্যাট আছে, এক পাউও প্রনীরে তাহার দিওণ নাইট্রোজেন ও ত্রিগুণ ফ্যাট। বিক্কৃতি নিবারণের জ্ঞা ইহাতে লবণ মিশ্রিত হয়; কিন্তু গ্রীষ্মপ্রধান দেশে ইহা শীঘ্র পচিয়া যায়। ইহার বিক্কৃতিবশতঃ টাইরো-টক্সিকন নামক টোমেন শ্রেণীর বিষ উৎপন্ন

হয়। এদেশে পনীরের ব্যবহার অতি অল্প। গোবৎসের চতুর্ধ ইনাকের রেনেট (rennet) ছথ্মে নিক্ষেপ করিয়া পনীর প্রস্তুত করা হয়।

- (৯) ছানাতে পনীরের সমান কেজীন ক্যাট ও সন্ট। ছানা দ্বারা সাধারণতঃ সন্দেশই প্রস্তুত হইয়া থাকে। ছানার তরকারী অতি উপা-দেয় ও পুষ্টিকর, কিন্তু গুরুপাক।
- (১০) অন্ন-পৃথিবীর প্রায় এক তৃতীয়াংশ লোক অন্নাহারী। ইহাতে নাইট্রোজেন, ফাটে ও দল্ট অল্প, কিন্তু অঞ্নার অধিক। এই জন্য ইহার সহিত দাল, মৃত, তৈল ও তরকারী আহার করা আবশুক। পুরাতন ও দির চাউল অধিক পৃষ্টিকর। যত পুরাতন হয়, ততই ইহার অঞ্লার বায়ুর অল্পি-জেন কর্ত্বক দগ্ধ হয়; স্থতরাং অঞ্লারের তুলনায় নাইট্রোজেনের পরিমাণ বৃদ্ধি পায়। চালের আলবুমিনাদ্ (albuminous) আবরণ অল্প তাপে জমাট হইয়া যায়; স্থতরাং দিন্ধ চাল পুনরায় জলে দিন্ধ করিলে অভ্যন্তরম্থ পৃষ্টিকর প্রোটীড ্বাহির হইয়া পড়ে না,অথচ ইহার ষ্ঠার্চ নির্গত হইয়া মাড়ের সঙ্গে মিশ্রিত হয়। ডাক্রার ধর্মানাদ বস্থ ভাতের মাড় পরীক্ষা করিয়া দেখিয়া-ছেন,এক আউন্স মাড়ে প্রায় ৫৬ৡ গ্রেণ ষ্ঠার্চ বা ২৫ গ্রেণ কার্ব বা থকে। এই হিদাবে এক আউন্স অয়ে ৩৬৪ গ্রেণ ষ্টার্চ না ধরিয়া ৩০৭ৡ গ্রেণ ষ্টার্চ বা ১৫০ গ্রেণ কার্ব ন ধরা উচিত।

ভাত সর্বাপেকা লযুপাক, এমন কি বালি ও সাগু অপেকা অন্ন সময়ে জীর্ণ হয়। ডেক্ খ্রিন ( Dextrin ) ও সেলিউলোজ ( Cellulose ) নামক অপাচ্য পদার্থ, চাউলে ২.১, গমে ১১.১ এবং বালি তৈ ১৪.৭৫। ডাক্তার বেনেটের মতে অন্ন ধারক (astringent)। তিনি বলেন উদরাময় প্রভৃতি রোগে অনুই স্থপথ্য।

ভাল চাউল খুব মোটা নয় খুব দক নয়; ইহাতে কোন দাগ বা পোকার ছিদ্র থাকে না; ভাল চাউল টিপিলে চৃণীকৃত হয় না।

ধান্ত হইতে চিঁড়া ও থৈ প্রস্তুত হয়। থৈ মণ্ড রোগীর পথ্য। তুগ্ধ মিশ্রিত থৈমণ্ড রেচক।

(১১) ম্য়দ। পৃথিবীর তিন চতুর্থাংশ লোকের থাদ্য। গমের ময়দা সর্বা-পেক্ষা উৎকৃষ্ট। ইহাতে জল কম এবং সার অধিক; এই জন্ম অর পরি- মাণে অধিক পৃষ্টিসাধন করে। চাউল অপেক্ষা ইহাতে নাইট্রোজেন অধিক কিন্তু কার্বন অল। ভূসীর উপরিভাগ ছপ্পাচ্য, কিন্তু ইহার আভ্যন্তরিক আবরণ নাইট্রোজিনাস্ ও পৃষ্টিকর। এই জন্ম ডায়েবিটিস্ প্রভৃতি রোগে এই অর্ক-ভূসী মিশ্রিত ময়দার রুটীর ব্যবস্থা করা হইয়া থাকে। ভূসী জলে ভিজাইয়া বা সিদ্ধ করিয়া, সেই জলে ময়দা মাথিলে, ময়দার পৃষ্টিকারিতা বৃদ্ধি পায়। ময়দা জল দ্বারা ধৌত করিতে করিতে স্থাচ নির্গত হইয়া য়ায়, এবং য়ৢটেন (Gluten) বা স্থাজ থাকে। ইহাই ময়দার নাইট্রোজিনাস্ অংশ। ভাল ময়দার দশ ভাগের এক ভাগ স্থান। স্থাজ হইতে ভারমিস্লি (Vermicelli) প্রস্তুত হয়। ইহাতে ময়দা অপেক্ষা দ্বিগুণ ত্রিগুণ নাই-ট্রোজেন থাকে। ভারমিস্লি রোগীর পথ্য।

ময়দাতে সাধারণতঃ চাউলের গুঁড়ি বা ফটকিরির গুঁড়ি ভেজাল থাকে। চাউলের গুঁড়ি মিশ্রিত ময়দার পাঁওরুটী ভারি হয় এবং তত ফাঁপা হয় না। পুরাতন ময়দায় ফটকিরির চুর্ণ মিশ্রিত হইয়া থাকে। এইরূপ ময়দার রুটী খুব সাদা হয়।

ভাল ময়দা খুব সাদা; অল ভূসী মিশ্রিত হইলে ঈষৎ লাল কিষা ভাল ময়দার হল্দে হয়; অমুত্ব হীন ও গ্র্গন্ধ হীন; ডেলা বাঁধে না; লক্ষণ জলে মাখিলে স্ত্তের স্থায় টানা যায়। প্রাতন ময়দা হল্দে, বালি বালি এবং টক।

উত্তর পশ্চিম অঞ্চলের চ্প্পৃতি বা হাতগড়া রুটা একপ্রকার নিরেট বলা যায়। ইহা সহজে জীর্ণ হয় না। সেই অঞ্চলের শ্রমজীবীরা অড়হর দালের সহিত সেই রুটা থাইয়া একদিনের জন্ম নিশ্চিন্ত থাকে। হাতগড়া "ফুল্ক" রুটা স্থপথ্য। ময়দাতে ক্যাটের ভাগ অয়,স্বতরাং ইহার রুটাতে অয় য়ত দেওয়া কর্ত্বয়। অধিক য়তমিশ্রিত পুরু রুটীর প্রাচ সেলাইভা কর্তৃক আক্রান্ত ও বিগলিত হইতে পারে না। কিন্তু লুটী এতদপেক্ষা লঘুপাক। প্রাণ্ড রুটী কর্ণা, স্বতরাং সহজে জীর্ণ হয়। ভালরূপ তাতান, পাতলাও নরুম বিক্ষিট পুষ্টিকর। ইহার ৡ পাউও, রুটীর ১ পাউণ্ডের সমান। কিন্তু কিছুকাল পর ইহা ছ্পাচ্য হইয়া পড়ে।

মন্দ ময়দা আহার বশতঃ ডিদ্পেপ্সিয়া ও ডায়েরিয়া জন্মিয়া থাকে।

ময়দার ফটকিরি ও চাউলের গুঁড়া ভেজালের দক্ষন ডিদ্পেপ্সিয়া

ইইয়া থাকে।

- (>২) জনার ভুটার (maze) শতকরা ৬।৭ ভাগ ফ্যাট। ইহা ২।৪ ঘণ্টা জলে ভিজাইয়া ৪।৬ ঘণ্টা ভালরপ সিদ্ধ করিয়া থাইতে হয়। জনার ভুটার ময়দার অধিকাংশ ফ্যাট ও প্রোটীড্ ভাইলুট কষ্টিক সোডা লোশন দ্বারা দ্রীভূত করিয়া কর্ণ ফ্রাওয়ার (Corn flour) প্রস্তুত করা হয়।
- (২০) বালি বা যব ছই প্রকার; দানা বালি বা পার্ল, বালি এবং গুড়া বা পেটেণ্ট বালি। ইহাতে ভাত অপেক্ষা নাইট্রোজেন এবং গুড়াচ্য পদার্থ অধিক। বালি সারক (laxative)। বালি হইতে মুল্ট প্রস্তুত হয়। বালির জল বা বালি ওয়াটার বেশ শীতল এবং আমাশা প্রভৃতি রোগে স্পেথ্য। বড় এক চামচে পার্ল বালি শীতল জলে ধৌত করিয়া কিঞ্চিৎ চিনি, একটু লেবুর খোদা, এবং অর্দ্ধ খণ্ড লেবুর রম মিশ্রিত করিতে হয়। তৎপর ইহাতে পাঁচ পোয়া ফুটন্ত জল ঢালিয়া ৭৮ ঘন্টা রাখিয়া ছাঁকিয়া লইতে হয়। বালিতে সটীচূর্ণ, ময়দা, আরাক্ষট বা আলুর পালো ভেজাল থাকে।
- (১৪) দৃশ্ল অতিশয় পৃষ্টিকর ও নিরামিষাশীদের পক্ষে অত্যাবশ্রকীয়।
  ইহাতে নাইট্রোজেনের পরিমাণ অধিক। কিন্তু দালের শতকরা ৬২ ভাগ
  ছুপ্পাচ্য ও মলের সঙ্গে নির্গত হইয়া পড়ে; এবং ইহাতে সল্ফরাধিক্য বশতঃ
  হাইড্রোজেন সল্ফাইড গ্যাস উৎপন্ন হইয়া আধ্যান (flatulence) জন্মায়।
  পাক্স্ বলেন কেবল দাল খাইয়া মন্ত্রা ও পশু কিছুকাল জীবিত থাকিতে
  পারে। পুরাতন দাল ছুপ্পাচ্য এবং ২৪ ঘণ্টা জলে ভিজাইয়া দিন্ধ না করিলে
  জীবি হয় না।

মুগ সর্কাপেকা লঘুপাক, তৎপর মহুর ও কলাই। মুগের যৃষ রোগীর পথ্য। মসূরে অধিক পরিমাণ নাইট্রোজেন, আয়রণ ও ফদ্ফেট্ অব্লাইম্ আছে, অথ্চ দলফার নাই। মহুর যৃষ রোগীর পথ্য। মাষ্য কলাই দালে ফদ্করদ্ অধিক। থেসারীতে নাটোজেন অধিক, কিন্তু ইহা

অধিক পরিমাণে ব্যবহার করিলে কোন্ত কাঠিন্য, শূল, অজীর্ণতা এবং পক্ষা
যাত (পেরাপ্লিজিয়া) জন্মায়। ডাক্তার আর্ভিন বলেন বঙ্গদেশের কোন কোন

গ্রামে এই দাল আহার বশতঃ শতকরা ১০।১৫ জন পক্ষাঘাত গ্রস্ত।

ভৌলোতে নাইটোজেন অধিক। ছোলা ছুপ্পাচ্য।

- (১৫) তৈল—শরিষার তৈলের ব্যবহার ঘৃত অপেক্ষা অধিক। ইহাতে সাধারণতঃ সোরগোজা তৈল, চিনে বাদাম তৈল, পোস্ত তৈল, তিল তৈল, সজিনা রম ও লঙ্কা ভেজাল থাকে। স্কুশ্রুত বলেন তৈলপক মাংম গুরুপাক ও ঘৃতপক মাংম লঘুপাক।
- (১৬) ডিম্ব—ইহাতে নাইট্রোজেন অধিক কিন্তু কার্বন অল্ল; স্কুতরাং ইহার সঙ্গে অল্ল কিন্তা কটা আহার করা আবশ্য ক। এ দেশীয় ডিম্ব সাধারণতঃ ৬০০ গ্রেণ বা ১২ আউন্সের কিঞ্চিৎ অল্ল ন্যুন। ইহার দ্ব অংশ জল। ১ আউন্স ভারি ডিম্বে প্রায় ১০০ গ্রেণ সার। ফুটন্ত জলে ২০০ মিনিট রাখিয়া আহার করিলে ডিম্ব সহজে জার্ণ হয়। অধিক ডিম্ব আহারে প্রস্রাবন ব্যাল্-বুমেন জন্মিয়া থাকে। টাটকা ডিম্বের মধ্যভাগ ও পুরাতন ডিম্বের অগ্রভাগ স্কছ। ১০ আউন্স জলে ১ আউন্স লবণ মিশ্রিত করিয়া তাহাতে টাটকা ডিম্ব ছাড়িয়া দিলে ভুবিয়া যাইবে,

পুরাতন ডিম্ব ভাসিয়া উঠিবে। পুরাতন ডিম্ব শুদ্ধ জলেও ভাসিতে থাকে।

(১৭) মাণ্স—ইহাতে নাইটোজেন, ফ্যাট ও সল্ট অধিক কিন্তু ষ্টার্চ আর। মাংসাহারীদের পক্ষে নিরামিষ অপেক্ষা মাংস লঘুপাক। মাংসের ভাল মন্দ পশুর বরস ও স্বাস্থ্যের উপর নির্ভর করে। কচি পশুর মাংস অর পুষ্টিকর কিন্তু লঘুপাক; বৃদ্ধ পশুর মাংস ফ্যাটহীন, কঠিন ও গুরুপাক। মধ্যবরন্ধ পশুর মাংস উত্তম। পীড়িত পশুর লোম কাঁটা দের, নাসা গহুর শুদ্ধ বা ফেণার পরিপূর্ণ, চক্ষু ভারি ভারি, জিহ্বা প্রসারিত, নিশ্বাস প্রশাস ক্রত, চলন মন্দীভূত, বাহ্যে তরল, প্রস্রাব অর বা রক্ত মিশ্রিত।

উত্তম মাংস শক্ত ও স্থিতিস্থাপক, সহজে ছিন্ন হয়, ফাঁ্যাকাসে নয় (পীড়িত কি কচি পশুর মাংস ফাঁ্যাকাসে), কাল নয় (বৃদ্ধ পশুর মাংস কাল), ভিতরে বাহিরে সম বর্ণ, ইন্টার মন্ধিউলার টিশু নরম নম, অথবা তাহাতে পূঁব কি আঠা থাকে না। পচা মাংস ছর্গন্ধ বিশিষ্ট এবং সবুজবর্ণ। মেটে এবং ফুসফুসে ফোঁড়া কি পোকা আছে কিনা দেখা উচিত। ভাল মাংসে অতিরিক্ত চরবী থাকে না এবং ইহা রন্ধনের পর শক্ত হয় না। রোগে মৃত পশুর মাংস বেশুনে রং।

ব্রথ বা মাংস য্য প্রস্তুত করিতে হইলে কুজ কুজ মাংস থণ্ড শীতল জলে ফেলিয়া অল তাপে ক্রমশঃ সিদ্ধ করিতে হয়। মুরগীছানার ব্রথ সর্বোৎকৃষ্ট এবং গরুর ব্রথ সর্বাপেকা নিকৃষ্ট। ৪ ফোটা হাইড্রোক্রারিক য়্যাসিড্ মিশ্রিত এক পাইণ্ট জলে অর্দ্ধ পাউণ্ড মাংস বিনা তাপে সিদ্ধ হয় এবং তাহাতে উত্তম ব্রথ প্রস্তুত হয়। লাইবিগের এক ষ্ট্রাক্ত মাট (Liebig's Extract of meat ) বেনেটের মতে চা ও কফির স্থায় উত্তেজক মাত্র। ইহাতে প্রোটিড্ প্রভৃতি পুষ্টিকর পদার্থের অভাব। সেই অভাব দাল, ডিম্ব অন্ন প্রভৃতির দ্বারা পূরণ করিতে হয়। বেনেট বলেন অধিক মাত্রায় লাইক্রার বীফ্ টা (beef tea) স্থরার স্থায় মাদকতা উৎপাদন করে।

(১) কোন কোন আপাত সুস্থ পশুর মাংস আহার বশতঃ উদরাময় হইয়া থাকে, যথা শ্কর মাংস। (২) পচা মাংসে টোমেন বিষ উৎপন্ন হয় এবং আহার করিলে বমি, উদরাময়, অতি দৌর্জন্য অথবা জর মাংসাহারীর রোগ

হয়। (৩) রুয় পশুর মাংস আহার বশতঃ কোন কোন কোন কোন সংক্রামিত হয়। যক্ষাগ্রস্ত পশুর মাংস আহারে যক্ষা হয়, অনেকের এই মত। শ্কর মাংস হইতে টিনিয়া সোলিয়ম এবং গোমাংস হইতে টিনিয়া মিডিয়োকেনেলেটা ময়য়য়দেহে প্রবেশ করে। কাঁচা মাংসাহারীদেরই প্রায় এই রোগ হয়; কিন্তু পার্কস্ বলেন রন্ধনেও মাংসের এই দোষের সম্পূর্ণ থগুন হয় না। শ্কর মাংসের ট্রাইকিনা স্পাইরেলিস্ রুয়ি ময়য়য়দেহে ট্রাইকিনা বোগ উৎপাদন করে। এই রোগের লক্ষণ বিষম জর, হস্তপদে অতিশন্ন বেদনা ও শোথ। কথনও কথনও ক্যেটিক হয়। রন্ধনেও এই রুমি সহজে বিনষ্ট হয় না। বসন্ত রোগাক্রান্ত মেঘমাংস ছর্গন্ধ বিশিষ্ট, ফ্যাকান্সে ও রস যুক্ত; এই মাংস ভোজনে বিমি উদরাময় ও জর হয়। একটী যাঁড়কে মৃত্যুর পূর্কে য়য়ণি নিমনি ব্যবস্থা করা হইয়াছিল; তাহার মাংস ভোজন করিয়া ২০৭

ব্যক্তির বিম ও উদরাময় হইয়াছিল। মাংসে কথনও বা আবদু নিক থাকে।
ছাগের ক্বমি, যক্ষা প্রভৃতি রোগের কোন উল্লেখ পাওয়া যায় না। ডাক্তার
বেনেট বলেন মটন বা মেষ মাংস সর্ব্বোৎকৃত্ত। ডাক্তার স্মিথ বলেন মেষ
মাংস অপেকা ছাগ মাংস অধিক পুষ্টিকর। পক্ষীর মধ্যে হংস কপোত ও
কুকুট সর্ব্বোৎকৃত্ত।

- (১৮) কাঁকড়া ও চিংড়ী—ইহাদের মাংস পুষ্টিকর কিন্ত ছুপ্পাচ্য।
  চিংড়ীর খোলা কিছুতেই জীর্ণ হয় না। চিংড়ী ভোজন বশতঃ কখনও
  কখনও আর্টিকেরিয়া (urticaria) হয়। কছেপের মাংস স্থলচর পশুর
  মাংস অপেক্ষা স্থপাচ্য।
- (১৯) মৃৎ্স্য সাংস অপেকা সহজে পরিপাক হয়, অথচ তত উত্তেজক নহে। ইহাতে যথেষ্ট পরিমাণে ফসফরাস্ আছে বলিয়। পার্ক্ স্ চিন্তা-শীল ব্যক্তিদিগকে মৎস্থ ব্যবস্থা করেন। শোল, বাটা প্রভৃতি যে সমুদ্র মংস্থের অভ্যন্তর শ্বেতবর্ণ তাহাদিগকে শ্বেড মৎস্থা, এবং রোহিত কাতলা প্রভৃতি যে সমুদ্র মৎস্থের অভ্যন্তর লোহিত বর্ণ ভাহাদিগকে লোহিত মৎস্থা বলা যায়। শ্বেত মংস্যা অপেকাক্তত লবুপাক; ইহাতে নাইট্রোজেন অধিক। লোহিত মৎস্থা অপেকাক্তত গুরুপাক, ইহাতে তৈল অধিক। মুরলা, বাটা, কৈ, মাগুর, নিন্ধি, পাঁকাল ইত্যাদি রোগীর পথ্য।

টাটকা মৎস্থা—শক্ত ও উজ্জ্বল চক্ষুবিশিষ্ট, যে দিকে ইচ্ছা সেই দিকে পুচ্ছ বক্ত করা যায় না, টিপিলে ইহাতে অঙ্গুলীর দাগ বদে না, এবং ইহাতে কোন প্রকার পচা গন্ধ থাকে না।

কোন কোন মংস্থ আহারে বমি ও উদরামর হইরা থাকে। পচা মৎস্যে
টোমেন বিষ উৎপন্ন হয়। কেহ কেহ অনুমান করেন
মংসাহারীর রোগ।
অর্দ্ধ সিদ্ধ মৎস্য ভোজন বশতঃ ভিষ্টোমা নামক
কৃমি জনার। মৎস্থাহারে চর্মারোগ হর এই বিশ্বাস অমূলক।

- (২০) ফার্চ<sup>বা</sup> শেতসার—আরারুট, টেপিওকা ও সাও এই শ্রেণীর খাদ্য। আরাজটে সাধারণতঃ আলুর পালো মিশ্রিত হয়।
  - (২১) স্থগার বা শর্করা—চিনি অধিক পরিমাণে আহার করিলে স্থলতা

বৃদ্ধি পায়, অথবা ফার্মেণ্টেশেন বশতঃ অম্বল ও অজীর্ণতা জন্মায়।

- (২২) তরকারী—আলু কর্জি-নিবারক (anti-scorbutic)। ইহাতে অল্প পরিমাণে নাইট্রোজেন আছে। উত্তম আলু বড় ও শক্ত। থোদা দহিত আলু দিদ্ধ করা উচিত; নতুবা ইহার পুষ্টকর পদার্থ জলের দহিত বহির্গত হইয়া পড়ে। মানকচু, ওল,পটল, ইঁচড়, কাঁচকলা,ডুমুর, ফুল কপি, বাঁধা কপি,মোচা, সীম, কুয়াও প্রভৃতি নানা প্রকার উপাদের ও উপকারী তরকারী আহার করে বলিয়া এ দেশীয় লোকের ক্ষর্ভি রোগ অতি বিরল। ডাক্তার কিং বলেন কলাতে অয়ের হায় পুষ্টিকর পদার্থ শতকরা ২৭ ভাগ রহিয়াছে। তাঁহার মতে এক আউন্স কলায় ২১ গ্রেণ আলব্মিনেট আছে; কাঁচকলায় তদপেক্ষা অধিক। ইহার শাঁদে প্রচুর স্থাচি । গুক্ত ও চুর্ণীকৃত কাঁচকলার শাঁদে ব্রিটিদ গায়েনার শিশু ও রোগীদের পথ্য। থাদিয়াগণ শিশুদিগকে কলা ভক্ষণ করায়; তাহাদের দেশে ছয়্রের ব্যবহার নাই। কাঁচকলা কথ্ঞিৎ য়্যান্থিজ্বেণ্ট বলিয়া উদরাময়ের কনভেলেদেন্দ্ব অবস্থায় ব্যবস্থা করা যায়।
- (২৩) লবণ—উত্তম লবণ শুষ্ক, পরিষ্কার, দানাযুক্ত, এবং জলে সম্পূর্ণরূপ বিগলিত হয়। উত্তম লবণের জল ঘোলা হয় না। লবণে কথনও কথনও সোরা ভেজাল থাকে।
- (২৪) ফল—স্বর্ভি-নিবারক। কলা, আঙ্গুর প্রভৃতি ফল উপাদের ও পুষ্টিকর। বাদামের (almonds) শতকরা ২৪.১৮ ভাগ নাইট্রোজিনাস্। ভুষ্বের (fig) শতকরা ৪ ভাগ এবং কিসমিসের ২.৪২ ভাগ নাইট্রোজিনাস্। লাইম-যুষ স্কর্ভি রোগের ঔষধ। কমলা লেবু আহারের পর ব্যবহার করিলে দাস্ত পরিষ্কার হয়।
- (২৫) মুস্পল্য লঙ্কা, হলুদ, শরিষা, আদা, গোল মরীচ, পেঁয়াজ, রস্ত্রন,
  দালচিনি, এলাচি, লবঙ্গ প্রভৃতি সাধারণতঃ মসালা রূপে ব্যবস্থৃত হয়।
  পেঁয়াজ স্কর্ভি নিবারক।
- (২৬) মুখ-শুদ্ধি—আহারের পর দাধারণতঃ এ দেশে তাশ্বুল চর্বিত হইয়া থাকে। পানের মদালার দক্তন পাক রদ সমূহ নিঃস্ত হইয়া পরি-পাকের দাহাম্য করে, এবং মুখের দেন্দরী নার্ভ (sensory nerves) সমূহের

উত্তেজনা বশতঃ মস্তিকের উত্তেজনা ও রক্তসঞ্চালনের বৃদ্ধি এবং মানসিক ক্ষুর্ত্তির বৃক্তি হয়। বালক বালিকাদের পক্ষে তামুল অনিষ্টকর। আহারাত্তে তামাক দেবনের প্রথাও বহুকাল হইতে প্রচলিত। তামাকে নিকোটীন (nicotine) নামক ভয়ানক বিষ রহিয়াছে। তামাক অবদাদক; অধিক ব্যবহারে হার্টের তুর্মলতা, নাড়ীর অনিয়মিত গতি (intermittence), ও চকুর তেজোহীনতা জন্মে। অভ্যাসবশতঃ এই সব ব্যতিক্রম লক্ষিত হয় ना। ज्यक्षि मः रायार्ग जामारकत निरकां जैन विनष्टे र्य वर्षे, किन्छ ज्जुना जिन्ही विष छे९भन इस। छाज्ञात ब्रुंहन वर्तन हुत्रहे जामारकत विष मर्त्ता-পেকা অধিক থাকে। অনভাত্ত ব্যক্তির তামাক সেবনে বমনেচ্ছা, মন্তক ঘূর্ণন ও সংজ্ঞাহীনতা হয়। এক ব্যক্তির ছঁকা বা চুরট অভা ব্যক্তি কর্তৃক ব্যবহৃত হয় বলিয়া নানাপ্রকার রোগ সংক্রামিত হইতে পারে। প্রাকৃটিশনার পত্রিকার (The Practitioner, December, 1895) তামাকু সেবন জনিত এঞ্জাইনা পেক্টরিস (angina pectoris) রোগের কতিপয় দৃষ্ঠান্ত উল্লিখিত হইয়াছে। একটা চতুর্দ্দশব্যীয় বালকের নাকি অতিরিক্ত ধ্যুপান বশতঃ এম্ব ায়ে পিয়া (amblyopia) বা অন্ধতা, ভার্টিগো (vertigo) বা মন্তক ঘূর্ণন, অরা (aura) বা এপিলেপ্ সি প্রভৃতির পূর্ব্ধ লক্ষণ হার্টের উপরে ব্যথা ও অপ্রেশন (oppression) বা চাপ বোধ এবং অবশেষে সংজ্ঞালোপ হইয়াছিল। কলিকাতার কোন আফিসের একজন স্মুত্কায় বাবু চুরট টানিতে টানিতে অকস্মাৎ অচেতন হইয়া পড়েন এবং অবশেষে পক্ষাঘাত রোগে আক্রান্ত হন। এত বিপদের সম্ভাবনা থাকিতে একটা অপ্রয়োজনীয় অভ্যাদের দাস হওয়া কোন ক্রমেই উচিত নয়।

## यष्ठं शतिदष्ट्म।

#### পানীয়।

- (১) জল ও সরবৎ—নির্মাল জল সর্বোৎকৃষ্ট পানীয়। ইহার গুণ অক্সত্র আলোচিত হইয়াছে। গ্রীয় প্রধান দেশে সরবতের প্রয়োজন আছে। তেঁতুল, নেবু প্রভৃতি দারা অতি উত্তম তৃষ্ণা নিবারক সরবৎ প্রস্তুত হয়।
- (২) চা—শুক্ষ চার শতকরা ২.৬ ভাগ আলবুমিন। চা পান করিলে সায়ুমগুলী উত্তেজিত হয়; চার উফতাও এই উত্তেজনার অগ্রতম কারণ। এই উত্তেজনার পর অবসাদ হয় না। চা পান হেতু রক্ত সঞ্চালন নিশ্বাস প্রশাস ঘর্মা ও মূত্র বর্দ্ধিত, নিদ্রার ভাব ও আলস্থা দূরীভূত, পরিপ্রানের ইচ্ছা বর্দ্ধিত,এবং শৈত্যাধিক্য ও গ্রীম্মাধিক্যজনিত ক্লেশ নিবারিত হয়। টেনিনাধিক্য বশতঃ চা কোঠ বদ্ধ করে। ফুটন্ত জলে ৫—১০ মিনিটের অধিক চা রাখিলে অতিরিক্ত টেনিন নির্গত হয়। পুরাতন চা জলে অনেকক্ষণ রাখিতে হয়, স্থতরাং ইহা হইতে অধিক টেনিন নিঃস্তে হইয়া থাকে। সার উইলিয়ম রবার্টস্ বলেন, চার টেনিন পাকক্রিয়ার ব্যাঘাত জন্মায়। অতএব আহারের হাত ঘণ্টা পর,অথবা অভ্ক্ত অবস্থায়,চা পান করা যুক্তিসঙ্গত বলিয়া বোধ হয়। অল্পব্যক্ষ, পীড়িত ও তুর্বল ব্যক্তিদের পক্ষে চা নিষিদ্ধ।

ক†ফির (coffce) গুণ চার তুল্য, নিদ্রা নিবারিণী শক্তি বরং অধিক। ককে†তে (cocoa) চা ও কালির সমৃদয় গুণ আছে; পুষ্টিকারিতা অধিক। ইহার শতকরা ১৩ হইতে ১৮ ভাগ প্রোটীড, ১৩ হইতে ২০ ভাগ ফ্যাট; পটাসিয়ম ফদ্ফেটের পরিমাণ অধিক। কেহ কেহ মনে করেন ককোনুগ্রের স্থায় পুষ্টিকর।

(৩) মাদক—মাদক দ্রব্য কাহাকে বলে ? আয়ুর্বেদ শাস্ত্র বলেন :—

"বৃদ্ধিং লুম্পতি যদ্দ্রবাং মদকারি তত্ত্ততে।

তমোগুণ প্রধানশৃষ্ধ যথা মদ্যস্করাদিকং॥"

"মদ্য স্থরা প্রভৃতি বুদ্ধি লোপকারী ও তমোগুণ প্রধান দ্রব্যের নাম মদকারি (বা মাদক)।"

মাদক দ্রব্য গৃই প্রকার—উত্তেজক ও অবসাদক। স্থরা প্রভৃতি উত্তেজক
মাদক রক্ত সঞ্চালন ও মন্তিদের ক্রিয়া বৃদ্ধি করে; তরিবন্ধন বল ও স্চূর্ত্তির
সাময়িক বিকাশ হয়। অহিফেন, গঞ্জিকা প্রভৃতি অবসাদক মাদক বাহুজ্ঞান
হাস করে; তরিবন্ধন শারীরিক ও মানসিক কপ্রের সাময়িক লাঘব হয়।
উত্তেজক মাদক অধিক পরিমাণে অবসাদ উৎপাদন করে, এবং অবসাদক
মাদক অল্প পরিমাণে উত্তেজকের কার্য্য করে।

কে সুরা—সুরায় উত্তেজক ও অবসাদক এই উভয় গুণই আছে। কিন্তু কেহ কেহ থান্য পানীয়ের স্থায় স্থরার নিত্য প্রয়োজনীয়তাও স্বীকার করেন; আবার কেহ কেহ বলেন ইহাতে থান্যের কোন গুণই নাই। এই উভয় মতাবলম্বীদের মধ্যে ঘোর বাগ্বিতণ্ডা হইয়া থাকে। কোন প্রকার বাগ্বিতণ্ডায় লিপ্ত না হইয়া বৈজ্ঞানিকভাবে অবিক্ষিপ্তচিত্তে সমুদ্য় বিষয় আলোচনা করা উচিত। বাগ্বিতণ্ডা বিলাতে, আমাদের দেশে নহে। দেশীর শাস্ত্রকার ও চিকিৎসকেরা স্থরাকে মাদক শ্রেণী গণ্য করিয়াছেন, থাদ্যশ্রেণীভুক্ত করেন নাই। বিলাতের স্থপ্রসিদ্ধ ডাক্তার এন্টন স্থিরভাবে আলোচনা করিয়া বিলিয়াছেন, স্থরা যদিও শর্করা জাতীয় খাদ্য, কিন্তু স্থবিধাজনক খাদ্য নহে। খাদ্য জ্বাসমূহ দেহাভ্যন্তরে রূপান্তরিত, রক্তের সঙ্গে মিশ্রিত এবং অক্সিজেন সহযোগে দগ্ধীভূত হইয়া সর্ব্বশারীরে বিচরণ ও দেহের পুষ্টিসাধন করিতেছে। এই দহন ক্রিয়ার ব্যাঘাত জন্মার। এইজন্ম ব্রন্টন বলেন স্থরা থাদ্য শ্রেণীয় হইলেও শ্বন্থ ব্যক্তির পক্ষে অত্যন্ত অস্থবিধাজনক।" তাঁহার সংক্ষিপ্ত মত এই ঃ—

হস্ত থুবা পুরুষদের পক্ষে হ্যার কিছুমাত্র প্রয়োজনীয়তা নাই। ইহা ব্যবহার না করিলেই ভাল।

জ্বর, হুর্বলেতা, ক্ষয়কাস প্রভৃতি রোগে ইহার পরিমিত সেবনে পাক্রিয়োর সাহায্য হয়। ইহা বারা রক্ত সঞ্চালন বুদ্ধি পায়; স্কুতরাং ক্ষাণ নাডীর পক্ষে স্কুরা বিধেয়ে।

হ্রা কর্ত্ক রক্ত সঞ্চালন বৃদ্ধি পার বলিয়া স্নার্মণ্ডলী ও মন্তিক উত্তেজিত হয়, কিন্তু ক্ষণ-কাল নাতা। স্থার গাঁতা বৃদ্ধির দঙ্গে সংস্থার্মণ্ডলী ও মন্তিক অসাত হইয়া পতে। প্রথমতঃ বৃদ্ধি বৃত্তির আধার দেরিবন (cerebrum), । তৎপর অন্ন চালনার আধার দেরিবেলন (cerebellum), তৎপর স্পাইনাল কর্ড (Spinal cord) ও সর্বাশেষে মেডালা অব্লঙ্গেটা (Medulla oblongata) ও অসাড় হয়। "স্থরা মানুষকে প্রথমতঃ বালকরূপে এবং অবশেষে পশুরূপে পরিণত করে।"

হান অল পরিমাণে ষ্টমাকে পাকরদ আবিত করে এবং পাকজিয়ার দাইায় করে; কিন্তু অধিক পরিমাণে ইহা পাকরদ নিঃদরণের ও রদের জিয়ার বাাঘাত জন্মায়, এবং ষ্টমাকে শ্রেমা উৎপাদন করে। ইহাতে এত অজীর্ণতা জন্মায় যে ৪ দিন পূর্বে ভুক্ত থাদ্য দ্রব্যও অপরিবর্তিত অবস্থায় উল্পীরিত হইয়া পড়ে। জ্মাগতঃ হ্ররাপানে জ্রনিক গাাট্রাইটিন্ হয়, কৈশিকী সম্হের আয়তন বৃদ্ধি হওয়াতে মূথ ও নাসিকা সর্বাদা রক্তবর্ণ থাকে, পাকজিয়া ও দহন জিয়ায় ব্রাদ হওয়াতে বদার বৃদ্ধি হয় এবং মাংদ বদায় পরিণত হয়; যকুত বদাপূর্ণ এবং বৃদ্ধি আও হয়, এবং অবশেষে বদা বিশোষিত হওয়াতে য়কৃত সঙ্ক চিত ও কঠিন হয়; য়কুতের কঠিনয়ের দক্ষন শোথ হয়। কাহারও বা কিড্ নি বিকারপ্রাপ্ত হওয়াতে দর্ক শরীরে শোথ হয়, এবং মৃত্রবিষ দেহে অবক্ষর থাকাতে কনভল্শন্ ও মৃত্যু হয়। জুদজুদ প্রভৃতি দেহযন্ত্রও বিকারপ্রাপ্ত হইতে পারে। অপরিনিত হয়া শারীরিক ও মানসিক বল এবং আয়ু ক্ষয় করে, ইন্সানিটী উৎপাদন করে, এবং দারিদ্রা, দস্থাতা ও নরহত্যা প্রভৃতি বৃদ্ধি করে।

অপরিমিত স্থরাপায়ীদিগকে লাইফ্ ইন্সিওরেস কোম্পানী সভ্য শ্রেনীভুক্ত করেন না।
এই কোম্পানীদের তালিকা পাঠে জানা যায়, যাহারা পরিমিত স্থরাপান করে তাহাদের অপেকাও
স্থাদেরীদের স্ত্যু সংখ্যা অল।

স্থাপায়ীর রোগ তাহার দন্তান দন্ততিতে দঞ্চারিত হয়। স্থাপায়ীর দন্তানেরা নানাপ্রকার কষ্ট ও প্রলোভনে পতিত হয়, তাহাদের শরীর দুর্বল হয়, এবং ইডিয়িদি (idiocy), কনভল্শন (convulsion) ও হিষ্টিরিয়া (hysteria) প্রভৃতি রোগে আক্রান্ত হইবার বিশেষ সন্তাবনা থাকে। অবাবস্থিতচিত্ততাবশতঃ তাহারা ভীক্ত, অবিখাসী ও অকর্মণ্য হইয়া পড়ে। নাধারণতঃ ১৫ ইতৈ ২৫ বৎসর বয়সে তাহাদের পানাসক্তি জমে।

স্থাসিদ্ধ ডাক্তার নর্মান কার বলেন মদের দরুন বিলাতে প্রতিবৎসর
৪০,০০০ অকাল মৃত্যু হইয়া থাকে এবং ৮০,০০০ স্থরাপায়ীর অপঘাতে ও
রোগে মৃত্যু হয়। তিনি বলেন মদ্যপানবশতঃ বিলাতে প্রতিবৎসর
১,৩০,০০,০০০ এক কোটী ত্রিশ লক্ষ টাকার ক্ষতি হইতেছে।

এই ত গেল বিলাতে মদ্যপানের অ্নিষ্টকারিতা সম্বন্ধে ডাক্তার ব্রণ্টন ও নশ্মান কারের মত।

এই দেশের পক্ষ্যে ব্যবস্থা কি ? মদ্য দান, পান বা গ্রহণ করিবে না, এই

ত দেশীয় শাস্ত্রকারদের ব্যবহা। এই দেশে থাকিয়া যে সমুদ্য ইউরোপীয় চিকিৎসক অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন তাঁহাদের মত কি? মাল্রাজের স্বাস্থ্যরক্ষা-প্রণেতা ডাক্তার কিং বলেন,—

''হুরা স্পর্শ না করিয়াও সাধারণতঃ স্বাস্থ্য রক্ষা ও দীর্ঘ আরু লাভ করা যায়। অপরিমিত স্থরাপায়ীদের মন্তিকে যকুতে, কিড নিতে, প্লীহায়, অন্তে, মেদেন্টারিক প্লাণ্ডে এবং পেরিটনিয়ম প্রভৃতিতে সাধারণ লোক অপেক্ষা দ্বিগুণ অধিক টিউবার্ক্ লু হইয়া থাকে। তাহাদের অতাধিক স্থাতা ও উন্মান রোগ হইয়া থাকে।"

স্থাসিদ্ধ সার যোষেক ফেরার এবং সার যোষেক ইউয়ার্ট ভারতবর্ষে নবাগত ইউরোপীয়দিগের আহার সম্বন্ধে নিম্লিখিত ব্যবস্থা করিয়াছেন :--"মন্য পানের অভ্যাস বা অভাব বোধ সকুত; ত্বস্থ স্ত্রী পুরুষের এই অভ্যাস বা অভাব বোধ থাকে না; অন্ত বুক্তি যাহাই থাকুক না কেন, মদা একান্ত প্রয়োজনীয় এরূপ যুক্তি কথনই প্রয়োগ করা যাইতে পারে না। গ্রীত্মপ্রধান দেশে বস্তির প্রাকালে সদ্য স্পর্শ না করিলে স্বাস্থ্য ও দীর্ঘ জীবন লাভ করা যায়। চিকিৎসকের ব্যবস্থা মত পরিমিত পান বিধেয়। উত্তেজক মাদকের প্রয়োজন হইলে শোধিত ও জলনি প্রিত তেজোহীন ক্লারেট 'অথবা বীয়ার পান করা উচিত। অতিরিক বীয়ার অথবা "পেগ" অভিহিত দোড়া-মিশ্রিত ব্রাণ্ডি পানে যকুত ও পাক্ষয় সমূহের বিশেষ অনিষ্ট হইয়া থাকে। হুইন্ধি এবং পটাস ওয়াটার পান করিবার অভিনব প্রথা কিড নি যত্ত্বের বিশেষ অনিষ্ট সাধন করে। আনরা স্পষ্টতঃ এই কথা বলিতে চাই যে ঔষধ ভিন্ন অস্ত আকারে স্থরা পান আনরা অন্মাদন করি না; আমাদের এই মত চিরপোষিত এবং অভ্রাস্ত।"

দেদিনও লণ্ডন স্বাস্থ্য-সমিতিতে সমবেত পণ্ডিতমণ্ডলীর সমক্ষে কেরার নিঃসঙ্কৃচিত চিত্তে বলিয়াছেন : --

ভারতবর্ষে ৪০ বংসর ব্যাপিয়া যে অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছি,তাহাতে এই বলিতে পারি যে, যে বাজি মদা কিলা প্র পান করে না, এীলপ্রধান দেশের দ্বিত আব হাওয়া তাহার কিছুই অনিষ্ট করিতে পারে না, এথবা ন্যালেরিয়া প্রভৃতি উৎকট রোগ তাহার শরীর সহজে আক্রমণ করিতে পারে না।"

ক্লান্তি পরিহার কিম্বা ফ্রন্তি সঞ্চারের জন্ত কেহ কেহ মদ্য পান করিয়া থাকেন। ডাক্তার ফেরার ও ইউয়ার্ট বলেন—

''শিকারী কিন্তা ব্যায়ান বাবসায়িগণের পক্ষে কঠিন পরিশ্রমের পর অল্ল পরিমিত শীতল চা অতি উৎকৃষ্ট ভৃষণনিবারক ও বলকারক পানীয়।"

বাহারা পুরুষ পরম্পরায় স্থরাপায়ী, তাহাদের পক্ষে এদেশে যদি স্থরা পান নিপ্রয়োজনীয়, এবং স্থরাত্যাগ স্বাস্থ্য ও দীর্ঘজীবন লাভের উপায় বলিয়া

নির্দারিত হইল, তবে ভারতবাদীর পক্ষে যে স্থরা বিষবং পরিত্যাগ করা বিধেয় তাহাতে সন্দেহ নাই।

(খ) অহিফেন—অহিফেন লইয়া সম্প্রতি। চিকিৎসকদের মধ্যে অনেক মতভেদ হইয়াছে। কিন্তু অন্ন জলের স্থায় অহিফেন একান্ত প্রােজনীয় এ कथा (कहरे वलन ना। जवसा ७ (वांग वित्भार जिल्ला प्रवितीय हरेए) পারে, কিন্তু স্থন্থ ব্যক্তির পক্ষে ইহার কিছুমাত্র প্রয়োজন নাই। ভাব প্রকাশ প্রণেতা বলেন -

#### "দেবনাৎ পুংস্থনাশনং"

"অহিফেন নিত্য দেবন করিলে পুরুষত্ব হানি হয়।" অহিফেনের ধূত্র পান বা ''গুলি থাওয়া" অত্যন্ত অনিষ্ঠকর। ইহাতে শরীর জীর্ণ শীর্ণ হয় এবং লোক মনুষ্যন্ত বিহীন হয়। অতিরিক্ত অহিফেন দেবনে সায়ুমগুলী ছুর্জল, শরীর শীর্ণ, চক্ষু নিস্তেজ, দৃষ্টি ক্ষীণ, কোষ্ঠ কঠিন, কুধা মন্দীভূত, পাকশক্তি বিনষ্ট এবং হস্ত কম্পিত হয়। আফিংখোরদের কিছুতেই নিদ্রা হয় না।

(গ) গাঁজা তিন আকারে ব্যবহৃত হয়:—(১) গাঁজা—বা শুক পুষ্পাবলী। (২) চরুস-পত্র,পুষ্প এবং বুক্ষের আঠা (resin) এবং (৩) ভাঙ্গ বা সিদ্ধি-বৃহৎ পত্ৰ ও ফল।

সার উইলিয়ম ওমেনেসি বলেন গাঁজা সেবনের অদ্ধি ঘণ্টা পর মাদকতা উৎপন্ন হয়; গা ভারি ভারি বোধ হয়, আলস্ত ও স্থকর কল্পনা উদিত হয়, কিন্তু কর্ম্ম করিবার শক্তি লুপ্ত হয় না। সিদ্ধি সেবনের অর্দ্ধ ঘণ্টার মধ্যে মত্ততা জন্মে। কেহ বা আমোদপ্রিয় হয়, গান ও নৃত্য করে, অধিক ক্রচিপূর্বক আহার করে এবং ইন্দ্রিয় লাল্সা চরিতার্থ করিতে প্রবৃত্ত হয়। কলহপ্রিয় ব্যক্তিগণ ঘোরতর কলহ করিতে থাকে। মত্ততা তিন ঘণ্টা পর্য্যন্ত থাকে, তৎপর নিজার আবেশ হয়। আমাশয় কি অন্ত্রের কোন রোগ হয় না। পরদিন মস্তক কিঞ্চিৎ ঘূর্ণিত ও চক্ষু লোহিত হয়।

গাঁজাথোর সম্বন্ধে অদ্য পর্য্যন্ত বিশেষ কোন অনুসন্ধান হয় নাই। কেবল এইমাত্র বলা যায় যে, উন্মাদ ব্যক্তিদের মধ্যে অনেকেই গাঁজাথোর বলিয়া প্রমাণিত হইয়াছে।

## मश्चम शतिराष्ट्रम।

#### আহার সংক্রান্ত রোগ।

১। জ্বতি ভোজন বশতঃ এলিমেণ্টারী ক্যানেলে থান্য বিকৃত হইয়া কার্বন ডায়ক্সাইড, হাইড্রোজেন সল্ফাইড্ প্রভৃতি গ্যাস উৎপাদন করে, এবং অজীর্বতা, কোষ্ঠ কাঠিন্ম, উদরাময়, জ্বর, জ্ঞিস্ প্রভৃতি রোগ জ্মায়।

অতিরিক্ত প্রোটীড ভোজন বশতঃ লিভারের ও অস্থান্ত ধত্তের কঞ্চেন্ ও এন্লার্জ মেণ্ট, জ্বর, ডায়েরিয়া ও আলবুমিকুরিয়া হয়। কেহ কেহ বলেন গাউটের একটা কারণ অতিরিক্ত প্রোটীড় আহার।

অতিরিক্ত ফার্চ ও ফ্যাট ভোজনের ফল অতিরিক্ত স্থূলতা, অম্বল, ফ্ল্যাটিউলেন্স, হার্টের মাংসপেশীর শীর্ণতা এবং ডায়েবিটিস্।

- ২। অন্ন ভোজন নিবন্ধন অলসতা, কার্য্যাক্ষমতা, ও পীড়াশীলতা বৃদ্ধি পার। ক্ষ্ধার জালার অল্লাহারিগণ মন্দ থান্য আহার করিয়া অস্কুত্ব হর। ছর্ভিক্ষাদির সময় অধিক দিন ব্যাপী উপবাদের ফল এনিমিয়া, শীর্ণতা, অলসতা ও জীবনের প্রতি উদাসীনতা, স্কর্ভি, থসথসে শুদ্ধ ও খুসকীমর চর্মা, জননেক্রিরের শৈথিলা ইত্যাদি। প্রোটাডের অভাবে মাংসপেশীর ও মনের বলক্ষর হয়, জরভাব, অজীর্ণতা, এনিমিয়া, ও ত্র্বলতা জন্মে, এবং ম্যালেরিয়া প্রভৃতি রোগে আক্রান্ত হইবার সম্ভাবনা থাকে। ষ্টার্চ ও ফ্যাট বর্জন করিয়া কেবল প্রোটীড আহার করিলে নাইট্রোজন পরজনিং (Nitrogen poisoning) হয়। সল্ট্রিহিত করিবার ফল ইতিপূর্ব্বে বলা হইয়াছে।
- ৩। অক'ল ভোজন বশতঃ আহারের মাত্রার ন্যাধিক্য হইরা থাকে। একবার আহারের অন্নকাল পরেই পুনর্কার আহার করিলে অতিরিক্ত ভোজন নিবন্ধন অজীর্ণতা প্রভৃতি রোগ হয়; আবার উপযুক্ত সময়ের অনেক পরে আহার করিলে অন্ন ভোজনের ফল হয়। দেশ,জাতি ও ব্যবসায় ভেদে আহারের

কালের ব্যতিক্রম হয়। কেহ বা একাহার করিয়া বেশ স্থ থাকে। জনেক নিয়ম অভ্যাসবশতঃ স্বাস্থ্যকর হইয়া পড়ে। কেবল এইমাত্র বলা যাইতে পারে যে পাক্ষন্তগুলিকে পুনঃ পুনঃ উৎপীড়ন করা অনুচিত। ৪ ঘণ্টায় পাক্রিয়া সমাধা হয়; আরও ২ ঘণ্টাকাল পাকস্থলীকে বিশ্রাম দেওরা কর্ত্তব্য। সাধারণতঃ ৬ ঘণ্টা অন্তর ৩ বার আহার করিলে চলে। খাহারা সকালে একবার ও বিকালে একবার এবং রাত্রে অল্ল কিছু আহার করেন তাঁহাদের ৩ ভাগ আহার সকালে, ৪ ভাগ বিকালে, ও ২ ভাগ রাত্রে সম্পন্ন হওয়া উচিত। ঘাঁহারা বিকালে আহার না করিয়া রাত্রে করেন, তাঁহাদের ৩ ভাগ আহার সকালে, ২ ভাগ অপরাহে ও ৪ ভাগ রাত্রে হইলেই ভাল।

- ৪। বিকৃত খাদ্য ভোজন বশতঃ যে সমুদর রোগ জয়ে তাহা ধাদ্যের বিশেষ বিবরণ বিষয়ক অধ্যায়ে বিবৃত হইয়াছে।
- ৫। পাকশক্তিহীন অবস্থায় ভোজন করিলে অজীর্ণতা, ডায়েরিয়া, ডিসেণ্ট্রী প্রভৃতি রোগ হয়। কাহারও কাহারও থাদ্য বিশেষ কথনই পরিপাক হয় না। কাহারও বা সকালে কোন থাদ্য জীর্ণ হয়, বিকালে হয় না। আবার চিন্তা ভয় কোবাক্রান্ত অবস্থায় আহার করিলে অপাক দোষ জন্ম।

# অষ্টম পরিচ্ছেদ।

#### আহার সম্বন্ধে সাধারণ নিয়ম।

- ১। আহারের সময় চিন্তা ক্রোধ প্রভৃতি পরিহার করিবে।
- ২। সন্তোষ পূর্বাক আহার করিবে।
- ৩। ত্রস্ত আহার না করিয়া ভালরূপ চর্ব্বণ করিবে। আফিস ও স্কুস্থে সত্তর গমনার্থ অনেকে ত্রস্ত আহার করিয়া চিরকাল অজীর্ণতা রোগে কষ্টভোগ করে।
  - ৪। প্রথমতঃ তরল দ্রব্য ভোজন করিবে। শুক গুলায় কঠিন দ্রব্য

অধংকরণ করিলে স্প্রাজ্ম্ (spasm) হইতে পারে। অন্ত সমুদ্র মাংসপেশীর ন্তুয়ার পাকস্থলীর মাংসপেশী পরিশ্রমান্তে ছর্কাল হইরা পড়ে, এবং তথা হইতে পাকরসমযূহ নিঃস্ত হয় না; এই কারণেও প্রথমতঃ লঘুপাক তরল দ্রব্য আহার করা উচিত।

- ে। ভোজনের সময় অতিরিক্ত জল পান করিবে না। অধিক ডাইলুশন বশতঃ পাকরস সমূহ শক্তিহীন হয়।
  - ৬। অতি উষ্ণ বা অতি শীতল ভোজন করিবে না।
  - ৭। অপরিমিত ভোজন করিবে না।
  - ৮। নিরূপিত সময়ে আহার করিবে।
  - ৯। অপুষ্টিকর, অপাচ্য ও বিক্বত থাদ্য ভেজেন করিবে না।
  - ১०। मगरत मगरत थाना পরিবর্ত্তন করিবে।
- ১১। কাহারও উচ্ছিষ্ট ভোজন করিবে না। লালারসে নানাপ্রকার দংক্রামক রোগের বীজ থাকিতে পারে।
- ১২। পরিক্কৃত, জলধীত ও লায়ু-সঞালিত স্থানে বসিয়া আহার করিবে। বায়ুতাড়িত ধূলির সঙ্গে রোগ-বীজ উদরে প্রবেশ করিতে পারে।
- ১৩। আহার স্থানের নিকটে অধেতি পাছকা রাখিবে না। পাছকালগ্ন রোগবীজ ধ্লিমিথ্রিত ও বায়ুতাড়িত হইরা থাদ্যের সহিত মিথ্রিত হইতে পারে।
- ১৪। আহারের অব্যবহিত পরে কোন প্রকার পরিশ্রম বা গভীর চিন্তা,
  সান বা নিজা করিবে না। পাকক্রিয়ার সময় পাকস্থলীতে রক্ত অধিক
  সঞ্চালিত হয়। স্কুতরাং মস্তিক কিম্বা অন্ত কোন যত্ত্বে রক্ত ধাবিত হইলে
  পাকস্থলীর রক্ত-সঞ্চালনের হ্রাস হয় ও তন্নিবন্ধন পাকক্রিয়ার ব্যাঘ্যাত হয়।
  নিদ্রার সময় রক্ত সঞ্চালন মন্দীভূত ও পাকক্রিয়া বিলম্বে সাধিত হয়।

# **ज्ञर्थ** ज्यात्र ।

## ज्या ।

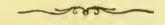
জল ও বায়ু পূরিত নানাবিধ ধাতব, ওদ্ধি ও প্রাণিদেহজাত পদার্থে ভূমি গঠিত। ভূগর্ভে যে জল ও বায়ু থাকে, তাহাকে সব্সয়েল ওয়াটার (sub-soil water) ও সব্সয়েল এয়ার (sub soil air) কহে। ইহার কোন একটা দ্যিত হইলে ভূমি অস্বাস্থাকর হয়।

## প্রথম পরিচ্ছেদ।

## मत् मर्यल (Sub-soil air)

সব্ সয়েল এয়ারে কার্ব ন ডায়কসাইড এবং জলীয় বাচ্প অধিক পরিমাণে থাকে। কথনও কথনও ইহাতে মার্ঘ গাণস, হাইড্রোজেন সল্ফাইড্,অর্গানিক ম্যাটার,এফু,ভিয়া (effluvia) বা দ্বিত বাষ্প,ভগ্ন ড্রেণ নিঃস্থত সূমার গ্যাস ও অর্গানিক ভেগার,এবং স্পেসিফিক্ প্রজন্ (Specific poison) বা টাইফ্রেড্ প্রভৃতি রোগের বিষ, মিশ্রিত হইতে পারে। ম্যালেরিয়া, ইয়েলো ফিভার, ডিফ্ থিরিয়া, টাইফ্রেড্ ফিভার, কলেরা, এপিডেমিক ডায়েরিয়া এবং ডিসেন্ট্রী, এইরূপে টেলুরিক এফু,ভিয়া (telluric effluvia) বা ভৃথিত বাষ্প দারা ব্যাপ্ত হয় বলিয়া অনেকের ধারণা।

সব সয়েল ওয়াটারের এবং ভৌমতাপের বৃদ্ধির সঙ্গে সলে সব সয়েল এয়ার উর্দ্ধে উত্থিত হইয়া উপরিস্থ বায়ুর সঙ্গে মিশ্রিত হয়। গৃহ অগ্নি দারা উত্তানিত হইলে বায়ু ভূগর্ভ হইতে উর্দ্ধে উথিত হয়। বৃষ্টির পর ভূগর্ভস্থ জল বর্দ্ধিত, স্থতরাং ভূগর্ভস্থ বায়ু উথিত হয়। নৃতন ভরাট স্থানে নির্দ্মিত গৃহের বায়ু এইরূপে দৃষিত হয়। সব সয়েল এয়ারের উথান নিবারণ করিতে হইলে গৃহভিত্তি ইপ্তক ও সিমেণ্ট প্রভৃতি দ্বারা আবৃত,কিম্বা থিলান বা স্তম্ভের উপরে উত্তোলিত করা এবং সব সয়েল ওয়াটার নিঃসারণের ব্যবস্থা করা উচিত।



# দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

### मव मर्यन ख्यां होत्र (Sub-soil water)

সব সয়েল ওয়াটার কোথাও বা ভূমির ২০০ ফুট নিমে এবং কোথাও বা ২০০ শত ফুট নিমে থাকে। কলিকাতা-ভূমির ৫—১৫ ফুট নিমে জল। এই জল গতিশীল। ভূমির কঠিনতা, ঢালুতা ও বৃক্ষাচ্ছরতার উপর এই গতি নির্ভর করে। সচ্ছিদ্র (porous) ঢালু এবং বৃক্ষহীন ভূমির মধ্যস্থ জল অবিক গতিশীল। বৃক্ষমূলের আকর্ষণ বশতঃ জলের গতি মন্দীভূত হয়। বৃষ্টিপাতের আধিক্য,নিকটস্থ নদী নালায় জলের বৃদ্ধি এবং ভৌমজল নিকাশের অবরোধ হেতু সব সয়েল ওয়াটারের বৃদ্ধি হইয়া থাকে। সব সয়েল ওয়াটার ভূমির কত নিচে তাহা সাধারণতঃ কূপের গভীরতা অনুসারে নির্দ্ধারিত হয়। ভূমির জলশোবণশক্তি, এবং বৃষ্টিপাতের ও সব সয়েল ওয়াটারের পরিমাণের উপর ভূমির আদি তা নির্ভর করে। গ্রেনাইট্ (Granite) প্রস্তর ও চূল প্রস্তর প্রভৃতি ইম্পামি য়েব ল সয়েল (impermeable soil) বা অভেদ্য ভূমি জল শোবণ শক্তির অভাব বশতঃ প্রায় শুদ্ধ থাকে; কিন্তু চক (chalk) ও বালু প্রভৃতি পামি য়েব ল সয়েল (permeable soil) বা ভেদ্য ভূমি, শোষণাধিক্যবশতঃ সর্বদা আর্জ থাকে। পামি য়েব ল সয়েল বে কেবল বৃষ্টি জল শোবণ বশতঃ সর্বলা আর্জ থাকে। পামি য়েব ল সয়েল বে কেবল বৃষ্টি জল শোবণ বশতঃ সিক্ত হয় তাহা নহে; কিন্তু ক্যাপিলারি

এট্রাক্শন্ ( কৈশিক আকর্ষণ ) ও ইভেপরেশন্ ( বাপ্পোদাম ) বশতঃ

সব্ সয়েল ওয়াটার উদ্ধি উথিত হইয়া ভূমির সিক্ততা বৃদ্ধি করে।

ভূমি শুক্ত করিবার উপায় দিবিধ, ডেবেজ (drainage) বা পরঃপ্রণালী গঠন এবং ভরাট নদী নালা থনন। বড় বড় সহরে মল মৃত্র প্রভৃতি
নিঃসারণের জন্ত যে স্থার (sewer) থাকে, তাহার পার্শ্বে বা নিয়ে সব সয়েল
ওয়াটার নিকাশের জন্ত ১০—২০ ফুট অন্তর এবং ৮—১২ ফুট গভীর ডেবুণ গঠন
করা উচিত। অনেক পুরাতন সমৃদ্ধিশালী গ্রাম নদীনালার জলের হাস
বশতঃ ম্যালেরিয়ার আবাস ভূমি হইয়া পড়ে। সেই সমৃদ্য স্থানের নদী নালা
খনন করিলে ভূমি স্বাস্থ্যকর হয়।

আদ্র ভূমি জনিত রোগ—আর্দ্রতার দর্যন (১) ভূমি শীতল ও বায়ু কুষ্মাটিকাময় হয় এবং দৰ্দ্দি ও বাত রোগের প্রকোপ হয় এবং (২) অর্গানিক বাষ্প উথিত হইয়া নানাপ্রকার রোগ ব্যাপ্ত করে। প্রচনশীল অর্গানিক ম্যাটার, তাপ, বায়ু ও আদ্রেতা এই চতুর্বিধ কারণে ভৌম পদার্থ নিচয় বিক্কৃত হইয়া দ্ষিত বাষ্প উল্গারণ করে। আর্দ্রভূমিতে বাসের ফল:— (>) রিউমেটিন্ম্ ( rheumatism ), কেটার ( catarrh ), এবং নিউ-Cরলজিয়া ( neuralgia )। (२) ফুস্ফুস্ রোগ—বিলাতের যে সমুদয় সহরে থাই সিস্ ( pthisis ) প্রবল ছিল, তথায় হয়ার প্রবর্তনের পর ঐ রোগের হ্রাস পরিলক্ষিত হইয়াছে। (৩) প্রালাজ্বর —৬৫° ফারেনহীট তাপ, বায়ুর সংস্পর্শ, আর্দ্রতা এবং পচনশীল উদ্ভিদ, এই চতুর্বিধ কারণ সংযোগে এই জর-বিষের উৎপত্তি। লিঙ্কল্নসিয়ার প্রভৃতি বিলাতের যে সমু-দয় স্থানে ম্যালেরিয়া প্রবল ছিল তথায় পয়ঃপ্রণালীর স্বব্যবস্থার পর হইতে ম্যালেরিয়া দ্রীভূত হইয়াছে। (৪) টা ইফয়েড্ ফিবার—পেটেন কফার বলেন,অতি বর্দ্ধিত সবসয়েল ওয়াটারের ত্বরিত হ্রাস, ভূমির বিকৃত য়ানিমেল-ম্যাটার-পূর্ণতা ও উত্তাপ এবং টাইফয়েড রোগ বীজ, এই চতুর্বিধ কারণ সংযোগে টাইফয়েড্ রোগের উৎপত্তি। ডাক্তার বুকানান বলেন সব সয়েল গুয়াটারের হ্রাস বা অধোগমনের সঙ্গে টাইফয়েড ফিবার বৃদ্ধির গৌণ সম্বন্ধ। ঐ কারণবশতঃ পানীয় জল দুষিত হয় এবং ঐ জল দারা রোগ ব্যাপ্ত হয়।

বলড উইন ল্যাথাম বলেন সব সয়েল ওয়াটারের সমভাব স্বাস্থ্যের উপযোগী, এবং সম্পূর্ণ হ্রাসের পর ঐ জল যথন ভূমির ভিতর দিয়া অনাত্র চালিত হয়, তথন রোগের বৃদ্ধি হইতে থাকে। পার্ক্ স্ বলেন সর্বানা যে ভূমির ১৫।২০ ফুট নিম্নেজল থাকে,সেই ভূমি স্বাস্থ্যকর,এবং যে ভূমির ৩—৫ ফুট নিম্নেস্বানা জল থাকে, সেই ভূমি হাস্বাদ্ধিশীল জল-যুক্ত ভূমি অপেক্ষা স্বাস্থ্যকর। (৫) কলেরা—পিটেন কফার বলেন, সবসয়েল ওয়াটার বিদ্ধিত হইয়া এবং মৃত্তিকা সিক্ত করিয়া যথন হাস প্রাপ্ত হয়, এবং ঐ সিক্ত ভূমিতে বায়ু ও কলেরা বীজ প্রবেশ করে, তথনই কলেরা এপিডেমিক হয়। এই মত সর্ব্ধানী সম্মত নহে। (৬) এপিডেমিক ডায়েরিয়া —ডাক্তার টমকিন্স্ ও বেলার্ড বলেন ৪ ফুট নিম্নে ভৌমি তাপ ৫৬° বা তদ্ধিক হইলে ডায়েরিয়ার প্রকোপ বৃদ্ধি হয় এবং বৃষ্টিপাতবশতঃ তাপের হ্রাসের সঙ্গে সঙ্গেরেরার হ্রাস হয়। ঝুরা পার্মিয়েব ল্ ভূমিতে ডায়েরিয়ার প্রাবল্য। (৭) ডিফ্ বিরিয়া —বিলাতের কোন কোন ডাক্তারের মতে আর্দ্র ও মলিন ভূমিতে এই রোগের প্রকোপ। এ বিষয়ে এথনও কিছুই স্থির হয় নাই।

# তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

## ভূমির গুণাগুণ বিচার।

১। গঠন ও উচ্চতা — উচ্চ পর্বাতশিখর ঢালু, শুষ্ক, শীতল এবং স্বাস্থ্যকর। পর্বাত্তর উপত্যকার (valley) বায়ু আবদ্ধ ও শীতল, স্থতরাং অস্বাস্থ্যকর। পর্বাতের পাদ দেশস্থ নিম ভূমি ও সমতল ভূমির নিম্নান্ধান আর্দ্র ও অস্বাস্থ্যকর। উচ্চ পর্বাতশ্রেণী-পরিবেন্টিত স্থানের বায়ু গতিহীন, অতি শীতল ও অস্বাস্থ্যকর। সর্বাপেক্ষা স্বাস্থ্যকর প্রানাইট

প্রভৃতি প্রস্তরময় ভূমি। কর্দ্দম রহিত বালুকাপ্রস্তরময় কিখা চাখড়িময় ভূমি স্বাস্থাকর। বিশুদ্ধ বালুকাময় ভূমি স্বাস্থাকর। ধাতব ও প্রন্তিন পদার্থ এবং কর্দম মিশ্রিত বালুকা ভূমি অস্বাস্থাকর। এলুভিয়েল সয়েল (alluvial soil) বা পললময় ভূমি সর্বাদা আর্দ্র ও প্রন্তিন পদার্থ পূর্ণ স্বতরাং অস্বাস্থাকর। উত্তমরূপে কর্ষিত ভূমি স্বাস্থাকর, কিন্তু ধান্যক্ষেত্র অর্গানিক পদার্থের ও জলীয় বাষ্পের আবিক্য বশতঃ অনেক সময় অস্বাস্থাকর হয়।

- ২। তৃণ বৃক্ষদমাচছন্নতা (vegetation)—বৃক্ষশ্রেণী রোদ্রের তাপ নিবারণ, ভৌমজল আকর্ষণ এবং ম্যালেরিয়া নিবারণ করে। ইউকেলিপ্টাদ্ শ্নবিউলাদ্ প্রভৃতি বৃক্ষ কর্তৃ কি ভৌমজল অতি শীঘ্র আরুপ্ত ও বাঙ্গীভূত হয়। এই হেতু ইউকেলিপটাদ-বৃক্ষ শোভিত ম্যালেরিয়া-ভূমি ৪।৫ বংসরে স্বাস্থ্যকর হইয়া উঠে। তৃণসমাচ্ছয় ঢালু ভূমি শীতল ও স্বাস্থ্যকর। ম্যালেরিয়াক্রান্ত স্থানের দিকে উচ্চ বৃক্ষশ্রেণী থাকিলে, ম্যালেরিয়া-বায়র গতিরোধ হয়। কিন্তু বাসগৃহের অতি সন্নিকটে অতি উচ্চ বৃক্ষশ্রেণী থাকিলে বায়ু ও আলো সমাগমের ব্যাঘাত জন্মে।
- ০। তাপ শোষন—'ঝুরা' বালুকাময় ভূমি অত্যন্ত স্থ্যতপ্ত হয়;
  তরিবন্ধন বায়ু অত্যন্ত ও অস্বাস্থ্যকর হয়। ভৌম তাপের সঙ্গে রোগ বুদির
  ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ আছে। লুইস্ কনিংহামের মতে এপ্রিল ও নবেম্বর মাসে কলিকাতা ভূমির তাপ ৬ ফুট নিয়ে ৭৮°।৭৯°, এবং ঐ সময়েই ওলাউঠার প্রকোপ
  অধিক। তাপের সঙ্গে ম্যালেরিয়া ও এপিডেমিক ডায়েরিয়ার সম্বন্ধের কথা
  ইতিপূর্ব্বেই বলা হইয়াছে। গাঢ় কৃষ্ণবর্ণ ভূমি অতিশয় স্থ্য তপ্ত হয়।
- ৪। আ'লো প্রতিফলন বা রিফুেক্শন্ অব্ লাইট (reflection of light)—শেতবর্ণ ও চাকচক্যবিশিষ্ট ভূমিতে স্থ্যালোক ও স্থ্যোত্তাপ প্রতিফলিত হয়। ঈদৃশ ভূমি অতি উষ্ণ ও অস্বাস্থ্যকর, বিশেষতঃ চকুর অনিষ্টকারী। এরপ স্থানে গৃহ নিশ্বাণ ক্রিতে হইলে দেয়াল ঈষং নীল কিম্বা

## পঞ্চম অধ্যায়।

#### বাসস্থান।

শীতাতপ ও বৃষ্টি হইতে শরীর রক্ষা করিবার জন্য আবাদের প্রয়োজন। আনিষ্টকর খাদ্য ও পানীয় সহজে পরিত্যাগ করা যায়, কিন্তু বাসগৃহ অস্বাস্থ্য-কর হইলে সহজে পরিবর্ত্তন করা যায় না। এই জন্য বাসগৃহ নির্মাণ করিবার পূর্ব্বে বিশেষরূপে সাবধান হওয়া আবশ্যক। কেবল ইষ্টক ও চূণ কিম্বার্থাশ ও থড় প্রভৃতির গুণাগুণ বিচার করিলে চলিবে না। ছয়টী বিষয়ে বিশেষ দৃষ্টি রাখা আবশ্যক; যথা,

- (১) ভূমির শুদ্ধতা ও শুদ্ধতা
- (২) বায়ু সঞ্চালন
- (৩) আলোক সমাগম
- (৪) জলের ব্যবস্থা
- (৫) মল মূত্রাদি স্থানান্তর করণ
- (७) जन वायूत विश्वकृ तक्रव
- (১) ভূমি:—ভূমির বৈগুণা বশতঃ জল ও বায়ু দূষিত হইয়া স্বান্থোর অনিষ্ট উৎপাদন করে। মলমূত্রাদি-দূষিত ও ধাতুবাস্পাদি-মিশ্রিত ভৌম জল ও বায়ু স্বাস্থ্যের কিরুপ অনিষ্ঠ করে, তাহা ইতিপূর্বে বিবৃত হইয়াছে।

শুদ, উন্নত ও কিঞ্চিৎ ঢালু ভূমির উপর গৃহ নির্মাণ করিবে। বৃদ্ধের মূলাদি উৎপাটন করিতে হইবে, নতুবা ঐ সমুদার পচিয়া ম্যালেরিয়া উৎ-পাদন করে। জলাভূমির কিমা আবির্জনাপূরিত পুকরিণীর উপর গৃহ নির্মাণ .নিষিদ্ধ। গৃহের ভিত্তি সাধারণ ভূমি হইতে ৩।৪ কুট, এবং ম্যালেরিয়াজনক ভূমি হইতে ৮।১০ ফুট উচ্চ হওয়া উচিত। যাঁহাদের ইষ্টক পৃহ নির্মাণ করি-বার সঙ্গতি নাই, তাঁহারা ভিত্তি শুষ্ক রাখিবার উদ্দেশ্যে এক ফুট পুরু বালুকার উপর কঠিন মৃত্তিকা পিটিয়া ভিত্তি প্রস্তুত করেন; অথবা বালুকাপূর্ণ জালা পাশাপাশি রাখিয়া তাহার উপর ভিত্তি নির্মাণ করেন। ইষ্টক গৃহের ভিত্তি থিলানের উপর প্রস্তুত করা উচিত।

ভূমির আর্দ্রতা নিবারণের জন্য জল নিকাশী নর্দমা বা ড্রেণ প্রস্তুত করা উচিত। ডেবুণ ছই প্রকার,খোলা মুহুরী বা সারকেস্ ডেবুণ (surface drain) এবং চাপা ড্রেণ বা সূয়ার (sewer)। মুহুরী গৃহ ভিত্তির ৪--> ০ ফুট নিমে ঢালু করিয়া প্রস্তুত করা উচিত। থোয়া, ঝাওয়া প্রস্তুর, কন্ধর অথবা কঠিন মৃত্তিকা পিটিয়া এবং ঢালু করিয়া, সদর রাস্তা হইতে অন্ততঃ ১ ফুট উচ্চ, প্রাঙ্গন প্রস্তুত করিবে। প্রাঙ্গন হইতে বৃষ্টির জল মুহুরীতে এবং মুহুরী হইতে সদর রাস্তার নর্দামায় গিয়া পড়িতে পারে এরপ ব্যবস্থা করা কর্ত্তব্য। রন্ধন-শালা,স্বানাগার,পায়থানা প্রভৃতির জল মৃত্তিকায় শোষিত হইতে দেওয়া উচিত নয়। সূয়ার প্রস্তুত করা একের কর্ম্ম নয়। মিউনিসিপালিটা কর্তৃক এই ব্যয়সাধ্য কার্য্য সাধিত হইতে পারে। কলিকাতার রাস্তা সমূহের নিম্নে ইপ্তকের গাঁথুনী বা বড় বড় চিনে মাটির নল দারা স্থার নির্মিত হইয়াছে। ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র নল দ্বারা প্রত্যেক গৃহের সহিত সদর রাস্তার স্থায়ের সঙ্গে যোগ রহিয়াছে। গৃহের মল ও ময়লা জল প্রভৃতি স্থারে প্রবেশ করিয়া কলিকাতার 8 ক্রোশ দূরে সল্ট লেকে (salt lake) গিয়া পড়ে। স্থার ভালরূপ পরিষ্ঠ না হইলে ইহার অভ্যন্তরে নানা প্রকার বিষাক্ত গ্যাস উৎপন্ন হয়, এবং ভন্ন যোড়ার বা ছিদ্রের ভিতর দিয়া বহির্গত হইয়া গৃহে প্রবেশ করিয়া ডিপ্থিরিয়া, টাইফয়েড প্রভৃতি উৎপাদন করে।

(২) প্রত্যেক গৃহ বাষু সমাগম বিষয়ে ফুসফুস-গুণ-সম্পন্ন হওয়া উচিত। ফুসফুস যেমন একদিকে বিশুদ্ধ বায় গ্রহণ করিতেছে এবং অপরদিকে দ্বিত বায়ু নিঃসারণ করিতেছে, তদ্ধপ প্রত্যেক গৃহে বিশুদ্ধ বায়ু জাগমন ও দ্বিত বায়ু নির্গানের ব্যবস্থা করা একান্ত কর্ত্তব্য। এক ঘরের ভিতর দিয়া অন্য ঘরে বায়ু প্রবেশের ব্যবস্থা না করিয়া প্রত্যেক ঘরে বাহিরের বিশুদ্ধ ৰায়ু সঞ্চালিত করিতে হইবে। শয়নাগারে প্রত্যেক ব্যক্তির জন্য ৮০০ খন ফুট, এবং দাদশ বর্ষের নিম্ন বয়স্ক বালক বালিকার জন্য ইহার অর্দ্ধ পরিমিত স্থান নির্দ্দেশ করা আবশ্যক।

(৩) আ'লে'কের প্রয়োজন কেবল দৃষ্টির জন্য নহে; ইহার সঙ্গে স্বাস্থ্যের ও ঘনিষ্ট সম্বন্ধ রহিয়াছে। যে সমুদায় মাইক্রোব পচন ক্রিয়ার হেতৃ, স্থ্যালোকে তাহাদের বংশ বুদ্ধি হয় না। অন্ধার স্থানে বুক্ষ বৰ্দ্ধিত হয় না। আলোকবিহীন আফিসে বা দোকানে যাহারা সর্ব্ধান কর্ম করে তাহাদের বর্ণ প্রায় ফ্রাকাসে হয়। অতএব । কি শয়নাগার, কি কি পায়খানা, সর্ব্বত্র আলো সমাগমের ব্যবস্থা করিতে হইবে। রাত্রিকালে প্রজালিত মালো যাহাতে দৃষ্টি ও স্বাস্থ্যের পক্ষে ব্যাঘ্যাতজনক না হয় তৎ-প্রতি দৃষ্টি রাথা কর্ত্তব্য। ক্ষীণ আলোকে লেখা পড়া করিলে চক্ষু সর্ব্বদা প্রসারিত করিতে হয়, তমিবন্ধন লেন্স দীর্ঘীকৃত হইয়া পড়ে, এবং শর্ট সাইট (Short sight) জন্ম। আলো পরিকার হইবে অথচ চক্ষু ও কপালে ইহার উত্তাপ লাগিবে না, এরূপ ব্যবস্থা চাই। অধ্যয়নাগারে উজ্জল আলোকবিশিষ্ট দোলায়মান কেরোসিন ল্যাম্প স্থবিধাজনক। গ্যাদের আলো হইতে অনেক পরিমাণে কার্বন ভায়ক্সাইড, সলফার ভায়ক্সাইড, হাইডে, জেন সলফাইড, ষ্ট্রামোনিয়া ও য়ামোনিয়ম সলফাইড নির্গত হয়। গ্যাসাধারের দোষে যদি গ্যাস ভালরূপ দগ্ধ না হয় তাহা হইলে কার্ব মনক্সাইড্ বিষ উৎপন্ন হয়। একটা সাধারণ গ্যাস প্রদীপ ১০ জন পূর্ণবয়স্ক মন্ত্রোর স্মান। স্থতরাং শয়নাগারে কিয়া অধ্যয়নাগারে কোল গ্যাদের আলো প্রজ্ঞালন নিষিদ্ধ। বৈহ্যতিক আলো দর্ক্কাপেক্ষা স্বাস্থ্যকর কিন্তু ছ্র্ল ভ। সাধারণ "ডিবে" কেরোসিন প্রদীপ অত্যন্ত অনিষ্টকর। ইহার ধূমা নাসারস্থ জুসফুসে প্রবেশ করে। রন্ধনশালা শয়নাগার প্রভৃতি স্থানে এই ল্যাম্প ব্যবহার না করিয়া রেট্রীর তৈলের প্রদীপ ব্যবহার করা সর্বাথা কর্ত্তব্য । যাঁহারা নিকটে রিডিং ল্যাম্প রাথিয়া লেখা পড়া করেন তাঁহাদের গুইটা বিষয়ে সাবধান হওয়া উচিত,(১) আলোরাতেজ হইতে চক্ষুকে রক্ষা করিবার জন্ম চিমনিতে একটা আবরণ পরাইবেন; (২) আলোর উত্তাপ निवातर्गत जग्र जारना ववः हकूत मधास्रात वकंते क्रिकिति-जन-পূরিত কাঁচের পাতা (Jar) রাখিবেন। বামদিকে আলো ও জানালা

রাথিয়া লেখা পড়া করা উচিত; তাহা হইলে হত্তের ছায়া পড়িয়া লেখা পড়ার ব্যাঘ্যাত জন্মায় না।

- (৪) স্থরক্ষিত কৃপ বা পুন্ধরিণীর জল শোধন পূর্বক পান করিবার ব্যবস্থা করা উচিত। কৃপ ও পু্দরিণী প্রভৃতির জল যাহাতে দূবিত না হয় তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাখা একান্ত কর্ত্তব্য। মুহুরী প্রভৃতি পরিষার রাধিবার জন্ম জলের ব্যবস্থার প্রয়োজন। বাড়ীতে জলের কল আনিতে হইলে কোন নর্দামা, গ্যাস-নল কিম্বা ময়লা স্থানের নিকট দিয়া নল আনয়ন করা উচিত নহে। অনেক স্থলে অনিষ্ঠকর পদার্থ নর্দ্ধামা বা গ্যাস-নলের ছিদ্র দিয়া निर्गठ रहेशा ७१ जननत्नत हिस पिया जत्न थात्र करत।
- (৫) সাহেবেরা প্রত্যেকে গড়ে প্রতিদিন ২॥ । আ উন্স মল ও ৪ । আউন্স মূত্র এবং দেশীয় প্রত্যেকে গড়ে ১২ আউন্স মল ও १३ আউন্স মূত্র ত্যাগ করে। যে বঙ্গীয় নগরে ৪ লক্ষ লোকের বাস, তাহাতে প্রতিদিন ৩ লক্ষ পাউ ও মল ও ১৮৭৫০ গ্যালন মূত্র পরিত্যক্ত হয়। এই অপর্যাপ্ত মল মৃত্র রাশি নিত্য স্থানান্তরিত করা আবশুক।

মল মূত্র স্থানান্তর করণের ছইটী প্রণালী আছে, ওয়াটার মেথড় (water method) বা জলীয় প্রণালী এবং ড্রাই মেথড় (dry method) বা শুষ প্রণালী।

জলীয় প্রণালী অনুসারে ডে ণের পায়খানা প্রস্তুত করিয়া সদর রাস্তার সুয়ারের সঙ্গে যোগ রাধা হয়। চৌবাচ্চা হইতে সবেগে নিক্ষিপ্ত জলের স্রোতে মল ধৌত হইয়া স্থ্যারে পতিত হয়। এই প্রকার পায়থানা অতি পরিষ্কার ও গন্ধহীন থাকে বটে, কিন্তু অত্যন্ত ব্যয়সাধ্য বলিয়া বড় বড় মিউনি-দিপালিটী ভিন্ন অন্তত্ৰ এই প্ৰণালী অবলম্বিত হইবার কোন উপায় নাই। ইহাতে কেবল ব্যয় অধিক তাহা নহে, কিন্তু বিপদও অনেক। যদি ভেণ সম্পূর্ণরূপে পরিদ্বত করিবার উপায় না অবলম্বিত হয়, স্মার গ্যাস রাস্তা হইতে शृद्ध व्यटन कतिवात भथ यिन क्ष ना थारक, अथवा ए न-नरन यिन छिन थारक, তাহা হইলে স্মার গ্যাদ্ নিকটবর্ত্তী গৃহের বায়ুতে কিম্বা পানীয় জলের নলে প্রবেশ করিয়া ডিপ্থিরিয়া, টাইফয়েড ফিবার প্রভৃতি উৎকট রোগ উৎপাদন

করিতে পারে। কিন্তু স্থার যদি সাবধানে গঠিত ও রক্ষিত হয়, তাহা হইলে, সাধারণ স্বাস্থ্যের উন্নতি এবং টাইফয়েড জ্বাদি-জনিত মৃত্যু সংখ্যার হ্রাস হয়। পুরাকালের "কুগা পায়থানা" এবং "ডোবা পায়থানার" সহিত বর্ত্তমান "স্মার" প্রণালীর তুলনাম উপরোক্ত মত ধার্ঘ্য হইয়াছে; শুফ প্রণালীর সহিত হয়ার প্রণালীর তুলনা করিয়া স্বাস্থ্যের উন্নতি অবনতি লক্ষ্য করা হয় নাই ; স্কুতরাং স্থার প্রণালী সর্বশ্রেষ্ঠ কি না এই কথা ডাক্তার পার্কস্ বলিতে পারেন না। এইদেশে এখনও মত প্রকাশ করিবার সময় হয় নাই। কলিকাতার স্বাস্থ্যরক্ষক ডাক্তার সিমসন বলেন, সুয়ার-নিঃস্ত মল ও গ্যাস দারা ভূমি দূষিত হইতেছে এবং এই কারণবশতঃ কলিকাতায় জরজনিত মৃত্যু সংখ্যা বৃদ্ধি হইতেছে। এদেশের যে সমুদায় স্থানের মৃত্তিকা য়্যালুভিয়েল, সে ममूनम शांत ए एवं नन "निममा" या अमारक या प्राम् या मिमा या देरक भारत, এবং যোড়ার ভিতর দিয়া গ্যাস নির্গত হইতে পারে। স্থারের সমুদ্য ময়লা একত্রিত হইয়া নগর এবং নদী হইতে দূরে গিয়া নির্ব্বিল্লে পতিত হইতে পারে এমন একটা প্রশস্ত নিম্ভূমি বা আউট ফল (outfall) চাই; সেই ভূমি এভ নিম্ন হওয়া আবশ্যক যাহাতে স্থার ক্রমশঃ ঐ ভূমির দিকে ঢালু ভাবে নির্মিত रहेट शादा। এই ममूनम ऋर्यांग ना थाकित्न स्मात अंगानी अवर्जन कता অমুচিত।

বৃষ্টিজল ও ময়লা জল নিঃসরণের পৃথক ব্যবস্থা "সেপারেট সিষ্টেম্" (separate system) বা "পৃথক ব্যবস্থা" নামে অভিহিত । উত্তর প্রকার জল কলিকাতার হয়ারেজ নিঃসরণের এক প্রকার ব্যবস্থার নাম "কম্বাইও্ সিষ্টেম্" প্রণালীর দোষ। (combined system) বা "মিশ্রিত ব্যবস্থা।" কলিকাতার "কম্বাইও্ সিষ্টেম্" প্রচলিত। এই জন্য অধিক বৃষ্টির পর অতিরিক্ত জল সঞ্চিত হইয়া হয়ার অবক্রদ্ধ করে। হয়ারের পাঁচটী মুথ গঙ্গার দিকে ও একটী মুথ সল্ট ওয়াটার লেকের দিকে। গঙ্গার ও সমূদ্রে জোয়ারের সময় এই মুথগুলি কন্ধ হইয়া যায়; স্লতরাং অতিবৃষ্টির সময় হয়ারের ময়লা-স্রোত উপরিস্থিত "ম্যানহোল" (man hole) নামক ছিদ্র দিয়া রাজপথে উথিত হয়। কলিকাতার হয়ার ক্রমশঃ ঢালু নহে, এই জন্য ময়লা দমকল দারা উর্জে তুলিয়া

নিমে ফেলিতে হয়। সয়লার পরিমাণের তুলনায় বর্ত্তমান দমকলের শক্তি অন্ন;
এই কারণেও অতিরিক্ত ময়লা সঞ্চিত থাকে। ডেনুণ পাইপের অসংলগ্ন যোড়া
দিয়া ময়লা বাহিরের ভূমিতে প্রবেশ করে। এই সমুদ্য কারণে কলিকাতার
ভূমি কল্বিত; এবং ডাক্তার দিমদনের মতে, কলিকাতার জর বৃদ্ধির কারণ
এই।

অতএব লিকুইড্ নেথড্ প্রবর্ত্তন করিতে হইলে, (১) অপর্যাপ্ত জলের ব্যবস্থা (২) স্থার্তি স্থার, (৩) স্থারে বায়ু সঞ্চালনের ব্যবস্থা, (৪) স্থেজ নির্গমনের উপযোগী স্থান বা আউটফল, এবং (৫) স্থেজের শেষ ব্যবস্থা বা ক্রমি প্রভৃতি কার্য্যে প্রযোগ, এই পাঁচটী বিষয়ে লক্ষ্য রাথা একান্ত প্রযোজনীয়।

ড়াই মেথড়— স্থার প্রণালী প্রবর্তন করিতে হইলে এই দেশে নদী
নালা প্রভৃতির জলে ময়লা নিক্ষেপ করিতে হয়। এবং স্থার গঠন ও রক্ষণাবেক্ষণের জন্ম অনেক অর্থ বায় করিতে হয়। এই সমুদয় কারণে ওয়াটার
মেথড়্ বর্জন করিয়া সাধারণতঃ ড়াই মেথড়্ অবলম্বন করিতে হইবে।
শুক্ষ মৃত্তিকায় মল প্রোথিত করা এবং তদ্বারা মল আবৃত্ত করাই স্বাভাবিক
বলিয়া বোধ হয়; এমন কি বিড়াল প্রভৃতি পশুও যেন কোন অনুশ্রশক্তিচালিত হইয়া স্বীয় মল মৃত্তিকাবৃত করিয়া ট্রেক্ষিং প্রণালীর পথ প্রদর্শন করে।
ডাই মেথডের তিনটী স্থবিধা আছে; (১) মলাদি বাসস্থানের সরিধান হইতে
সম্পূর্ণরূপে দ্রীভূত হয়, (২) নদী প্রভৃতি জলপথ দ্যিত হয় না এবং (৩) মল
কৃষিকার্যো ব্যবস্থত হইতে পারে।

ড্রাই মেথড্ অনুসারে মল ও মূত্র পৃথক্ পৃথক্ ভাণ্ডে ত্যাগ করিতে হয়। ছইটী আলকাত্রা মাথান গামলায় মল ত্যাগ ও শৌচ করিবার ব্যবস্থা করা যাইতে পারে। শুক মৃত্তিকা চূর্ণ অতি উত্তম হুর্গন্ধনাশক। মলত্যাগের পর কিঞ্চিং শুক মৃত্তিকা মলভাণ্ডে নিক্ষেপ করা উচিত। এই মৃত্তিকা দারা হস্ত প্রকালনের কার্য্যও চলিতে পারে। লোকেল বোর্ডের উন্যোগে মেথর কর্তৃক নিত্য কিম্বা সপ্তাহে হুই তিন দিন মল স্থানান্তরিত এবং গামলা পরিস্কৃত হুইতে পারে।

খাঁহাদের সঙ্গতি আছে তাঁহারা ইষ্টক নির্মিত সিমেণ্ট করা চাতালের উপর গামলা রাখিবেন এবং বসিবার স্থানে, ফোকরের সন্মুথে, প্রস্রাব ও শোচ-জল নিঃসরণের জন্ম একটা মুহুরী প্রস্তুত করিয়া মুহুরীর মুথে একটা গামলা রাখিবেন। খাঁহাদের তত সঙ্গতি নাই, তাঁহারা বাসগৃহ হইতে কিঞ্চিৎ দূরে অগভীর গর্ভ খনন করিয়া মল ত্যাগ ও মৃত্তিকা দ্বারা মল আবৃত করিতে পারেন। গর্ভ পূর্ণ হইলে তত্পরি শাক সব্জি রোপণ করিয়া অন্মত্র গর্ভ খনন করা উচিত। দূরস্থিত মাঠে পরিত্যক্ত মল মৃত্তিকা, বায়ু ও রৌদ্র সংযোগে অতি শীঘ্র বিশোধিত হয়।

(ট शिः निम्हित् (trenching system) जन्मीत मम्म मन মৃত্তিকায় প্রোথিত করিতে হয়। (১) নদী কৃপ পুদরিণী প্রভৃতি হইতে বহুদূরে এবং বর্ষা-জলের উর্দ্ধ দীমার উপরে ( above high water level ), টু ঞিং গ্রাউও ( trenching ground ) বা পগার-ভূমি নির্বাচন করা উচিত। ভূমির অন্ততঃ তিন ফুট নিম্ন পর্য্যন্ত যাহাতে অনার্জ্র থাকে এরূপ জল নিকাশের বন্দোবস্ত বা ড্রেণের ব্যবস্থা করা আবিশ্রক; নতুবা ভূমি আর্দ্র হিলে ড্রাই মেথডের সমুদয় উদ্দেশ্য ব্যর্থ হয়। (২) এক এক ফুট অন্তরে ২৪ ফুট দীর্ঘ, ৪ ফুট প্রশস্ত, এবং ১২ ফুট গভীর এক একটী টে ঞ বা পগার খনন করিতে হইবে। এইরূপ একটী ট্রেঞ্চ ২০০০ বাক্তির মল ধারণ করিতে পারে। (৩) ট্রেঞর অর্দ্ধেক বা ১ ইঞ্চি পর্য্যন্ত মলে পূর্ণ করিয়া তদুপরি ১ ইঞ্চি শুক্ষ মৃত্তিক। নিক্ষেপ করিতে হইবে। (৪) মল মিশ্রিত মৃত্তিকা সারাল মৃত্তিকার পরিণত হইলে তত্বপরি পাট, নীল, ইক্লু, কলা ও শরিষা প্রভৃতি বুক্ষ এবং কপি, শালগম, সীম প্রভৃতি শাক তরকারী রোপণ করিতে হইবে। প্রায় তিন মাস পরে সমুদয় মল কাল সারাল মৃত্তিকায় পরিণত হয়; এবং ২।০ ফদলের পর ঐ মৃত্তিকা টে ঞিং কার্য্যে ব্যবস্ত হইতে পারে। (৫) পার্থানার মল মৃৎভাত্তে না লইয়া আলকাত্রা মাথান কাষ্ঠ বাল্তিতে সংগ্রহ করিয়া লৌহ শকটে নিক্ষেপ করিতে হইবে, এবং ঐ শকট त्यारम ट्रिकिश धार्छर७ नहेशा याहरू इहेरव।

(৬) জল বায়ুর বিশুদ্ধতা রক্ষণ—বে সমুদ্য কারণে বাসভ্মির জল ও বায়ু দ্যিত হয় তাহা ইতিপুর্বের বলা হইয়াছে। পুন্ধরিণী কিম্বা কূপের জল ষাহাতে কোন প্রকারে দূষিত না হয় তৎপ্রতি সর্বানা দৃষ্টি রাখিতে হইবে। আবর্জনাসঞ্চয়হেতু বায়ু দূষিত হইতে দেওয়া উচিত নয়। গৃহপ্রাপ্তনে আবর্জনাকুও খনন করিবার প্রথা অত্যন্ত দূষণীয়। যে দিক হইতে গৃহে সচরাচর বায়ু প্রবাহিত হয় তাহার বিপরীত দিকে গৃহের কিঞ্চিৎদূরে একটা গর্ত্ত খনন করিয়া গোশালা, অশ্বশালা, রন্ধন শালা প্রভৃতির আবর্জনা নিক্ষেপ করিবে এবং ১ ফুট পরিমিত মৃত্তিকা দারা সমুদয় আবৃত করিবে। কলিকাতা প্রভৃতি বড় সহরে আবর্জনা কুও খনন দণ্ডনীয়। তথা গৃহের আবর্জনা রাশি রাস্তায় নিক্ষিপ্ত এবং রাস্তা হইতে ময়লা গাড়ী বোগে নীত ও ইন্দিনা-বরটার বালাহ্যত্তে দগ্ধীভূত হইয়া থাকে।

পশুর মৃতদেহ পচিয়া গৃহবায়ু দূষিত করিতে পারে। গ্রাম অঞ্চলে এই সমুদ্য মৃতদেহ মাঠে নিক্ষিপ্ত হয়। নদী কিম্বা থালের জলে শব নিক্ষেপ না করিরা বৃহৎমাঠে নিক্ষেপ করায় অনিষ্ঠ অল্ল। কিন্তু অগ্নিসংস্কার সর্ব্বশ্রেষ্ঠ প্রণালী। কোন কোন মিউনিসিপালিটীতে ইন্সিনারেটার যত্ত্বে আবর্জনার সহিত মৃতপশুদেহ ভক্ষীভূত হইয়া থাকে।

গৃহদংলগ্ন দমুদয় ভূমি ও গৃহস্তিত টেবিল চেয়ার প্রভৃতি দর্বদা পরিকার পরিচ্ছন রাখিতে হইবে, নতুবা বায়ু দ্যিত হয়। গৃহের কিঞ্চিং দ্রে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বৃক্ষ রোপণ করা যাইতে পারে। রৌজ সংযোগে বৃক্ষ বায়ুর কার্বন ডায়ক্সাইডের কার্বন গ্রহণ করে এবং অক্সিজেন মুক্ত করিয়া বায়ুর শোধন শক্তি বৃদ্ধি করে। পুত্প রেণুতে ওঝোন আছে বলিয়া কেহ কেহ পুত্পার্ক্ষ স্বাস্থ্যকর মনে করেন। রহ্ধন শালা, গোশালা ও অস্থশালা, বাসগৃহ হইতে দ্রে নির্মাণ করা কর্ত্তব্য। রহ্ধন শালার গরে অক্ষ্মা হয়। গোশালা ও অস্থশালা নিত্য পরিকার করা উচিত। গৃহপ্রাক্ষনে গোবর গাদা রাখা অত্যন্ত অস্বাস্থ্যকর। গো অস্বের মূত্র যাহাতে মৃত্তিকায় শোষিত না হয় এইজন্ম মেজে পাকা সিমেন্ট করিয়া বা কাঁকর ও আটাল মাটি পিটিয়া নর্দাসার দিকে ঢালু করিতে হইবে এবং নদ্বিমার মুখে একটা বড় গামলা রাখিয়া গামলা নিত্য পরিকার করিবে।

## ষ্ঠ অধ্যায়।

#### ব্যায়াম ও বিশ্রাম।

হস্তপদ প্রভৃতি প্রত্তের ভলন্টারী মদ্ল্ সমূহের ( voluntary muscles) যথোচিত চালনার নাম ব্যায়াম। বিধাতার আদেশে মাতৃগর্ভে ক্ষুদ্র ক্রণ ও শৈশবে চঞ্চল শিশু নিয়তই ব্যায়াম সাধন করিতেছে। ব্যতীত অঙ্গ পরিপুষ্টি, রক্ত সঞ্চালন, নিশ্বাস প্রশ্বাস, ও পরিপাক প্রভৃতি ক্রিয়ার উৎকর্ষ রক্ষিত হয় না। যে সময়ে পুরুষেরা ভূমি কর্ষণ প্রভৃতি যাবতীয় কায়িক পরিশ্রমের কার্য্য করিতেন, ও স্ত্রীলোকেরা অকুন্ঠিত চিত্তে স্বহন্তে সন্তান লালন পালন ও রন্ধন প্রভৃতি যাবতীয় গৃহ কার্য্য করিতেন দে সময়ে জীবন ধারণ ও ব্যায়াম প্রায় একই কথা ছিল। তথাচ পুরাকালে নানাপ্রকার ব্যায়াম ক্রীড়া প্রচলিত ছিল। কিন্তু বর্ত্তমান যুগে যে সমুদয় পুরুষ অশ্বযান ব্যতিরেকে একপদ অগ্রসর হওয়া অপমানজনক জ্ঞান করেন, অথবা হস্তপদের স্ষ্টি কেবল ভূত্যদিগকে কর্ণমন্দ্রনি ও পদাঘাত করিবার জग्रहे मत्न करतन, এवः य ममूनम तमनी तक्कन, मलान लालन পालन প্রভৃতি যাবতীয় গৃহকার্য্যের ভার নানাবিধ কুৎসিত রোগগ্রস্ত পাচক পাচিকা ও দাস দাসীর উপর অর্পণ করিয়া স্বীয় "পুষ্পাধিক স্কুমার" দেহ-লল নবনীত শ্য্যায় স্থাপন করিয়া অর্দ্ধনিমীলিত নেত্রে শৈলেশ্বর মন্দিরে জগৎসিংহ তিলোত্তমা সন্মিলনের দুখ্য ভাবনা করেন, অথবা নিত্রপ্রফ্যাশন-শোভিত অলম্বার-সজ্জার প্রতিবেশিনীকে পরাস্ত করিবার উপায় কল্পনা করেন, তাঁহা-দের "নিত্য অস্থ্য" নামক জীবনের তুর্ব্বিদহ ভার মোচনের একমাত্র উপায় वार्याम् । य ममूनाव आहीन वा अई आहीन महिना अन्वरक नकाव पहि, কালীঘাট প্রভৃতি স্থানে প্রতিদিন যাতায়াত করেন তাঁহাদের স্বাস্থ্যে, ও পিঞ্জরাবদ্ধা নবযুবতীদের স্বাস্থ্যে, বর্গ নরক প্রভেদ। অনেক প্রাসিদ্ধ

জাতির উত্থান পতনের সঙ্গে ব্যায়ামের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ রহিয়াছে। বৃত্রশৃতালী ধরিয়া মূরপদানত স্পেনিয়ার্ড গণ কেবল কায়িক পরিশ্রমের কার্য্যে নিযুক্ত হইয়াছিল। সেই বলবান ক্রমকশ্রেণীসন্তুত কতিপয় অসীম সাহস ও বীর্য্যান্ত মূরদিগকে পরাজিত করিয়া পৃথিবীময় সভ্যতা ও বাণিজ্য বিস্তার করিয়াছিল। কিন্ত ধনের গৌরবে সেই জাতি কায়িক পরিশ্রমে য়ণা প্রদর্শন করিতে লাগিল এবং অল্লকাল মধ্যে হীনতেজ হইয়া পড়িল। অতএব ব্যক্তি কিম্বা জাতি নির্ব্বিশেষে ব্যায়ামের স্বব্যবস্থা করা একান্ত কর্ত্ব্য। ছাত্রদিগের ব্যায়ামের ব্যবস্থা করিয়াছেন বিলয়া গ্রন্থেক্টে আমাদের চির-ক্রত্ত্বতা ভাজন।

## প্রথম পরিচ্ছেদ।

## ব্যায়ামের ফল।

- ১। ফুস্ফুস্ সংক্রান্ত—ফুসফুসে রক্ত ও বায়ুর গতি বর্দ্ধিত, রক্ত অধিক পরিষ্ঠ এবং কুসফুস হইতে অধিক পরিমাণে কার্বন ডাম্ফ্সাইড ও অতিরিক্ত অঙ্গার নিঃস্থত হয়। ব্যায়ামের অভাবে অতিরিক্ত অঙ্গার দগ্ধ না হইয়া বসায় পরিণত হইয়া অস্বাভাবিক স্থলতা বৃদ্ধি করে, তজ্জ্য ফুসফুস ত্র্বল হয় ও সহজে ক্ষয়রোগে আক্রান্ত হয়। অতিরিক্ত ব্যায়াম সাধিনে ফুসফুসের রক্তাধিক্য (congestion), এমন কি রক্তস্রাব (hæmoptysis) পর্যান্ত হইতে পারে।
- ২। হৃদয় ও ধননী সংক্রান্ত—রক্ত সঞ্চালন বৃদ্ধি হয়। ব্যায়ায়ের অভাবে হদয় শক্তিরহিত, প্রসারিত বা ডাইলেটেড্ও ফ্যাট্পূরিত (fatty degeneration) হয়। অতিরিক্ত ব্যায়ামবশতঃ হাটের রপ চার (rupture), প্যাল্পিটেশন (palpitation), হাইপাট্রিফ (hypertrophy) ও ভ্যালভুলার ডিজিজ (valvular diseases) হইতে পারে।

- ত। চর্দ্ম দংক্রান্ত —রক্তাধিক্য ও ঘর্মাধিক্য হয়। ব্যায়ামকালীন
  চর্দ্মে শীতল বায়ু স্পর্শে স্বেদ রোধ হইবার সম্ভাবনা নাই। কিন্তু ব্যায়ামান্তে
  অধিক ইভেপরেশন্ বশতঃ চর্ম্ম শীঘ্র শীতল হয়; সেই সময়ে "ঠাণ্ডা" (chill)
  লাগিবার ভয় অধিক।
- ৪। মাংসপেশী সংক্রান্ত—ভলণারী মদ্ল্ সমূহ বর্দ্ধিত, দৃদীভূত
  ও ইচ্ছায়ত্ত হয়। অপর সমুদ্য অঙ্গুচালনার প্রতি দৃষ্টি না রাখিয়া
  কেবল মাত্র একটা অঙ্গ বা মাংসপেশী চালনা করিলে, সেই
  অঙ্গ বা মাংসপেশী প্রথমতঃ অতি বর্দ্ধিত হইয়া পরে ক্ষয়প্রাপ্ত
  হয়। ইহার দৃষ্ঠান্ত স্থল, বালিকাদের কুক্তাতা বা কার্তেচার অব্
  দি স্পাইন্ (curvature of the spine)। যৌবনারন্তে এই রোগের
  প্রবলতা। এই সময়ে সমুদ্য দেহের সঙ্গে সঙ্গে কোমল অন্থিসমূহ শীঘ্র বিকাশ
  প্রাপ্ত হয়, এবং এক দিকে মাংসপেশী অধিক পরিচালিত হইলে অপরদিকে
  স্পাইন হেলিয়া পড়ে। অবিশ্রান্ত পিয়ানোবাদন, চিত্রকরণ, দেলাই ও
  উলব্নন বশতঃ হস্ত ব্যথিত ও ক্লান্ত হয় এবং য়ন্ধ নত হইয়া পড়ে। স্কন্ধ
  ও হস্ত উত্তোলন করিয়া রাথিবার জন্ম বালিকা যত চেষ্টা করে, অতিউত্তেজিত-মাংসপেশী-সংলগ্ধ কোমল স্পাইনেল বোন সমূহ ততই বিকৃত
  হইয়া পড়ে।
- ে। স্নায়্মগুলী সংক্রোন্ত— স্নায়্মগুলীর পুষ্টিসাধন ও মানলিক শক্তির বৃদ্ধি হয়। ব্যায়ামের অভাবে উগ্রতা বৃদ্ধি পায় এবং হিষ্টিরিয়া হাইপো-কণ্ড্রিয়া প্রভৃতি রোগ জন্মিবার সম্ভাবনা থাকে। অতিরিক্ত ব্যায়ামশীল ব্যক্তি অবকাশাভাব বশতঃ মানসিক উন্নতিসাধনে তৎপর হয় না।
- ৬। প্রাক্তর সংক্রান্ত যকতে ও পাক্ষর সমূহে রক্ত সঞ্চালন বৃদ্ধি ও তৎমঙ্গে সঙ্গে কুধা ও পাকশক্তি বৃদ্ধি পার। নাইট্রোজিনাস্ ও ফ্যাটী গাদ্য, ফদ্ফেট ক্লোরাইড প্রভৃতি সল্ট ও জলের অধিক প্রয়োজন হর। মুক্ত স্থানে ব্যায়াম ডিদ্পেপ্ শিয়া রোগের মহৌষধি। ব্যায়াম্বর অভাবে ক্র্ধামান্য ও অজীর্ণতা জন্মে।

- <sup>৭।</sup> অন্ত্র সংক্রোস্ত—ঘর্শাধিক্য বশতঃ মলের জলীয় ভাগের হ্রাদ হয়।
- ৮। কিড্নী সংক্রণন্ত—ঘর্মাধিক্য বশতঃ মৃত্রের পরিমাণ হ্রাস হয়।
  ব্যায়ামান্তে মৃত্রে নাইট্রোজেন বৃদ্ধি পায়।
- ৯। জননেন্দ্রিয় সংক্রান্ত—ব্যায়ায় জননেন্দ্রিয়ের অকাল বিকাশ নিবারণ করে, অনেকের এই ধারণা। অধিক ব্যায়ায় করিলে ইন্দ্রিয় প্রবৃত্তির হ্রাস হয়।

উত্তম ব্যায়ামের চিরস্থায়ী ফলঃ—ক্ষ্ণা ও পাকশক্তি বৃদ্ধি, স্থানিদ্রা, বক্ষবিস্তার, মাংসপেশী সমূহের আকার ও দৃঢ়তা বৃদ্ধি, এবং অধিক পরিশ্রম সহিষ্ণুতা। এই সপ্তবিধ ফল লক্ষিত না হইলে ব্যায়ামের অপরি-মিততা বা অনিয়মিততাই ইহার কারণ বৃ্ঝিতে হইবে।

# দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

### ব্যায়ামের নিয়ম।

- ১। ফুদ্ফুদ্ সংক্রান্ত ঃ—
- (ক) নিশ্বাদ প্রশ্বাদ ঘাহাতে অব্যাহতভাবে চলিতে পারে এইরূপ পরি-চ্চদ পরিধান করিতে হইবে। নিশ্বাদ প্রশ্বাদ ক্রত ও অনিম্নিত (laboured) কিম্বা গভীর ও দীর্ঘ (sighing) হইলে, ফুসফুদ কঞ্চেড্ মনে করিয়া ব্যায়াম তৎক্ষণাৎ স্থগিত করা উচিত।
- (থ) কার্বনের ক্ষতি পূরণার্থ দ্বত মাথন প্রভৃতি ফ্যাটী থাদ্যের পরিমাণ বুদ্ধি করিতে হইবে।
- ্রে) মদ্য স্পর্শ করিবে না। মদ্য কার্বন ডায়ক্দাইড নির্গমনের ব্যাঘাত জন্মায় এবং ইচ্ছাশক্তি (will power) থর্ক করে।

- (ঘ) অতিরিক্ত কার্বন ডায়কসাইড্ ছারা যাহাতে বায়ু দ্বিত না হয়, এইজন্ম মুক্ত কিম্বা বায়ু-সঞ্চালিত স্থানে ব্যায়াম করিবে।
- ২। হার্ট সংক্রোন্ত—ব্যায়াম আরম্ভে হার্টের প্রতি বিশেষ লক্ষ্য রাথিতে হইবে। নাড়ীর গতি মিনিটে ১২০—১৪০ হইলে, কিম্বা অনিয়মিত হইলে, প্রথমতঃ ব্যায়াম স্থগিত করিয়া তৎপর ক্রমশঃ অল্পে অল্পে ব্যায়াম অভ্যাস করিতে হইবে।
- ৩। চর্ম্ম সংক্রেণ্ড-(ক) চর্ম্ম পরিষ্কার রাখিতে বিশেষ যত্ন করিতে হইবে।
- (থ) ব্যায়ামকালে দামাগ্রভাবে অঙ্গ আবৃত করিলে চলে। কিন্ত ব্যায়ামান্তে স্ক্র ফ্লানালের গ্রায় দর্দিনিবারক বস্ত্র ব্যবহার করা উচিত।
- (গ) সময়ে সময়ে প্রয়োজনমত অন্ন জলপান করিবে। অতিরিক্ত ঘর্মা নিবন্ধন দেহে জলের অভাব হয়। এই অভাব পূরণ করা আবশুক। প্রচলিত সংস্কার বশতঃ ব্যায়ামকালে জল স্পর্শ করিতে দেওয়া হয় না; এই জন্ত ব্যায়ামান্তে অতিরিক্ত পিপাসা বশতঃ এক কালে অধিক জল পান করা হয়, এবং ইমাকে ও রক্তে অতিরিক্ত শীতল জল প্রবেশ করে।
- 8। মাংসপেশী সংক্রান্ত—সমুদয় অঙ্গের সমভাবে চালনা করিতে হইবে।
- ে আহার সংক্রান্ত—প্রোটীড, ফ্যাট, ও ফ্র্যুফেট্ ক্লোরাইড প্রভৃতি সন্টের পরিমাণ বৃদ্ধি করিতে হইবে।



# তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

### ব্যায়ামের পরিমাণ।

কূট টন হিদাবে পরিশ্রমের পরিমাণ নির্দ্ধারিত হয়। একটা ৫০ টন ভারি বস্তু ১ কূট উর্দ্ধে তুলিতে যে পরিমাণ পরিশ্রমের প্রয়োজন, তাহাকে ৫০ কূট-টন পরিশ্রম বলা যায়।

পার্ক্ স্বলেন প্রত্যেক স্বস্থ ব্যক্তি গড়ে ২৫০। ৩৫০ ফুট-টন পরিশ্রম করিয়া থাকে, এবং প্রত্যেক স্বস্থ ব্যক্তির কোন না কোন প্রকারে ১৫০ ফুট-টন পরিমিত ব্যায়াম করা আবশ্রক।

সোপানাদি অধিরোহণ কালে দেহের সমস্ত ভার,এবং সমতল ভূমে ঘণ্টার ত মাইল ভ্রমণ কালে দেহভারের 🕹 অংশ উত্থিত হয়। একজন সবস্ত ১৬০ পাউগু ভারি ব্যক্তি এই হিসাবে প্রতি মাইলে ২৯০ পাউগু বা ৮ পাউগু, অথবা প্রতি ফুটে ৮× ৫২৮০ পাউগু বা ৮০০ ২২৪০ টন বা ১৮.৮৬ টন উত্তোলন করে; অর্থাৎ ১৮.৮৬ ফুট-টন পরিশ্রম করে। সবস্ত্র ১৬০ পাউগু ভারি ব্যক্তিকে ১৫০ ফুট-টন পরিশ্রম করিতে হইলে প্রতিদিন প্রায় ৯ মাইল ভ্রমণ করিতে হয়। স্ব স্ব ব্যবসায়ের জন্ম অধিক পরিশ্রম করিতে হইলে, ব্যায়ামের পরিমাণ হ্রাস করিতে হয়।

# চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

#### বিশ্রাম।

দেহযন্ত্রসমূহের কার্যাক্ষমতা রক্ষা করিবার জন্ম যেমন ব্যারামের প্রয়োজন, ইহাদের ক্ষতিপূরণ ও পুষ্টিসাধনের জন্ম তেমন বিশ্রাদ্মরও প্রয়োজন আছে। বিশ্রামের অর্থ কেবল পরিশ্রমের বিরাম নহে, কিন্তু পরিমিত ও গভীর নিদ্রা। হস্ত পদ চক্ষু কর্ণাদি কর্ম্ম ও জ্ঞানেন্দ্রিয়ের পরিচালক মস্তিক্ষাংশ দৈনিক পরিশ্রম বশতঃ ক্লান্ত ও নিস্তেজ হইয়া পড়ে; চক্ষু মুদ্রিত ও হস্ত-পদাদি স্তস্তিত করিয়া শয়ন করিলে মস্তিকের ও সমুদ্র ইন্দ্রিয়ের ক্রিয়ার বিরাম ও মস্তিকের এনিমিয়া হয়। কিন্তু দেহ পোষণ ক্রিয়া অবিরত চলিতে থাকে। যাহাদের হস্ত পদাদি পরিচালন অধিক হয়, তাহাদের অধিক নিদ্রার প্রয়োজন। স্কুত্ত নবজাত শিশু দিবার অধিকাংশ এবং সমুদ্র রাত্রি নিদ্রায় অতিবাহিত করে। ক্রমশঃ তাহার দিবানিদ্রায় হ্রাস হয়, এবং ছাদশ

মাস উত্তীর্ণ হইলে রাত্রে ১০।১২ ঘণ্টা ও মধ্যাক্তে ২।৩ ঘণ্টা এবং অন্ত সময়েও
নিদ্রা করে। দন্তোলগম কালে শিশুদের নিদ্রার ব্যাঘ্যাত হয়। ৩।৪ বংসর
পর্য্যন্ত শিশুদিগকে মধ্যাক্তে নিদ্রা করিতে দেওয়া উচিত। পূর্ণবয়স্ক ব্যক্তি
অপেকা বৃদ্ধের অধিক নিদ্রার প্রয়োজন। ডাক্তার ব্রাউন নিদ্রা সম্বন্ধে
নিম্নলিথিত ব্যবস্থা করিয়াছেনঃ—

বয়স	বয়স			নিদ্রার পরিমাণ	
8-%	বৎসর			52	ঘণ্টা
9	39		• • •	>>	33
5-50	<b>3)</b>	• • •		203	1)
38-36	>>			> 0	19
39-20	")	• • •	* * *	के हैं	29
२১—२१	33	• • •	• • •	5	32
२४—३ उष्	र्क		111	ъ	12

১৪ বংসরের নিম্ন বয়স্ক বালকবালিকাদিগের শীতকালে এবং যৌবনারস্তে বা দেহের স্বরিত বিকাশকালে অধিক নিদ্রার প্রয়োজন।

অতি নিদ্রা বা অন্ন নিদ্রা আশদ্ধার কারণ। কখনও কখনও মস্তিদ্ধে জল সঞ্চয় বশতঃ, কখনও বা অন্নাহার ও এনিমিয়া বশতঃ নিয়ত তত্ত্বার ভাব হয়। মস্তিদের উগ্রতা অনিদ্রার কারণ। শিশুদের অনিদ্রা নিবারণের জন্ম নিয়লিথিত উপায় অবলম্বন করা যাইতে পারেঃ—

- (১) প্রতিদিন নির্দিষ্ট সময়ে শয়ন করাইতে হইবে।
- (২) শয়নগৃহে অতি ক্ষীণ আলোক রাখিবে।
- (৩) আলাপ প্রলাপ স্থগিত করিবে।
- (৪) দর্ব্ব প্রকার ভয়ের কারণ দূর করিবে। জুজু কিম্বা ভীষণ **রাক্ষদের** গল্প শুনাইয়া ভয় উৎপাদন করা অনুচিত। একটা ঘরে একা শয়ন করিতে দেওয়া উচিত নহে।
- (৫) নিদার ছই ঘণ্টার মধ্যে আহার করিবে না। কেহ কেহ বলেন অন্ন আহার নিদ্রা আকর্ষণ করে।

- (৬) নিদ্রার পূর্ব্বে দর্ব্বপ্রকারে চিন্তারহিত হওয়া আবশুক। নিদ্রার এক ঘণ্টা পূর্ব্বে পাঠ দমাপ্ত করা উচিত। কেহ কেহ বলেন দেই দমন্ন গান বাদ্য, কিম্বা দহজ ও স্থথকর পাঠ, কিম্বা ঈশ্বর নাম শ্বরণ, নিদ্রার দাহায্য করে।
- (৭) শয়ন গৃহে বায়ু সঞ্চালনের উপায় রাখিতে হইবে এবং শীত ও গ্রীম্মের কণ্ঠ দূর করিতে হইবে।
- (৮) পদন্বয়ের শীতলতা তুর্মল হার্টের ও মন্দীভূত রক্ত সঞ্চালনের পরিচয় প্রদান করে এবং নিদ্রার ব্যাঘ্যাত জন্মায়। সেন্থলে পদে গরম বোতল প্রয়োগ করা উচিত।
  - (৯) মন্ত্রাড ফুট বাথ অনেক সময় নিদ্রা আনয়ন করে।
  - (১০) "মেনমেরিক পাশ' দারা নিজার দাহায্য হইয়া থাকে।

## সপ্তম অধ্যায়।

#### পরিচ্ছদ।

বাহিরের শীতাতপ হইতে শরীর রক্ষা করা এবং শরীরের আভ্যন্তরীণ তাপ-ক্ষয় নিবারণ করা পরিচ্ছদের প্রধান উদ্দেশ্ত। শোভাবর্দ্ধন অন্তম উদ্দেশ্ত হইতে পারে; কিন্তু প্রথমোক্ত ছইটা উদ্দেশ্ত যাহাতে স্থসিদ্ধ হয়, এবং যাহাতে অঙ্গ প্রত্যঙ্গ সমূহের ক্রিয়ার কোন ব্যাঘাত না হয় তৎপ্রতি দৃষ্টি রাথিয়া পরিচ্ছদ পরিধান করা কর্ত্তব্য।

## প্রথম পরিচ্ছেদ।

#### বস্ত্রের গুণাগুণ।

- (১) উষ্ণতা—বস্ত্রের বাস্তবিক কিছু উষ্ণতা বা শীতলতা নাই। যে বস্তর তাপ পরিচালন শক্তি অধিক এবং যাহার মধ্য দিয়া দেহের তাপ শীঘ্র নির্গত হুইয়া পড়ে এবং বাহিরের বায়ুর শৈত্য অন্পভূত হয়, সেই বস্তুই "শীতল"। ইহার বিপরীত গুণবিশিষ্ট বস্ত্র "উষ্ণ"। সর্ব্বাপেক্ষা অধিক তাপ-পরিচালক ভুট ও লিনেন, তৎপর কার্পাদ্, তৎপর রেশম, এবং সর্ব্বাপেক্ষা অল্প তাপ পরিচালক পশম। কৃষ্ণবর্ণ বস্তুরে তাপ শোষণ শক্তি অধিক, এইজন্ম কৃষ্ণবর্ণ বস্তুর উষ্ণ; শেতবন্ধ এই শক্তির অল্পতাবশতঃ শীতল।
- (২) জল শোষকতা—ঘর্ম যত বাষ্পীভূত হইয়া উড়িয়া যায়, ততই
  চর্মের তাপ ক্ষয় হয়। যে বস্ত্র শীত্র ঘর্মা শোষণ করিয়া এই ইভেপরেশন্
  নিবারণ করে, তত্বারা দেহের তাপক্ষয় ও সর্দি নিবারিত হয়। পশমের এই

শক্তি সর্বাপেক্ষা অধিক, কার্পাদ বস্ত্রের সর্বাপেক্ষা অল্প। ওয়াটারপ্রক জঙ্গে কিছুমাত্র সিক্ত হয় না।

- (৩) সচিছ্দ্রেভা—বায়্র তাপ-পরিচালন শক্তি অল। স্থতরাং যে বস্তের ছিদ্র দিয়া অধিক পরিমাণে বায়ু প্রবেশ করিতে পারে, তদ্ধারা দেহ-তাপ অধিক রক্ষিত হয়। ফ্লানেলের এই গুণ সর্কাপেক্ষা অধিক।
- (৪) গন্ধাকর্ষণ শক্তি—পশমের এবং কৃষ্ণবস্তের গন্ধ আকর্ষণ করিবার শক্তি সর্বাপেক্ষা অধিক।
- (৫) সংক্রোমক-রোগ-বীজ-আকর্ষণ-শক্তি—এই শক্তি পশমের ও কৃষ্ণ বস্ত্রের সর্বাপেক্ষা অধিক, শ্বেতবস্ত্র ও কার্পাস বস্ত্রের সর্বাপেক্ষা অর। স্থতরাং চিকিৎসকদের পক্ষে শ্বেত কার্পাস বস্ত্র পরিধান করা উচিত।

এই সমৃদয় গুণাগুণ পর্যালোচনা করিলে ফ্লানেল ব্যবহার করাই উচিত বলিয়া বোধ হয়। চিভার্স ও মূর তাহাই বলেন। পার্কস্ বলেন গ্রীম্ব-প্রধানদেশে মেরিনো প্রভৃতি কার্পান্ মিশ্রিত বস্তু ব্যবহার করা উচিত। কিং বলেন এদেশের পক্ষে সর্বাদা ব্যবহারের জন্ত কার্পান বস্তুই উত্তম; কেবল পরিশ্রান্ত অবস্থায় পশ্ম ব্যবহার করা কর্ত্ব্য। চর্মোপরি পশ্ম পরিধান করিতে হইলে পাতলা ফ্লানেল ব্যবহার করা উচিত। বারম্বার পরিবর্ত্তন না করিলে ফ্লানেল শীঘ দ্ধিত হয়। এদেশের পক্ষে শ্বেত বস্ত্ব প্রশন্ত।

# দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

#### পরিচ্ছদের গুণাগুণ।

কেবল বস্ত্রের গুণাগুণ লক্ষ্য করিলে চলিবে না, পরিচ্ছদ পরিধান প্রণালী স্বাস্থ্যকর কিনা তৎপ্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাথা কর্ত্তব্য। অনেক স্থলে পরিচ্ছদ স্বাস্থ্যকর না হইয়া অনিষ্টকর হয়। "ডমক্ষ-কটি'' প্রয়াসিনী বিবিদের ষ্টেস্ (stays) পরিধান ইহার দৃষ্টান্তস্থল। একদা একজন ষ্টেম্ পরিহিতা

খুবতীর খাস-যাতনা দেখিয়া মনে হইয়াছিল আদম জান-বৃক্লের ফল ভক্ষণ করিয়া কি ভয়ানক অপরাধই করিয়াছিলেন। এ দেশে যাঁহার। বিবিদের অনুকরণ আরম্ভ করিয়াছেন, ষ্টেন্ পরিধানের চতুর্বিধ কুফল তাঁহাদের বিশেষরূপে স্মরণ রাথা কর্ত্তব্য। (১) ডায়েফ্রাম (diaphragm), शर्छ, नक्ष्म, निভात, हेमांक्, न्त्रीन, किए,नी, প্যানক্রিরাস্ (pancreas) ও ইণ্টেষ্টিন্স্ এই সমুদর যন্ত্র স্থানচ্যত হয়। লিভারের উপরে চাপ পড়াতে ইহার রক্ত সঞ্চালনের ব্যাঘ্যাত হয়, এবং তনিবন্ধন গ্যাষ্ট্রাল জিয়া, ডিস্পেপশিয়া, কলিক, নিসয়া, বিমি, ইত্যাদি হয়। ইউটারাদের স্থানচ্যতি বশতঃ নানাপ্রকার স্ত্রীরোগ হয়। (২) ডায়েফ্রাম, রিব সমূহ, ফুসফুস ইত্যাদির উপর চাপ পড়াতে নিশ্বাস প্রশাসের এবং ফুস-ফুসে বায়ু প্রবেশের বিষম ব্যাঘ্যাত হয়। (৩) হাটের উপর চাপ পড়াতে প্রায়ই প্যাল পিটেশন্ ও মৃচ্ছ। হয়। লগুন হাদপাতালের প্রধান ডিমন্ট্রেটার ভাক্তার ট্রেভেদ্ বলেন অতিশয় আটা পোষাক পরিধানবশতঃ ২৷৩ জন যুব-তীর ম্যাপোপ্লেক্সী রোগে মৃত্যু হইয়াছে। (৪) টুল্কের যে সমুদ্র মাংসপেশীর কার্য্য মেরুদভের ঋজুতা রক্ষা করা, তৎ সমুদয় ষ্টেদের উপর স্বীয়কার্য্যভার অর্পণ করিয়া অকর্মণ্য ও চুর্বল হইয়া পড়ে এবং ক্রমশঃ ক্ষয়প্রাপ্ত হয়। এই জন্ম কুজতা প্রভৃতি মেরুদণ্ডের নানাপ্রকার রোগ হয়। এইরূপে স্কন্ধ বক্ষস্থল প্রভৃতির নানাপ্রকার বিক্কৃতি হয়, এবং যে যৌবন সৌন্দর্য্য প্রদর্শন করিবার জন্ম এত নিগ্রহ ভোগ, তাহাই বিনষ্ট হইয়া যায়।

অতএব কি স্ত্রী কি পুরুষ, সকলেরই "ঢিলা" পোষাক ব্যবহার করা কর্ত্তব্য। কটিদেশে বেল্ট্ না পরিয়া ইলাষ্টিক গ্যালিদ্ ব্যবহার করা উচিত। মস্তকের জন্ম সাধারণতঃ আমাদের দেশে কোন আবরণের প্রয়োজন নাই। পার্ক্ দ্ বলেন স্থ্যোত্তাপ নিবারণের পক্ষে কেশইম স্তকের যথোপযুক্ত আবরণ। ট্রেভেদ্ বলেন খ্রীট আরব ও রুষক প্রভৃতি অনেক লোক কেবলমাত্র প্রকৃতিপ্রদত্ত মন্তকাবরণ ধারণ করিয়াই সম্পূর্ণরূপ স্কৃত্ত রহিয়াছে। বাঁহারা প্রকাণ্ড বায়ুস্ঞালনহীন টুপি ধারণ করিয়া মন্তক্ষে অকাণ্ডেলি প্র কিম্বা মন্তন (বল্ড্) বেশ ধারণ করান, তাঁহাদের এই কথাগুলি স্বরণ রাথা কর্ত্ব্য। গোড়ালিবিশিষ্ট জুতা শেরধান নিবন্ধন বিবিদের পদের আকৃতি অতি কুংদিত হয় এবং পদের ও য়্যাঙ্কল্ জ্ব্যেণ্টের মাংসপেশী সমূহ ত্র্বল হইয়া পড়ে।

# অন্তম অখ্যায়।

#### শিক্ষা।

বিক্বত শিক্ষার ফল বিকৃত মস্তিক্ষ ও তজ্জনিত নানাবিধ রোগ। ডাকার বাউন বলেন:-(১) শিকার সঙ্গে দেহবিকাশের ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ। (২) শিক্ষিত ব্যক্তি ও তাহার সন্তান সন্ততির মন্তিক্ষের আকার অপেকারত বুদ্ধিপ্রাপ্ত হয়। সভ্যজাতীয় রুমণীদের অপেকারত অধিক প্রসবক্রেশের প্রধান কারণ শিশুর বৃহৎ মন্তক। (৩) শিক্ষিত ব্যক্তির চক্ষু কর্ণ প্রভৃতি জ্ঞানেক্রিয় উৎকর্য-প্রাপ্ত এবং স্নায়ু-মণ্ডলী উগ্রতা-প্রাপ্ত হয়। সময়ে সময়ে এই উত্তেজনা এত অধিক হয় যে. তাহার দরুন নানাপ্রকার স্নায়বীয় রোগ জন্ম। বিক্বত শিক্ষার সঙ্গে সঙ্গে আত্মহত্যার বৃদ্ধি হয়। (৪) শিক্ষার উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে মস্তিদ্ধের কনভ-লিউশন, (convolution), গ্রে ম্যাটার (grey matter) ও দেল (cell) প্রভৃতির বৃদ্ধি হয়। (৫) যে সমুদয় সেণ্টার (centres) ইচ্ছাশক্তি প্রভৃতি দারা উত্তেজিত হইয়া গমন দর্শন প্রভৃতি ক্রিয়া সংসাধিত করে, শিক্ষা দারা সেই সমুদয়ের উন্নতি অবনতি হয়। (৬) শিক্ষা দারা চিন্তাপ্রণালী পরি-বর্ত্তি হয়। চিন্তাপ্রস্ত স্নায়বীয় শক্তি (nerve-force) যে পথ দিয়া অনেকবার পরিচালিত হয়, সেই পথে যেন সেই চিন্তার এক প্রকার প্রণালী থোদিত হয়; স্থতরাং দেই প্রকার চিন্তাই বারম্বার আসিয়া মনকে অধিকার করে। কামক্রোধাদির বশীভূত ব্যক্তি মাত্রেই জানেন, তাঁহার প্রধান রিপু-সংক্রান্ত চিন্তা যেন অনিচ্ছা সত্ত্বেও তাঁহার মনকে দিবারাত্র আলোড়িত করিতেছে। একজন অর্থপিপাস্থ ডাক্তার ডিলিরিয়ম অবস্থায়, "কলেরা পেদেন্ট্, আট টাকার কমে কথনই দেখিতে ঘাইব না" এই কথা বলিতে বলিতে মৃত্যুধামে গমন করিয়াছিলেন। ছইজন শাইলক-প্রকৃতি-সম্পন্ন স্থদ-

ব্যবসায়ীকে মৃত্যুর শেষ মৃত্র্ভি পর্যান্ত "তমস্থকের মেয়াদ অতীত হইয়াছে, কলাই নালিশ করিতে হইবে" এই কথা পুনঃ পুনঃ বলিতে শুনিয়াছি। (৭) শিক্ষার উৎপীড়নবশতঃ মস্তিকের রক্তসঞ্চালনের অতিশয় বৃদ্ধি এবং মন্তিকের কঞ্জেশ্চন প্রভৃতি নানা প্রকার রোগ হয়। শিক্ষার অতিমাত্রা ডিদ্পেপ্ শিয়া ও এনিমিয়া উৎপাদন করে। কোন কোন স্কুলের শিক্ষকেরা বলেন তাঁহাদের অনেক ছাত্র অস্কস্থতা নিবন্ধন পাঠে অগ্রসর হইতেছে না। একটু অনুসন্ধান করিলেই জানা যায় যে, অপরাধ ছাত্রদের দেহের নহে, কিন্ত শিক্ষকদের শিক্ষাপ্রণালীর। অত্যল্ল সময়ে অত্যধিক বিদ্যা গলাঃধকরণ করা-ইতে গিয়া শিক্ষকেরা ছাত্রদের মানসিক ও শারীরিক ডিসপেপ্রিয়া উৎপাদন করেন। কেহ কেহ অনুসন্ধান করিয়া দেথিয়াছেন ৪৫ মিনিটের অধিকক্ষণ ধরিয়া অঙ্ক ক্ষিলে মন্তিক ক্রমশঃ হুর্কাল ও ভুল ক্রমশঃ অধিক হইতে থাকে। (৮) দিবাভাগের দঙ্গে চিন্তাশক্তির ঘনিষ্ট দম্বন্ধ রহিয়াছে। দিবা ও রাত্রির ভিন্ন ভিন্ন অংশে যেমন দেহতাপ, নিশ্বাদ প্রশ্বাদ, রক্ত সঞ্চালন ও সিক্ষণের (secretion) ভিন্ন ভিন্ন অবস্থা হয়, তদ্ধপ মস্তিকে রক্ত সঞ্চালনের ও চিম্তাশক্তিরও প্রভেদ হইয়া থাকে। দিবার প্রথম ভাগে (forenoon) মনো-বুত্তি দতেজ থাকে, এবং অপরাহ্ন হইতে ক্রমশঃ হীনশক্তি হইয়া রাত্রি দ্বিপ্র-হরের পূর্বে অতিশয় ক্ষীণ হয়। মিলেক্ষোলিয়া প্রভৃতি মস্তিম্ব-রোগগ্রস্ত ব্যক্তিদের প্রায় পূর্বাহ্নেই রোগ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। আমাদের দেশে প্রবাদ আছে, প্রাতে সরম্বতীর আবির্ভাব হয়। অতএব প্রাতেই কঠিন পাঠ অভ্যাদ করা উচিত। রাত্রে অধিক অধ্যয়ন বশতঃ নার্ভাদ্নেদ্ ( nervousness ), ডিবিলিট ( debility ) এবং অনিদ্রা ( sleeplessness ) জন্ম। (১) তিথির সঙ্গে মানসিক শক্তির হ্রাস বৃদ্ধির সম্বন্ধ রহিয়াছে। এ বিষয়ে ডাক্তার ব্রাউন কোন প্রমাণ প্রদর্শন করেন নাই। বিশেষ বিশেষ তিথিতে কোন কোন জীবের শারীরিক বিকাশ ও শারীরিক ক্রিয়ার হ্রাদ বৃদ্ধি হয়। তাই ব্রাউন বলেন, আমাদের মস্তিদ্ধ ও মস্তিদের ক্রিয়ার সঙ্গে তিথির যোগ থাকিবার সম্ভাবনা অধিক। আমাদের দেশে তিথি বিশেষে পাঠ বর্জনের বিধি আছে। (১০) ঋতু পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে মানসিক বৃত্তির পরিবর্ত্তন হয়। বসন্তকালে হিস্টিরিয়া, এপিলেপ্ সি প্রভৃতি

রোগের বৃদ্ধি হয়। সেই সময় মন্তিকের উপর উৎপীতৃন হইলে নানাপ্রকার নার্ভাস্ ডিজিজ্ জন্মিবার সম্ভাবনা। (১১) শারীরিক বিকাশের সঙ্গে মানসিক বিকাশের সম্বন্ধ আরও নিকটতর। সপ্তমবর্ষে দ্বিতীয় দন্তোলাম বা সেকেও ডেণ্টিশন (second dentition) কালে নার্ভাদ দিন্টেম উত্তেজিত হয়। দেই সময় অধ্যয়ন হ্রাস ও মুক্ত বায়তে ব্যায়াম করিতে দেওয়া উচিত। কিন্ত যৌবনের প্রারস্তেই বিশেষরূপে সাবধান হওয়া কর্ত্তব্য। এই সময়ে শারী-রিক বিকাশের দঙ্গে দঙ্গে নার্ভাদ্ দিদ্টেমেরও বিকাশ হয়, এবং এপিলেপদি, হিষ্টিরিয়া প্রভৃতি রোগের স্থৃত্রপাত প্রায় এই সময়েই হইয়া থাকে। কোন কোন স্থানে দেখিতে পাওয়া যায়. কোন বালক বা বালিকা অকস্মাৎ বাড়িয়া উঠিয়াছে এবং পূর্বের ন্যায় পাঠাভ্যাস করিতে পারিতেছে না। শিক্ষক অনেক পীড়াপীড়ি করেন, কিন্তু তাঁহার সমুদয় চেষ্টা বিফল হয়। এই সময়ে পাঠের জন্য পীড়াপীড়ি না করিয়া কিছুকাল পাঠ স্থগিত রাথা কর্ত্তব্য। বালিকাদিগকে ঋতুকালে কিছুতেই পাঠের জন্য পীড়াপীড়ি করা কিম্বা বিদ্যা-লয়ে যাইতে দেওয়া উচিত নয়। কোন প্রকার রক্তপাত হইলে চিকিৎ-সকেরা সম্পূর্ণ বিশ্রামের ব্যবস্থা করেন; আর এই স্নায়বীয় উত্তেজনাও জরা-যুর রক্তপাতের সময় বালিকাদিগকে কোন বিধি অনুসারে যান আরোহণ, জ্রত পদ চালন প্রভৃতি করিতে দেওয়া হয়, তাহা বুদ্ধির অগম্য। এই সময়ে অস্ততঃ ৪ দিন সম্পূর্ণরূপে বিশ্রাম দেওয়া উচিত। এই নিয়ম লজ্মনবশতঃ কত বালিকা ডিস্মেনরিয়া (dysmenorrhæa) প্রভৃতি জরায়ুরোগে আজীবন कष्टे ভোগ कतिया थाटक।

## নবস অধ্যায়।

#### ব্যবসায়।

ব্যবসায়ের সঙ্গে স্বাস্থ্যের এত ঘনিষ্ট সম্বন্ধ যে, কোন কোন ব্যবসায়ী অতি অল্লায়্ বলিয়া জীবনবীমাকারীগণ তাহাদের আবেদন অগ্রাহ্থ করেন। ডাক্তার ওগ্লের তালিকা অমুসারে :—

ধর্ম্মযাজকদের	<b>मृ</b> जूग	• • •	۵ .	
বাগানের মালীদের	39	***	3.0F	~ 95
<b>কৃষকদের</b>	N	• • • •	3.26	39
<b>धी</b> वजरमज	19	* • n	5.80	33_
স্ত্রধরদের	39	***	3.86	34
वावशत्र जीवी त्मत्र	50	0 0 %	3.42	1)
<b>८</b> मांकानी दमन	28	0 0 0	٠.৫৮	79
কয়লা খননকারীদের	10	+ 0 0	5.6	59
কর্মাকারদের	))		3.90	50
<u>ক্রোণীদের</u>	29		2,93	. 10
<b>मत्र</b> जीदमत्र	3.9	0.00	5.62	3.0
<b>मू</b> जां कत्र दिन	Ŋ	* * *	5.20	<i>5</i> 0
जूना-वावमागीरमञ	,,,	• • •	5.20	99
<b>हिकि</b> ९मक ( तत्र	36	• • •	२.०२	,,
প্রসারদের	19	***	২.১৬	2)
<b>७</b> शेटमंत्र	30	0 0 0	₹.8€	99
গাড়োয়ানদের	53	♥ 4	2.69	339
क्षकातरमत	' w	, 8 0 B	. 0.>8	19

প্রস্তর-ধননকারীদের মৃত্যু	* * *	٥.७১	প্তণ
कित्रि अयोगार एत्र "		৩.৩৮	,,
হোটেলের ভৃত্যদের "	•••	ত.৯৮	Ji

#### অল্লায়ুর কারণ সপ্তবিধ:—

- (১) বক্ষঃস্থল প্রভৃতির কুঞ্চন বশতঃ ফুসফুস ও হার্টের জিয়ার ব্যাঘ্যাত—এই কারণ বশতঃ তম্ববায়, দরজী প্রভৃতির আয়ুর হ্রাস হয়।
- (২) ফসফরাস, পারদ, দীসা প্রভৃতি বিষ ও আন্থাক্স প্রভৃতি রোগ বিষ-দূষিত পশম ইত্যাদির সংস্পর্শ—ধাহারা : লুসিফার দেশলাই ও দর্পণ প্রস্তুত করে, দীসার নল বসায়, মুদ্রাঙ্কন করে অথবা পশম বিক্রয় করে, তাহা-দের এই সমুদ্র কারণবশতঃ নানাপ্রকার রোগ হয়।
- (৩) দূষিত বায়ু সেবন—মুক্তবায়্দেবী ধীবর ও ক্ষকের তুলনায়
  ক্ষেবায়্দেবী দরজীর থাইসিদ্ রোগে ও অভ প্রকার ফ্দত্দ রোগে মৃত্য
  বিশুণ, মুদ্রাকরের মৃত্য ত্রিগুণ, তুলাকণা-পূরিত-বায়্দেবী তুলাব্যবসায়ীর
  মৃত্য প্রায় ত্রিগুণ, ধাতুকণা-পূরিত-বায়্দেবী ফাইলনির্মাতার মৃত্য চতুগুণ,
  মৃৎকণা-দ্যিত-বায়্দেবী কুন্তকারের মৃত্যু ৫২ গুণ, ও কর্ণিদ্(Cornish) প্রস্তর
  ধনকদের মৃত্যু ৫২ গুণ।
- (৪) ম্দ্যপ্শন—অন্থ ব্যবসায়ীর তুলনায় মদ্য ব্যবসায়ীদের আত্মহত্যায় ও স্নায়বীয় রোগে মৃত্যু দিগুণ, গাউটে মৃত্যু চতুগুণ এবং লিভার রোগে ছয়গুণ। স্থরাপান রাত্রিজাগরণ প্রভৃতি কারণে হোটেলের ভৃত্যদের মৃত্যু সংখ্যা সর্বাপেকা অধিক।
- (৫) অপঘাত মৃত্যু— দৈন্ত, ধীবর, শকটবান প্রভৃতির প্রায় অপঘাতে মৃত্যু হইয়া থাকে।
- (৬) অতিরিক্ত শারীরিক ও মানসিক পরিশ্রম—যে সমুদর কুলির কার্য্য অতিশয় ভারি বোঝা বহন করা, তাহাদের হার্ণিরা প্রভৃতি রোগ হয়। উকীলদের মৃত্যু ধর্ম্মধাজকদের দেড় গুণ, এবং ডাক্তারদের মৃত্যু

ষিপ্তণ। এই প্রভেদের প্রধান কারণ মানসিক অবস্থার তারতম্য। ডাক্তার পলক বলেন "ন দারিদ্রা নচৈশ্বর্যা" অবস্থা এবং চিত্তের শমতা ও প্রসন্নতা,ধর্মন্যাজকদের দীর্ঘায়র কারণ। বিষম প্রতিযোগিতা, ভীষণ জীবন-সংগ্রাম, যশমান রক্ষার জন্ম অবিশ্রান্ত ভাবনা, "ঠাট বজার" রক্ষা এবং বাহ্নিক চাকচক্য প্রদর্শনের জন্ম অবিরত চেপ্তা, উকীল ও ডাক্তারদের অল্লায়ুর কারণ। চিকিৎদকদের বিপদ পদে পদে। নানাপ্রকার সংক্রামক রোগের সংস্পর্দের জীবন বিপদগ্রন্ত, দিবারাত্র পরিশ্রমে তাঁহাদের শরীর পরিশ্রান্ত এবং নিত্য নৃত্রন রোগীর জীবন-মরণ-সমস্তাভেদের চিন্তার তাঁহাদের চিত্ত অভিভৃত।

## দশম অধ্যায়।

## সামাজিক রীতি।

১। প্রদ্র – যে প্রণালীতে এ দেশে স্থতিকাগার নির্মাণ বা নির্মাচন হইয়া থাকে, এবং শিশু ও প্রস্থৃতির শুশ্রুষা ও চিকিৎসা হইয়া থাকে, তাহাতে শিশু ও প্রস্তি মাত্রই যে কেন শমনভবনে গমন করে না, ইহাই আশ্চর্য্যের বিষয়। অনেক হলে আদ্র ভূমির উপর নৃতন স্তিকাগার নির্দ্মিত হয়। যাঁহারা স্বতন্ত্র সূতিকাগার নির্মাণ করেন না, তাঁহারাও অনেকে স্বয়ং ধিতল ত্রিতল গৃহের বিমল বায়ু সেবন করিয়া স্ত্রী কন্তাকে নবজাত শিশুসহ নিমতলের সর্বাপেকা নিরুষ্ট গৃহে আবদ্ধ করেন। একে ত গৃহ অতি কুদ্র ও নিরুষ্ট, তাহাতে আবার অগ্নিকুও এবং প্রদীপ প্রজালিত করিয়া দার গবাক্ষ ও প্রত্যেক ছিদ্র রুদ্ধ করা হয়। বংশগৃহে ধুম নির্গত হইবার উপায় থাকে, ইষ্টকগৃহে তাহাও থাকে না; স্কুতরাং অনেক স্থলে কার্বন মনক্ষাইড় বা কার্বন ডায়ক সাইড দেবনের বিষময় ফল পরিলক্ষিত হয়। ১৮৯২ সালে কলিকাতায় ৮৩৫৪টী জন্ম হইয়াছিল; তন্মধ্যে ১১২৮টী শিশু জন্মের ২০ দিনের মধ্যে মানবলীলা সম্বরণ করে। ইডেন হাসপাতালের সৃষ্টি হইতে ১৮৮৫ সাল পর্যান্ত তথায় ১০৪৭টী শিশু জন্মগ্রহণ করে, তন্মধ্যে একটীরও মৃত্যু হয় নাই। ইডেন হাসপাতালের স্তিকাগারে বিশুদ্ধ বায়ু সঞ্চালনের স্বর্বস্থাই শৈশব মৃত্যু হ্রাদের একমাত্র কারণ। প্রসবের ব্যবস্থা নিকৃষ্টতম গৃহে না হইয়া উৎ-কুষ্টতম গুহে হওয়া উচিত। প্রস্থৃতি রোগীর সমান; স্থুতরাং তাহার জন্ম অন্ততঃ ১৫০০ ঘন ফুট, ধাত্রীর জন্ম ৮০০ ঘন ফুট এবং শিভর জন্ম ৪০০ ঘন कृते, त्यां २१०० घन कृते छान हाहे। हेशत उह अश्म वा २२८वर्ग कृते वा ১० इस × ১০ হস্ত পরিমিত মেজের প্রয়োজন। প্রস্থৃতির ডিশ্চার্জ ভূমিতে শোষিত না হইয়া বাহিরে নির্গত হইবার জন্ম মূল্রী রাথা কর্ত্তব্য। স্থতিকাগার

আন্তাবলের সন্নিকটে গান্ধা উচিত নয়; অধ্বিষ্ঠান ধন্প্ৰদ্বাবের ব্যাদিলাস্থাকে। গ্রীম্ব কালে অন্নিকুণ্ড প্রজালিত করিবার কোন প্রয়োজন নাই। শীতকালে রাত্রে গৃহের বায়ু উত্তপ্ত করিবার জন্ম কাষ্ঠান্ধারের অন্নি প্রজালিত করা যাইতে পারে, কিন্তু দৃষিত বাষ্প নির্গানের উপায় রাখিতে হইবে। উত্তপ্ত প্রন্ মৃত্তিকা নির্দ্ধিত ভিত্তি হইতে অনেক দৃষিত বাষ্প উথিত হয়, এই কথা স্মরণ রাখা কর্ত্তবা। অর্দ্ধির কাষ্ঠের ধ্নে অনেক শিশুর চক্ষ্ণরোগ হয়। অতএব স্থতিকাগারের উন্নতি সাধন করিতে হইবে। গর্ভাবস্থার প্রস্তির "আটে কাঠে উঠিতে নাই", "একা অন্ধকারে যাইতে নাই", ইত্যাদি স্থনিয়ন ধর্মোগদেশের স্থায় পালন করা কর্ত্তবা। গাড়ী পাল্কী আরোহণ করিয়া অনেক প্রস্তুতিকে বিপদগ্রস্থ হইতে দেখা গিয়াছে। ভরপ্রাপ্ত প্রস্তুদের মন্তানেরা কনভলশন্ প্রভৃতি স্নায়বীয় রোগে আক্রান্ত হওয়ার স্থনেক দৃষ্টান্ত পাওয়া যায়।

२। विव†इ\_\_शिर्क्रात मण्ड ज्रुक्त मह्वाम जनिष्ठेकत । योवना-রত্তে অস্থিনমূহ দৃঢ়ীভূত ও সংযোজিত হইতে আরম্ভ হয়, এবং সায়ু ও भाःमार्थनीतमृह প्रतिभूष्ठे अ विकाम शांख इटें एक थारक। शार्कम् वर्णन অকাল সহবাস নিবন্ধন এই বিকাশ অত্যন্ত প্রতিহত হয়, এবং বলবীর্য্যের হানি বশতঃ আজীবন স্বাস্থ্য ও স্থেলাভের সন্তাবনা থাকে না। আমাদের দেশে বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে এ বিষয় কোন অনুসন্ধান হয় নাই। ডাক্তার मयानिष्क रमांग तांय वाराष्ट्र किवन गांव २> अन धरयांमभ वर्षत निम व्ययः। প্রস্তির কথা উল্লেখ করিয়া বলিয়াছেন, "তন্মধ্যে ৫ জনের সহজে, ৫ জনের কষ্টে, ও ৫ জনের যত্ত্রের সাহায্যে প্রস্ব হয়,এবং ৬ জনের সন্তান গর্ভেই বিনষ্ট হইয়া যায়। তাঁহাদের অধিকাংশ প্রথম প্রসবের পর এক রকম স্বস্থ ছিল; কেবল ২ জন জরাক্রান্ত হইয়া ছুর্বল ও এনিমিক হইয়াছিল, কিন্তু অবশিষ্ট অনেকেই দ্বিতীয় কি তৃতীয় প্রদবের পর নানাপ্রকার রোগে আক্রান্ত হইয়া-ছিল। আমি স্বচকে দেখিয়াছি তাহাদের ৫ জন জর ও উদরাময়ে ভুগিতে ভুগিতে পার্ণিদাস্ এনিমিয়ায় (pernicious anæmia) মানবলীলা সম্রব করিয়াছে এবং ২ জনের বন্ধারোগে মৃত্যু হইয়াছে। তাহাদের নবজাত শিশুকে প্রথমতঃ ক্ষীণকায় দেখাইত না, কিন্তু পরে তাহারা ভালরূপ বন্ধিত হয় নাই।

একটার ধমুইক্ষার রোগে হুতিকাগারেই মৃত্যু হয়, ২ টার মৃত্যু হুই মাসের মধ্যে ছুর্বলতায়,৩ টার মৃত্যু পাঁচ মাসের মধ্যে উদরাময়ে, এবং ৪ টার মৃত্যু দন্তোদামকালে জর ও তড়কায়; অবশিষ্ট ৭টা ছুর্বল ও রুগ্ধ অবস্থায় জীবন ধারণ করিয়াছিল।'' রুদ্ধ স্থ্রুত বলেন "পঞ্চবিংশতির ন্যুন বয়য় পুরুবের জীরদে, যোড়শ বর্ষের ন্যুন বয়য়া বালিকার গর্ভে যে শিশু জন্মে, তাহা হয় গর্ভেই বিপন্ন হয়, অথবা ভূমিষ্ঠ হইয়া অল্ল দিনে মৃত্যুমুথে পতিত হয়; অথবা ছুর্বলেজিয় হইয়া জীবিত থাকে; অতএব অল্ল বয়য়া বালিকায় গর্ভাধান করিবে না।"

এক দিকে এই দেশে যেমন বাল্যবিবাহের কুলল ঘোষিত হইতেছে, অপরদিকে বিলাতে গোণ বিবাহের (২৫।২৬বৎসর বা তদ্র্ধ বয়স্কা নারীদের) অনিষ্টকারিতা প্রতিপাদনের চেষ্টা চলিতেছে। ধাত্রীবিদ্যা-অধ্যাপক বল স্ হেড্লী এম, এ, এম, ডি, বলেন, বর্তুমান গোণ বিবাহ ও স্বর্থর প্রণালীর দোষে বালিকাদিগকে অতিরিক্ত মানসিক পরিশ্রম সাধন ও নানাবিধ অস্বাস্থ্যকর পরিচ্ছদ পরিধান করিতে হয়। তাহাতে তাহাদের জরায়ু শীর্ণ ও নানাবিধ রোগে আক্রান্ত হয়। হাসপাতালে প্রতি নয়জনের মধ্যে একজনকে, এবং উচ্চ শ্রেণীর বালিকাদের অধিকাংশকে, যম্বের সাহায্যে প্রসব করাইতে হয়। অধ্যাপক বলেন, ২৫ বৎসর ও তদ্র্ধ বয়স্কা কুমারীদের জরায়ু ও অস্প্রায় কল্পেন্টেড্ (congested) ও গ্রানিউলার (granular) অবস্থার থাকে, এবং তাহা হইতে প্রায় সর্ম্বদা অধিক মিউকাস্ নির্গত হয়। এই অবস্থায় বিবাহ ও গর্ভ সঞ্চার হইলে, প্রসবের সময় গ্রানিউলার অস্ প্রসারিত না হইয়া প্রায় বিদীর্ণ হইয়া যায়, এবং পরিশেষে জরায়ু স্থানচ্যুত বা নানা প্রকারে রোগগ্রস্ত হয়।

৩। শব সৎকার—শব সৎকার প্রণালী দিবিধ, সমাধি এবং দাহ।
স্থপ্রসিদ্ধ পার্ক্ স্বলেন "স্বাস্থ্যবিজ্ঞানের দিগে দেখিতে গেলে সমাধিপ্রথা
অতি নিরুষ্ট বলিয়া প্রতীয়মান হয়। সমাধিক্ষেত্রের নিকটস্থ বায়্
সতত দ্বিত এবং পানীয় জল অত্যস্ত বিরুত হয়।
দাহের শেষ্ঠতা।
সমাধির নিকটবর্তী জনপদের এই দ্বিধিধ অনিষ্ট ব্যতীত
আর একপ্রকার অনিষ্ট হয় — পুরাতন সমাধি থননকালে রোগের প্রাহ্রভাব হয়।

সমাধিক্ষেত্রের নিকটবর্ত্তী স্থান অস্বাস্থ্যকর বলিয়া প্রদিদ্ধ। এই অনিষ্ঠ কিরূপে নিবারিত হইতে পারে ? বায় প্রবেশ-পথ-বিহীন ইষ্টক গহারে মৃত-দেহ প্রোথিত করা যাইতে পারে; তথায় পচনক্রিয়া বিলম্বে সাধিত হয়, বিক্বত দেহোৎপন্ন পদার্থ সমূহ বিলম্বে উত্থিত হয়, এবং বায়ু ও জল অল্প দূষিত হয়। কিন্তু এই প্রণালী অতি ব্যয়সাধ্য এবং সাধারণের অনুপযোগী।" "দাহ প্রণালী অনুসারে অতি অল্ল সময়ে ও অল্ল ব্যয়ে শবের সৎকার হয়; ইহাতে কাহারও কোন প্রকার অনিষ্ঠ হয় না। এই দেশে শবদাহ সমিতির তত্ত্বাবধানে উয়োকেং নগরের দাহ্যত্ত্বে এক ঘণ্টায় সমুদ্য ভত্মসাৎ হয়।" ञ्चित्रिक मात त्र्यमात अरवन्म वर्तन ममाधि खया श्रान्य विकास विर्ताधी; সমাহিত শ্বজাত রোগ-বীজ মৃত্তিকায় বিনষ্ট না হইয়া বরং নিকটস্থ জল বায়ু দূষিত করে। এক ইয়েলো ফিভারে মৃত ব্যক্তির সমাধিভূমিতে তিনি ঐ রোগের ব্যাসিলাস প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। সেই ভূমির উপরে আবদ্ধ একটী জীব পঞ্চম দিনে মৃত হইয়াছিল এবং ইহার রক্তে ও টিশুতে ইয়েলো ফিবার বাাসিলাস প্রাপ্ত হওরা গিয়াছিল। ইয়র্কসিয়ারে একটী সমাধিভূমি খনন করিয়া নাকি ৩০ বৎসরের প্রোথিত স্বার্লেটিনা রোগীর শবজাত ব্যাসিলাস পাওয়া যায়। কেঁচো কর্ত্বক উৎক্ষিপ্ত সমাধি-মৃত্তিকার ব্যাসিলাস জল ও বায়ুর সহিত মন্ত্রমু-দেহে প্রবেশ করিয়া নানাপ্রকার সংক্রামক রোগ উৎপাদন করে। কিন্ত দগ্ধ শবের সঙ্গে সংক্রামক রোগ বীজ দগ্ধ হইয়া যায়। তাই সার স্পেন্সার ওয়েল্স দাহের পক্ষপাতী। হিন্দু, মুসলমান, এছোন ও পার্শীদের শব সৎকার প্রণালী তুলনা করিয়া দার উইলিয়ম মূর বলিয়াছেন, গ্রীষ্টানদের সমাধি প্রথা সর্বাপেকা নিরুষ্ট। ভারতের কোন স্থানে রেলপথ বিস্তারকালে কতিপয় ওলাউঠা রোগীর সমাধি খনন করিয়া নাকি শ্রমজীবীদের মধ্যে অনেকে ওলাউঠাক্রান্ত হইয়াছিল। কুইবেক নগরেও নাকি সেইরূপে বসন্ত-রোগীর সমাধি ধনন করিয়া অধিকাংশ শ্রমজীবী বসন্তাক্তান্ত হয়। এই সমুদ্য কারণে বেণ্মথ কংগ্রেসে সন্মিলিত পণ্ডিতমণ্ডলী একবাক্যে দাহ প্রথার শ্রেষ্ঠতা স্বীকার করেন, এবং লগুন স্বাস্থ্য মহা সমিতিতে সমবেত স্থ্রপ্রসিদ্ধ পণ্ডিতগণ এই সিন্ধান্তে উপনীত হন যে সংক্রামক রোগীর শব কথনই সমা-হিত করা উচিত নয়।

## वकानमा जनामन ।

#### दिनिक ठर्या।

- গাত্রে প্রাক্ষমুহুর্তে ( স্র্যোদয়ের ৪ দও প্রের্ক ) জাগরিত
   ইয়া ঈধর চিন্তা প্র্রেক শ্বাগ পরিত্যাগ করিবে। ( সুক্রত )
- ২। মল মূত্র ত্যাপা—উষাকালে মলাদি পরিত্যাগ করিবে। শিশুদের
  এ বিষয়ে যাহাতে আলস্য না হয় তৎপ্রতি পিতা মাতার বিশেষ দৃষ্টি রাধা
  আবশ্যক। সঞ্চিত মল নিবন্ধন কোলন (colon) ক্ষীত, এবং অর্শ উৎপাদিত
  হয়। কোঠ কাঠিত দ্র করিবার জন্ত নিয়ত নানাবিধ জোলাপ ব্যবহার করা
  অনুচিত। ফল মূল তরকারীই ইহার প্রকৃত ঔষধ। কার্যান্মরোধে মল মূত্রের
  বেগ ধারণ করিবে না, এবং বেগ উপস্থিত না হইলে বলপ্র্কাক কুন্থন প্রদান
  করিবে না।
- ০। পরিচছমতা—মলাদি পরিত্যাগান্তে গুহাদি শীতল জল দারা ধ্যেত করা কর্ত্ত্ব্য। শীতল জল স্পর্শে নিম্ন রেকটম্ ও স্ফিংটার টোন (tone) প্রাপ্ত হয় এবং অর্শের সম্ভাবনা অল থাকে। হস্ত মুখ দন্ত প্রভৃতি বিশেষ-রূপে প্রকালন করা কর্ত্ত্ব্য। দন্তলগ্ন থাদ্যাংশের এবং সঞ্চিত মিউকাসের পচনে যে য়্যাসিড উৎপন্ন হয় তদ্বারা দন্তের ডেন্টীন (dentine) ও ইনেনেল (enamel) ক্ষয় প্রাপ্ত হয়। স্থপ্রসিদ্ধ দন্ত চিকিৎসক ডাক্তার টোম্স্ বলেন সভ্যজাতির দন্ত অতি শীঘ্র বিক্তিপ্রাপ্ত হয়। সাহেবদের আহার ও আচমন প্রণালী দেখিলেই ইহার কারণ বিলক্ষণ অন্তল্প করা যায়। অত এব প্রত্যহ আহারের পর পরিক্ষারন্ধপে আচমন করা উচিত এবং নিদ্রা ভন্দের পর চাথড়ি, শুদ্ধ সাবান ও কর্পুরের অতি স্ক্র চূর্ণ মিপ্রিত টুথ্ পাউডার দারা দন্ত ধাবন করিবে। সাবানের দারা নিউকাস দ্রীভূত হয়।

ম্যাসিড্ ঘটিত ঔষধ সেবনের পর সোডা মিশ্রিত জল ছারা মুথ ধৌত করা কর্ত্তব্য। চর্দ্ম পরিষ্কার রাথিবার জন্ম বিশেষ যত্ন আবশ্রক। শুষ্ক এপিডার্মিদ্, ৈ তৈলাক্ত পদার্থ, ঘর্মা, ধূলা প্রভৃতি দারা লোমকূপ . অবরুদ্ধ হয়, এবং কার্বনিক য়্যাসিড, অর্গানিক ম্যাটার প্রভৃতি দূষিত পদার্থ নির্গত হইতে না পারিয়া দেহ বিষাক্ত করে। অতএব স্থন্থ ব্যক্তির নিতা স্নান অবশ্র কর্ত্তব্য। ইহাতে যে চর্ম্ম কেবল পরিষ্কৃত হয় তাহা নহে, কিন্তু শীতল জল স্পর্ণে ইহার টোন বা শক্তি বুদ্ধিপায়, এবং চর্মস্থিত ও দেহস্থিত সমুদ্য স্নায়ুমগুলী দতেজ হয়। নদী ও সমুদ্র স্থান চর্ম্মের পক্ষে উত্তম টনিক। যাহাদের ঘর্ম্ম নিঃসরণ প্রভৃতি हर्षकिया सहाक्तर मन्नित हम ना, তाहारित नरक मर्या मर्या हेर्किय वाथ (Turkish bath) বা ভাব্রা নেওয়া কর্ত্ব্য। ক্রেশ্ন মন্তককে তাপ ও শৈত্য হইতে রক্ষা করে এবং তাপ-পরিচালন-শক্তিহীন বলিয়া দেহের তাপ রক্ষা করে। কেশ প্রিফার না রাখিলে এই সমুদ্য ক্রিয়ার ব্যাঘাত হয়। অনেকে পরিষ্কার রাথিবার জন্ম তত চেষ্টা না করিয়া কেবল সৌন্দর্য্য বৃদ্ধির চেষ্টা করেন। স্থন্দরীগণ নানাপ্রকার "স্থগন্ধি তৈল" দারা কেশের সৌন্দর্য্য বৃদ্ধির চেষ্টা করিয়া অনেক সময় বিপদগ্রস্ত হন। সীসাঘটিত স্থগন্ধি দ্রব্য ব্যবহার বশতঃ একজন মহিলার পক্ষাঘাতে মৃত্যু হেইয়াছিল এবং তাঁহার মস্তিক্ষের বামার্দ্ধের নিমে সীদা পাওয়া গিয়াছিল। গৃহের দেয়াল, মেজে, প্রাঙ্গন এবং টেবিল চেয়ার প্রভৃতি সর্বাদা ধূলিমুক্ত করা উচিত। ধূলিতে নানা প্রকার রোগের বীজ থাকে। পরিচ্ছদ পরিধান কালে পরিচ্ছনতা ও স্বাস্থ্য-কারিতার দিকে দৃষ্টি রাখিতে হইবে।

- ৪। আহার নিয়মিত সময়ে পরিমিত আহার করিবে। থাল্য নির্বাচন, চর্বাণ প্রভৃতি সম্বন্ধে যে সমুদয় নিয়ম উল্লিখিত হইয়াছে তৎসমুদয় য়য়ৢ-পৃর্বাক পালন করিবে।
- ৫। ব্যাশ্যাম ও বিশ্রাশম প্রতিদিন নিয়মিতরূপে ব্যায়াম করিবে।
  দিনে অন্ততঃ একবার মুক্ত বায়ু সেবন করা কর্ত্তব্য। প্রতিদিন নিয়মিত সময়ে
  নিশ্চিন্ত মনে নিজা যাইবে।

- ৬। মানসিক পরিশ্রেম—অতিরিক্ত মানসিক পরিশ্রম করিবে না।
- প। সংয্য—আহারে বিহারে, চিন্তায় কামনায়, সমৃদয় বিষয়ে সংয়মন আবশ্রুক। হিউকলাও দীর্ঘজীবীর অনেকগুলি লক্ষণ নির্দেশ করিয়া পরিব্রু শেষে বলিয়াছেন, "দীর্ঘজীবী ধীরে ধীরে আহার করে। তাহার অপরিমিত তৃষ্ণা নাই। সে শান্ত, বাকপটু ও চালাক। সে আননেন, প্রেমে ও আশায় উৎফুল্ল থাকে, কিন্তু বিছেম, রাগ ও লোভের বশীভূত হয় না। তাহার রিপুক্থনও এত উত্তেজিত হয় না যাহাতে তাহার অনিষ্টসাধন করিতে পারে। যদি কথনও কোধ হয়, তাহাতে কেবল অলমাত্র শরীরের উত্তাপ বৃদ্ধি পায়, কিন্তু পিত্র বৃদ্ধি পায় না। সে সর্বাদা আমোদ প্রমোদে রত থাকে, এবং ধীরভাবে চিন্তা করে; সমুদয় বিষয় আশার উজ্জল চক্ষে দেখে, প্রকৃতির শোভা এবং পারিবারিক শান্তি ভালবাসে, ধন মানের জন্তু লালায়িত হয় না, এবং কল্যকার জন্তু ভাবে না।" অতএব সদা সংযতেক্রিয় ও সন্তুইচিত্ত না থাকিলে পূর্ণ স্বাস্থ্য ও দীর্ঘ আয়য়ু লাভ করা অসম্ভব, এই কথা সর্বাদা স্বরণ রাথা কর্ত্ব্য।

# দ্বিতীয় ভাগ।

#### সাধারণ স্বাস্থ্যবিজ্ঞান।

## প্রথম অধ্যার।

## এপিডেমিক, এত্তেমিক ও এপিরুওটিক।

কোন রোগ এককালে বহু লোককে আক্রমণ করিলে এবং বহুদূর পর্য্যস্ত ব্যাপ্ত হইলে, তাহাকে **এপিডেমিক** (Epidemic) বলে; যথা, কলেরা, বসন্ত ইত্যাদি।

কোন রোগ এককালে বহু লোককে জাক্রমণ করিলে এবং এক স্থানে বন্ধ থাকিলে, তাহাকে এত্তেমিক (Endemic) বলে; যগা, গ্রুটার, এলিফেণ্টাইসিদ্, ইত্যাদি।

কোন রোগ দারা অনেক পশু এক দঙ্গে আক্রান্ত হইলে তাহাকে এপিঝুওটিক (Epizootic) কহে; যথা রাইণ্ডারপেষ্ট, আন্থাক্স ইত্যাদি।

মারীতয় প্রভৃতি বহু প্রাণিনাশক রোগের উল্লেখ অতি প্রাচীন গ্রন্থেও পাওয়া যায়। চরকে উল্লিখিত আছে, একদা গ্রীয়কালে পঞ্চাল দেশের রাজধানী কাম্পিল্যনগরে মহর্ষি আত্রেয় গদাতীরে বনবিচরণ স্থুখ অনুভব করিতেছিলেন। তথন তাঁহার প্রিয়শিষ্য অন্নিবেশ আচার্য্যকে জনপদোদ্ধংসন বা এপিডেমিক সম্বন্ধে প্রশ্ন করিলেন, "ভগবন্! প্রত্যেক মন্থব্যের প্রকৃতি, আহার, দেহ, বল, সাল্ম্য, সত্ত্ব ও বয়স ভিন্ন ভিন্ন, কিন্তু উদ্ধংসকালে কি নিমিত্ত সকলেই একরূপ পীড়ার দারা আক্রান্ত হইয়া থাকে। মহর্ষি উত্তর করিলেন, "বৎস! যদিও উহারা ভিন্ন ভিন্ন ভাবাগয়, তথাপি কতকগুলি ভাব, যাহা যাহা সকলের পক্ষে সাধারণ ও অপরিহার্য্য, তাহাদের বৈগুণ্য হেতু সকলেই যুগপৎ এক লক্ষণাক্রান্ত ব্যাধির ধারা আক্রান্ত হয় এবং মূহমূ হ বহুতর লোক ভূলোকচ্যত হওয়াতে জনপদ প্রায় নির্দ্মন্থয় হইয়া যায়। সেই সকল সাধারণ ভাব এই ; যথা, বায়ু, উদক, দেশ ও কাল।" এই সমুদম কারণজনিত মৃত্যু অকাল মৃত্যু নামে অভিহিত হইয়াছে, এবং হিতকারী পথ্যাহার, ভীতি বিদর্জন, দেবার্চনা, উদ্ধংসগ্রস্ত জনপদ ত্যাগ ইত্যাদি, এই অকাল মৃত্যু নিবারণের উপায় বলিয়া নির্দিষ্ট হইয়াছে। অতএব চেষ্টা দারা যে কোন কোন রোগ নিবারিত হয়, এই বিশ্বাদ অতি প্রাচীন। যে রোগ চতুর্দিকে ব্যাপ্ত হইবার কারণ অনেকটা জানা গিয়াছে এবং যাহার ব্যাপ্তি নানা উপায়ে নিবারিত হইতে পারে, তাহার নাম প্রভেণ্টিব্ল্ডিজিজ প্রাণ্ডিজিজ বা নিবার্য্য রোগ। এই সমুদ্য রোগোৎপত্তির কারণ ছই প্রকার, (১) প্রিডিস্পোজিং কজ্বা আভ্যন্তরিক কারণ, (২) এক্সাইটিং কজ্বা বাহ্যিক কারণ। যে সমুদয় কারণে দেহ সহজে রোগাক্রান্ত হইবার উপযোগী অবস্থা প্রাপ্ত হয়, তাহাকে প্রিডিস্পোজিং কজ্ কহে। যে সমুদ্য পদার্থ থাদ্য পানীয় কিম্বা নিম্বাদের সঙ্গে বাহির হইতে দেহের অভ্যন্তবে প্রবেশ করিয়া রোগ জনায়, তাহাকে এক্সাইটিং কজ কহে। নিবার্ঘ্য শ্রেণীয় রোগের মুখ্য কারণ অনেক স্থল गाहरकाव वा উछिन्।

## প্রথম পরিচ্ছেদ।

## गां रे क्वां दित किया ७ रे मिछे नि छै।

পণ্ডিতদের গবেষণায় স্থিরীকৃত হইয়াছে যে কতিপয় স্থাপ্স্থা অণ্বীক্ষণদৃশ্য (microscopic) সজীব পদার্থ অবস্থা বিশেষে জীবদেহে প্রবেশ করিয়া
অনেক সময় নানাবিধ ঝাইমোটিক বা নিবার্য্য রোগ উৎপাদন করে। এই
পদার্থের নাম মাইকোব (microbe) বা ব্যাক্টিরিয়া (bacteria)

>। রোগোৎপাদন প্রণালী সাইকোব কি প্রণালীতে রোগ উर्পानन करत, उरमञ्चरक छ्रे अकात में श्रीनिछ। एक्ट एक्ट वर्णन जीव-দেহে স্বাভাবিক অবস্থায় এক প্রকার রাসায়নিক পদার্থ য়াণিউডোট থিওরি থাকে; এই পদার্থের মাইক্রোব বিনাশ করিবার শক্তি (antidote theory) আছে। অবস্থা বিশেষে দেহে এই পদার্থের অভাব হইলে মাইক্রোব প্রবিষ্ট হইয়া বর্দ্ধিত হয় এবং রোগ উৎপাদন করে। ক্লাইনের এই মত। কিন্তু অধুনা অধিকাংশ ব্যাকটিরিয়া-তত্ত্ববিৎদিগের ফ্যাগোসাইটোসিদ মতে আস্থা। তাঁহারা বলেন আমাদের রক্তের হোয়াইট দেল্দকল দেহকে শত্রু হস্ত হইতে রক্ষা করিবার জন্ম যেন দৈন্ম শ্রেণীর ন্যায় সর্বাদা যুদ্ধার্থ স্ক্রসজ্জিত ফাগোসাইটোসিস त्रश्चिराट्य। তाशानिशतक कार्गाणाशहे करह। वाक-(phagocytosis) টিরিয়া দল দেহে প্রবেশ করিবামাত্র এই সৈল্পশ্রেণী দারা আক্রান্ত হয় এবং টকসিন (toxin) নামক বিষ নির্গত করে। ব্যাক-টিরিয়া রাশি ফ্যাগোসাইট কর্ত্ত নিহত হইলে স্বাস্থ্যের কিছুই ব্যতিক্রম হয়

না; কিন্তু ফ্যাগোসাইট্দল টক্সিন্ বিষে বিনষ্ট হইলে ব্যাক্টিরিয়ার বংশ ক্রমশঃ বদ্ধিত হয় এবং ব্যাকটিরিয়াজনিত রোগের লক্ষণ প্রকাশিত হইতে থাকে।

২। ইমিউনিটি (immunity)—ইমিউনিটি, বা জীব দেহের রোগ ক্রমের নিজ্ঞান ক্রিবার শক্তি তই প্রকার, নাচ্চাবেল (natural) বা

ই মিউনিটি (immunity)—হামউনিটি, বা জীব দেহের রোগ হইতে নিদ্ধতিলাভ করিবার শক্তি, তুই প্রকার, ন্যাচারেল (natural) বা স্বাভাবিক এবং য়্যাক্য়ার্ড (acquired) বা লক্ষ । আন্তাক্দ্ ব্যাদিলাদ্ মানবের বা তৃণাহারী জীবের দেহে প্রবেশ করিয়া আন্তাক্দ্ উৎপাদন করে; কিন্তু সর্বভুক্ শ্কর এবং মাংসাশী জীবদিগের স্থাচারেল ইমিউনিটি আছে বলিয়া তাহাদের দেহে আন্তাক্দ্ বাাদিলাদ্ প্রবেশ করিয়া কোন অনিষ্ঠ করিতে পারে না। এই স্বাভাবিক শক্তিবশতঃ অনেকে সংক্রামক রোগের সংস্পর্শে আদিয়াও অনেক সময় রোগাক্রান্ত হয় না। দেহ একবার সংক্রামক রোগে আক্রান্ত হইলে এ রোগের প্রনাক্রমণ বিফল করিবার যে শক্তি প্রাপ্ত হয়, তাহাকে য়্যাকয়ার্ড ইমিউনিটি বলে। এই শক্তি লাভের কারণ কি? (১) এই বিষয়ে প্রাতন মত এই যে, ব্যাক্-

টিরিয়া জীবদেহে প্রবেশ করিয়া ইহার পোষণোপযোগী পদার্থ গ্রহণ ও নিঃশেষ করে। স্থতরাং ব্যাক্টিরিয়ার প্রথম আক্রমণে দেহ রক্ষা পাইলে, তৎপরবর্ত্তী আক্রমণের সময় ব্যাকটিরিয়া ঐ পোষণোপযোগী পদার্থের অভাবে দেহে বৰ্দ্ধিত না হইয়া বিনষ্ট হয়'। এই মতের নাম "একজ চন একজশ্চন থিওরি থিওরি" (Exhaustion theory) বা নিঃশেষ মত। কিন্তু আন্থাক্স রোগে মৃত ধরগোশের মাংস যুঘে আন্থাক্স ব্যাসিলাস্ মিশ্রিত করিলে অতি শীঘ্রাশি রাশি ব্যাসিলাস্ উৎপন্ন হয়। তবে ব্যাক্টিরিয়ার পোষণোপযোগী পদার্থ নিঃশেষিত হইল কোথার? (২) ক্লাইন প্রমুখ পণ্ডিতেরা বলেন, এক দিকে যেমন ব্যাক্টিরিয়া দেহে প্রবেশ করিয়া বিষ উৎপাদন করে, অন্ত দিকে দেহ হইতে এক প্রকার বিষ নির্গত হইয়া व्याक्षितिया ७ वाक्षितियात विष विनाम करत। धरे য়াতিডোট থিওরি। নবোৎপন্ন বিষ দেহে থাকিয়া ভবিষ্যতে সংক্রামক রোগের জাক্রমণ হইতে দেহকে রক্ষা করে। এই মতের নাম "য়্যাণ্টিডোট থিওরি" বা "বিষে বিষক্ষ" মত। (৩) মেট্স্নিকফ্ প্রমুথ পণ্ডিতেরা ফ্যাগো-দাইটোসিন্ থিওরি বিশ্বান করেন। তাঁহারা বলেন, যে সমস্ত ফ্যাগোসাইট वार्षिति इति भवास कतिया देशात्र विव विनाम कति-ফাগোনাইটোসিস বার শক্তি প্রাপ্ত হয়, তাহারা অতি শীঘ থিওরি। প্রাপ্ত হইয়া সমুনয় দেহে ব্যাপ্ত হয়। পরাভূত ব্যাক্টিরিয়ার স্বজাতীয় ব্যাক্টিরিয়া-দল যদি দেহে পুনঃ প্রবেশ করে, তাহা হইলে বিষনাশক-শক্তি-প্রাপ্ত প্রাচীন বীরদের বংশধর নুতন ফ্যাগোসাইট দল কর্ত্তক পরাভূত হয়।

উপরোক্ত সমুদ্য মতের মধ্যেই সত্য বহিয়াছে, এবং এই তিন প্রকার মতেরই উপরে টাকা প্রথা প্রতিষ্ঠিত। সমুদ্য সংক্রামক রোগ সম্বন্ধে ইমিউ-নিটি মত থাটে না। মুখে একবার এরিসেপেলাস্ হইলে দ্বিতীয়বার হইবার

# দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ।

## गारेटिकारवंत धर्म।

- (১) ইহারা উদ্ভিজ্ঞাতীয়; তাই ইহাদের নাম উদ্ভিদণু।
- (২) ইহারা অণুবীক্ষণ ব্যতীত দৃষ্ট হয় না বলিয়া মাইক্রোব্ নামে অভিহিত।
  - (৩) ইহাদের আকার সাধারণতঃ <del>১০১০০</del> ইঞ্চি, কিম্বা ভদপেক্ষাও স্ক্রা।
- (৪) ইহাদের আকার কখনও গোল, কখনও ডিম্বের স্থায়, কখনও থর্ম বৃষ্টির স্থায়, কখনও নীর্ঘ বৃষ্টির স্থায়, এবং কখনও বা স্কু প্টাচের স্থায়। আকার অনুসারে ইহাদের চারি প্রকার শ্রেণী বিভাগ; যথা গোলাকার বা ডিম্বাকার ( ) মাই ক্রোককাস্ (micrococcus), খর্ম বৃষ্টির আকার ( ) ব্যাকৃটিরিয়া (bacteria), দীর্ঘ বৃষ্টির আকার ( ) ব্যাক্রিয়া ( ) ব্যাক
- (৫) ইহাদের বাহ্য আবরণ সেলিউলোজ (cellulose), এবং অভ্যন্তরে প্রোটোপ্লাজন্ (protoplasm)। এই সেলিউলোজ আবরণ য়াাদিড্ কিমা য়াাকালি দারা বিনষ্ট হয় না।
  - (७) क्लान क्लान माईटकां महन, धवर क्लान क्लान माईटकां बहन।
- (৭) ইহাদের জনন প্রণালী ছই প্রকার, ফিশ্ন (fission) প্রণালী, ও স্পোর ফরেশন (spore formation) প্রণালী। কলেরার ব্যাসিলাস্ প্রথমতঃ ছই ভাগে বিভক্ত হয়, এবং ইহার প্রত্যেক অংশ একটী স্বতম্ত্র ব্যাসিলাস হইয়া পুনর্কার ছই ভাগে বিভক্ত হয়। এই পুনঃ পুনঃ বিভাজন প্রণালীকে ফিশ্ন প্রণালী কহে। যক্ষার টিউবার্ক ল্ ব্যাসিলাসের স্ক্র স্ক্র

ম্পোর (spore) বা বীজ হয়; এই বীজ ক্রমশঃ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া ব্যাসিলাস হয় এবং ইহাদের জনক ব্যাসিলাস লয়প্রাপ্ত হয়।

- (৮) যে সমুদয় মাইক্রোব পীড়া উৎপাদন করে তাহাদিগকে প্যাথ-জেনিক (pathogenic) বলে; যাহাদের দেই শক্তি নাই, তাহারা নন-প্যাথিজেনিক (non-pathogenic)নামে অভিহিত। নন্-প্যাথজেনিক মাই-কোব ৩ প্রকার ঃ—(১) যাহাদের দকন লাল,সবুল,গোলাপী প্রভৃতি নানাবিধ বর্ণ উৎপন্ন হয়, তাহাদের নাম ক্রমজেনিক (chromogenic), (২) যাহাদের ছারা ফামেণ্টেশন্ ক্রিয়া (fermentation) সাধিত হয়, তাহাদের নাম বাহিমোজেনিক (zymogenic) এবং (৩) যাহারা পিউট্রিফ্যাক্শন্ (putrefaction) বা পচনক্রিয়া সাধন করে তাহাদের নাম স্যাপ্রোজেনিক (saprogenic)। স্যাপ্রেজিনিক মাইক্রোব দ্বারা মৎস্য মাংদে টোমেন বিষ উৎপাদিত হয়। এই বিষ অধিক পরিমাণে দেহ প্রবিষ্ট হইলে পীড়া জন্মায়। প্যাথজেনিক মাইক্রোবের ক্রিয়া মাইক্রোবের পরিমাণের উপর নির্ভর করে না; ২।১ টী দ্বারাই পীড়া উৎপাদিত হয়।
- (৯) নাইট্রোজেন, কার্বন, জ্বল, ফদ্ফেট্, পটাস ও সোডা সন্ট, ইহাদের আহার। প্যাথজেনিক মাইক্রোব জীবদেহ হইতে, এবং নন্-প্যাথ-জেনিক মাইক্রোব উদ্ভিদ হইতে নাইট্রোজেন গ্রহণ করে। চিনির তুল্য পদার্থ হইতে কার্বন গৃহীত হয়। জ্বল ব্যতীত ইহারা বৃদ্ধিত হয় না। ক্যা ব্যাদিলাস জ্ব রহিত হইলে মরিয়া যায়।
- (১০) যে সমুদয় মাইকোব বায়ুতে বর্দ্ধিত হয় তাহাদিগকে ঈরবিক (ærobic), এবং যাহারা বায়ুহীন স্থানে বর্দ্ধিত হয় তাহাদিগকে নন্-ঈরবিক (non-ærobic) বলে।
- (১১) আলো কিম্বা তাড়িৎ প্রবাহে ইহাদের বিশেষ অনিষ্ট হয় না। কেহ কেহ বলেন মাইক্রোককাস্ তাড়িতপ্রবাহে বিনষ্ট হয়। পচনক্রিয়াজনক মাইক্রোব স্থ্যালোকে ধ্বংস প্রাপ্ত হয়।
- (১২) দাধারণতঃ দমুদর প্যাথজেনিক মাইক্রোব মন্ত্যারক্তের তাপের দমান তাপে।বর্দ্ধিত হয়, এবং নন্-প্যাথজেনিক মাইক্রোব গৃহাভ্যন্তরিক বায়ুর তাপে বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়, কিন্তু রক্ততাপে বিনষ্ট হয়। ইহারা অধিক শীতেও জীবিত

গাকিতে পারে। কমা ব্যাদিলাস এক ঘণ্টা পর্যান্ত -১০ ডিগ্রিতে, এবং আন্তাক্স ব্যাসিলাস - ১১০° ডিগ্রি শীতেও জীবন ধারণ করিতে দেখা গিয়াছে। অধিকাংশ মাইক্রোব ১২৪°—১৪০° ডিগ্রির অধিক তাপে বিনষ্ট হয়। কিন্তু ইহাদের স্পোর বিনাশ করিতে আরও অধিক তাপ লাগে। স্পোর ২১২°—২১৬°F ডিগ্রি শুষ্ক তাপে ৪ ঘণ্টায়, এবং ২১২° ডিগ্রি তাপ-বিশিষ্ট জলীয় বাষ্পে অন্ন সময়েই বিনষ্ট হয়। কোন বীজ ১২০° সেণ্টিগ্ৰেড তাপে সজীব থাকে না।

- (১৩) অধিক নাড়া চাড়ায় ইহাদের বৃদ্ধি হয় না।
- (১৪) ডিস ইন্ফেক্টেণ্ট (disinfectant) দারা ইহারা বিনষ্ট হয়।
- (১৫) ইহারা রোগিদেহ হইতে জল, বায়ু, ও ভূমিতে প্রবেশ করে। বায়ুতে অল্ল পরিমাণেই থাকে। কোন কোন মাইক্রোব জল ও ভূমিতে অনেকদিন পর্য্যন্ত জীবন ধারণ করে ও বর্দ্ধিত হইতে থাকে।
  - (১৬) नन-প্राथक्षिनिक मोर्टे कौविज कौविज कौवित प्राट विकि रंग ना।
- (১৭) প্যাথজেনিক মাইকোবের ৪টী বিশেষ লক্ষণঃ—(১) মাইকোব-জনিত পীড়ার আক্রান্ত জীবদেহের রক্তে বা অংশ বিশেষে ঐ মাইক্রোব পাওয়া যায়; (২) ঐ রক্ত বা অংশ বিশেষ হইতে বাহির করিয়া ঐ মাইক্রোব য্যাগার-য়্যাগার (agar agar) প্রভৃতি নিউটি য়েণ্ট মিডিয়ম্(nutrient medium) বা মাইক্রোব-থান্যে মিশ্রিত করিলে,উপযুক্ত তাপ সংযোগে ক্রমশঃ বুদ্ধি প্রাপ্ত হইতে থাকে; (৩) পূর্ব্বোক্ত জীবদেহজাত ও নিউট্রিয়েণ্ট্রমিডিয়মে বর্দ্ধিত মাইক্রোব, দ্বিতীয় একটা জীবের দেহে প্রবিষ্ট করাইলে, প্রথম জীবের রোগে দ্বিতীয় জীব আক্রান্ত হয়; (৪) দ্বিতীয় জীবের দেহে উক্ত পীড়াজনক শাইকোৰ পাওয়া যায়। এই লক্ষণ চতুষ্টয় লক্ষিত না হইলে কোন বিশেষ মাইক্রোব কোন বিশেষ রোগের কারণ বলিয়া নির্দ্ধারিত করা যায় না।
- (১৮) প্যাথজেনিক মাইকোব দেহে প্রবিষ্ট হইবামাত্রই যে পীড়া প্রকাশ करत जोश नरह, किन्न क्रमणः त्रार्शां प्राप्तमम्म धक मन गाहेरकांव स्षे कतिरा थारिक। এই नृजन मन জन्माहिरा य ममस नार्श, जाहारक ইন্কুবেশন পিরিয়ড (incubation period) বা অপ্রকাশিত অবস্থা वत्न ।

# তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

#### সংক্রোমক রোগ নিবারণ।

সংক্রামক রোগের বিস্তৃতি নিবারণের ৪টা প্রধান উপায় :—(১)
নোটিফিকেশন (notification) বা বিজ্ঞাপন, (২) আইসোলেশন
(isolation) বা পৃথক্ করণ, (৩) ডিস্ইন্ফেকশন (disinfection) বা
শোধন এবং ইনকিউলেশন (inoculation) ও ভ্যাকসিনেশন
(vaccination) বা টাকা।

- (১) নোটিফিকেশন—রোগের আরম্ভমাত্র নিবারণের উপায় অবলম্বন করিলে, ততদূর প্রকোপ হয় না। এইজন্ম বিলাতে সংক্রামক রোগ বিজ্ঞাপনী আইন প্রচলিত হইয়াছে। তদন্ত্র্সারে প্রত্যেক গৃহস্থকে সংক্রামক রোগের সংবাদ স্বাস্থ্যবিভাগে তৎক্ষণাৎ প্রেরণ করিতে হয়। আমাদের দেশে এই আইন প্রচলিত না থাকিলেও, স্বাস্থ্যবিভাগে সংবাদ প্রেরণ করা, কিম্বা তদভাবে চিকিৎসকের প্রামর্শ গ্রহণ করা প্রত্যেক গৃহস্থের কর্ত্ব্য।
- (২) আইসোলেশন—রোগীর স্বতন্ত্র গৃহে বাস ও স্বতন্ত্র ভাবে শুশ্রুষার ব্যবস্থা করা একান্ত কর্ত্তব্য। সম্ভব্যত স্থানে স্থানে সংক্রামক রোগীর হাসপাতাল প্রতিষ্ঠা করা উচিত, এবং যাহাদের গৃহে স্বতন্ত্র ভাবে থাকিবার ব্যবস্থা করা অসম্ভব, তাহাদিগকে হাসপাতালে প্রেরণ করা বিধেয়।

## (৩) ডিদ্ইন্ফেক্শন ও ডি-ওডোরাইজেশন্।

যন্থারা সংক্রামক রোগের বীজ বিনষ্ট হয় ও সংক্রামক রোগের ব্যাপ্তি নিবারিত হয়,তাহাকে ডিস্ইন্ফেক্টেণ্ট বা জামি সাইড্(Disinfectant or germicide) বলে। যে পদার্থ রোগের বীজ বিনাশ করিতে পারে না, কিন্তু বীজের বিকাশ ও বিষ উৎপাদন স্থগিত এবং পচনক্রিয়া নিবারিত করে,

## क। जिम्हेन् एकक् एवे छ।

- ১। তাপ—শুক্কতাপ দর্বোৎকৃষ্ট ডিদ ইন্ফেক্টেণ্ট; কিন্তু যে তাপে রোগ বীজ বিনষ্ট হয়, দেই তাপে বস্তাদি ঝলদিয়া যায়। এই কারণে উত্তপ্ত জলীয় বাষ্পা প্রয়োগ করা উচিত। কলিকাতায় যে ওয়াশিংটন লায়নের খ্রীম ডিদ ইন্ফেক্টার (Washington Lyon's patent steam disinfector) দ্বারা সংক্রামক রোগ বীজ দ্যিত বস্ত্রাদি শোধিত হইয়া থাকে, তাহাতে অর্ক ঘণ্টায় ২৫০° দি ডিগ্রি তাপবিশিষ্ট খ্রীম উৎপত্ম হয়। অভাব পক্ষে বোপার ইস্ত্রী কিম্বা পাঁওয়ারুটীর উনানের তাপেও বস্ত্রাদি ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করা যাইতে পারে। দাধারণতঃ ফুটন্ত জলের দ্বারাই বস্ত্রাদি শোধিত হইয়া থাকে। ডাক্তার ক্রাইন বলেন কুটন্ত জলের দ্বারাই বস্ত্রাদি শোধিত হইয়া থাকে। ডাক্তার ক্রাইন বলেন কুটন্ত জলের দ্বারাই বস্ত্রাদি শোধিত হইয়া থাকে। ডাক্তার ক্রাইন বলেন কুটন্ত জল এক মিনিটেই আন্ত্রাক্স্ ব্যাদিলাস্ ও ইহার স্পোর বিনষ্ট করে। দে যাহা হউক, অন্ততঃ অর্ক্যন্টাকাল কার্বলিক য়্যানিড্ বা করোসিভ্ স্বিন্নটে করা উচিত।
- ২। করোসিভ্সবিমেট্ সর্বোৎকৃষ্ট ডিস্ইন্ফেক্টেণ্ট্। ক্লাইন স্থিৱ করিয়াছেন যে স্পোরহান ব্যাদিলাম্১: ২০০০ (1 in 2000) করোসিভ

সবি মেট্লোশনে বিনষ্ট হয়; মানব যজার ব্যাসিলাস্ ১: ৯৬০ (1 in 960)
লোশনে বিনষ্ট হইতে ৪।৮ ঘণ্টা লাগে, কিন্তু গো যক্ষার ব্যাসিলাস্ বিনাশের
জন্ম আরও অধিক সময়ের প্রয়োজন। অতি ছব্ধ্য আন্থাক্স্ ব্যাসিলাস্
স্পোর ওয়ান্ পাসেণ্ট (1 per cent) ও তদ্ধিক মাত্রাবিশিষ্ট সলিউশনে
বিনষ্ট হয়। ডেন্ শোধনের জন্ম ওয়ান্ পার্সেণ্ট (1 per cent) লোশন
নিক্ষেপ করিতে হয়।

৩। কার্বলিক য়ৢৢৢাসিড বা ফিনোল (phenol)—ফাইভ পার্সে তি (5 per cent) কার্বলিক লোশনে কমা ব্যাসিলাস্ তিন মিনিটে, টিউবার্র্ ব্যাসিলাস্ অন্যূন ২৪ ঘণ্টায়, এবং আন্থাক্স্ স্পোর অন্যূন ২ দিনে, বিনাশ প্রাপ্ত হয়। হীনতেজ রোগবীজ ওয়ান্ পার্সেণ্ট কার্বলিক লোশনেও বিনম্ভ হয়। টাইফয়েড ও ওলাউঠা রোগীর মলাদি শোধনের পক্ষে ফাইভ পার্সেণ্ট লোশন যথেষ্ঠ নহে; কারণ রোগবিয ব্যতীত মলে আরও অনেক পদার্থ থাকে যদ্বারা কার্বলিক য়্যাসিডের ক্ষয় হয়। বাজারের কার্বলিক য়্যাসিডের সঙ্গে কুসিলিক য়ৢৢৢাসিড বা কুসেলল (cresol) মিশ্রিত থাকে। বুল্লিথের মতে ফিনোল অপেকা কুসোলের শোধনশক্তি অধিক। ফিনোল নামে নানাবিধ আলকাত্রা ঘটিত পদার্থ বিক্রীত হয়। জেস্ পার্ফে ক্ট পিউরিফায়ার এক প্রকার আলকাত্রা বিশেষ। ডেব্রণ টেন্ পার্সেণ্ট (10 per cent) কার্বলিক লোশন নিক্ষেপ করিতে হয়।

বাইথ বলেন চূণ মিশ্রিত কাব লিক পাউডারের শোধনশক্তি কিছুই
নাই। কাব লিক য়াসিড এবং পাউডার অসংযুক্ত তাবে থাকা আবশুক।
ক্যালভাটে র কাব লিক য়াসিড পাউডার (Calvert's Carbolic Acid Powder).এই প্রণালীতেই প্রস্তুত হয়। ফটকিরি প্রস্তুত করিবার সময় বে দগ্ধাবশিষ্ট সিলিকা-সংযুক্ত পদার্থ থাকে তাহাতে কার্বলিক য়াসিড মিশ্রিত করা হয়। ইহার শতকরা ২০৷৩০ ভাগ কার্বলিক য়াসিড। ম্যাকডুগেলের ডিদ্ইন্ফেক্টিং পাউডার (Macdougall's disinfecting powder) ও ভাল। সলফাইট অব ক্যালসিয়মের (sulphite of calcium) সহিত কার্ব-লিক য়াসিড মিশ্রত করিয়া এই পাউডার প্রস্তুত করা হয়। পার্ক্ স্বলেন

ম্যাকডুগেলের পাউডারের (M'dougall's powder) শতকরা ৩০ ভাগ কার্বলিক য়্যাসিড, ৫৯ ভাগ সলফাইট অব্ ম্যাগনিসিয়া (sulphite of magnesia) এবং অবশিষ্ট জল।

কার্ব লিক য়্যাসিড সাবানের কিছুমাত্র শোধনশক্তি আছে কি না সন্দেহ। অতএব সংক্রামক রোগী দেখিয়া কার্ব লিক সাবানে হস্ত ধৌত করিয়া নিশ্চিন্ত থাকা উচিত নহে।

- ৪। ক্লোরীণ—ফিকারের (fischer) মতে গন্ধক ধূম অপেক্ষা ক্লোরীণ শ্রেষ্ঠ।
- ৫। সলফার ডায়কসাইড—গন্ধকের মূল্য অতি স্থলত ও ব্যবহার প্রণালী অতি সহজ বলিয়া, ইহা দারাই সাধারণতঃ দূষিত বায়ু শোধিত হইয়া থাকে। গৃহের দেয়াল প্রভৃতি জলসিক্ত করিয়া এবং দার জানালা রুদ্ধ করিয়া গৃহের মধ্যস্থলে মিথিল স্পিরিটসিক্ত গন্ধক দগ্ধ করিলে অধিক ফল পাওয়া যায়। এপিডেমিকের সময় স্থানে স্থানে অগ্নি প্রজালিত করিয়া গন্ধক পোড়ান হইয়া থাকে।

# থ। সংক্রামকরোগদূষিতগৃহ শোধন করিবার প্রণালী। (বুরিখ)

প্রথমতঃ গৃহ জনপ্রাণীশৃন্ত করিবে এবং সমুদয় দার, জানালা ও ছিজ কদ্ধ করিয়া পলায়ন করিয়া আদিবার জন্ত একটীমাত্র দার খুলিয়া রাখিবে। ১০০০ ঘন ফুট পরিমাণ গৃহে ১ পাউগুলুচিং পাউডারের প্রয়োজন। উক্ত পাউডারের ট্রং হাইড্রোক্লোরিক বা ডাইলুট সলফিউরিক য়্যাসিড্ ঢালিয়া পলায়ন করিয়া আসিবে; তৎপর দাদশ ঘণ্টাকাল ঐ ভাবে গৃহ রুদ্ধ রাখিয়া দার জানালা খুলিয়া দিবে। তৎপর গৃহের সমুদয় সামগ্রী ডিস্ইন্ফেকটেণ্ট দারা ধোত করিবে এবং মূল্যবান বস্তাদি জলবাত্পে শোধিত করিবে। সর্বাত্র এই প্রণালী অনুসারে কার্য্য করা অনন্তব। সাধারণতঃ গদ্ধক ধূমে গৃহ বায়্ শোধিত করিয়া দেয়াল মেজে প্রভৃতি ওয়ান্ পাসের্কট করোসিভ্ সব্রিমেণ্ট লোশনে পিচকারী দারা ধোত করিবে।

ড়েণ খেতথানা প্রভৃতিতে ওয়ান্ পার্দে তি করোসিভ্ সবিন্দে তি লোশন বা স্থাটিউরেটেড্ কার্ণ লিক লোশন (saturated solution of crude carbolic acid) নিক্ষেপ করিবে।

#### (8) টীকা।

"এক্ঝশ্চন থিওরি", "য়্যান্টিডোট্ থিওরি", "ফ্যাণোসাইটোসিদ্ থিওরি" প্রভৃতি যে সমুদয় মতের উপর টীকা প্রণালী প্রতিষ্ঠিত, তৎসম্বন্ধে ইতিপূর্ব্বে বলা হইয়াছে। এই সমুদয় বৈজ্ঞানিক মত আধুনিক, কিন্তু টীকার প্রথা অতি প্রাচীন। একবার বসন্তরোগাক্রান্ত হইলে পুনরাক্রান্ত হইবার সন্তাবনা থাকে না দেখিয়া বিজ্ঞ ব্যক্তিরা টীকা প্রচলিত করেন।

- ১। ইনকিউলেশন। (ক) নৃবসন্ত বীজের টীকা বা নৃমসূর্য্যাধান—
  স্থবসন্তের বীজে টীকা দেওয়ার প্রথা সর্ব্ধপ্রথমে ভারতবর্ষেই প্রচলিত হয়।
  বিলাতে ১৭২১ সালে তুরজ রাজদৃত লড মন্টেগুর স্ত্রী লেডি মন্টেগু কর্তৃক
  ইহার প্রথম স্ট্রনা। ডাক্তার আডেমস্ (Adams) ইহার উৎকর্ষ সাধন
  করেন; তাঁহার প্রণালী অনুসারে কেবলমাত্র অস্ত্রাঘাতের স্থানে একটী দানা
  হইত। কিন্তু ইনকিউলেশন-জাত বসন্ত সংক্রামক বলিয়া অপর ব্যক্তিদিগের
  বসন্তরোগ উৎপাদন করিত এবং প্রাণনাশ, চক্ষুনাশ কিন্তা প্রীনাশ করিত।
  এইজন্ম বিলাতে ১৮৪০ সালে এবং কলিকাতায় ১৮৬৫সালে এই প্রথা আইনানুসারে দগুনীয় বলিয়া ঘোষণা করা হয়।
- থে) ওলাউঠা বীজের টীকা বা (Anti-cholera-inoculation)
   ১৮৮৫ সালে স্পেন দেশীয় ডাক্তার ফেরেন (Ferran) প্রথমতঃ কলেরার
  টীকা প্রবর্ত্তন করেন। কিন্তু তিনি রোগীর দেহজাত বিষ ব্যবহার করিতেন
  বলিয়া সর্মনা এক প্রকার ষ্ট্রেংথ (strength) বা তেজ বিশিষ্ট বীজ প্রাপ্ত
  হইতেন না, এবং টীকা দিয়া সমান ফললাভ করিতেন না। গেমেলিয়াই
  (Gamaleia) প্রথমতঃ বীজের ষ্ট্রেংথ নির্দারিত করিবার চেষ্টা করেন।
  তিনি গিনি-পিগ্রের (guinea-pig) ষ্টমাকে কলেরা-ভায়রাস (cholera-virus)
  বা ওলাউঠা-বিষ প্রবেশ করাইয়া ঐ বিষ লইয়া টীকা দিতেন। কিন্তু ইণ্টেসটিনেল কেনালে নানাবিধ মাইজোব থাকে এবং ইহাদের নানাপ্রকার পরি-

বর্ত্তন হয়; স্কুতরাং ঐ স্থান হইতে গৃহীত বীজ বিশুদ্ধ ও এক প্রকার গুণ-বিশিষ্ট হইতে পারে না। অধ্যাপক হাফ্ কিন গিনি পিগের ষ্টমাকে কমা বাাসিলাস ইঞ্জেক্ট না করিয়া পেরিটিনিয়েল ক্যাভিটিতে (peritoneal cavity) ইঞ্জেক্ট করিয়া বিশুদ্ধ বীজ প্রস্তুত করেন। ১৮৮৯ সালে তিনি গবেষণায় প্রবৃত্ত হন। হাফ কিনের কলেরা টীকা বুঝিতে হইলে নিম্লিখিত বিষয় গুলি হৃদয়ঙ্গম করা আবশুক :--(১) কলেরা দেপ্টিসিমিয়া (septicæmia) নহে, কিন্তু ইণ্টক্সিকেশন (intoxication); অর্থাৎ কমা ব্যাসিলাস্ রোগীর রক্তে উৎপন্ন হয় না, কিন্তু ঐ ব্যাসিলাদের টক্মিন্ (toxin) রক্তে সঞ্চারিত হইয়া রোগ উৎপাদন করে। স্থতরাং দেহকে টক্সিন বিনষ্ট করিবার শক্তি প্রদান করা উচিত। (২) সকলেরই অল্প পরিমাণ দেহপ্রবিষ্ট কলেরা-বিষ বিনাশ করিবার শক্তি বা রেজিস টিং পাওয়ার (resisting power) লব্ধ হয়। স্কুতরাং অল্প পরিমাণ বিষ দেহপ্রবিষ্ট করাইয়া এই রেজিস্টিং পাওয়ার বর্দ্ধিত করা ঘাইতে পারে। প্রথমতঃ অল্প পরিমাণ কলেরা বিষ সহাইয়া পরে অধিক পরিমাণ বিষ সহাইতে হয়। (৩) বায়ু প্রবাহে (æration) ও ৩৯° দেণ্টিগ্রেড্ তাপে (১০২°.২F) কমা ব্যাসিলাদের তেজথর্কতা বা এটেমুয়ে-শন (attenuation) হয়। এইরূপ থর্কতেজ বিষকে এটেরুয়েটেড ভায়রাদ্ (attenuated virus) কহে। (৪) গিনি পিগের পেরিটোনিয়েল ক্যাভিটিতে कमा व्यामिनाम देखके कतितन माधात्रभणः २८ वर्णात मध्य देशत मृज्य इम ; এবং ইহার পেরিটোনিয়েল ফুইডে (peritoneal fluid) কমা ব্যাদিলাস রাশি রাশি উৎপন্ন হয়। ঐ ফ্লুইড অন্ত গিনি-পিগের পেরিটোনিয়েল ক্যাভি-টিতে ইঞ্জেক্ট করিলে ইহার মৃত্যু আরও শীঘ্র হয়। এইরূপ ২০।৩০টী গিনি-পিগের পেরিটোনিয়মে পর্য্যায়ক্রমে কমা ব্যাসিলাসপূর্ণ ফুইড ইঞ্জেক্ট করিলে কমা ব্যাসিলাসের তেজ অত্যন্ত বৰ্দ্ধিত বা বা এক্জণ্টেড (exalted) হয়। এই বীজকে একজল্টেড ভাররাস্ (exalted virus) কহে। হাফকিন অন্নাত্রাবিশিষ্ট এটেলুয়েটেড ভায়রাস্কে ফার্ষ্ট ভ্যাক্সীন্ (first vaccine), এবং অধিকমাত্রাবিশিষ্ট ঐ ভায়রাস্কে সেকেণ্ড ভ্যাক্দীন (second vaccine) বলেন। তিনি কতিপর গিনি-পিগকে ছুই দলে বিভক্ত করিয়া-ছिल्न। এक मल्नत পেরিটনিয়মে ফার্ট ভ্যাকদীন ইঞ্জেক্ট করিয়া.

हेरांत्र ७ मित्रम भटत रमटक ७ जांकमौन, हेरांत ७ मित्रम भंत रमटक ७ ভ্যাক্দীন, এবং ইহার তিন দিবদ পরে একজল্টেড ভাররাদ ইঞ্জেই করেন। এত সতেজ কলেরা বিষেও ইহাদের মৃত্যু হয় নাই। অপর দলের পেরিটোনিয়মে ফাষ্ট ও দেকেও ভ্যাকসীন ইঞ্জেক্ট না করিয়া একেবারে একজন্টেড ভায়রাদ ইঞ্জেক্ট করেন; তাহাতে ইহাদের মৃত্যু হয়। যাহাদের টীকা দেওয়া হয় নাই, তাহাদের অপেক্ষা ইনকিউলেটেড গিনি-পিগ্দিগকে পাঁচগুণ তেজ বিশিষ্ট বিষ প্রয়োগ করা হইরাছিল, তথাচ তাহাদের মৃত্যু হয় নাই। এইরূপে থরগোশ, পারাবত প্রভৃতিও টাকা প্রাপ্ত হইলে নির্বিঘে কলের। বিষ গ্রহণ করিতে পারে। হাফ্ কিন মানবজাতির হিতার্থ নিজদেহে এই বিষ প্রয়োগ করিয়া টীকার ফল পরীক্ষা করিয়াছেন। এইরূপে তিনি ৬০ ব্যক্তির দেহে এই কলেরা বিষ প্রয়োগ করিয়া টীকার উপকারিতা প্রমাণিত করিয়াছেন। ১৮৯৩ দালে হাফ্কিন ভারতবর্ষে আগমন করিয়া টীকা দিতে আরম্ভ করেন। অদ্য পর্য্যন্ত ৬০,০০০ টীকা দেওয়া হইয়াছে; তন্মধ্যে একটা স্থলেও টীকার কোন প্রকার কুফল লক্ষিত হয় নাই। টীকার ফলাফল সম্বন্ধে কোন সিদ্ধান্তে উপনীত হইবার এখনও সময় উপস্থিত হয় নাই। দ্বিতীয় টীকার পর পাঁচ দিন অতীত না হইলে টীকার সম্পূর্ণ ফল হয় না। গয়াজেলে ইহার পরীক্ষা হইয়াছিল; ৩৯৩ জন কয়েদীর মধ্যে ২০১ জন ৫ দিন পূর্ব্বে টীকা প্রাপ্ত হইয়াছিল, অবশিষ্ঠ ১৯২ জনের টীকা হয় নাই। কলেরা আবিভূতি হইয়া টীকাবিহীন ব্যক্তিদের মধ্যে ৩ জনকে আক্রমণ করে এবং ১ জনের প্রাণ হরণ করে; টীকা প্রাপ্ত ব্যক্তিদের মধ্যে কেহই আক্রান্ত হয় নাই। কলিকাতায় যে সমুদয় স্থানে টীকা দেওয়া হইস্লাছিল তথায় কলেরা আবিভূত হইলে দেথা গেল, টীকা-বিহীন ২৬৩ ব্যক্তির মধ্যে ৩৮ জন আক্রান্ত হয়, তন্মধ্যে ৩৪ জনের মৃত্যু হয়, কিন্তু দ্বিতীয়বার টীকাপ্রাপ্ত ১৩৪ জনের মধ্যে কেবলমাত্র একজনের রোগ ও মৃত্যু হয়; রোগের ৩০৯ দিন বা ১০ মাদ পূর্ব্বে তাহার টীকা হইয়াছিল। অনেক চা-বাগানে টীকার উপকারিতা প্রতিপন্ন হইয়াছে। এই সমুদয় ঘটনা প্রকাক্ষ করিয়া গ্রন্মেন্ট য্যান্টি-কলেরা ইনকিউলেশনে আস্থা প্রকাশ করিয়া-ছেন। অনেকেই মনে করেন বিলাতের ক্লাইন এবং এই দেশের কনিংহাম

এই টীকার বিরোধী। কিন্ত ক্লাইন বলেন কেবল কমা-বাদিলাস ইঞ্জেক্শন লারা কলেরা নিবারিত হয় না, কিন্তু ব্যাদিলাস্ প্রডিজিওসাস্ (bacillus prodigiosus) দ্বারা টীকা দিলেও কলেরার আক্রমণ নিবারিত হয়। এই কণাতে হাফ কিনের টীকার নিক্ষলতা প্রতিপন্ন হয় না, কিন্তু ঐ টীকার স্তায় কলদায়ক টীকা আরও আছে, ইহাই বুঝায়। কনিংহাম বলেন হাফকিনের দীকার দক্ষন কেবলমাত্র ক লেরাজনিত মৃত্যু সংখ্যার হাস হইতে পারে। টীকা দ্বারা যদি কলেরা ডায়েরিয়ার স্তায় এত সামাস্ত রোগে পরিণত হয়, যে তাহাতে মৃত্যুর ভন্ন থাকে না, তবে টীকার উদ্দেশ্য সফল হইবার বাকি কিরহিল?

টীকা-প্রণালী—বীজ প্রস্তুত্তরণ কিয়া টিউব হইতে বীজ গ্রহণের প্রণালী বিশেষ শিক্ষা ভিন্ন বুঝা কঠিন। কলিকাতায় মিউনিসিপাল ল্যাবরেটরীতে, ও আগ্রাম হানকিনের ল্যাবরেটরীতে, বীজ পাওয়া যায়। ফার্ন্ত ভ্যাকসীন্ হাইপোডার্মিক্ সিরিঞ্জে পূর্ণ করিয়া বাম কুল্ফির (flank) চর্ম্মের নীচে ইঞ্জেক্ত করিতে হয়। ইহার অন্ততঃ ৫ দিন পর সেকেও ভ্যাকসীন্ দ্বারা অপর পার্মের্টীকা দেওয়া হইয়া থাকে। প্রথম দীকার পূর্ণমাত্রা বিলাতী সিরিঞ্জের ৯ বিন্দু। ১০ বৎসরের বালককে ৫ বিন্দু এবং ৬ মাসের শিশুকে ১ বিন্দু দেওয়া হইয়া থাকে। প্রথম দীকার পর জর খুব অধিক (১০৪°) হইলে পূর্ণ মাত্রার ভ্রমাণিতের। উচিত; ১০১°—১০২° ডিগ্রির কম জর হইলে পূর্ণমাত্রা কিয়া অধিক দেওয়া হয়।

টীকার ফল—(১) ৩—১২ ঘণ্টার মধ্যে অন্ত-স্থানে বেদনা, জ্বর, ও প্রানি হয়। (২) ১২—৩৬ ঘণ্টার মধ্যে এই সমুদ্য় লক্ষণের হ্রাস হয়। (৩) অন্ত স্থানের স্ফীততা, কঠিনতা ও বেদনা ২।৪ দিবসে দ্রীভূত হয়। (৪) কদাচিৎ কোন কোন স্থলে উপরোক্ত প্রথম টীকার লক্ষণসমূহ প্রকাশিত হইবার পূর্ব্বে কাহারও কাহারও কিঞ্চিৎ ডায়েরিয়া এবং শীত বোধ হয়।

২। ভ্যাক্ সিনেশন—গো-বসন্ত বীজের টীকা বা গোম-দূর্য্যাধান—১৭৬৮ গ্রীষ্টান্দে বিলাতের একজন গ্রাম্য যুবতী জনৈক চিকিৎ-সকের সত্ত্বে প্রসঙ্গক্রমে বলিয়াছিল "আমি কথনও বসন্তরোগাক্রান্ত হইব না; কারণ আমার গো-বসন্ত হইয়াছিল।" চিকিৎসকের সহকারী এড ওয়ার্ড জেনার নিকটে দাঁড়াইয়াছিলেন। যুবতীর কথাটা তাঁহার অন্তন্তলে প্রবেশ कतिन। তिनि यथन श्रगः চिकिৎमा कार्या खुठी इटेलन, के विषया अखुत ও বন্ধদের সঙ্গে ক্রমাগত আন্দোলন করিতে লাগিলেন, এবং অবর্ণেবে গো-শালায় প্রবেশ করিয়া গভীর গবেষণায় প্রবৃত্ত হইলেন। একটা গ্রাম্য যুবতীর গল্লচ্ছলে কথিত যে বাক্যটী জেনারের অন্তরে নৃতন আলোক প্রকাশ করিয়া-ছিল, দেই বাক্যের সমর্থন করিয়া ৩০ বৎসর পরে তিনি গো-বসন্ত সম্বন্ধে একথানা পুস্তক প্রণয়ন করেন। ভদবধি বৈজ্ঞানিক জগতে এক যুগান্তর উপস্থিত হইল। ইতিপূর্ব্বে আমাদের দেশে ধন্বন্তরি তাঁহার শাক্তেয় গ্রন্থে গোবীজের টীকার উল্লেখ করিয়াছেন; কিন্তু ঐ টীকা প্রচলনের কোন বিশেষ বিবরণ পাওয়া যায় না। ১৮০২ সালে লড ক্লাইভের উদ্যোগে ভারতবর্ষে প্রথম গোবীজের টীকা প্রচলিত হয়। বঙ্গদেশে ১৮০৩ সালে ইহার সূচনা। ইহার ৩ বংসর পর কলিকাতাবাসীগণ ডাক্তার জেনারকে ক্বতজ্ঞতার নিদর্শন-স্বরূপ ৪০০০ পাউও প্রেরণ করেন। বোষাই ও মাক্রাজ হইতেও প্রায় ৩৪০০ পাউও প্রেরিত হয়। প্রথমতঃ টীকাদারেরা নানাপ্রকার প্রতিবন্ধক জন্মাইবার চেষ্টা করে, কিন্তু অবশেষে কলিকাতা নেটিভ্

ইংরাজী টীকার

ইতিহাস।

হাসপাতালের সার্জন স্থলব্রেডের প্ররোচনায় তাহারা
ভ্যাকসিনেশনের পক্ষ অবলম্বন করিয়া সরকারী
পত্রে নাম স্বাক্ষর করে। সেই বৎসর মার্কুইন্

অব্ ওয়েলেদ্লী এই বিধান করেন যে বাঙ্গালা টীকা দিতে হইলে কলি-কাতা পরিত্যাগ করিয়া বাহিরে ছই মাস কাল থাকিতে হইবে। কিন্তু এই আইন কেবল পুলিশ-প্রচারিত বলিয়া অল্পকাল পরেই অগ্রাহ্ম হইয়া যায়। বহুকাল পর্যান্ত ইংরাজী টীকা সম্বন্ধে নানাপ্রকার আগত্তি উত্থাপিত হইতে থাকে। অবশেবে চিরম্মরণীয় মহাত্মা ঈশ্বরচন্দ্র বিদ্যাসাগরের প্রয়ন্তে নবন্ধীপাধিপতি মহারাজা শ্রীশচন্দ্র কত্ত্বি একটী পণ্ডিত-সভা আহুত হয়। বিদ্যাসাগর মহাশয়ের তর্কে পরাভূত হইয়া পণ্ডিতেনা ইংরাজী টীকার স্বপক্ষে ব্যবস্থা পত্রে নাম স্বাক্ষর করেন। তথাচ ভ্যাকসিনেশন সম্যকরূপে প্রচলিত হয় নাই। ১৮৬৫ সালে স্থপ্রসিদ্ধ অধ্যাপক চার্ল দের উদ্যোগে ইনকিউলেশন-

নিবারিণী বিধি প্রবর্ত্তি হয়। কিন্তু তথনও ভ্যাকসিনেশন অবশ্য কর্ত্তব্য বলিয়া নির্দ্ধারিত হয় নাই। ১৮৮০ সালে কম্পল্ সারী ভ্যাকসিনেশন সাইন (Compulsory Vaccinaton Act) প্রচলিত হইবার পর ইংরাজী টীকা না দেওয়া দণ্ডনীয় বলিয়া ধার্য্য হয়।

প্রথম টীকা বা প্রাইমারী ভ্যাকসিনেশনের লক্ষণ –টাকার দ্বিতীয় কি তৃতীয় দিবদে অস্ত্রাঘাতের স্থান কিঞ্চিৎ উন্নত বলিয়া বোধ হয়, এবং মেগ নিফাইং প্লাস দারা পরীক্ষা করিলে ইহার চতুর্দ্ধিকে ঈষৎ লাল ভেলা বা এরিওলা (areola) দেখিতে পাওয়া যায়। পঞ্চম বা ষষ্ঠ দিনে একটা "ভেসিক্র" (vesicle) বা জল দানা স্পষ্টতঃ দেখিতে পাওয়া যায়। সেই দানার মধ্যস্থল নত এবং পাড় (margin) উন্নত। অষ্টম দিবদে ইহার ভিতরে পরিকার লিম্ফ (lymph) হয়। এই দিবসে ইহার বিকাশ সম্পূর্ণ. আকার গোল এবং বর্ণ মুক্তার ভাষ। পাড় শক্ত চাকচক্যবিশিষ্ট এবং চক্রাকার হয়। সপ্তম দিবসের শেষ ভাগে, কিম্বা অষ্টম দিবসের প্রথম ভাগে, দানার চতুর্দ্ধিকে লাল এরিওলা পড়িতে থাকে এবং গ্রই দিন ক্রমশঃ বর্দ্ধিত হয়। এই এরিওলার আকার গোল, এবং ব্যাস ১—৩ ইঞ্চি পরিমিত। নব্ম বা দশম দিবদে এরিওলার নিমন্থ সেলিউলার টিশু অতান্ত ফীত ও শক্ত হয়। দশম বা একাদশ দিবদে এরিওলার হ্রাস হয় এবং ইহার স্থানে ২০০ টী লাল চক্র দেখা যায়। এই সময় ভেসিক্লের মধ্যস্থল শুক ও পিন্দলবর্ণ হইতে থাকে, এবং সমুদর দানা ক্রমশঃ শুফ,সঙ্কু চিত ও কৃষ্ণবর্ণ যামড়ীতে পরিণত হইরা, প্রায় ২১ দিবদে পড়িয়া যায়। দানার স্থানে একটা চিরস্থায়ী দাগ বা সিকেট্রিকা (cicatrix) থাকে। ঐ সিকেট্রিঅ গোলাকার, এবং মধুচক্রের স্থায় ছিদ্র-বিশিষ্ট, কিম্বা করাতের ভার দন্তবিশিষ্ট। পঞ্চম হইতে সপ্তম দিবসের মধ্যে জর হয়, কিন্তু এত অল্প যে অনেক সময় লক্ষিত হয় না ; কিন্তু এরিওলা বুদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে জরের বৃদ্ধি হয়। সেই সময় শিশু ছটফট করে এবং কথনও কথনও বিমি ও তরল বাহ্যে করে। বগলের ম্যান্সিলারী প্লাও (axillary glands) की उ उ दिन नायुक्त इरेशा थारक। दर्भन दर्भन भिष्युत रख शर्म किया मर्ज-দেহে কুদ্র কুদ্র লাইকেন (lichen) বা ভেষিক্ল (vesiele) নির্গত হইয়া প্রায় সপ্তাহকাল থাকে।

পুনদি কা বা রী-ভাক সিনেশনের (re-vaccination) লক্ষণ—কোন স্থলে প্রথম টীকার স্থায়ই হইয়া থাকে; কিন্তু সাধারণতঃ ভেসিকেলের পরিবর্তে পেপিউল (papule) হইয়া থাকে। পেপিউলের চতুর্দ্ধিকে এরিওলা হয়। পঞ্চম দিবসে বা তৎপূর্ব্বেই ইহার বিশেষ বৃদ্ধি। ভেসিকেল হইলেও ইহার আকার প্রথম টীকার দানার স্থায় হয় না, এবং ইহার বিকাশ অতি শীঘ্র সম্পন্ন হয়; এমন কি, ষষ্ঠ দিবস বা তৎপূর্ব্বেই ইহা পক্ষতা প্রাপ্ত হয়। অইম দিবস ও তৎপূর্বের এরিওলা লয়প্রাপ্ত হইতে থাকে, এবং মামড়ী ও শীঘ্র শীঘ্র গঠিত হইয়া থসিয়া যায়। প্রথম টীকা অপেক্ষা পুন্টা কার এরিওলা অধিক বিস্তৃত হয় এবং সেলিউলার মেস্থেনের স্ফীততা ও গ্রানি অধিক হয়। দানা ও ইহার চতুর্দ্ধিকে চুলকানি এবং য়্যাক্সিলারী গ্রাণ্ডের ইরিটেশন্ও অধিক হইয়া থাকে। কথনও বা চতুর্থ ও পঞ্চম দিবসে জর থুব প্রবল হয়।

টিকা দিবার প্রণালী ( Vaccinal Operation )—প্রগণ্ডের বহিদিগে (outer aspect of the arm) ডেল্টয়েড্ মদ্লের ইনসার্শনের নিকট
(near the insertion of the deltoid muscle) সাধারণতঃ টীকা লেওয়া
হইয়া থাকে।

#### ইংলিশ লোকেল বোডের উপদেশ :—

- ১। বদস্তের ভয় না থাকিলে, স্কুস্থ ব্যক্তি ব্যতীত কাহাকেও টাকা দিবে না। টাকা দিবার পূর্ব্বে দেখিতে হইবে যে শিশুর কিছুমাত্র জ্বর, পেটের অস্থথ বা চর্দ্মরোগ নাই; কর্ণের পশ্চাতে, উরুর বা অক্ত কোন স্থানের চর্দ্মের বলীতে (folds) একঝিমা (eczema) বা ক্ষত আছে কি না তাহা বিশেষ রূপে দেখিতে হইবে। শিশু যদি হাম, স্বালেটিনা প্রভৃতির সংস্পর্শে আসিয়া থাকে, অথবা শিশুর গৃহে বা তাহার সন্নিকটে যদি এরিসিপেলাসের প্রাত্তিব হইরা থাকে, তাহা হইলে, বিশেষ প্রয়োজন ব্যতীত, টীকা দিবে না।
- ২। প্রথম টীকার সময় এমন ভাবে অন্ত্র করিবেও লিক্ষ্ লাগাইবে যাহাতে অর্দ্র ইঞ্জি অন্তরে চারিটী ভেসিকল্বা ভেসিকল্পুঞ্জ (groups of vesicles) উৎপন্ন হইবে। অন্তম দিবসে দানা অন্যন অর্দ্র বর্গ ইঞ্জি গ্রিমিত হওয়া উচিত।

- ৩। যাহাতে দানা ছিন্ন না হয়, এবং মামড়ী অসময়ে থিসিয়া না পড়ে, ভিন্নিয়ে সাবধান হইবার জন্ম উপদেশ দিবে। "প্রোটেক্টর" প্রভৃতি কৃত্রিম উপায়ে দানা রক্ষা করিবার চেন্তা করিবে না; বিশেষ প্রয়োজন হইলে এমন "প্রোটেক্টর" বা "ড্রে দিং" ব্যবহার করিবে যাহা অপরিকার হইলে পরিত্যাগ বা পরিবর্ত্তন করা যায়।
- ৪। যাহাতে প্রয়োজনকালে অভাব না হয় এই জয় বীজ সয়য় করিয়া
   রাথা উচিত। \*
- ৫। বীজে বিন্দুমাত্র রক্ত থাকিলে দে বীজ ব্যবহার করিবে না বা অপর কাহাকেও ব্যবহার করিতে দিবে না। যে বীজ ব্যবহার কর বা অন্তক্তে দাও, তাহা যে স্থান হইতে আনীত হইয়াছিল, তাহা লিখিয়া রাখিতে ভূলিও না।
- ৬। রী-ভ্যাকিদিনেশন দানার বীজ ব্যবহার করিও না। যে শিশু বেশ স্থেষ্ঠ, যাহার পিতা মাতা এবং ল্রাতা ভগিনী স্থেষ্ঠ, এবং যাহার পরিবার তোমার পরিচিত, কেবল দেই শিশুরই বীজ গ্রহণ করিবে। উক্ত শিশুর কোন চর্ম্মরোগ আছে কি না, কিম্বা তাহার বংশাবলীর কাহারও সিফিলিদ্ ছিল কি না, তদ্বিষয়ে বিশেষ অনুসন্ধান করিবে। শিশুর মলদ্বারে বা তাহার নিকটে কোন প্রকার ক্ষত থাকিলে, তাহার বীজ গ্রহণ করিবে না। কেবল নিয়মিত রূপে বিকাশপ্রাপ্ত এবং অচ্ছিন্ন ভেসিকেলের বীজ গ্রহণ করিবে। দানা বেশ বড় ও জলে পূর্ণ হইলে তাহার বীজ লইবে। প্রবিগ্রাল দৃষ্ট হইলে বীজ লইবে না। এমন ভাবে বীজ লইবে যাহাতে একবিন্তু রক্ত না আসিতে পারে। যে লিক্ষ্ সম্পূর্ণরূপে স্বচ্ছ ও পরিকার নহে, কিম্বা অতিশয় তরল ও জলবৎ, তাহা গ্রহণ করিবে না। একটী উত্তম দানা হইতে তৎক্ষণাৎ পাঁচ জনকে টীকা দিবার উপযুক্ত অথবা ৭টী আইভরী পয়েণ্ট (ivory point) বা ৩টী ক্যাপিলারী টিউব (capillary tube) পূর্ণ করিবার উপযুক্ত বীজ গ্রহণ করিবে; দানার আকার

<sup>\*</sup> কলিকাতা ৩৯ নং বাঁডন খ্রীট ডিপুচী স্থপারিটেণ্ডেণ্ট এব্ ভ্যাক্সিনেশন্, বা ২৭ নং ইলিয়ট রোড ডিপুটী স্যানিটরী কমিশনরের নিকট, এবং আসামে শিলং ভ্যাক্সীন্ ডিপোতে লিখিলে বীজ পাওয়া যায়।

অনুসাবে গ্রহণীয় বীজের পরিমাণ নির্দ্ধারণ করিতে হইবে। দানা চাপিও না (don't squeeze), চাঁচিও না (don't scrape) বা তাহা হইতে বীজ টানিয়া লইও না (don't drain); এবং যে বীজ চর্ম্মে গড়াইয়াছে,তাহা লইও না। যাহাকে টীকা দিতেছ, সাবধান, তাহার রক্ত লইয়া বীজদাতা শিশুর রক্তে মিলাইও না।

- ৭। পরিদর্শনকালে সর্বাণ বীজের তেজ (efficiency) ও পরিত্রতা (purity) পরীক্ষা করিবে। কোন হলে দানা অতি শীঘ্র নির্গত হইলে বা অনিয়মিতরূপে বিকাশপ্রাপ্ত হইলে, অথবা হানীয় ইরিটেশন্ (local irritation) অত্যধিক হইলে, তাহা লিখিয়া রাখিবে; এবং অন্তান্ত হানেও এইরূপ হইলে ঐ বীজ দারা টীকা দিতে তংক্ষণাৎ বিরত হইবে। অন্তম দিবসে পরিদর্শন কালে যদি এরিওলা স্পষ্টতঃ দেখিতে পাও, তাহা হইলে তোমার বীজ পরিবর্ত্তন করা আবশ্রুক, এ কথা যেন শ্বরণ থাকে।
- ৮। টীকার দিবসেই সমুদয় কেস রেজিপ্টারি করিবে। পরিদর্শন দিবসে ফলাফল লিখিবে। প্রাইমারী ভ্যাকসিনেশনের দানা রীতিমত বিকাশপ্রাপ্ত হইয়া থাকিলেই "সকসেদ্ফুল" (successful) বলিয়া লিখিবে। রী-ভ্যাকসিনেশনে স্বাভাবিক বা পরিবর্ত্তিত (modified) ভেসিকল্ নির্গত হইলেই, বা এরিওলা-বেষ্টিত পেপিউল্ (papule) উঠিলেই "সকসেদ্ফুল" বলিয়া লিখিতে হইবে। ভ্যাকসিনেশন্ বা রী-ভ্যাকসিনেশন্ প্রথমতঃ সকসেদ্ফুল না হওয়ার দরুন যদি পুনর্বার টীকা দিতে হয়, তাহা হইলে উক্ত কেদ্ নৃতন বলিয়া রেজিপ্টরি-ভুক্ত করিতে হইবে।
- ৯। ভ্যাকসিনেশনের ল্যান্সেট্ (lancet) ও যন্ত্রাদি পরিষ্কার ও ভাল অবস্থায় রাথিবে, এবং অন্ত কোন কার্য্যে ব্যবহার করিবে না। টীকার সময় সঙ্গে জল ও ন্যাকড়া রাথিবে। প্রত্যেকবার অন্ত্র করিবার পরে ও পূর্ব্বে একল ও ন্যাকড়া দ্বারা ল্যান্সেট মুছিবে। একবার ব্যবহৃত ক্যাপিলারী টিউব বা আইভরী পয়েণ্ট পুনর্বার বীজ সঞ্চয় বা প্রেরণের জন্ম ব্যবহার করিবে না, কিন্তু একবার ব্যবহারের পর ভালিয়া ফেলিবে।

ডাক্তার ম্যাকভেল বলেন ক্যাপিলারী টিউব বীজ সঞ্চয়ের পূর্বে ষ্টেরিলাইজ্ (sterilized) বা দীপশিখায় (spirit lamp) উত্তপ্ত করিতে

হইবে। অন্ত্রাদি মুছিবার জন্ম শুদ্ধ জল ও ন্যাকড়া ব্যবহার না করিয়া কার্ব-লিক লোশন-সিক্ত লিণ্ট ব্যবহার করা উচিত। আমি পকেটে একটা काइंड भारमं के (5 per cent) कार्वनिक त्नांभरनत भिभि, এक थंछ निक, একথানি ল্যানসেট, একটা কাঁচের হৃদ্ম কাঠি এবং বীজের টিউব নিয়া থাকি। টীকার স্থান প্রথমতঃ কাব লিক লোশনে ভালরূপ ধৌত করিয়া ও মুছিয়া, কাব লিকযুক্ত লিণ্টে মুছান ল্যান্সেট্ ছারা প্রত্যেক স্থানে তিনটী সমান্তরাল রেখা (there parallel incisions) এবং একটা বক্ত রেখা (one cross incision) होनि, जवर १।७ ही (वाँ कि। (puncture) मिष्टे। जर्भत नाग्नमि সাবধানে ( যাহাতে ইহার বে ড্ অন্ত কিছুর সংস্পর্ণে না আসে তেমন ভাবে ) রাখিয়া, এবং কার্বলাইজ ড্লিণ্টে মুছান কাঁচের কাঠি দারা টিউব হইতে বীজ গ্রহণ করিয়া টীকার স্থানে মাথাই। তৎপরে ল্যানদেটের বেড দ্বারা বীজ ভালরূপ ঘর্ষণ করি। এই প্রণালী অবলম্বন করিয়া আমি কখনও অক্বতকার্য্য হই নাই,বা কোন তুর্ঘটনা ঘটিতে দেখি নাই। গো বৎসের লোমে, অপরিষার তাকড়ায়, বা স্বীয় ব্যবহৃত কুমালে অন্ত শস্ত্রাদি মুছা কুখনই উচিত নয়। অধিক রক্তপাত করা অবিধেয়; অধিক রক্তে বীজ ধৌত रुरेया याय ।

টীকার ফলের স্থায়িত্ব—জেনার বলিয়াছিলেন, বসন্তের এক আক্রনণ বর্থন সকলের শরীরকে সমভাবে পুনরাক্রমণ হইতে রক্ষা করিতে পারে না, তথন গো বসন্তের বা গো-বীজ টীকার তদ্রপ শক্তি আছে এরপ কর্মনা করিলে ইহাতে দৈবশক্তি আরোপ করা হয়। বর্ত্তগান যুগের অভিজ্ঞ ব্যক্তিরাও বলেন, কাহারও একবার টীকার পর যদি অনেক বৎসর চলিয়া যায়, এবং সেব্যক্তি যদি বসন্ত-বিষের অধিক সংস্পর্শে আসে, তাহা হইলে তাহার পুনরাক্রান্ত হইবার সন্তাবনা থাকে। সেফিল্ড এপিডেমিকের সময় ভাক্তার বেরি এই সিন্ধান্ত করিয়াছিলেন যে, টীকার ১০ বৎসর পর হইতে পুনরাক্রমণের সন্তাবনা অধিক হয়। টীকার পর যাহাদের দশ বৎসর অতীত হইয়াছিল, বিগত কলিকাতা এপিডেমিকে তাহাদেরই মৃত্যু অধিক হয়। এই জন্ম অন্তঃ ১০।১২ বৎসর বয়সে একবার রী-ত্যাক্সিনেশন হওয়া কর্ত্তর। প্রতি ৭ বৎসর অন্তর টীকা দেওয়া হইলে বসন্তের প্রাত্ত্রিব থাকিবে না, অনেক

অভিজ্ঞ ব্যক্তির এই ধারণা। লায়েট (Layet) এ বিষয়ে অনেক জানু-मकान कित्रशास्त्र ; जिनि वर्तान ७—৮ वरमत वर्गान ( ऋ न श्रीवर्णत कान ) একবার, ১৪—১৬ বৎসরে ( কলেজ প্রবেশের কাল ) একবার, এবং ২১—২৫ বংসরে (কলেজ পরিত্যাগের কাল) একবার রী-ভ্যাক্সিনেশন নিতে আইনতঃ বাধ্য করা উচিত।

ইংরাজী টীকার সপক্ষে বৈজ্ঞানিক যুক্তি কি ? পুনরাক্রমণ হইতে নিরুতি বা ইমিউনিটি সম্বন্ধে "ফাগোসাইটোসিদ্ থিওরি" প্রভৃতি যে সমুদর যুক্তির উল্লেখ করা গিয়াছে,ভ্যাকসিনেশন সম্বন্ধেও তাহা প্রয়োগ ইংরাজী টীকার সপক্ষে করা যায়। এতভিন্ন আর একটা মত আছে। জেনার रेवछानिक युक्ति। বলেন গো-বদন্ত ক্ষেত্রান্তরে নু-বদন্তের রূপান্তর মাত্র; অর্থাৎ উভয় রোগই এক, কেবলমাত্র মাত্রা ও তেজের প্রভেদ; স্থতরাং গো-বসন্তের বিষ শরীরে একবার প্রবেশ করিয়া, গো-বসন্ত উৎপাদন করিলে, তৎপর নু-বসস্তের বিষ দারা আক্রান্ত হইবার সম্ভাবনা থাকে না। সম্প্রতি ক্রুকশ্রান্ধ এই মতের প্রতিবাদ করিয়াছেন। কিন্তু মান্রাজে কিং, ও কলি-কাতায় সিমসন, নু-বসন্তের বীজ দারা গো-বৎসে গো বসন্ত উৎপাদন করিয়া এবং দেই গো-বংদের বীজ দারা নরদেহে গো-বদন্ত উৎপাদন করিয়া জেনা-রের মত পুনপ্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। ক্রুক্শাঙ্ক বলেন এই প্রকার বীজে টীকা দিলে গো-বসস্ত না হইয়া নু-বসন্ত হয়, অথবা ইহার তেজ এত ক্ষীণ হয় যে এইরূপ টীকা দ্বারা বসম্ভের পুনরাক্রমণ নিবারিত হয় না। ডাক্তার সিমসনের বীজ দারা আমি বহু লোকের টীকা দিয়াছি, কিন্তু কথনও কাহারও শরীরে বসস্তের ইরপ্শন্ নির্গত হইতে দেখি নাই; উক্ত বীজে যাহাদিগকে গত তিন বংসর হইতে টীকা দেওয়া হইয়াছে,তাহাদের কেহই গত বংসর এপিডেমিকের সময় বসন্তাক্রান্ত হইয়াছে বলিয়া জানি না।

টীকা-বিরোধ বা য়ৢাণিট ভ্যাক্সিনেশন (anti-vaccination) – টীকা বিরোধী বা য়াণিট ভ্যাক সিনেশনিষ্ট দিগকে তুইটী দলে বিভক্ত করা যায়, রাজনৈতিক ও বৈজ্ঞানিক। রাজনৈতিক দলের প্রধান তর্ক স্বাধীনতা লইয়া। তাঁহারা বলেন, বলপুর্ব্বক টীকা দেওয়া আর স্বাধীনতায় হস্তক্ষেপ করা একই কথা। কিন্তু বহুলোকের জীবন মরণ সমস্যাস্থলে স্বাধীনতার

গ্রন্থ উত্থাপিত হইতে পারে না। যে বাতুল লোকের প্রাণনাশ করিবার বা গ্ৰহে অগ্নি প্ৰদান করিবার সন্ধানে ঘুরিয়া বেড়ায়, তাহাকে বাতুলালয় নামক কারাগারে আজীবন বন্দী করা হয় কেন ? এই স্থলে যথন স্বাধীনতার কথা চলে না, তথন যে ব্যক্তি স্বীয় বালককে টীকা না দিয়া বসন্তরোগে আক্রান্ত হুইতে দেয়, এবং ঐ বালক দারা শত শত লোকের দেহ রোগগ্রস্ত ও জীবন বিপদগ্রস্ত করায়,তথন সেই ব্যক্তি সমাজদ্রোহী বলিয়া কেন না দণ্ডনীয় হইবে ? ঐ কালীঘাটের যে ছাগ বিক্রেতা সহস্রাধিক ব্যক্তির প্রাণনাশের কারণ হইয়া দাঁড়াইল, তাহাকে পথে দেখিবামাত্র বলপূর্ব্বক হাসপাতালে প্রেরণ করিলে কি এক ব্যক্তির স্বেচ্ছাচার নিবারণ করিয়া সহস্র সহস্র ব্যক্তির জীবন সংরক্ষণ করা হইত না ? তবে আর স্বাধীনতার দোহাই কেন ? বৈজ্ঞানিক দলের টীকার বিরুদ্ধে প্রধানযুক্তি তিনটী ঃ—(১) টীকা বসস্ত নিবারণ করে না, (২) তত সংক্রামক নহে এবং আইসোলেশন প্রণালীতে নিবারিত হয়। (১) প্রথমতঃ দেখা যাউক দীকা বদন্তনিবারক কিনা? মৃত্যুর ভাকিসিনেশন য়াক্টি তালিকা অনুসন্ধান করিলে দেখা যায় ভ্যাক সিনেশন প্রচলনের পর বদন্তের মোট মৃত্যুর হ্রাম য়্যাক্ট প্রবর্ত্তিত হইবার পূর্বের বসন্তের মৃত্যু সংখ্যা লণ্ডনে 3 1 1100 1 এবং কলিকাতায় ৩গুণ অধিক ছিল। শিশুদের সম্বন্ধে টীকার ফল আরও প্রত্যক্ষ। টীকার স্থব্যবস্থার পূর্ব্বে,লণ্ডনে ৫ বৎসরের নিম বয়স্ক শিশুদের মৃত্যু এখনকার ৭ গুণ ও কলিকাতায় ১০ বৎসরের নিম্ন বয়ক্ষ শিশু-দের মৃত্যু প্রায় চতু গ্র্ব ছিল। যে দেফিল্ড্ এপিডেমিক লইয়া ভ্যাকসিনেশন য়াক্টি টীকাবিরোধী অধ্যাপক ক্রুকশ্যান্ধ এত কথা বলিয়াছেন, প্রচলনের পর বসত্তে শৈশব সূত্রার হ্রাস, তাহাতে এই প্রমাণিত হইয়াছে যে আনভ্যাক সিনেটেড বিলাতে খ্ৰ বা দ/০, (unvaccinated) বা "দোঁদা" দের মধ্যে আক্রান্তের কলিকাতায় ৯ বা দ০ সংখ্যা ভ্যাকিসিনেটেড্দের (vaccinated) ৬ গুণ, এবং মৃত্যু সংখ্যা ৬৮ গুণ। টীকাপ্রাপ্ত ৫ বৎসরের নিম্নবয়ক্ষ শিশুদের শতকরা .৩৬ আক্রান্ত হইয়া তন্মধ্যে শতক্রা .৮ মরিয়াছিল ; "দোঁ দা"দের শতক্রা ৬.৫ আক্রান্ত এবং তাহার শতকরা ৫১.৫ মৃত্যু কবলিত হইয়াছিল। বিগত কলি-

কাতা এপিডেমিকে বসন্ত হাসপাতালে যত রোগী মরিয়াছিল তাহার শতকরা

৬.৯ ভ্যাক সিনেটেড, ২.৭ ইনকিউলেটেড, .৪ পূর্ব্বে বসন্তাক্রান্ত, এবং ৮১.৯ 'দোঁদা'। ১০ বৎসরের নিম্নবয়ক্ষ ভ্যাকিদিনেটেড কেহই মরে নাই। যে সমস্ত ভাাকসিনেটেড ব্যক্তি আক্রান্ত হইয়াছিল, তাহাদের মধ্যে মৃত্যু সংখ্যা শত-করা ৮.৭, আক্রান্ত ইনকিউলেটেড দের মৃত্যু সংখ্যা শতকরা ২০, এবং আক্রান্ত "দোঁদা"দের মৃত্যু সংখ্যা শতকরা ৫৩.৮। ডাক্তার আবটের বিখ্যাত তালিকা পাঠ করিলে জানা যায় সমগ্র ইউরোপে ভ্যাক্সিনেটেড্রের মধ্যে বসন্তজনিত মৃত্যু সংখ্যার অতিশয় হাস হইয়াছে। বিগত গুই বংসরে কলিকাতার বদত্তে ২,০১৮ মৃত্যু হইয়াছিল বলিয়া দেশময় হৈ চৈ পড়য়া গিয়াছিল। কিন্ত किनकां उप्तर-७० मार्ल के त्रांश ७२२१, ५४८८ मार्ल २४८०, ১৮৪৯—৫० मार्ल ७১৫৪, ১৮৫१ मार्ल ७১११ वनः ১৮७৪-७৫ मार्ल ৫৫৫७ মৃত্যু ঘটিয়াছিল। ১৮৮০ হইতে ১৮৯৫ সাল পর্যান্ত বসন্তজনিত মৃত্যু ৪০০০, কিন্তু ১৮৪৯-৫০ সালের মৃত্যু সংখ্যা ৬০০০, এবং ১৮৬৪-৬৫ সালের মৃত্যু সংখ্যা ৫৫০০; অর্থাৎ টীকা প্রচলনের পূর্ব্বে এক এপিডেমিকে যত মৃত্যু হইত, ইহার পরবর্ত্তী ১৬ বৎসরেও তত মৃত্যু হয় নাই। সার জন সাইমনের তালিকা পাঠেও জানা যায় সমগ্র ইউরোপে টীকা প্রচলনের পর বসন্তজনিত মৃত্যু সংখ্যার অনেক হাস হইয়াছে। টীকাবিরোধীগণ বলেন, ইনকিউলেশনের হ্রাস এবং সাধারণ স্বাস্থ্যের উন্নতির ইনকিউলেশনের তর্ক। সঙ্গে সঙ্গে বসন্তেরও হ্রাস হইয়াছে; টীকা এই হ্রাসের কারণ নহে। ইহার উত্তরে ডাক্তার ম্যাক্তেল বলেন, বর্ত্যান শতান্দীর প্রারন্তে ইনকিউলেশনের হাদের দঙ্গে দঙ্গে বরং বদন্তের বুদ্ধি হইয়াছিল, এবং ডাক্তার আবটের তালিকা পাঠে জানা যায় স্থইডেন ও কোপেনহাগেনে কিম্মনকালে ইনকিউলেশন প্রচলিত ছিল না, কিন্তু দেখানেও টীকা প্রচলনের পর বসত্তের হাস হইয়াছিল। অতএব ইনকিউলেশনের তর্ক অগ্রাহা। স্বাস্থোরতির তর্কেরও মূল নাই। ডাক্তার ম্যাক্ভেল বলেন যে বিলাতে সাধারণ স্বাস্থ্যোরতির সঙ্গে সঙ্গে হাম ও হুপিং কফের হাস হয় নাই, অথচ বদন্তের হাদ হইয়াছে দেখিতে পাওয়া যায়; তবে পাস্থোন্নতির তর্ক। বসন্তের হ্রাদের কারণ যে সাধারণ স্বাস্থ্যোদ্বতি তাহা কিরূপে বলা যাইতে পারে? রেজিট্রার জেনারেলের ভালিকা পাঠে জানা যায় যে ১৮০৮ হইতে ১৮৮৭ দাল পর্যান্ত বিলাতের মৃত্যু সংখ্যার শতকরা ১

পরিমাণ হাস হইয়াছে, কিন্তু বসন্তের হাস শতকরা ৭২; ১৫ বৎসরের নিম্ন-বয়স্ক বালক বালিকাদের বসন্তজনিত মৃত্যুর বিশেষ হাস হইয়াছে। অতএব এই শতকরা ৭২ হইতে স্বাস্থ্যোল্লতির দক্ষন ১ বাদ দিলে যে অবশিষ্ট শতকরা ৬৩ থাকে, এই পরিমাণ হাদের কারণ টীকা ভিন্ন আর কিছুই নহে। কলি-কাতার মৃত্যু তালিকা পাঠ করিলেও জানা যায় ১৮৭৬--১৮৮০ দাল পর্য্যস্ত (টীকার আইনের পূর্ব্বে) যে মোট মৃত্যুহার ছিল,১৮৮৯ —১৮৯৩ পর্যান্ত মৃত্যুহার তদপেকা শতকরা ১০ ন্যন; কিন্তু বসন্তজনিত মৃত্যুহারের হ্রাস শতকরা ৬৬। সাধারণ স্বাস্থ্যোরতি জনিত শতকরা ১০ পরিমাণ হ্রাস বাদ দিলে শতকরা ৫৬ অবশিষ্ট থাকে; এই পরিমাণ হ্রাদের কারণ যে টীকা এ কথা অস্বীকার করা यांटेट शादा ना। जिका द्य दकवल मुका मःथा। द्वाम कदन कारा नट्ट, वमरस्त्र আক্রমণও নিবারণ করে। বাইথ্ বলেন সেফিল্ড এপিডেমিকের সময় যে সমুদর গৃহে বসস্তের আবির্ভাব হইরাছিল, তন্মধ্যে ভ্যাক্সিনেটেড্ ব্যক্তিদের শতকরা ২০ জন এবং "দোঁ দা"দের শতকরা ৭৫ জন আক্রান্ত হইয়াছিল। বিগত কলিকাতার এপিডেমিকের সময়যে সমুদয় ব্যক্তি বসন্ত রোগীর সংস্পর্শে আসিয়াছিল, তন্মধ্যে ভ্যাক্সিনেটেড্দের শতকরা ২.৯, ইনকিউলেটেড্দের শতকরা ১০.১,এবং সেঁ াদাদের শতকরা ৮২.৫ রোগাক্রান্ত হইয়াছিল। অনেকে বলিয়া থাকেন টীকা গ্রহণের পরেই অনেকে বসন্তাক্রান্ত হইয়াছিল। টীকার দিবদে কিম্বা পর দিবদে কাহারও কাহারও জর হইয়া পরে বদন্তের ইরণ শন निर्भे इहेबाइ व दे इंटन द्वारभंत कात्र की नरह, कि इ ইতিপূর্ফের দেহপ্রবিষ্ট বসন্তবিষ। টীকার দানা কিম্বা জর পঞ্চম দিবসের পূর্বের প্রকাশিত হয় না; তথন যে জর হয় তাহাও সামান্ত। ठीकाञ्चनिञ थावल जात नवम कि मनम मिवटमरे रहेशा थाटक। স্তরাং টীকার অব্যবহিত পরেই জর হইয়া বসন্তের ইরপ্শন নির্গত হইলে টাকার স্বন্ধে সমুদয় দোষ আরোপ করা অতি অর্কাচীনের কর্ম। তথন পর্য্যন্ত টীকার কোন প্রকার ক্রিয়ার আরম্ভ হয় নাই। রী-ভ্যাক-সিনেশনের ফল আরও প্রত্যক্ষ। বিগত কলিকাতা এপিডেমিকের সময় বাহাদিগের রী-ভ্যাকসিনেশন সকসেস্ফুল হইয়াছিল তাহাদের কাহারও বসন্ত इय नारे। क्यारमण शामभाजारण वह मःथाक कूलो, नाम् अ हिकिৎमक

বসস্তরোগীর পরিচর্য্যা ও চিকিৎসায় দিবারাত্র নিযুক্ত ছিল; তাহাদের সকলকেই পুনর্কার টীকা দেওয়া হয়। তাহাদের মধ্যে কাহারও বস্ত হয় नारे; किन्छ दर्कान दर्कान वमन्नदर्वाशीत मद्र द्य २।८ जन "दर्गाना" ज्ञा किन তাহাদেরই মধ্যে একজন বসন্তে আক্রান্ত হয়। বিলাতে মেটুপলিটান এসাই-লম বোড হাদপাতালে (Metropolitan Asylum Boards Hospitals) ৭৩৪ জন কুলী ও নাদ্র বসন্তরোগীর পরিচর্য্যায় নিযুক্ত ছিল। তাহাদের मस्या (य ১० জনকে রी-ভ্যাকসিনেট করা इम्र नाई, ভাহারা সকলেই বসন্তা-ক্রান্ত হইয়াছিল। কিন্তু অবশিষ্ট ৭২৪ ব্যক্তির কিছুই হয় নাই। এহলে বিগত কলিকাতা এপিডেমিকের সময় সংঘটিত কতিপয় ঘটনার উল্লেখ করিব। (১) বরাহনগরে একজন টীকা-বিরোধী ধনী সওদাগরের পরিবারে ১৪ জন লোক ছিল। তন্মধ্যে তিনজন কলিকাতা-জাত বধূ বাতীত কাহারও টীকা হয় নাই। "দোঁদা" ১১ জন সকলেই বসন্তাক্রান্ত হইল এবং তন্মধ্যে ৪ জনের মৃত্যু হইল। বধুগণ দিবারাত্রি রুগ স্বামী ও সন্তানদের শুশ্রষা করিয়া-ছিল; তন্মধ্যে একজনমাত্র অতি দামান্ত ভেরিওলয়েড (varioloid ) বা মডি-ফাইড স্থল পক্সে আক্রান্ত হ্ইয়া ১২ দিনের মধ্যেই আরোগ্য লাভ করে। দ্বিতীয় বধু সমত্ত্ববিস্থায় রুগ্ন স্বামীর নিকটে থাকিয়াও আক্রাস্ত হয় নাই; কিন্তু স্বামীর মৃত্যুর অতি অল্প দিবস পরে যে সন্তান প্রসব করে তাহার ২।৪টা মাত্র বসন্তের দানা নির্গত হইয়াছিল। (২)একজন উদ্ধৃতিন কর্ম্মচারীর গৃহে ২০ জন লোক বাদ করিত, তন্মধ্যে একটীমাত্র শিশু "দোঁদা" ছিল। পাড়ায় বসন্ত আবিভূতি হইলে সেই শিশুই আক্রান্ত হইয়া ২ সপ্তাহের মধ্যে প্রাণ-ত্যাগ করে। তাহার মাতার শৈশবে ভ্যাক্সিনেশন হইয়াছিল। শিশুকে দিবারাত্রি কোলে করিয়া স্তম্ম পান করাইতেন। কিছু দিন পর তাঁহার স্তনের চারি পাশে ২।৪ টা বসন্তের দানা নির্গত হইয়া অন্ধ দিবসের মধ্যেই শুক হইয়া গিয়াভিল। (৩) একজন প্রাসিদ্ধ, হোমিওপ্যাথিক চিকিৎ-সকের পরিবারে ১৫ জন লোক ছিল; তন্মধ্যে কেবল একটী ৬ মাসের শিশুর টীকা হয় নাই। বদন্ত এপিডেমিকের সমন্ত তাহারই উক্ত রোগে মৃত্যু হয়। বুদ্ধ চিকিৎসক আমার নিকট ছঃথ প্রকাশ করেন যে কলিকাতার একজন টীকাবিরোধী হোমিওপ্যাথের মন্ত্রণায় তিন শিশুকে টীকা দেন নাই। শিশুর

ভ্যাক্সিনেটেড মাতার স্তনে ২।৪টা মাত্র বসন্তের দানা নির্গত হইয়াছিল। (৪) একটা ভদ্র পরিবারে ৮ জন লোক ছিল; তন্মধ্যে একজন একবিংশ বর্ষীয় যবক ব্যতীত সকলেরই টীকা ছিল। ঐ যুবকের শৈশবকালে পানিবসম্ভ इहेब्रां जिल विन्या जाहारक ही का रम अया हम नाहे। धिनरिष्धिरक व नमस खे যুবকেরই বসন্তরোগে মৃত্যু হয়। (৫) একটা পল্লীতে ১৮টা পরিবারে বহু লোক বাস করিত। উক্ত পল্লীতে কেবল মাত্র একটা ৬ মাসের শিশু "দোঁদা" ছিল। সেই শিশুরই বসন্তরোগে মৃত্যু হয়। শিশুর মাতার শৈশবকালে দেশীর টীকা হইয়াছিল; তিনি ব্যতীত আর সকলেই পুনর্বার টীকা গ্রহণ করেন। পরিবারে পরিবারে পরস্পার যাতায়াত সত্ত্বেও আর কাহারও কিছুই হয় নাই। কেবল শিশুর মাতার শরীরে অতি দামান্ত ৪।৫টী বদন্তের দানা নির্গত হইয়া শীঘ শুদ্ধ হইয়া গিয়াছিল। কলিকাতা এপিডেমিকের সময় এইরপে টীকার বসন্তনিবারিণী শক্তির পরিচায়ক অনেক আশ্চর্যা ঘটনা সংঘটিত হইয়াছিল। এই ত গেল প্রথম তর্কের খণ্ডন। (২) দ্বিতীয় তর্ক এই, টীকার দারা লেপ্রসি, সিফিলিস্, এরিসেপেলাস্ প্রভৃতি নানাবিধ রোগ সংক্রামিত হয়, এমন কি মৃত্যু পর্যান্ত সংঘটিত হইয়া থাকে। ইহার উত্তরে এইমাত্র বলিলেই যথেষ্ট, যে কলিকাতায় প্রতি বৎসর ১৪।১৫ হাজার টীকা হইতেছে অথচ এইরূপ তুর্ঘটনার কোন প্রমাণ অদ্য পর্যান্ত পাওয়া যায় নাই। জনাথন হচিদন (Jonathon Hutchison) এই দমুদ্য বিষয়ে একজন বিচক্ষণ ব্যক্তি। তিনি টীকার দারা উপদংশ সংক্রামিত হওয়া সম্বন্ধে ৬টা মাত্র ঘটনার কথা জানেন। বিলাতের টীকাধাক্ষ ডাক্তার গাই (Guy) ১০,০০০ টীকা দিয়াছেন; তন্মধ্যে কেবল ৪টা শিশুর এরিদেপেলাস্ হইয়াছিল। ঐ শিশু-দের গৃহের দল্লিকটে তথন ঐ রোগের প্রাত্নভাব ছিল,এবং ঐ রোগগ্রস্ত একটী শিশুকে ডাক্তার গাইর টীকার অ'ড্ডায় লইয়া আসিয়াছিল। স্থতরাং কদাচিৎ २।> यु विषि कथन ७ वितामा विष्य हा, जो होत को त्र कि स এরিদেপেলাসগ্রস্ত রোগীর কিম্বা ঐ রোগ-বীজ-সংলিপ্ত ল্যান্সেটের সংস্পর্ম। কিন্তু সামান্ত ক্ষোটক অস্ত্র করিলেও ত এইরূপ এরিদেপেলাস হইয়া থাকে। তাই বলিয়া স্ফোটকের অস্ত্র চিকিৎসা কে নিবারণ করে ? যাহা হউক, সামান্ত ষ্মন্ত্র চিকি ৎসায় যে নিয়ম পালন করা হয়, টীকা সম্বন্ধেও সেইরূপ করিলে

কোন প্রকার ছ্র্বটনার সন্তাবনা নাই। এই ত গেল দ্বিতীয় আপন্তি।

(৩) তৃতীয় আপন্তি বসন্তের সংক্রামকত্ব সম্বন্ধে। কিন্তু এ বিষয়ে কোন প্রকার সন্দেহ থাকিতে পারে না। বরাহনগর কান্তে উল্লিখিত হইয়াছে যে গর্ভস্থ শিশুরও পরিত্রাণ নাই। তবে কাহারও রোগ হয়, কাহারও হয় না, ইহার কারণ ইন্ডিভিজুরেল সদেপ্টিবিলিটি (individual susceptibility) বা স্বাভাবিক ইমিউনিটি (natural immunity)। জ্বর, কাস, প্রভৃতি সমুদয় রোগ সম্বন্ধেও এই নিয়ম। কেবল আইন্যোলেশন (isolation) দ্বারা রোগ নিবারণ করিবার প্রস্থাবও অসার। এদেশে তাহার কোন সন্তাবনা নাই। বিলাত হইতে সম্প্রতি আর একটা তর্কের তরঙ্গ আসিয়া কাহারও কাহারও অস্তর আন্দোলিত করিয়াছে। টাকাতে নাকি ধর্ম্মহানি হয়। এ বিষয়ে অধিক কথা বলিবার প্রয়োজন নাই। সম্প্রতি নবদ্বীপে সমাগত পণ্ডিতমণ্ডলী এক বাক্যে টাকা প্রথার অনুমোদন করিয়াছেন। ধ্রম্বন্ধিকত শাক্তের প্রস্থেত আছে:—

ধেনুস্তত্য মৃস্বরিকা নরাণাঞ্চ মস্থরিকা।
তজ্জলং বাহুমূলাচ্চ শস্ত্রাস্তেন গৃহীতবান্ ॥
বাহুমূলেচ শস্ত্রানি রক্তোৎপত্তি করাণিচ।
তজ্জলং রক্তমিলিতং ক্যেটিক জব সম্ভবং॥

# চতুর্থ পরিচ্ছেদ।

ঝাইমটিক্ ডিজিজ্ (zymotic disease),
মাইজো-প্যারাসাইটিক্ ডিজিজ্ (micro-parastic disease),
বা মাইজোবজনিত রোগ।

উপরোক্ত রোগের শ্রেণী বিভাগ করা কঠিন। আপাততঃ এই সমৃদয়
রোগ ৭ শ্রেণীতে বিভক্ত করা যায়ঃ—>। ইরপ্টিভ্ ফিভার (eruptive
fevers); ২। স্নায়ুমণ্ডল সংক্রান্ত (affecting the nervous system);
০। শ্বাস যন্ত্র সংক্রান্ত (affecting the respiratory system);
৪। সেপ্টিসিমিয়া সংক্রান্ত (septicæmic); ৫। টিউবার্কিউলার
(tubercular), ৬। ম্যালেরিয়া (malaria); ৭। ইণ্টেস্টিন্ সংক্রান্ত
(primarily affecting the intestine)।

# ১। ইরপ্টিক্ ফিভার।

প্রিডিস্পোজিং কজ্ (predisposing cause)—অনিয়মিত বা অমুপযুক্ত আহার, অতিরিক্ত পরিশ্রম, ত্র্রলতা, স্কর্ভি (scurvy), ইত্যাদি কারণে শ্রীর ইরপ্টিভ্ ফিভারে আক্রান্ত হইবার উপযোগী হয়।

#### (১) वमछ।

এক্দাইটিং কজ (exciting cause)—এক প্রকার মাইজো-ককাদ্ (streptococcus variolæ et vaccinæ) নৃবদন্ত ও গোবসন্তের বীজে পাওয়া যায়। কুকশ্যাক্ষ বলেন টীকার বীজ হইতে এই মাইজোককাদ্ পৃথক করিয়া লইলে দেই বীজ কিছুই ফলদায়ক হয় না। কিন্তু ঐ মাইজো-ককাদ্ই যে বদন্ত উৎপাদন করে তাহার বিশেষ প্রমাণ এখনও পওয়া য়ায় নাই।

विञ्जि প্রণালী (mode of propagation)—রোগীর গাত্র, পূঁ य, মামজী বা স্ক্যাব (scab) ও মল মূত্রাদি ডিশ্চাজে, এবং নিকটস্থ বায়ু ও শ্যা বস্ত্রাদিতে সংক্রামক বিষ বিদ্যমান। চিকিৎসক, পরিচারক, কিম্বা বন্ধু বান্ধবদিগের বস্ত্রে ঐ বিষ সংলগ্ন হইয়া স্থান হইতে স্থানাস্তরে সংক্রামিত হয়; অথচ তাহাদের কেহই জানিতে পারে না যে তাহারাই রোগের বীজ ছড়াইয়া বেড়াইতেছে। ধোপা দরজী ও বস্ত্রব্যবসায়ীর গৃহে বসন্ত রোগ আবির্ভুত হইলে, তাহাদের বস্ত্রে সংক্রামক বিষ সংলগ্ন হয়। ছগ্ধ কিম্বা থান্য বিক্রেতাদের দারাও এইরূপে রোগ সংক্রামিত হইয়া থাকে। একদা এক বস্তা চিনি বিক্রয়ার্ম স্থানান্তরে প্রেরিত হয়। সেই বস্তায় বসন্ত রোগীর স্যাব্ছিল। ঐ চিনি ব্যবহার করিয়া অনেকে বসস্ত রোগে আক্রান্ত হইয়াছিল। বাজার প্রভৃতি লোক সমাগমের স্থান রোগ বিস্তার করিবার একটা প্রধান উপায়। মক্ষিকা দ্বারা এই রোগ অনেকদূর পর্যান্ত ব্যাপ্ত হইতে পারে। গত বৎসরের কলিকাতার বসন্ত এপিডেমিকের মূল একজন ছাগবিক্রেতা। সে রুগ্ন অবস্থায় কালীঘাটে ছাগ বিক্রয় করিতে আদে; সেই সময়ে তথায় যাত্রীর ভিড ছিল। যাত্রীদের মধ্যে কেহ কেহ ঐ ছাগ বিক্রেতার সংস্পর্শে আসিয়া রোগাক্রান্ত হয়, অথবা রোগ বীজ গ্রহণ ও বহন করে, ডাক্তার সিমসনের এই ধারণা। অনেক বেশ্যালয় হইতেও এই রোগ ব্যাপ্ত হইয়া থাকে। মৃতদেহবহন রোগ বিস্তৃতির আর একটা কারণ। কলিকাতায় মুসলমানদের মধ্যে একটী শালাবৃত কাষ্ঠ "কফিনে" শব বহনের প্রথা আছে। শব সমাধির পর সেই "কফিন" মদজিদে আনিয়া রাথা হয়। সেই "কফিন"ই সকলে ব্যবহার করিয়া থাকে। হিন্দুদের মধ্যে আরোগ্যের পর রোগীর বস্ত্রাদি গঙ্গায় ভাসাইবার প্রথা আছে। মূর্থ দেশীয় টীকাদার ব্রাহ্মণদের দোষেও অনেক সময় রোগ ব্যাপ্ত হয়। রোগীর স্ক্যাব্ সমস্ত পড়িয়া যাউক আর না যাউক, সমস্ত ক্ষত শুষ্ক হউক আর না হউক, তাহারা ২১ দিনে কিস্বা ১৪ দিনে রোগীর আরোগ্য স্নানের ব্যবস্থা করিবেই করিবে। রোগীগণ এইরূপে স্বীয় আরোগ্য কল্পনা করিয়া স্বচ্ছন্দে ইতস্ততঃ বিহার এবং চতুদ্দিকে রোগ বিস্তার করে। গর্ভন্থ শিশুতেও এ রোগ সংক্রামিত হয়। लक्क १ - इनकू त्वभन शित्रिय् २२ मिन। इनिमि एय पिछ, रके ज

(initiative stage) বা প্রথম জর, ২ দিন। ইরপ্টিভ্ ফেজ (eruptive stage) বা দানা নির্গমন, ৭।৮ দিন অথবা প্রথম জরের ৮।১০ দিন পর পর্যান্ত। ডেসিকেশন (dessication) এবং ডিক্রেস্টেশন টেজ (decrustation stage) বা মামড়ী গঠন ও মামড়ী পতন—প্রথম জরের একাদশ দিবস হইতে দানা শুক্ত হইতে থাকে, চতুর্দশ দিবসে মামড়ী উঠিতে থাকে, এবং সাধারণতঃ ২১ দিনে সমস্ত পড়িয়া যায়। অনেক স্থলে ৫।৬ সপ্তাহ পর্যান্ত মামড়ী চর্ম্মনংলগ্ন থাকে। এই জন্ম বসন্ত রোগীকে ৬ সপ্তাহ পর্যান্ত স্বতন্ত ভাবে রাখিবার নিয়ম। বসন্ত দানার বিশেষ লক্ষণ অফিলাইকেশন (umbilication) বা নাভির আকার ধারণ; জরের সপ্তম কি অইম দিবসে দানার মধ্যস্থল নিয় এবং চতুম্পার্ম উচ্চ হয় বলিয়া ইহার উক্তর্রপ আকার হয়। বসন্ত রোগীর মৃত্যু সংখ্যা শতকরা ১৫ হইতে ৩০। সংক্রোমক আকার হয়। বসন্ত রোগীর মৃত্যু সংখ্যা শতকরা ১৫ হইতে সমৃদয় মামড়ী পড়িয়া যাওয়া ও সমৃদয় কত শুক্ত হওয়া পর্যান্ত; অর্থাৎ গড়ে৬ সপ্তাহ পর্যান্ত এই রোগ সংক্রামক।

নিবারণের উপায়—বাদীতে বসন্ত হইলে নিম লিখিত নিয়ম পালন করিতে হইবে:—

- (১) রোগের আরম্ভমাত্র স্বাস্থ্যরক্ষক বা চিকিৎসকদের পরামর্শ গ্রহণ করা কর্ত্তব্য।
- (২) রোগীকে হাসপাতালে পাঠান সম্ভবপর হইলে তদ্বিষয়ে বিলম্ব করা অন্নচিত।
- (৩) রোগীকে হাসপাতালে প্রেরণ করা অসম্ভব হইলে, সমুদয় গৃহ কিম্বা রোগীর গৃহ জনশৃত্য করা বিধেয়। কেবল শুশ্রাফারী কতিপয় ব্যক্তি টীকাগ্রহণ পূর্ব্বক থাকিতে পারে।
- (৪) বাটীতে কুঠরী অধিক থাকিলে, সর্ব্বোচ্চতলে রোগীকে রাথা কর্ত্তব্য। কার্পেট, বাল্প প্রভৃতি সমুদয় অনাবশ্যকীয় সরঞ্জাম স্থানান্তরিত করিতে হইবে। রোগীর ব্যবহারের জন্ম এক প্রস্তু স্বতন্ত্র তৈজ্ঞস পত্র রাথিতে হইবে। মন্ধিকা নিবারণের জন্ম রোগীকে মশারির ভিতর রাথা কর্ত্তব্য।

- (৫) শুশ্রমার জন্ম ছইটা লোকের প্রয়োজন। শুশ্রমাকারীদিগকে বাহিরে যাইবার পূর্ব্বে বস্ত্র ত্যাগ করিয়া হস্ত পদ ডিদ ইন্ফেক্ট্ করিতে হইবে। যাঁহারা রোগী দেখিতে আদিবেন তাঁহাদের জন্ম একথানি ভারি চাদর রাখিতে হইবে। দেই চাদরে তাঁহারা স্বীয় বস্ত্র ঢাকিয়া রোগী দেখিবেন, এবং বাহিরে আদিবার পূর্ব্বে ঐ চাদর ত্যাগ করিয়া হস্ত পদ ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করিবেন।
- (৬) যদি বাটীর অপর সমুদয় লোক স্থানান্তরিত করিবার স্থ্রবিধা না থাকে, তাহা হইলে ঐ গৃহবাসী কর্মচারী, দোকানী প্রভৃতির কর্মপ্রানে গমন কিম্বা স্কুল প্রভৃতি সাধারণের সমাগম স্থানে যাতায়াত ৬ সপ্তাহের জন্ম স্থাতি করিতে হইবে।
  - (१) নাপিত, ধোপা, দরজী প্রভৃতির প্রবেশ নিষেধ।
- (৮) রোগী সাধারণের পাইখানা,ও স্নানের ঘাট প্রভৃতি ব্যবহার করিবে না।
- (৯) সমুদয় স্থাব পজ়িয়া যাওয়া ও সমুদয় অল্সার আরোগ্য হওয়া পর্যাস্ত, অর্থাৎ গড়ে ৬ সপ্তাহ পর্যাস্ত, রোগীকে বাহির হইতে দেওয়া উচিত নয়।
- (১০) মল মূত্রাদিতে ওয়ান্পার্শেট করোদিভ্ সরিমেট লোশন ঢালিতে হইবে। কফ্, পূঁম, ইত্যাদি স্থাকড়ায় মুছিয়া ঐ স্থাকড়া দয় করিতে হইবে। সর্পাঙ্গে কার্বলাইজ্ড্ পোস্তের তৈল (carbolised poppy oil) মাথান উচিত। এক আউন্স তৈলে একড্রাম পর্যান্ত কার্বলিক য়্যাসিড্ ঢালা যায়।
- (১১) ভ্রেণ ও পাইখানায় ওয়ান্ পার্দে তি করোসিভ্ সবি মেট লোশন বা বাজারের কার্বলিকের স্যাটিউরেটেড্ সলিউশন (saturated solution of crude carbolic) ঢালিতে হইবে।
- (১২) শুশ্রষাকারীদের বস্ত্র রোদ্রে দিবার পূর্ব্বে ভালরূপে গরম জলে সিদ্ধ করিতে হইবে।
- (১৩) রোগীর তৈজদ পত্রাদি প্রথমতঃ কার্ব লিক লোশনে ধুইয়া তৎপর ভদ্ধজলে ধুইতে হইবে।
- (১৪) বাহিরে এমন ভাবে গন্ধক জালাইতে হইবে, যাহাতে গন্ধকের ধূম রোগীর গৃহে প্রবেশ করিয়া কন্ত উৎপাদন না করে।

- (১৫) রোগান্তে রোগীকে কার্ব লাইজ্ড্পোল্ডের তৈল মাথাইয়া প্রতি-দিন গরম জলে মান করান কর্ত্ব্য।
- (১৬) রোগীর আরাম কিম্বা মৃত্যুর পর, গদি, মশারি ইত্যাদি দগ্ধ করিতে হইবে। মৃল্যবান বস্ত্রাদি গরম জলে অর্দ্ধ ঘণ্টাকাল সিদ্ধ করিবে অথবা উষ্ণ জলীয় বাম্পে ডিস্ইন্ফেক্ট করিবে।
- (১৭) বোগীর গৃহ ডিস্ইন্ফেক্ট্ করিবার পূর্বেজন প্রাণী শৃন্য করিতে হইবে, এবং কার্বলিক বা ফিনাইল পূর্ণ গার্ডেন-সিরিঞ্জ (garden syringe) দারা দেয়াল, ছাদ প্রভৃতি স্প্রে করিয়া সমুদয় দার জানালা ও ছিদ্র রুদ্ধ করিতে হইবে। ক্লোরীণ দারা শোধন করিবার স্থযোগ থাকিলে তাহাই করা উচিত। কিন্তু সাধারণতঃ গন্ধকই দগ্ধ করা হইয়া থাকে। ১০০০ ঘন ফুট পরিমিত গৃহের বায়ু শোধন করিতে হইলে ১ পাউও গন্ধক মিথিলম্পিরিটসিক্ত করিয়া প্রজ্ঞানিত করিতে হইবে। দার জানালা ৬ ঘণ্টা-কাল রুদ্ধ রাথিলেই চলে।
- (১৮) ডিদ্ইন্ফেক্শন ক্রিয়া সমাধা হইলে দেয়ালের পলস্তা চাঁচিয়া ফেলিয়া চূণকাম করিতে হইবে।
- (১৯) রোগীর বাটীতে যাহারা বাস বা যাতায়াত করে, বা যাহারা সন্নি-কটে থাকে, তাহাদের প্রত্যেককে টীকা দেওয়া কর্ত্তব্য।
- (২০) বসন্ত এপিডেমিকের সময় সমস্ত গ্রাম বা সহরে বাড়ী বাড়ী টীকা দেওয়া উচিত।
  - (২১) মেলা প্রভৃতি বহু লোক সমাগমের স্থানে যাওয়া অনুচিত।
- (২২) জল ও ছগ্ধ সিদ্ধ করিয়া পান করিবে, এবং অনিয়মিত ভোজন, দূবিত বায়ু সেবন প্রভৃতি যে সমুদ্য কারণে শরীর রোগাক্রান্ত হইবার উপ-বোগী (predisposed) হয়, সে সমুদ্য বর্জন করিবে।

### (२) श्राम।

এক্সাইটিং কজ্—মাইক্রোব বিশেষ যে এই রোগের কারণ তাহা এক প্রকার নিশ্চিত। হামরোগীর রক্তে, চর্মের ক্যাপিলারীতে, ইরপ্শনে

বসন্ত ও টীকার বিশেষ বিবরণ জানিতে হ্ইলে আমার ''অল পক্স ও ভাাক্সিনেশন'' নামক গ্রন্থ পাঠ করা উচিত।

এবং থ্থুতে এক প্রকার মাইক্রোককাদ্ পাওয়া যায়; কিন্তু উক্ত মাইক্রোব রোগের কারণ বলিয়া নির্দ্ধারিত হয় নাই।

বিস্তৃতি প্রণালী—হাম রোগীর থুথু, ঘর্ম ও চর্মের ময়লায় সংক্রামক বিষ থাকে। কেহ কেহ বলেন, ভিজা ছোবড়া হইতে হামের উৎপত্তি। হাম রোগীর ছোবড়া বিছানায় হামের মাইক্রোব সংলগ্ন থাকিয়া সময় ও অবস্থা বিশেষে পুনর্ম্বার রোগ উৎপাদন করিতে পারে। এই রোগের বীজ অনেক দ্র পর্যান্ত চালিত হয়। অভিভাবক ও শিক্ষকদের অসাবধানতাবশতঃ সাধারণতঃ বিদ্যালয়ে প্রেরিত রোগাক্রান্ত শিশুদের দারাই এই রোগ বিস্তৃত হইয়া পড়ে। তদ্ভিয় ধোপা, দরজী প্রভৃতি দারাও এই রোগ ব্যাপ্ত হয়।

প্রকোপের কাল—শীত ও বসন্তকালেই এই রোগের প্রাত্র্ভাব।

লক্ষণ —(১) ইনকুবেশন পিরিয়ড, পার্ক্ দের মতে ৮ দিন, ব্রাইথের মতে ১১ দিন। ইনিসিয়েটিভ ঠেজে, বা জ্বর—সাধারণতঃ ০ দিন, কথনও বা ৪।৫ দিন। ইরপটিভ ঠেজে, —ইরপ্শন্ উদ্গানের পর দিনই খুব অধিক হয়, জ্বের সপ্তম দিনেই প্রায় মিলাইতে থাকে। অর্দ্ধ চক্রাকৃতি ইরপ্শন প্রথমতঃ মুথে, তৎপর টুল্লে এবং অবশেষে হন্ত পদাদিতে লক্ষিত হয়। এই রোগে মৃত্যু দিতীয় সপ্তাহেই অধিক। বিলাতে ৫ বৎসরের নিম্ন বয়ক্ষ শিশুদের প্রতি সহস্রে প্রায় ০ জন এই রোগে মরিয়া থাকে। কলিকাতায় ১৮৮৯ হইতে ৯০ সাল পর্যন্ত হামজনিত মৃত্যু সংখ্যা ২৫০। সংক্রোমক অবস্থা—জ্বারন্ত হইতে সর্দ্দি সম্পূর্ণরূপে আরোগ্য হন্তয়া এবং থোলস উঠিয়া যাওয়া পর্যান্ত, অর্থাৎ ২।৪ সপ্তাহ।

নিবারণের উপায়—প্রথম দিদ অবস্থাতেই হাম দংক্রামক; স্ক্তরাং
এই রোগের বিস্তৃতি নিবারণ করা অতি স্কর্চন। রোগীকে পৃথক ভাবে
রাথা উচিত; ইহার থুথু ঘর্ম ইত্যাদি পুরাতন জীর্ণবন্ধে মুছিয়া, তৎসমুদয় দয়
বা ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করা উচিত,এবং মলমূত্রাদি ও ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করা আবশ্যক।
বিছানা ইত্যাদি উত্তমরূপে ডিস্ইন্ফেক্ট্ করা বিধেয়। ছাত্রদের মধ্যে
রোগের আবির্ভাব হইলে সুল বন্ধ করা উচিত। ২।৪ সপ্তাহ পর্যন্ত, অর্থাৎ

চর্ম্ম সম্পূর্ণ রূপে উঠিয়া যাওয়া ও দর্দ্দি কাদি সম্পূর্ণ রূপে আরোগ্য হওয়া পর্যান্ত রোগীকে পৃথক রাথা উচিত।

রুবিওলা বা জম্মণ মীস্ল্স্(rubeola or German measles)— কতকটা হামের মতন; কিন্তু ইহাতে তত দদ্দি হয় না এবং ইহা দংক্রামক নহে।

## (৩) স্কালে টিনা (scarlatina)।

এই রোগ আমাদের দেশে প্রবল নহে, স্কুতরাং ইহার বিস্তারিত আলোচনা করা নিপ্রয়োজন। বিলাতে এই রোগ থুব প্রবল। ক্লাইন বলেন
মন্ত্রেরে ন্তার গরুর এক প্রকার স্বালেটিনা হইয়া থাকে। উভয়ের রোগগ্রস্ত টিশুতে তিনি এক প্রকার মাইক্রোককাস্ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। ঐ
মাইক্রোককাস্ হন্ধে বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। উক্ত রোগাক্রান্ত গরুর হন্ধ পানবশতঃ নাকি মেরিলিবোনে (Marylebone) স্বালেটি ফিভার এপিডেমিক
আকার ধারণ করিয়াছিল।

### (8) চিকেন, প্রু (chicken pox)।

পানিবসন্ত বসন্তের ভায় সংক্রামক। ইহার ইন্কুবেশন পিরিয়ড্
১০ হইতে ১৭ দিন (ঝিমসেনের সাইক্রোপীডিয়া অনুসারে); কিন্তু অনেক
হলে ৪ দিনের পর রোগ প্রকাশিত হইতে দেখিয়াছি। ইনিসিয়েটিভ্ ফেজ
২৪ ঘণ্টা। ইরপ্টিভ ফেজ, সাধারণতঃ ৪।৫ দিন। ৪।৫ দিন পর
দানা শুক্ষ হইতে থাকে। চিকেন্ পক্স রোগীকে ১৪ দিন কোয়ারেণ্টাইনে
(quarrantine) বা পৃথক ভাবে রাখিলেই চলে। রোগীর শয়্যা, বস্ত্র ও
গৃহ প্রভৃতি রীতিমত ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করা উচিত।

# ২। নার্ভাদ্ দিটেম্ সংক্রান্ত রোগ।

(affecting the nervous system)

#### (১) (ऐटिनोन् (tetanus)

প্রিডিস্পোজিং কজ,—অতিশয় শৈত্যের সংস্পর্শ, দিক্ত ভূমিতে শয়ন বা কোন প্রকার আঘাত প্রাপ্তি।

এক সাইটিং কজ —এক প্রকার ব্যাসিলাস্। ইঁহর প্রভৃতি জীবের চর্মের নীচে ব্যাদিলাদ্পূর্ণ বাগানমৃত্তিকা প্রবেশ করাইয়া, ধরুইয়ার রোগীর ক্ষত স্থানের অংশ গীনিপিগের চর্ম্মের নিয়ে প্রবেশ করাইয়া, এবং ধ্রুষ্টয়ার-গ্রস্ত নবজাত শিশুর নাভিদেশের কিঞ্চিৎ টিশু লইয়া কোন জীবের চর্মের নিম্নে প্রবেশ করাইয়া, ধর্ষ্টকার রোগ উৎপাদন করা হইয়াছে। ঐ ব্যাদিলাস इहेट एएए निम नामक विष पृथक कतिया जीवामण्ड व्यादन कताहिल एएएमाम জন্মে। এক ব্যক্তি একটা কাষ্ঠথণ্ডে বিদ্ধ হইয়া ধনুষ্টস্কারে আক্রান্ত হয় এবং ঐ রোগেই তাহার মৃত্যু হয়। তাহার স্ত্রী অতি যত্ন পূর্ব্বক ২॥০ বংসর পর্যান্ত ঐ কাষ্ঠথণ্ড রাখিয়াছিল। ঐ কাষ্ঠথণ্ডে জীবদেহ বিদ্ধ করিয়া এত দীর্ঘকাল পরেও ধুরুইঙ্কার উৎপাদন করা হইয়াছিল। গ্রানিউলেশনের (granulation) প্রারম্ভাবস্থায় ক্ষতস্থান ব্যাসিলাস্ কর্তৃক আক্রান্ত হয়; কিন্তু গ্রানিউলেশন যে সময় সতেজভাবে বর্দ্ধিত (actively granulating) হইতে থাকে, তথন ক্ষতস্থানে ব্যাদিলাস প্রবেশ করিবার সম্ভাবনা বুড় থাকে না। এই ব্যাসিলাস ধহুইঙ্কার রোগীর ক্ষতস্থানে, বাসস্থানের ধূলায়, ভূমির উপরি-ভাগে, রাস্তার অপরিকার স্থানে, অশ্ববিষ্ঠায় বা অশ্ববিষ্ঠামিশ্রিত বাগান-মুত্তিকার পাওয়া যায়। অনেক সময়ে ডাক্তারদিগের অস্ত্র কিম্বা ধাতীদের কাঁচি হইতে এই রোগ সংক্রামিত হয়। একটি ইক্রেজার (ecraseur) দারা ष्यत्नक श्रुणि ष्यर्थक नशुः नक कता इय ; भ ममूनय ष्यर्थत एउटिनाम् तार्ग মৃত্যু হয়। কিন্তু ফুটন্ত তৈলে ঐ অন্ত্র তপ্ত করিয়া ব্যবহার করিবার পর হইতে কোন অশ্বের ঐ রোগ হয় নাই। কলিকাতার কোন সম্রান্ত ব্যক্তির গৃহে প্রতিবৎদর একটা শিশু জন্মগ্রহণ করিয়া পঞ্চম দিবদে ধহুইঙ্কারাকান্ত হইত এবং ষষ্ঠ দিবদে মানবলীলা সম্বরণ করিত। যদবধি আমি স্থতিকাগার উত্তমরূপে ডিদ্ইন্ফেক্ট করিতেছি এবং শিশুর অম্বিলাইকেল কর্ড (umbilical cord) ফুটন্ত জলে তপ্ত কাঁচি দারা কাটিয়া, ষ্টিরিলাইজ্ড্ কটন (sterilized cotton) ও ফুটন্ত স্থইট অয়েলে নিমগ্ন লিনেন (linen steeped in boiling sweet oil ) দ্বারা ব্যাণ্ডেজ করিতেছি, তদবধি একটা শিশুরও ध्रूष्ठेक्षात हम नाहै।

এই ত গেল টুমেটিক টেটেনাদের (traumatic tetanus ) कथा।

ইডিওপ্যাথিক টেটেনাদের অন্তিমে অনেকে বিশ্বাস করেন না। তাঁহারা বলেন অনেক সময় একটা আঁচড় কিন্ধা একটু খোঁচা গ্রাহ্ম হয় না; কিন্ধ ঐ আঁচড় বা খোঁচার স্থানে টেটেনাস ব্যাসিলাস প্রবিষ্ট হইতে পারে। তাঁহারা আরও বলেন কোন ক্ষত না হইলেও কেবল আঘাত হইতে টেটেনাস উৎপন্ন হয়। অতএব তাঁহাদের মতে সমুদ্য টেটেনাসই টুমেটিক।

ধনুফক্ষার নিবারণ—(১) ক্ষত স্থান সর্বাদা পরিষ্কার রাখিবে এবং ম্যাণিটনে প্টিক দারা ধৌত করিবে।

(২) ধন্ত ইঙ্কার রোগীর ক্ষত স্থানের পূ্য বস্ত্রথণ্ডে মুছিয়া ঐ বস্ত্র দগ্ধ করিবে বা ডিস্ইনফেক্ট করিবে।

- (৩) শিশুর জন্মের পূর্বের স্থৃতিকাগার উত্তমরূপে ডিস্ইন্ফেক্ট্ করিয়া রাথিবে। জন্মের একঘণ্টা কিম্বা অন্ততঃ অর্দ্ধঘণ্টা পূর্বে হইতে নাড়ী-চ্ছেদের কাঁচি জলে সিদ্ধ করিতে হইবে। ফাইভ পারসেণ্ট কার্ব লিক লোশনে হস্ত ধৌত করিয়া, ঐ কাঁচি দ্বারা নাড়ীচ্ছেদ করিবে। শিশুর নাড়ী আবরণ করিবার ম্যাকড়া ফুটত্ত স্থইট অয়েলে ডুবাইয়া, ঈষৎ উষ্ণ থাকিতে ইহা দ্বারা নাড়ী আবৃত্ত করিবে, এবং পরিস্কার ধৌত বস্তে ব্যাণ্ডেজ করিবে। নাড়ীর আবরণ-বস্ত্রথণ্ড প্রতিদিন না খুলিয়া কেবল ব্যাণ্ডেজ পরিবর্ত্তন করা উচিত। যতদ্র সম্ভব নাড়ীর ক্ষতস্থান বায়ু-সংস্পর্শ-রহিত করা আবশ্যক। স্থবিধা থাকিলে ষ্টেরেলাইজ ড্ ব্যাণ্ডেজ্ ও কটন ব্যবহার করা কর্ত্তব্য।
- (৪) ঠাণ্ডা ও দ্যিত বায়ু প্রভৃতি প্রিডিস্পোজিং কজ্ নিবারণ করা উচিত। কলিকাতায় যে সব নবজাত শিশুর ধনুষ্টন্ধার রোগে মৃত্যু হয়, তাহাদের মধ্যে জনেকে পঞ্চম বা ষষ্ঠ দিবসের স্নানের পরেই রোগাক্রান্ত হয়, এইরূপ বিবরণ প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই স্নান যে প্রণালীতে দেওয়া হয়, তাহাতে ঠাণ্ডা লাগিবার খুব সম্ভাবনা।
- (৫) অর্থশালা বাসস্থান হইতে দূরে নির্দ্মাণ করা উচিত, এবং অশ্ববিষ্ঠা। স্বরায় স্থানান্তরিত করিবার ব্যবস্থা করা উচিত। বড় বড় সহরে ইন্ধিনারেটার যন্ত্রে অশ্ববিষ্ঠা দগ্ধ করা আবশ্যক।

<sup>(</sup>২) হুপিং কফ্ (whooping cough)।

এক্ সাইটিং কজ্ —কেহ কেহ বলেন ছুপিং কফ্ রোগীর শ্লেমায়

ডিম্বাকার মাইক্রোককাদ্ পাওয়া যায়। এই রোগ বীজ অতিশয় সংক্রামক।
একজন স্ত্রীলোক তাঁহার হুপিং কলাক্রান্ত একটী শিশুকে লইয়া আমার
নিকট আদিয়াছিলেন এবং আমার একটী হুই মাদ বয়য়া বালিকার শয়নগৃহে
একঘণ্টা কাল ছিলেন। ইহার ৩ দিবদ পর আমার বালিকাটী হুপিং
কফে আক্রান্ত হইয়া ৪ সপ্তাহের মধ্যে মৃত্যুমুথে পতিত হয়। দেণ্ট
হেলেনা নামক জাহাজে একদা কতিপয় শিশু এই রোগে আক্রান্ত হয়। ঐ
জাহাজের বস্ত্রাদি নগরে প্রেরিত হইবার পর, তথায় ঐ রোগের প্রাহর্ভাব
হইয়াছিল।

ইন্কুবেশন পিরিয়ড্ প্রায় ৬ দিন। ইন্ফেকটিভ্ পিরিয়ড, "হুগ" শব্দ না সারা পর্যান্ত।

নিবারণ প্রণালী—(১) রুগ শিশুকে স্বতন্ত্র গৃহে রাখা এবং (২) গৃহ বস্তাদি ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করা।

(৩) হাইড্রোফোবিয়া বা রেবিস্ (Hydrophobia or rabies)।

এক সাইটিং কজ — কেহ কেহ কগ্ন কুকুরের স্পাইনেল কর্ডে মাইক্রোককাদ্ পাইয়াছেন; কিন্তু এ যাবৎ রোগোৎপাদক কোন মাইক্রোবের আবিষ্কার হয় নাই। উক্ত স্পাইনেল কর্ড হইতে প্যাষ্টিয়োর (Pasteur) বিষ পৃথক করিয়াছেন।

নিবারণ প্রণালী—কুকুরের দংশন নিবারণের জন্ম কোন কোন দেশে কুকুরকে মুখোস (muzzle) পরাইয়া রাখিবার জন্ম রাজবিধি প্রবর্ত্তি হইয়াছে। প্যাষ্টিয়োর হাইড্রোফোবিয়ার টীকা প্রচলিত করিয়াছেন; এবং ডাক্তার বীসন (Buisson) রয়ো-টার্কিষ বাথ (Russo-Turkish bath) দ্বারা এই রোগ নিবারণের উপায় উদ্ভাবিত করিয়াছেন।

৩। রেম্পাইরেটরী প্যাদেজ ্বা শ্বাসযন্ত্রসংক্রান্ত রোগ। এপিডেমিক নিউমোনিয়া (Epidemic Pneumonia)

প্রিডিস্পোজিং কজ — জর, হাম, বসস্ত, রিউমেটিস্ম্, কিড্নী ডিজিজ, হাট ডিজিজ প্রভৃতির পর নিউমোনিয়া হইতে পারে। একবার

নিউমোনিয়া হইলে পুনর্স্বার হইবার খুব সম্ভাবনা। হিম, ব্রন্ধাইটিদ্, চেষ্টে আঘাত, অনিষ্টকর চূর্ণ-পূরিত বায়ু সেবন প্রভৃতিও নিউমোনিয়ার গৌণ কারণ।

এক্সাইটিং কজ্—অনেকের মতে নিউমো-ককাদ্ (pneumo-coccus) একিউট্ কুপাদ্ নিউমোনিয়ার মুখ্য কারণ। পঞ্জাবে নিউমোনিয়া এপিডেমিকের সময় জাইলদ্(G. Giles) রোগীর রক্ত ও ককে এই মাই-কোব প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। এই রোগবীজ যে সংক্রামক তাহার অনেক প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে। একদা মিড ল্ দ্বর (Middlesborough) নামক স্থানে এক ব্যক্তির দারা অন্ত ব্যক্তিতে, এইরূপ ১০০০ ব্যক্তিতে, এই রোগ সংক্রামিত হয়; তন্মধ্যে ৩৬৯ জনের মৃত্যু হইয়াছিল। পঞ্জাবেও এইরূপ এপিডেমিক নিউমোনিয়া হইয়াছিল।

নিবারণ প্রণালী—রোগীর রক্ত কার্বলিক লোশন পূর্ণ পাত্রে নিক্ষেপ করা উচিত এবং গৃহ, বস্ত্র, ড্রেণ প্রভৃতি ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করা উচিত। গৃহে কোন আবর্জনা রাখা উচিত নয়।

# 8। দেপ্টিদিমিয়া দংক্রান্ত (Septicæmic)।

## (১) এরিসিপেলাস (erysipelas)।

এক সাহিটিং কজ —এক প্রকার ট্রেপ্টো-ককাস্ (strepto-coccus erysipelatosus) এই রোগের কারণ বলিয়া নির্দ্ধারিত হইয়াছে। রোগীর চর্ম্মে, এরি,সিপেলাস্ বৃলীর (bullae) রসে, এবং চর্মন্থ লিম্ফেটিক প্রবাহে, এই ককাস্ পাওয়া যায়; কিন্তু রক্তে পাওয়া যায় না। কেহ কেহ বলেন এরিসিপেলাস্ সর্বালই আঘাতমূলক বা টুমেটিক, এবং ইহার মাইক্রোব লক্ষিত বা অলক্ষিত ক্ষত স্থান দিয়া দেহে প্রবেশ করে; কেহ কেহ বলেন, এই মাইক্রোব শাসনালী দিয়াও প্রবেশ করে এবং ইডিওপ্যাথিক এরিসিপেলাস্ জন্মায়। টীকা দারা সঞ্চারিত এরিসিপেলাসের (inoculated erysipelas) ইন্কুবেশন পিরিয়ড ১৫ হইতে ৬০ ঘণ্টা।

নিবারণ প্রণালী – গৃহ, বন্ত্ত, ওভুতি সম্পূর্ণরূপে ডিস্ইন্ফেক্ট্

করা উচিত। এরিদিপেলাস্রোগী দেখিয়া বস্ত্র পরিত্যাগ না করিয়া প্রস্তি দেখা উচিত নয়।

## (২) ডিফ্ খিরিয়া (diphtheria)।

এক সাইটিং কজ—রোগীর ফল্ স্ মেম্ব্রেনে (false membrane)
এবং লিম্টেটিকে ক্লাইন (Klein) এক প্রকার ব্যাসিলাস্ প্রাপ্ত হইরাছেন এবং
তদ্ধারা বিড়াল ও গরুর ডিফ্ থিরিয়া রোগ উৎপাদন করিয়াছেন। ব্রাউন
ইন্টিটিউটে (Brown institute) একদা ১৪টা বিড়ালের ডিফ্ থিরিয়া হয়।
অনুসন্ধানে প্রকাশ পায় ইতিপূর্ব্বে মন্ত্রেয়ের ডিফ্ থিরিয়া ব্যাসিলাস্ দ্বারা
ছইটা গাভীর ঐ রোগ উৎপাদন করা হইয়াছিল। তন্মধ্যে একটা গাভীর
ছগ্নে পঞ্চম দিবসে ব্যাসিলাস্ দৃষ্ট হয়, এবং ঐ ছগ্ন ব্যবহার করিতে নিষেধ
করা হয়; কিন্তু ভ্তোরা ছইটা বিড়ালকে ঐ ছগ্ন পান করাইয়াছিল। ২০০
দিনের মধ্যেই ইহাদের ডিফ্ থিরিয়া হয় এবং ক্রমশঃ ১৪টা বিড়াল ঐ রোগে
আক্রান্ত হয়। তন্মধ্যে অনেকগুলির মৃত্যু হইয়াছিল।

বিস্তৃতি প্রণালী—(১) এক রোগী হইতে অন্ত রোগীতে সংক্রামিত
হয়। সার্জনেরা ডিফ্থিরিয়া রোগীর ট্রেকিয়া-লগ্ন ট্রেকিয়টমি টিউব চুষিয়া
এই রোগে আক্রান্ত হন। (২) বিড়াল হইতে সংক্রামিত হয়। কথনও কথনও
দেখিতে পাওয়া যায় কোন পরিবারে যে সময়ে ২।১টী বিড়ালের কাসি হইয়াছে,
সেই সময় ঐ বিড়াল লইয়া ষাহারা থেলা করে তাহারা ডিফ্থিরিয়ায় আক্রান্ত
হয়; কিম্বা শিশুদের ঐ রোগ হইলে বিড়ালদেরও সেই সময় কাসি হয়। ঐ
কাসিই ডিফ্থিরিয়া। (৩) গাভী দ্বারাও এই রোগ সংক্রামিত হয়।
ডিফ্থিরিয়াক্রান্ত গাভীর ত্র্ম পানে এই রোগ জন্ময়া থাকে। (৪) কেহ
কেহ বলেন স্থয়ার গ্যাস দ্বারা ডিফ্থিরিয়া সংক্রামিত হয়। ডিফ্থিরিয়াবিব-দ্বিত স্থয়ার গ্যাস সেবনে এই রোগ জন্মে।

নিবারণ প্রণালী—(১) রোগীর আইনোলেশন ও অপর সকলের (অন্ততঃ শিশুদের) গৃহত্যাগ একান্ত কর্ত্তব্য। (২) গৃহ, ড্রেণ প্রভৃতির ডিস্-ইন্ফেক্শন করা বিধের। (৩) এপিডেমিকের সময় এন্লার্জ ড্টন্সিলে (cnlarged tonsil) এবং রিল্যাক্দ্ড্থোটে (relaxed throat) ঔষধ প্রয়োগ করা উচিত। এইরূপ থ্রোটে ভিফ্থিরিয়ার ব্যাদিলাদ্ দহজে লগ্ন হয়। (৪) শুশ্রমাকারীদের থ্রোটে ৄর্বা ১ পারদেন্ট কার্বলিক লোশন দিনে ২০০ বার স্প্রোকার উচিত। বাইথ বলেন এই উপায়ে অনেক পরিবারে রোগের প্রকোপ নিবারিত হইয়াছে। (৫) ছগ্ধ ফুটাইয়া পান করা উচিত। (৬) য়ে দমুদয় স্থানে বাড়ীর ডেলের সহিত রাস্ভার স্থারের যোগ আছে, তথায় সাইকন (syphon) দ্বারা স্থার গ্যাদাগ্রের পথ ক্লম্ক করা উচিত।

## (৩) পূরারপারেল ফিভার (puerperal fever)।

একসাইটিং কজ — ব্যাদিলাস্ ও ককাস্প্রভৃতি নানাবিধ মাই-ক্রোব এই রোগের কারণ।

নিবারণ প্রণালী—বাইথের মতে ভেজাইনেল ইঞ্জেশ্নের জন্ম ওয়ান্ পার্ থাউজন্ (I per I,000) করোদিভ্ সিবুমেট লোশন ব্যবহার করা উচিত। উক্ত লোশন, বা ফাইভ্ পারদেট কার্বলিক লোশন বা ওয়ান্ পার থাউজন্ আয়োডিন টিট্রাক্লোরাইড লোশনে হস্ত ধৌত করা উচিত। পূয়ারপারেল ফিভার রোগী দেখিবার পর ইন্ফেক্শন-মুক্ত (free from infection) হইতে হইলে চিকিৎসককে অনেক কন্ত করিতে হয়। নথের ভিতরে বিষ প্রবিষ্ঠ ও লগ্ন হইয়া থাকে। সেন্তলে প্রথমতঃ খুব তপ্ত জলে, তৎপরে আলকহলে (alcohol), এবং অবশেষে ভাল ডিস্ইন্ফেক্টেন্টে, হস্ত ধৌত করিলে উক্ত বিষ নন্ত হয়। বাইথ বলেন, হস্ত ডিস্ইন্ফেক্শনের পর টর্কিষ বাথ এবং করোদিভ্ সিবুমেট লোশন স্পঞ্জিং দ্বারা দেহের, এবং খ্রাম প্রভৃতি দ্বারা বস্তের শোধন ও তৎপর বস্ত্র পরিবর্ত্তন করিলে কোন প্রকার দোষ থাকে না। যাহা হউক এতদ্র করিতে না পারিলেও, হস্ত ডিসইন্ফেক্ট্ ও বস্ত্র পরিবর্ত্তন করিয়া অন্ত প্রস্তুতি দেখিতে যাওয়া উচিত।

## ৫। টিউবার্কিউলোসিস্ (tuberculosis)।

স্কু কিউলা (scrofula) এবং লুপাদ্ (lupus) টিউবার্কিউলোসিসের এটে-সুয়েটেড্ (attenuated) বা ক্ষীণ অবস্থা। থাইসিসে ইহার পূর্ণ বিকাশ। প্রিডিস্পোজিং কজ,—ব্যবদা বিশেষ (করলা থনন প্রভৃতি),
ঋতু বিশেষ (শীতকাল), সিক্ত ভূমি (damp soil), সিফিলিস, হাম,
ডিফ্থিরিয়া, হুপিং কফ্ প্রভৃতি।

এক্সাইটিং কজ — কথ্ (Koch) প্রমাণ করিয়াছেন ব্যাদিলাদ এই রোগের কারণ। এই ব্যাদিলাদ রড্ (rod) আকৃতি, কিন্তু আনেক সময় কিঞ্চিং বক্র হইয়া পড়ে। রোগীর কলে, ফুদফুদের ক্ষয়গ্রস্ত আংশে, ক্ষয়গ্রস্ত স্কৃতিউলাদ্ গ্লাণ্ডে এবং কর্ণের পূ্য প্রভৃতিতে ইহা পাওয়া যায়। ইহাদের স্পোর আছে।

বিস্তৃতি প্রণালী—রোগীর শুষ কফ মল প্রভৃতি মিশ্রিত ধূলিকণা নিখাসের সহিত গ্রহণে, যক্ষাগ্রস্ত জীবের মাংস আহারে, যক্ষাগ্রস্ত গাভীর জ্গ্ধ পানে এবং মক্ষিকা-দূষিত পদার্থ আহারে এই রোগ সংক্রামিত হয়। একটী মুরগী একজন যক্ষা রোগীর কফ থাইয়া যক্ষাগ্রস্ত হইয়াছিল। সেই মুরগী অর্দ্ধসিদ্ধ অবস্থায় আহার করিয়া এক ব্যক্তির যক্ষা রোগ জনিয়াছিল। যক্ষারোগীর শুষ্ক কফের চূর্ণ কয়েকটী কুকুরকে নিশ্বাদের সহিত টানিয়া লইতে **দেও**য়া হইয়াছিল; ২।১ সপ্তাহ পর ইহাদের ফুদফুদ ক্ষরপ্রাপ্ত হইয়াছিল। স্বামীর রোগ স্ত্রীতে সংক্রামিত হওয়ার ৩টা দৃঠান্ত আছে:—(১) এক রজ্বিনী তাহার যক্ষাগ্রস্ত স্বামীর বস্ত্র প্রকালন করিত। স্বামীর মৃত্যুর পর তাহার হস্তে একটা টিউমার (tumour) হয়; এই টিউমারের অভ্যন্তরে টিউবার্কল ব্যাসিলাস পাওয়া যায়। তৎপরে তাহার অঙ্গুলী ও ফুসফুস ক্ষয়-গ্রস্ত হইরাছিল। (২) এক জন স্ত্রীলোক ছর মাস কাল তাহার যন্ত্রাগ্রস্ত স্বামীর শুশ্রষা করে এবং স্বামীর কফপাত্র এবং বস্তাদি ধৌত করে। স্বামীর মৃত্যুর ২ মাদ পরে তাহার অঙ্গুলীর পৃষ্ঠে একটা নডিউল (nodule) হয় এবং হস্তের লিক্ষাটিক্স্ (lymphatics) দূষিত হইরা য়্যাব্দেস্ (abscess) হয়। ঐ র্যাবদেদে টিউবার্কন্ ব্যাসিলাস পাওয়া যায়। তাহার লংদের এপেক্স ও ক্ষাগ্রস্ত হইয়াছিল। (৩) একজন স্ত্রীলোক ভাহার যক্ষাগ্রস্ত স্বামীকে মৃত্যুকালে চুম্বন করিতে গিয়া তাহার দ্বারা দষ্ট হইয়াছিল। প্রথমতঃ তাহার দংশনের স্থানে, তৎপরে অঙ্গুলী ও হস্তে, টিউবার্কিউলার নিউটল (tubercular nodule) হইয়াছিল। টেউবার্কিউলার রোগীর শব ব্যবচ্ছেদ করিয়া কখনও কখনও চিকিৎসকেয়া রোগগ্রস্ত হইয়াছেন। যে সমুদয় মক্লিকা থাইসিস্ রোগীর কফ আহার করে, তাহাদের আবডোমেন ও মলে টেউবার্ক্ল্ ব্যাসিলাস পাওয়া যায়। স্ক্তরাং এইরূপ মক্লিকা স্পৃষ্ট খাদ্য দ্রব্য আহারে থাইসিস্ জনিতে পারে। (৪) এই রোগ পুরুষাত্মজ্ঞমে সংক্রামিত হয়। (৫) রোগী নিজের কফ গিলিয়া ইন্টেস্টেন্ ক্ষয়গ্রস্ত করে এবং স্বীয় কফ মিশ্রিত ধূলা নিশ্বাসের সহিত গ্রহণ করিয়া অবিকৃত কুসকুসাং-

নিবারণ প্রণালী - (১) রোগীর কফ তাকড়ায় মুছিয়া দগ্ধ করিবে, অথবা একটা ফিফ্টীন (15) পারদেণ্ট কার্বলিক লোশন পূর্ণ পাত্রে রাখিবে। কফগ্রস্ত ব্যক্তিদিগকে কথনই মেজের উপর কিম্বা রুমালে থুথু ফেলিতে দেওয়া উচিত নয়। স্কুল বোর্ডিং প্রভৃতি স্থানে এইজন্ম একটা কার্বলিক পূর্ণ পাত্র (spittoon) রাথা উচিত। আনিলাইন ওয়াটার (aniline water) টিউবার্ক্ল वागिनाम् . भीघ विनष्टे करत्। किन्न इंशांत भूना अधिक। भन भूवानि रिन् शांतरमः हे कार्व निक लागन शृर्व शांत्व किन्ति। वञ्जामि शत्रम कल मिक করিবে। ডে ণ, পাইথানা প্রভৃতি ডিদ্ইন্ফেক্ট করিবে। (২) রোগীকে স্বতম্ত্র গৃহে রাখিবে। (৩) জনতা প্রভৃতি যে সমুদয় কারণে বায়ু দূষিত হয় তাহা নিবারণ করিবে। (৪) যে সমুদয় স্থান ডাাম্প (damp), তথায় পয়ঃ প্রণালীর স্থব্যবস্থা করিবে। (৫) ছগ্ধ, মাংস, প্রভৃতি সম্পূর্ণরূপ সিদ্ধ না করিয়া আহার कतिरव ना। (७) ट्रिलिंगनिविशैन वा जनाकी व द्वारन वाम कतिरव ना। (৭) যে সমুদয় ব্যবসায়ে দূষিত বায়ু সেবন করিতে হয় তাহা অবলমন করিবে না। (৮) রোগীর গৃহের মেজে প্রভৃতি ভিজা ন্যাকৃড়া দ্বারা সর্বদা ধূলিমুক্ত করিবে। (৯) খাদ্য দ্রব্য সর্বাদা আবৃত রাখিবে, যাহাতে তমধ্যে মক্ষিকা না वरम किया धना ना शरफ़।

## ७। गार्नितिया (malaria)।

ভারতবর্ষে প্রতি বংদর জরে প্রায় ২০ কোটি লোক আক্রান্ত হইয়া

থাকে; তন্মধ্যে ৪৫ লক্ষের মৃত্যু হয়। এই জ্বর জধিকাংশ স্থলে ম্যালেরিয়া-জনিত।

প্রিডিস্পোজিং কজ্—অনাহার বা অন্নাহার (poor feeding), এনিসিয়া (anæmia), স্কর্ভি (scurvy), এবং জলাভূমি প্রভৃতি সপ্তবিধ ম্যালেরিয়াজনক ভূমিতে বাস।

এক্ সাহিটিং কজ — লাভিরাণের এমীবা (Laveran's amœba) বা হীনেটঝু ন্ (haematozoon) ম্যালেরিয়ার কারণ বলিয়া অনেকেই স্বীকার করেন। ইতালী দেশীয় চিকিৎসকেরা বলেন যে একথণ্ড কাঁচের সুহিডে কোয়াটান এণ্ড (quartan ague) রোগীর অঙ্গুলীর অগ্রভাগ হইতে রক্ত লইয়া মাইক্রোস্কোপে পরীক্ষা করিলে ঐ জীবাণু বিশেষরূপে দেখিতে পাওয়া যায়। কোটিডিয়ান ও টার্ষিয়ান এণ্ড রোগীর অঙ্গুলীতে এই জীবাণু পাওয়া যায় না; কারণ এই অবস্থায় ইহারা স্প্রীন, বেণ এবং বোন-ম্যারো (bone marrow) বা অস্থি মজ্জায় প্রবেশ করে। কোয়াটান এণ্ডর বিরামের প্রথম দিবসে রেড বুড কর্পসলের প্রায় ৡ কি ৯ অংশ অধিকার করিয়া নড়িতে থাকে; দিতীয় দিবসে অর্দ্ধেক স্থান অধিকার করিয়া কিনারার দিকে কাল পিগ্মেন্ট (pigment) উৎপাদন করিয়ে থাকে, কিন্ধু নড়ে না; তৃতীয় দিবসে প্রায় সমুদয় কর্পসল্ গ্রাস করিয়া মধ্যস্থলে পিগ্মেন্ট উৎপাদন করে; এবং চতুর্থ দিবসে যথন স্পোর ও টক্মিন উৎপন্ন হয় তথনই জর প্রকাশিত হইয়া থাকে। কেহ কেহ বলেন ৬৫০ তাপে, বায়ুর সংস্পর্শে, আদ্র ও পচনশীল উদ্ভিদে পরিপূর্ণ ভূমিতে ম্যালেরিয়ার বীজ শীঘ্র বিদ্ধপ্রাপ্ত হয়।

বিস্তৃতি প্রণালী—ম্যালেরিয়ার বীজ ম্যালেরিয়াজনক ভূমিতে বর্দ্ধিত হয় এবং বাত্যাস্রোতে উর্দ্ধে উথিত হইয়া নিশ্বাসের সহিত লংসের মধ্যে বা থান্য ও লালার সহিত প্রমাকে প্রবেশ করিয়া রোগ উৎপাদন করে, অথবা শিশিরের সহিত মিশ্রিত হইয়া পুনরায় ভূমিতে পতিত হয়, কিষা পানীয় জল দ্বিত করে। ম্যালেরিয়া সয়েল বা ম্যালেরিয়াজনক ভূমি ৭ প্রকারঃ—

(১) মার্ষ বা জলাভূমি। মার্ষে সাধারণতঃ জলনির্গমনের পথ থাকে

না। ইহাতে অত্যন্ত অধিক ওদ্ভিদ পদার্থ থাকে। সামুদ্র জলে ধৌত মার্য্ এবং অস্ট্রেলিয়া, নিউঝীলও, নিউ কেলিডোনিয়া এবং আমেরিকার মার্য্ ম্যালেরিয়া উৎপাদন করে না। "পীট"পূর্ণ ভূমি (peaty soils) জলধৌত হইলেও ম্যালেরিয়া-মুক্ত হয় না। মার্ষের উপর যে রক্ষাদি জন্ম তাহার সঙ্গে ম্যালেরিয়ার কোন সম্বন্ধ নাই, এই সিদ্ধান্তে অনেকে উপনীত হইয়াছেন।

জল্নিকাশী নদী নালার অবরোধ বশতঃ বঙ্গদেশের অনেক সমৃদ্ধিশালী গ্রাম জলাভূমির স্থায় ম্যালেরিয়ার জন্মভূমিতে পরিণত হইয়াছে। রেল পথ এবং গ্রাম্য পথ প্রস্তুত হইবার পর অনেক নদী নালার গতিরোধ হইয়াছে। যে সরস্বতী নদী দিয়া এককালে কত শত পণ্যদ্রব্য পরিপূর্ণ বৃহৎ বাণিজ্য-পোত অবলীলাক্রমে যাতায়াত করিত, উক্ত প্রকারে ইহা শুক্ষ হইয়া যাইবার পর সপ্তগ্রাম, ত্রিবেণী প্রভৃতি স্থপ্রসিদ্ধ গ্রাম ম্যালেরিয়ার উৎপীড়নে অরণ্যে পরিণত হইয়াছে। নদীয়া, বর্দ্ধমান, বাঁকুড়া, মেদিনীপুর প্রভৃতি জেলা ৩০ বংসর পূর্ব্বে অতিশয় স্বাস্থ্যকর ছিল; কিন্তু তথায় রেলপথ প্রস্তুত ও নদী নালা গভীরতারহিত হইবার পর ম্যালেরিয়া আবিভূতি হইয়াছে। সমুদয় স্থানের কেবল যে ভূমি দূষিত হইয়াছে তাহা নহে, কিন্তু জলাশয় সমূহও বিকৃত উদ্ভিদে পরিপূর্ণ হইয়াছে। কোন কোন স্থানে ইঞ্জিনিয়ারদের অভুত বুদ্ধিকৌশলে ধান্তক্ষেত্ৰও গ্রাম্য ভূমি জলাভূমিতে পরিণত হইয়াছে। তাঁহারা ২০৷৩০ মাইল দীর্ঘ ও ১৫৷২০ ফুট উচ্চ পথ প্রস্তুত করিয়াছেন, অথচ কুত্রাপি জল নির্গমনের ব্যবস্থা করেন নাই। এই কারণে প্রতি বৎসর গ্রাম ও মাঠ বর্ষাকালে জলমগ্ন হইতেছে এবং রোগ ও ছর্ভিক্ষে বহু লোকের প্রাণ বিনষ্ট হইতেছে।

(২) এলুভিয়েল সয়েল বা পললময় ভূমি—নব সঞ্চিত এলুভি
য়ম্ বা পলিতে পুরাতন পলি অপেকা অর্গানিক ম্যাটার ও সন্ট্ অধিক;

এই জন্ম ইহার ম্যালেরিয়া উৎপাদন শক্তিও অধিক। এলুভিয়েল সয়েল

সাধারণতঃ ঢালুতাবিহীন এবং জল-নির্গান-পথ-শৃন্ম। ইহার নিকটে

বে সমুদ্য নদী নালা থাকে, তাহার জলের দক্রন ইহার নিমন্ত সব সয়েল

ওয়াটারের অত্যন্ত হ্রাসবৃদ্ধি হয়। বে সমুদ্য বৃহৎ নদীর কর্দ্মময় তীর অল

জলমগ্ন হয়, তাহাতে ম্যালেরিয়া জলো। ডেল্টা (delta) বা নদীমুথস্কভূমি, এবং "মরা নদী", "মরা থাড়ি" এবং নবসস্তুত চর ম্যালেরিয়ার জন্মভূমি।

- (৩) গ্রীষ্মপ্রধান দেশের উপত্যকা ও নালা-তীরস্থ ভূমি— উদ্ভিদ পদার্থের আধিক্য ও জলরাশির অবরোধবশতঃ ম্যালেরিয়ান্ (malarious) হয়।
- (৪) গ্রীষ্মপ্রধান দেশীয় পর্বতের পাদদেশস্থ বালুকাময় সমতল ভূমি প্রায় ম্যালেরিয়ান হয়। হিমালয়ের পাদদেশস্থ তিরাই প্রদেশ এবং আদাম অঞ্চলের অনেক ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পর্বতের পাদদেশ ম্যালেরিয়ার আবাসভূমি। শুক্ষ নদী নালায় যে বালুকারাশি সঞ্চিত হয়, তাহার মধ্যে প্রচুর ওদ্ভিদ পদার্থ থাকে এবং নিয়ে জলম্রোত প্রবাহিত হয়; এইরূপ ভূমি ম্যালেরিয়াজনক। যে বালুকা ভূমির নিম্নে কর্দ্দমস্তর আছে, তাহা ইভেপরেশনবশতঃ প্রায় আদ্র্র থাকে, এবং তন্মধ্যে অর্গানিক পদার্থের বিক্বতি বশতঃ ম্যালেরিয়া উৎপন্ন হয়।
- (৫) জাঙ্গলপ্রাদেশ নৃত্র আবাদ হইবার পর কিছুকাল পর্যান্ত তথার ম্যালেরিয়ার প্রাত্তাব হয়। নেপাল, দার্জিলিং, ভূটান, তিরাই, আসাম, প্রীহট্ট, কাছাড় প্রভৃতিস্থানে জন্পল পরিষ্কার করিয়া চা ও কফি বৃক্ষ রোপণের পর তথার ম্যালেরিয়া অত্যন্ত প্রবল হইয়াছিল। নবকর্ষিত ভূমি অনেক সময় ম্যালেরিয়া উৎপাদন করে।
- (৬) ধান্তক্ষেত্র প্রভৃতি জলিদিক্ত ভূমি (irrigated lands) কোন কোন স্থলে ম্যালেরিয়া উৎপাদন করে।
- (१) ভূমির কোন দোব না থাকিলেও অবস্থা বিশেষে কোন কোন ছানে ম্যালেরিয়া উৎপন্ন হয়। কোন হাসপাতালে একটা কন্-ভেলেদেও রোগীর ওয়ার্ড ছিল। সেই ওয়ার্ডে ২০০ দিন অবস্থিতির পর সকল রোগীরই টার্বিয়ান্ এগু (tertian ague) হইত। অনুসন্ধানে জানা গেল ঐ ওয়ার্ডে একটা পিপায় কতকগুলি উদ্ভিদ বৃষ্টির জলে পচিতেছিল,এবং সেই জল উচ্ছ্বিদত হইয়া দারের নিকটস্থ ভূমিতে প্রবাহিত হইয়া একটা ক্ষুদ্র জলাভূমি সৃষ্টি করিয়াছিল। তথাকার বায়ু প্রবাহিত হইয়া ওয়ার্ডে ম্যালে

রিয়া জর উৎপাদন করিত। ইতালী প্রভৃতি স্থানে পুষরিণীতে নিমগ্ন পাট শুষ্ক করিবার সময় পালা জ্ঞরের প্রাহুর্ভাব লক্ষিত হইয়াছে। এ দেশে পচা নীল গাছ যেথানে স্তুপীক্বত হইত তথায় পালাজ্ঞরের প্রাহুর্ভাব হইত।

ডাক্তার কিং বলেন, আমাদের দেশে ম্যালেরিয়া ম্যালেরিয়াজনক ভূমি হইতে ৭০০—১০০০ ফুট উর্দ্ধে ও ১—২ মাইল দূরে সঞ্চালিত হয়। কেহ কেহ বলেন ইহার আরও অধিক দূরে চলিবার শক্তি আছে। জল রাশি দারা ইহার গতিরোধ হয়, বিশেষতঃ লোনা জল দারা। ঘন বৃক্ষশ্রেণীও (belt of trees) ইহার গতিরোধ করিতে পারে।

নিবারণ প্রণালী—(১) জল ফুটাইয়া, ফিল্টার করিয়া, ফটকিরি মিশ্রিত করিয়া কিম্বা চা ও কাফির সহিত সিদ্ধ করিয়া পান করিবে।

- (২) ম্যালেরিয়াজনক ভূমি, কিম্বা যে সমুদ্য খাল, বিল ও নদী গ্রীয়াকালে শুদ্ধ হইয়া যায়, তাহা হইতে দূরে বাস করিবে।
- (৩) সম্ভবপর হইলে ম্যালেরিয়াজনক ভূমি হইতে ৫০০ ফুট উচ্চ স্থানে বাসগৃহ নির্মাণ করিবে। এই কার্য্য অসাধ্য হইলে, থিলানের উপর কিম্বা স্তম্ভের উপর ১০ ফুট উচ্চ ভিত্তি প্রস্তুত করিতে হইবে। দ্বিতল গৃহের উচ্চ-তলে বাস করিবে। মেজে সিমেন্টাবৃত কিম্বা পিটিয়া শক্ত করা উচিত।
- (৪) যে দিক হইতে ম্যালেরিয়াজনক ভূমির বায়ু আইদে, সেই দিকে উচ্চ বৃক্ষশ্রেণী রোপণ কিম্বা প্রাচীর নির্মাণ করা উচিত।
  - (c) মৃত্তিকা কুদ্র কুদ্র তৃণে আবৃত রাথিবে।
- (৬) জল নিকাশের রীতিমত ব্যবস্থা করিবে। বাসভূমির সমুদর জল যাহাতে সাধারণ ডেব্রুণ গিয়া পড়ে এরপ ব্যবস্থা থাকা আবশ্রক। সাধারণ ডেব্রুণ সম্বন্ধে লোকেল বোড কৈ উদ্যোগী হইতে হইবে। লোকেল বোড কত্র্কি গ্রাম্যপথ প্রস্তুত হইবার সময় ছই ধারে গর্ভ খনন করা হয়; বর্ষা-কালে সেই সমুদর গর্ভ ক্ষুক্র ক্ষুদ্র ডোবার পরিণত হয়। এইরূপ ডোবা খনন না করিয়া রীতিমত জল নিকাশী ডেব্রুণ খনন করিলে ভূমির উন্নতিসাধন ও রাজবর্ম্ব নির্মাণ এই উভয় কার্য্যই স্ক্রমম্পার হয়।
- (৭) ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ডোবা বুজাইয়া বৃহৎ পুষরিণী ঝালান উচিত, কিম্বা বিশুদ্ধ ভূমিতে কৃপ খনন করা উচিত।

- (৮) পচা উদ্ভিদ দ্রীভূত করিবে।
- (৯) প্রত্যুষ, সন্ধ্যা ও রাত্রিকালের বায়ু সেবন করিবে না।
- (১০) অভুক্ত অবস্থায় কিম্বা অন্ততঃ চা বা কফি পান না করিয়া ন্যালে-রিয়া জনক স্থানে ভ্রমণ করিবে না।
  - (১১) মশারি না খাটাইয়া শয়ন করিবে না।
  - (১২) নিয়মিতরূপ আহার ও পরিচ্ছদ পরিধান করিবে।
- (১৩) ছই বেলা অল্ল (৫ গ্রেণ মাত্রায়) কুইনাইন দেবন করিবে। ডাক্তার ডঙ্কান মেডিকেল কংগ্রেদে বলিয়াছেন ৪ গ্রেণ মাত্রায় কুইনাইন দেবন করাইয়া তিনি অনেক সৈম্মকে ম্যালেরিয়ার আক্রমণ হইতে বক্ষা করিয়াছেন।
  - (১৪) স্থানে স্থানে অগ্নি প্রজালিত করিয়া বায়ু শোধিত করিবে।

#### ৭। অন্ত্ৰ সংক্ৰান্ত।

# (২) টাইফয়েড্ফিভার (typhoid fever)।

প্রিডিস্প্রেণিজিং কজ — ৩০ বৎসরের উদ্ধ বয়স্ক ব্যক্তি অপেক্ষা ৩০ বৎসরের নিম্ন বয়স্ক ব্যক্তির এই রোগ হইবার সম্ভাবনা চতুগুণের অধিক। দূষিত জল পান, বিকৃত থাদ্য আহার প্রভৃতি উদরাময়জনক কারণে এই রোগে আক্রান্ত হইবার সম্ভাবনা থাকে। একবার আক্রান্ত হইলে পুনরাক্রমণের সম্ভাবনা থাকে না।

এক সাইটিং কজ — এবার্থ স্ ব্যাদিলাস্ (Eberth's bacillus)
এই রোগের কারণ বলিয়া এক প্রকার নির্দারিত হইয়াছে। এই ব্যাদিলাস্
স্পানি ও নেসেন্টারিক প্লাণ্ডে এবং দ্যিত জলে পাওয়া যায়। কখনও কখনও
এই ব্যাদিলাস্ জলের ফিল্টারের অভ্যন্তরে পাওয়া গিয়াছে। ইহার স্পোর
আছে। ইহারা অনেককাল পর্যান্ত জীবিত থাকে এবং ১১৪°. দি তাপেও
বিনষ্ট হয় না।

বিস্তৃতি প্রণালী—টাইফয়েড রোগীর মলস্থিত অসংখ্য ব্যাদিলাদ্

ও ব্যাদিলাদের স্পোর গৃহের ড্রেণ, স্মার, ডোবা ও ভূমিতে দীর্ঘকাল জীবিত অবস্থায় থাকে, এবং কোনজমে থাদ্য বা পানীরের সঙ্গে মিপ্রিত হইলে তৎসঙ্গে নরদেহে প্রবেশ করিয়া টাইকয়েড্ ফিভার উৎপাদন করে। টাইকয়েড রোগীর শুষ্ক মল ধূলিমিপ্রিত ও বায়ুতাড়িত হইয়া নাসারদ্ধে, এবং নাসারন্ধ্র হইতে মুথের লালার সহিত এলিমেণ্টারী কেনেলে প্রবেশ করিতে পারে। কিন্তু টাইকয়েড বিষ-দৃষিত জলের সংযোগে বা দৃষিত জল মিপ্রিত ভ্রের সংযোগে দেহে প্রবেশ করার দৃষ্ঠান্তই অবিক। পেটেনকফার বলেন, সব্ সয়েল ওয়াটারের হাসকালীন টাইকয়েডের বৃদ্ধি হয়়। সব্ সয়েল ওয়াটারের সঙ্গে স্প্রপ্রপ্রবাদির জলও বৃদ্ধিপ্রিই হয়; স্ক্তরাং জল যত অধিক, টাইফয়েডের বিব তত ডাইল্রুও অল্প অনিষ্টকর হয়।

লক্ষণ—ইন্কুবেশন পিরিয়ড,২—২১ দিন, সাধারণতঃ ২ সপ্তাহ। ইরপ্শন্, সাধারণতঃ সপ্তম হইতে চতুর্দ্ধ দিবসের মধ্যে দৃষ্ট হয়। রোগ একমাস পর্যান্ত স্থায়ী হইতে পারে।

নিবারণ প্রণালী—(১) রোগীকে স্বতন্ত্র গৃহে রাথিবে এবং ভাহার শুক্রবার জন্ম স্বতন্ত্র লোক নিযুক্ত করিবে। (২) শুক্রবার গর ওরান্ ইন্ থাউজ্ন্ (I in 1000) করোদিত্ সবিনেট্ লোশনে হস্ত বৌত করিবে। (৩) একটী পাত্রে এমোনিয়া ক্লোরাইডে বিগলিত টু পার্দেণ্ট (2 per cent) করোদিত্ সবিনেট্ লোশন রাথিয়া তাহাতে রোগীর মল নিক্ষেপ করিবে, এবং অন্ততঃ ২ ঘণ্টা পর ঐ মল ডেনুণে কিম্বা শ্রেখানার নিক্ষেপ করিবে। কিন্তু মল শোধনের স্ব্রশ্রেষ্ঠ উপায় করাতের শুভা কিম্বা ন্যাকড়া সংযোগে দগ্ধীভূত করা। (৪) আরোগালাত কিম্বা মৃত্যুর পর রোগীর শব্যাদি দগ্ধ করিবে এবং বহুমূল্য বস্ত্রাদি ডিস্ইন্ফেক্ট করিবে।

#### (२) কলেরা (Cholera)।

প্রিডিস্পোজিং কজ্—অনিয়মিত ভোজন, দ্যিত জলপান, ঠাঙা লাগান ৪ ভর প্রাপ্তি প্রভৃতি যে সমুদ্র কারণে ডায়েরিয়া হয়, তাহাতে তলেরায় আক্রান্ত হইবার সন্তাবনা থাকে। অভুক্ত অবস্থায় (empty stomach) আক্রান্ত হইবার সন্তাবনা অধিক। অনেকক্ষণ অভুক্ত থাকিলে টুমাকের রস্ব্যাল্কেলাইন্ (alkaline) হয়, এবং জলপান করিলেও ইহার য়্যালিড্রস্বি:স্ত হয় না। য়্যালকেলিতে কলেরা ব্যাসিলাস বর্দ্ধিত হয়; য়ৢতরাং অভুক্ত অবস্থায় কলেরা-বিষ-দূষিত জল পান করিলে ব্যাসিলাস্ শীঘ্র বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয় এবং রোগ উৎপাদন করিবার স্থ্যোগ পায়। অধিক দ্র ভ্রমণ প্রভৃতি কারণে ক্রান্ত শরীর সহজে রোগাক্রান্ত হয়।

এক্স'ইটিং কজ - কথ (Koch) প্রমুখ পণ্ডিতেরা কমা ব্যাদিলাস (comma bacillus) करनतात कांत्रण विनिष्ठा निर्द्धण कतिष्ठाहिन। आत्र সকলেই কথের মতাত্মসরণ করেন; অতি অল্প কয়েক ব্যক্তি এ বিষয়ের প্রতিবাদ করেন। তন্মধ্যে স্থপ্রসিদ্ধ ডাক্তার কনিংহাম বলেন, কেবল ক্যা वानिनाम कल्नतात कात्र हरेट शास्त्र ना, उहित अग्र कात्र आहि। অতি সাবধানে ধৈর্য্যপূর্কক অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত হইলে প্রায় সমুদয় কলেরা c दां शीत मत्न वा चन् टेल्पेम् पितन कमा वामिनाम् शाख्या यात्र। चारतविवात्र ২৯৯ কেনের কেবল মাত্র ৫টা কেনে পাওয়া যায় নাই। আমি অধিক অনু-मस्तान कतिवात स्रायां भारे नारे; किन्छ क्यार्यन रामभाजात य क्यती কলেরা রোগীর পোদ্ট্ মর্টেম পরীক্ষা কিম্বা মল পরীক্ষা করিয়াছি তৎ সমুদ্য স্থলেই কমা প্রাপ্ত হইয়াছি। কমা ব্যাসিলাস আহার করাইয়া কলেরা উৎপাদনের চেষ্টা কথ ই প্রথমতঃ করেন। ষ্টমাকের রদ য়্যাসিড ও ক্ষা নাশক বলিয়া, তিনি প্রথমতঃ গিনি পিগের ষ্টমাকে সোডা সলিউশন (ফাইভ পারদেও ) ইঞ্জেক্ট করিয়া পরে কমা ব্যাসিলাস ইঞ্জেক্ট করেন। কিছ তাহাতে किছूरे कल रहेल ना। जयन जिनि मतन कतिरलन रेल्जेम हितन ক্রত পেরিসটণ্টিক ক্রিয়ার দক্ষন কমা ব্যাসিলাস বর্দ্ধিত হইবার পূর্ব্বেই অতি শীঘ্র বাহির হইয়া পড়ে। এই পেরিসটল্টিক ক্রিয়া স্থগিত করিবার জন্ম তিনি ষ্টমাকে সোডা ইঞ্জেক্ট করিয়া পেরিটোনিয়মে লডেনম ইঞ্জেক্ট তন্মধ্যে ০০টী গিনি পিগের কলেরায় মৃত্যু হয়। সাংঘাইর ডাক্তার মেক্লা-ওড এইরূপে ৩৪টা গিনিপিগের উদরে কমা ইঞ্জেক্ট করেন; সমুদয় গিনি- পিগ কলেরায় আক্রান্ত হয় এবং তন্মধ্যে ০১টার মৃত্যু হয়। মৃত গিনিপিগের স্থল ইন্টেন্টনের ফুইড অন্ত গিনি-পিগে ইঞ্জেই করাতে ইহারও
কলেরায় মৃত্যু হয়। ক্লাইন বলেন কমা-ব্যাদিলাস-ইঞ্জেক্শনের দক্ষন গিনিপিগের যে রোগ হয় তাহা কলেরা নহে,কিন্ত টোমেন্-পয়জনিং (ptomaine poisoning)। ফিংক্লাস্ কমা-ব্যাদিলাস্ (Finkler's comma bacillus)
নামক কলেরা নস্ট্রাস্ (cholera nostras) বা গ্যাস্ট্রো-এন্টারাইটিমের
ব্যাদিলাস্ ও অন্ত প্রকার পিউট্রিফ্যাক্টিভ্ ব্যাদিলাস্ ইঞ্জেক্শনের
দারাও নাকি সমান ফল পাওয়া যায়। যাহা হউক ব্যাক্টিরওদাজিস্ট্ প্রায় নকলেই ক্থের ক্মা ব্যাদিলাস্ কলেরার কারণ বলিয়া
স্বীকার করেন।

क्या-व्यामिलारमत श्रेकुि :--(>) त्वांगीत हे एन (stool), चन हेर जिति ( विरम्बण्ड हेनियरम ) अवर नार्ज हेर जिन् हिरन कमा-वामिनाम পাওয়া যায়; রক্তে বা অন্ত কোন টিশুতে পাওয়া যায় না। রিগাজি টেশন (regurgitation) হইলে কোন কোন স্থলে ব্যাতি অল্ল প্রিমাণে থাকে, এবং কখনও কখনও লিভারে ও গল বুঢ়াডারে পাওয়া যায়। (২) ইহার আকার জর্মণ কমার ভাষ [)] বলিয়া ইহার নাম "কমা ব্যাদিলাদ"। তুইটা ব্যাদিলাদ্ পরস্পর **দংলগ্ন হইলে** ইংরাজী Sএর আকার ধারণ করে। এইরূপে অনেকগুলি কমা পরম্পর সংলগ্র হইলে ~~~~ (স্পাইরিলম্) আকার ধারণ করে। (৩) ইহার। 8টা পুচ্ছ বা ফ্লেগেলম্ (flagellum) দঞ্চালন করিয়া চলে। (৪) ইহারা কথনও বড় এবং কথনও ছোট হয়। সংখ্যাবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে ইহাদের আকার ক্ষুদ্র হয়। (৫) ঈষৎ য়াকেলাইন জিলেটিন (slightly alkaline gelatine) ইহা ধারা তরলীকৃত হয় এবং তন্মধ্যে ইহারা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। ফিংক্লার্সের কমা ব্যাদিলাস ও কনিংহাম কর্তৃক উল্লিখিত সেলাইভার ও দন্ত টার্টারের (tartar) ক্মা-ব্যাসিলাস দারা জিলেটন যত শীঘ তরলীকৃত হয়, কথের ক্সা ব্যাদিলাস দারা তত শীঘ্র হয় না। স্কুতরাং কথের ও ফিংক্লার প্রভৃতির কমা ব্যাদিলাস ভিন্ন জাতীয়। (৬) আগার আগারের উপর যে ব্যাদিলাস পুঞ উৎপন্ন হয় তাহা কুদ্ৰ কুদ্ৰ গোল গোল স্বচ্ছপ্ৰায় ঈষৎ নীলাভ শ্বেতবৰ্ণ সরের ভাষ দৃষ্ট হয়। (৭) নররক্তের স্বাভাবিক তাপে (৩৭° দেণ্টিগ্রেড) ইহারা বুদ্ধিপ্রাপ্ত হয়। ইহা অপেক্ষা অতিশয় অধিক কিম্বা অন্ন তাপে ইহারা বর্দ্ধিত হয় না। বরফেও ইহাদের মৃত্যু হয় না। (৮) ইহারা দারবিক; बायुशीन खारन इंशाप्तत वृक्ति खिलिल इय, किछ विव मराज्य इय। वायु मः प्यार्भ ইহাদের বিঘাক্ততা বা পীড়াজনকতার হ্রাস হয়, কিন্তু ডিসইনফেক্টেটের ক্রিয়া রেজিসট (resist) বা প্রতিরোধ করিবার শক্তি বুদ্ধি পার। কেহ কেহ বলেন বায়ুহীন ইণ্টেস্টিনের অভ্যন্তর হইতে নির্গত হইবার অব্যবহিত পর কমা-ব্যাদিলাস্ অন্ত ব্যাসিলাস্ কর্তৃক অতি শীঘ্র বিনষ্ট হয়, কিন্তু বায়ুর সংস্পর্শে থাকিতে থাকিতে ইহারা অন্ত ব্যাসিলাসের আক্রমণ প্রতিরোধ করিবার শক্তি প্রাপ্ত হয়। কনিংহাম বলেন মল-সংযুক্ত জলে ইহারা নাকি ৪-৯ দিন পর্যান্ত জীবিত ছিল। কিন্তু আমি গড়পারের তুইটী পুকরিণীর মল-সংযুক্ত জলে ১৮ দিন পর্যান্ত কমা-ব্যাসিলাস প্রাপ্ত হইরাছি। মাদিলিদ (Marseilles) বন্দরের জলে ৮১ দিন পর্য্যন্ত এই ব্যাদিলাস পাওয়া গিয়াছিল। কথ বলেন ইহারা ১৪৪ দিন পর্যান্ত জীবিত থাকিতে পারে। বাগানের মৃত্তিকায় ইহারা ২৬ দিন পর্য্যন্ত জীবিত থাকিতে পারে। (৯) ইহারা শুষ্ক হইলে মরিয়া যায়।

विञ्चि প्राना — श्रांत मक्ति विश्वाम करतन य, करनता-भग्न स्थान श्रांत अभिने स्थान अभिने स्थान स्

করিতে পারে এবং যাহার অভ্যন্তরত্ব সব্সয়েল্ওয়াটার অত্যন্ত হ্রাস বৃদ্ধি-भीन, मেই मिळ ভृমিতে পচনশীन অর্গানিক পদার্থ সংযোগে কলেরা-বীজ বাৰ্দ্ধিত হইয়া নিকটস্থ জল ও বায়ু দূষিত করে। সেই দূষিত জল ও বায়ু সংযোগে কলেরা-বীজ দেহে প্রবেশ করে। পেটেনকফার বলেন, যে সময় সব সয়েল ওয়াটার বর্দ্ধিত হইয়া হ্রাস প্রাপ্ত হইতে থাকে, সেই সময় কলেরার প্রকোপ বুদ্ধি পায়। এই মত প্রমাণ দাপেক্ষ। লুইদ ও কনিংহাম বলেন, যে সময় সব্ সয়েল্ ওয়াটার অতিশয় হ্রাস প্রাপ্ত হয়, সেই সময়েই কলেরার বৃদ্ধি হয়। কলিকাতায় মার্চ ও এপ্রিল মাসে ওলাউঠার অতিশয় বৃদ্ধি হয় এবং মে মানে হ্রাস হয়, অথচ মে মানে সব্ সয়েল্ওয়াটার অত্যন্ত হ্রাস প্রাপ্ত হয়। স্থতরাং কনিংহামের মত অপ্রমাণ্য। বুষ্ট্রির সঙ্গে কলেরার কিঞ্চিৎ সম্বন্ধ আছে। অধিক বৃষ্টির পর এই রোগের হাস হয়, কিন্তু অল্ল বুষ্টিতে ইহার প্রকোপ বুদ্ধি পায়। অল্ল বৃষ্টির স্বোতে ভূপৃষ্ঠস্থ ময়লা পৌত হইয়া অর্ক শুক্ষ বিণী কৃপ প্রভৃতিতে পতিত হয়; সেই দৃষিত জল পানে বোগের প্রাহর্ভাব হয়। বোগী কন্ভেলেসেণ্ট অবস্থায়ও বোগ বিস্তার করিতে পারে; রিয়্যাক্শন্ ষ্টেজে কলার্ড ষ্টুলেও কমা-ব্যাদি-লাস্ প্রাপ্ত হওয়া যায়। রোগীর মল-দূষিত বস্ত্র দারা কথনও কথনও রোগ ব্যাপ্ত হয়। কেহ কেহ বলেন, কলেরা সংস্পৃষ্ঠ ব্যক্তি রোগাক্রান্ত না হইলেও রোগ বিস্তার করিতে পারে। এ বিষয়ে বিশেষ প্রমাণ পাওয়া যায় নাই। মক্ষিকা দারাও কথনও কথনও রোগ ব্যাপ্ত হয়। গয়া জেলে কলেরা এপিডেমিকের সময় মঞ্চিকার দৌরাত্মা লক্ষিত হইয়াছিল। বন্দীদের তুগ্ধের উপর মক্ষিকাদল বসিত। ঐ তুগ্ধে কমা-ব্যাসিলাস্ পাওয়া গিয়াছিল।

নিব†র্ণ প্রণ্†লী—(১) গৃহে কলেরার আবির্ভাবমাত্র স্বাস্থ্যরক্ষকের ও তদভাবে কোন চিকিৎসকের পরামর্শ গ্রহণ করিবে।

- (২) সাধ্যমত রোগীকে হাসপাতালে পাঠাইতে চেষ্টা করিবে।
- (৩) হাদপাতালে প্রেরণ অসম্ভব হইলে, রোগীকে একটী স্বতন্ত্র গৃহে রাখিবে। দেই গৃহে কেবল কলেরা টীকাপ্রাপ্ত শুক্রাকারীগণ থাকিতে পারে। স্থবিধা থাকিলে শিশুদিগকে অন্যত্র প্রেরণ করা উচিত। রোগীক ব্যবহারের জন্ম স্বতন্ত্র এক প্রস্থ তৈজস পত্র রাখিতে হইবে।

- (৪) কোন খাদ্য দ্রব্য বিক্রয়ের স্থানে রোগীকে রাথিতে দিবে না। সন্দেশ ছগ্ধ প্রভৃতির দোকানে কেহ কলেরাক্রান্ত হইলে ঐ দোকানের কোন দ্রব্য স্থাহার করা অনুচিত।
- (৫) রোগীর মলে কিম্বা বমিতে সমভাগ ফাইভ্ পার্সেণ্ট কার্ব লিক লোশন মিশ্রিত করিবে; অথবা তাকড়া কিম্বা করাতের গুঁড়া সহযোগে দুশ্মীভূত করিবে।
- (৬) মল-সংলিপ্ত বস্ত্রাদি অল্প মূল্যের হইলে দগ্ধ করিবে; মূল্যবান্ হইলে দাইভ্পার্নেণ্ট কার্বলিক লোশনে ভিজাইরা রাখিবে। আরোগ্যলাভ কিম্বা মৃত্যুর পর শ্যা বস্ত্রাদি দগ্ধীভূত করা কর্ত্তর্য। গদি প্রভৃতি যে সমুদ্দ পদার্থ দগ্ধীভূত কিম্বা তরল ডিস্ইন্ফেক্টেণ্ট দ্বারা শোধিত করা যায় না, তাহা গদ্ধক ধূম কিম্বা ক্লোরীণ গ্যাস দ্বারা শোধিত করিয়া অনেকক্ষণ পর্যান্ত রৌদ্রে উত্তপ্ত ও বায়ুতে শোধিত হইতে দেওয়া উচিত।
- (१) মল-লিপ্ত বস্ত্রাদি নদী পুন্ধরিণী,কৃপ প্রভৃতিতে কথনও ধৌত করিবে না। বস্ত্রাদি ধৌত করিলে জলে কলেরার বীজ কিরূপে বিকাশ প্রাপ্ত হয় এবং সেই জল পানে কলেরা কিরূপে ব্যাপ্ত হয়, তাহা পরিশিষ্টের চিত্র দেখিলেই বুঝিতে পারিবে।
- (৮) যাহারা রোগীর শুশ্রুষা করিবে কিম্বা রোগীকে দেখিতে আদিবে, তাহাদিগকে হস্ত পদ ডিস ইন্ফেক্ট্ করিয়া বাহিরে যাইতে হইবে।
- (৯) ডেব্ ও শ্বেতথানায় ওয়ান্ পার্সেণ্ট করোসিভ্ সবি মেট লোশন বা বাজারের কার্বলিক য্যাসিডের স্যাটিউরেটেড্ সলিউশন্ ঢালিতে হইবে।
- (১০) শুশ্রাধাকারীদের বস্ত্র রোদ্রে শুদ্ধ করিবার পূর্ব্বে গরম জলে সিদ্ধ করিতে হইবে।
- (১১) বাহিরে এমন ভাবে গন্ধক দগ্ধ করিতে হইবে, যাহাতে গন্ধকের ধুম রোগীর গৃহে প্রবেশ করিয়া কষ্ট উৎপাদন না করে।
  - (১২) রোগীর আরাম কিম্বা মৃত্যুর পর গৃহ ডিদ ইন্ফেক্ট করিবে।
- (১৩) রোগীর বাটীতে যাহারা বাদ কি যাতায়াত করে কিম্বা সন্নিকটে বাস করে, তাহাদের প্রভ্যেকের টীকা নেওয়া উচিত।
  - (১৪) কলেরা এপিডেমিকের সময় বাড়ী বাড়ী টীকা দেওয়া কর্ম্ববা।

- (১৫) वाफ़ीट कि इमाज मयला वा आवर्कना वाथित ना।
- (३७) গৃহগুলি জনাকীর্ণ হইলে জনতা হ্রাস করিবে।
- (১৭) চাল ভাজা, কড়াই মটর ভাজা, ক্ষীর, বাসি হগ্ধ, নোনা ইলিস্, অপক ফল, বানি তরকারী, পচা মাছ ইত্যাদি কোন প্রকার গুরুপাক বা বিক্ত থাদ্য স্পর্শ করিবে না। অনিয়মিত আহার কিম্বা উপবাস করিবে না। অতিরিক্ত মদ্য পান প্রভৃতি যে সমুদ্য কারণে ডিদ্পেপ্ সিয়া হয়, বা লিভার কিড নী প্রভৃতি সংক্রান্ত রোগ জন্মে, তাহা বর্জন করিবে।
- (১৮) জল বা ছগ্ন না ফুটাইয়া পান করিবে না। যেথানে কলের জল আছে, তথায় অন্ত কোন জল পান করিবে না। ভিস্তি কিম্বা ভারীর জল সহজেই দ্যিত হয়, ইহা মনে রাথা উচিত। নদী পুদ্রিণী কৃপ প্রভৃতির দ্যিত জলে হস্ত মুথাদি প্রকালন করিলেও বিপদ হইতে পারে। কলিকাতার জেটীর কর্ম্মচারী ও কুলীদের মধ্যে কেহ কেহ কলেরায় আক্রাস্ত হইয়াছিল। তথায় যে চৌবাচ্চাতে দকলে হস্ত মুথাদি প্রকালিত করিত, দেই চৌবাচ্চার জল পরীক্ষা করিয়া তাহাতে ক্যা-ব্যাদিলাদ্ দেখিতে পাইয়া-ছিলাম।
- (১৯) কলেরার প্রাছর্ভাবকালে সামান্ত ডায়েরিয়ার প্রতিকার করা উচিত। অনেক সময় কলেরার প্রিমনিটারী ডায়েরিয়া (premonitory diarrhæa) সামান্ত ডায়েরিয়া জ্ঞানে উপেক্ষিত হয়, এবং ঐ অবস্থায় রোগ এক ব্যক্তি হইতে অন্ত ব্যক্তিতে সংক্রামিত হয়।
- (২০) যাহাতে ঠাণ্ডা লাগিয়া ডায়েরিয়া নাজন্মে, এরূপ ভাবে শ্রীর আবৃত রাথিবে।
  - (২১) অতিরিক্ত পরিশ্রম কিম্বা রাত্রি জাগরণ করিবে না।
  - (२२) (मनाव किया कान जनाकीर्ग खात्न गमन कतित्व ना।
- (২৩) সর্বাণ কলেরা সম্বন্ধে আলাপ করিয়া ভীতিগ্রস্ত হইবে না।
  শুশ্রাবাকারীদের পক্ষে নিম্নলিখিত নিয়ম পালন করা একান্ত
  কর্তব্য:—
- (১) রোগীর গৃহে কখনই আহার করিবে না এবং কাহাকেও আহার করিতে দিবে না।

- (२) রোগীর ভুক্তাবশিষ্ট ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করিয়া নিক্ষেপ করিবে।
- (७) रुष ि प्रेन्एक है ना कतिया पूथ किया नामिका य्यन किति ना।
- (৪) রোগীকে কিম্বা রোগী-স্পৃষ্ট কোন বস্তু স্পর্শ করিয়া হস্ত ওয়ান্ ইন্থাউজেন্ করোসিভ্ সবি মেট্ কিম্বা কাইভ্ পারসেণ্ট কার্বলিক লোশনে ধুইবে। হস্ত না মুছিয়া শুক হইতে দিবে এবং তৎপর সিদ্ধ জলে ধুইয়া ফৈলিবে।
- (৫) রোগীর ব্যবহৃত পাত্রাদি ফাইভ্ পার্দেণ্ট কার্ব লিক লোশনে ধৌত করিবে।
- (৬) একটী ৫।৬ আউন্ফাইভ্পাদেণ্ট্কার্লিক লোশন পূর্ণ ভাণ্ডে রোগীকে মল ত্যাগ করাইবে, এবং মল ত্যাগের পর তাহাতে স্মান ভাগ কার্লিক লোশন ঢালিবে।
- (৭) রোগীর গৃহের মেজে বারম্বার ওয়ান্ ইন্ থাউজেন্ করোনিভ সবিমেট্লোশন দারা ধৌত করিবে।
- (৮) আহার করিবার পূর্বের্হস্ত, বন্ত্র, পাছ্কা প্রভৃতি ডিদ্ইন্ফেক্ট্ করিবে। ফাইভ্পারদেণ্ট কার্বলিক লোশনে কিম্বা ওয়ান্ ইন্ থাউজ্ন্ করোসিভ্সবিন্নেট্লোশনে অন্তঃ ছই মিনিট পর্যান্ত হন্ত ডুবাইয়া রাখিবে, এবং হন্ত শুক্ষ হইলে সাবান ও গ্রম জলে প্রকালিত করিবে।
  - (৯) ডিদ্ইন্ফেক্টেণ্টের বোতলে লেবেল দিয়া অতি সাবধানে রাখিবে।

## পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

## কাল জুর (kala azar)।

কারণ—আসাম অঞ্চলে কাল জ্বে প্রতি বৎসর দশ সহস্রাধিক মৃত্যু হইয়া থাকে। গ্রথমেণ্ট ইহার কারণ অন্ত্রস্কানে প্রবৃত্ত হইয়াছেন। ডাক্তার জাইল্স্ (Giles) এই সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে কাল জ্বর সংক্রামক এবং ইহার এক্সাইটিং ক্ল এঙ্কিলোস্টোমা (anchylostoma) বা ডিকিমাস্ ভূষোভিনেলী (dochimus duodenale) নামক কৃমি। তিনি এই জন্য ইহার এক্কিলোস্টোমিয়েসিস্ (anchylostomiasis) আখ্যা দিয়াছেন। তাঁহার মতে, এই কৃমি মলদ্যিত মৃত্তিকার শুক্ষ চূর্ণের সঙ্গে বাত্যা-তাড়িত হইয়া নাসারক্ষে, কিম্বা খাদ্য দ্রব্যের সঙ্গে উদরে প্রবেশ করে এবং ভূয়ো-ডিনমে বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়। অনেকের মতে কাল জর ম্যালেরিয়ার রূপান্তর মাত্র। ডাক্তার ক্রম্বি বলেন, সম্ভবতঃ ম্যালেরিয়া এবং এক্ষিলোস্টোমা এই উভয় কারণে কাল জর জনিয়া থাকে। জাইল্স্ বলেন, প্রত্যেক কাল জর রোগীর মলের সহিত প্রতিদিন দশ লক্ষের অধিক ডকিমাস্ ডিম্ব বিনির্গত হয়। এই কৃমি ড্যাম্প ভূমিতে বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়, কিন্তু ভূমির নিমে কিম্বা

নিবারণ প্রণালী—(১) ট্রেঞিং; (২) ড্রেণেজ;; (৩) মাইগ্রেশন্ বা স্থানত্যাগ এবং (৪) হেমস্তকালে মাঠের তৃণবৃক্ষাদি দাহন।

# यष्ठं शतिरुष्ट्रम्।

এপিঝুয়টিক (Epizootic)।

১। ফুট-য়াত্ত-মাউথ্ডিজিজ (Foot and Mouth Disease)।

এই রোগে বহু সংখ্যক গরু ও ভেড়া আক্রান্ত হইয়া থাকে, এবং ইহা-দের হ্রপানে নরদেহেও এই রোগ উৎপন্ন হয়। এই হ্রান বিনষ্ট করা উচিত এবং রুগ্ন গরুকে স্বতন্ত্র গৃহে রাথা ও গোশালা ডিস্ইন্ফেক্ট করা উচিত।

## ২। রাইতার পেদ ট (rinderpest)।

গো-মড়ককে ভ্রম বশতঃ গো-বসস্ত বলা হইয়া থাকে। এই রোগে শুতিবংসর বহুসংখ্যক গরু বিনষ্ট হয়। কেহ কেহ বলেন এই রোগ গরুর টাইফয়েড ফিভার। এই রোগে মৃত গরুর মাংস অনিষ্টকর। রূপ পশুকে স্বতন্ত্র গৃহে রাখা এবং গোশালা ডিস্ইন্ফেক্ট করা উচিত।

## ৩। আহু বু (anthrax)।

এই রোগে বহুসংখ্যক গোও মেষ মরিয়া থাকে। এই রোগে মৃত পশুর সংস্পর্শবশতঃ, কিম্বা পশুর চর্ম ও পশমের শুক্ক চূর্ণ নিশ্বাসের সহিত গ্রহণ বশতঃ মন্থ্যের এই রোগ হইয়া থাকে। ইনফেক্টেড্ চর্ম ও পশম ভিস্ইন্ফেক্ট করা উচিত এবং মৃত পশু দগ্ধ করিবার ব্যবস্থা করা উচিত। চর্ম ও পশম হইতে যাহাতে ধূলা উত্থিত নাহ্য এরূপ বন্দোবস্ত থাকা আবিশ্রক।

৪। প্লুবো-নিউমোনিয়া (pleuro-pneumonia)।

এই রোগে বহুতর গো ও মেধের মৃত্যু হইয়া থাকে।

## ৫। গ্লাখাদ্ও কাদি (glanders & farcy)।

অশ্ব, গর্দভ ও থচ্চরেরা এই রোগে আক্রান্ত হয়। কেবল এয়ার-প্যাদেজ রোগগ্রস্ত হইলে গ্লাণ্ডাশ্বলে; স্থিন, এরিওলার টিশু এবং লিন্ফেটিক্স আক্রান্ত হইলে ফার্দি বলে। এই রোগ অতিশয় সংক্রামক এবং মন্ব্যদেহেও সংক্রামিত হয়।

# সপ্তম পরিচ্ছেদ।

## পশুদেহ হইতে নরদেহে সংক্রামিত রোগ।

(১) এন্থার, (২) ফুট্-য়্যাণ্ড্-মাউথ্ ডিজিজ (৩) গ্রাণ্ডাস্, (৪) টিউবার্কিউলোসিস, (৫) ডিফ্থিরিয়া, (৬) হাইড্রো-ফোবিয়া, (৭) ট্রাইকিনোসিস্ ও (৮) টেপ্তয়াম্। প্রধানতঃ এই আটটা রোগ পশুদেহ হইতে নরদেহে সংক্রামিত হয়। প্রথম ছয়টা রোগ সম্বন্ধে ইতিপূর্কেবলা হইয়াছে।

## (१) ট্রাইকিনোসিস্ (trichinosis)।

ট্রাইকিনা-স্পাইরেলিস্ (trichina spiralis) নামক কমি
শ্কর ও মন্ব্যা দেহে এই রোগ উৎপাদন করে। কসাইখানার নাড়ী
ভূঁড়ী ইত্যাদি আহার করিয়া গুকর এই রোগে আক্রান্ত হয়। রোগাক্রান্ত
শ্করের মাংস আহার বশতঃ মন্বরের এই রোগে জন্মে। ট্রাইকিনা ইন্টেস্টিন্ ভেদ করিয়া ডায়েল্বাম (diaphragm), ও সোল্ডারের মস্ল্ সমূহে
প্রবেশ করে এবং নেব্র আকার সিস্ট (cyst) উৎপাদন করে। ইহার
দক্ষন হস্তপদে ব্যথা হয়, জয়েণ্ট সমূহ ক্রীত হয়, জর হয় এবং অনেক সময়
ডায়েরিয়া ও পেরিটনাইটিস্ হয়। ট্রাইকিনাস্ মাংস অধিক
আহারে য়ত্যু পর্যান্ত হইয়া থাকে। ১২২°F তাপেও ট্রাইকিনা বিনষ্ট হয়
না: কিন্তু কুটন্ত জলে ভালরূপ সিদ্ধ করিলে ইহারা মরিয়া যায়।

## (৮) टिश खराम् (tape worm)।

শৃকর এবং গরুর মাংদে হামের ন্যায় এক প্রকার দানা দেখিতে পাওয়া বার। এই রোগের নাম গরু ও শূকরের মীস্ল্স্। ঐ দানাকে টেপ্ ওয়ার্মের দিস্ট্ (cyst) বা হাইডেটিভ্ (hydatid) অথবা দিস্টিমার্কাস্ সেলিউলোগী (cysticercus cellulosæ) বলে। এইরপ নাংস আহারে মন্থয়ের ইন্টেস্টিনে টেপ্ওয়ার্ম্ জন্ম। এই হাইডেটিড্ ১৭০° F তাপেও বিনষ্ট হয় না, কিন্তু বয়লিং ওয়াটারে কিন্তা ঠাণ্ডায় অনেকক্ষণ রাখিলে মরিয়া যায়।

# দ্বিতীয় অধ্যায়।

# ভাইটেল্ ফেটিন্টিক্স্ (vital statistics)

সমগ্র দেশের জন্ম ও মৃত্যুর তালিকাকে ভাইটেল্ ঠেটিস্টিক্স্
বলে। যথা ১৮৯০ দালে কলিকাতার জন্মসংখ্যা ১৩,৪৯২; অর্থাৎ কলিকাতায় ১৩,৪৯২ শিশু জন্মগ্রহণ করিয়াছে। ঐ বৎসরে মৃত্যু সংখ্যা ২০,১১০।
বার্ভ্রেট ও ডেৎরেট —বাৎসরিক বা য়্যানিউয়েল (annual) পপিউলেশন্ (population) বা জনসংখ্যার প্রতি সহস্রে যত জন্ম এবং
মৃত্যু হয়, তাহাকে জন্মহার বা বার্ভ্রেট (birth rate ) এবং
মৃত্যুহার বা ডেৎরেট (death rate) কহে। যথা ১৮৯১ দালে কলিকাতার পপিউলেশন্ ৪,৬৬, ৪৬০; জন্ম সংখ্যা ৮,২৫৬; মৃত্যুদংখ্যা ১৩,০৩০;
পপিউলেশনের প্রতি সহস্রে বা পার্মিলি (per mille) বার্ভ্রেট =

5,266×3000 = 39.6,

धवः ८७९८त्रहें = 20000 × 2000 = २१.२।

সাপ্তাহিক বা উইক্লি (weekly) মৃত্যুসংখ্যা দারা য়্যানিউয়েল্ ডেৎরেট নির্ণয় করিতে হইলে, য়্যানিউয়েল্ পপিউলেশন্কে ৫২.১৭৭ দিয়া ভাগ করিয়ে উইক্লি পপিউলেশন্ নির্দারণ করিতে হইবে; তৎপরে উইক্লি মৃত্যু সংখ্যাকে সহস্র দারা গুণ করিয়া ঐ উইক্লি পপিউলেশন দারা ভাগ করিতে হইবে। দৃষ্টান্তঃ—কোন দেশের পপিউলেশন্ ১,২৩,৪৫০, এবং ২৮ এ জুলাই-অন্ত সপ্তাহে (week ending July 28) ৫১ জন মরিয়াছে; সেই সপ্তাহের য়্যানিউয়েল্ ডেংরেট্ কত ? উইক্লি পপিউলেশন্ = ১,২৩,৪৫০ ৫২.১৭৭ = ২,৩৬৬, এবং য়্যানিউয়েল ডেংরেট্ ভেরেট্ = ৫১ × ১০০০ = ২১৫৫০পার্মিলি।

মাসিক বা মন্ত্লি মৃত্যুসংখ্যা দ্বারা য়্যানিউয়েল্ ডেংরেট নির্দারণ করিতে হইলে, পপিউলেশনকে ৩৬৫.২৪ দ্বারা ভাগ করিয়া দৈনিক পপিউলেশন বাহির করিতে হইবে, তংপর মাসে যত দিন তদ্বারা গুণ করিলে মন্ত্লি পপিউলেশন জানা যায়। মন্ত্লি মৃত্যু সংখ্যা ১০০০ দ্বারা গুণ করিয়া মন্ত্লি পপিউলেশন দ্বারা ভাগ করিলেই সেই মাসের য়্যানিউয়েল ডেৎরেট নির্দারণ করা যায়। দৃষ্ঠান্তঃ—কোন দেশের পপিউলেশন ১,২৩,৪৫০; ১৮৯১ সালে ফেব্রুয়ারী মাসের মৃত্যু সংখ্যা ২১০ হইলে য়্যানিউয়েল ডেৎরেট কত? মন্ত্র্লি পপিউলেশন = ১২৩৪৫০ ১২৮৪১; য়্যানিউয়েল ডেৎরেট = ২০০১০০ ১,৪৬৪ বিলি

মীন্ এজ, য়ৣৢাট্ ডেৎ (mean age at death)—সমুদয় মৃত ব্যক্তির মৃত্যুকালীন বয়স যোগ করিয়া মোট মৃত্যুসংখ্যা দ্বারা ভাগ করিলে মীন্ এজ্য়াট্ ডেৎ পাওয়া যায়।

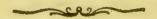
মীন্ ডিউরেশন্ অব্ লাইফ্ (mean duration of life)—

এক পুরুষ বা জেনারেশন্ (generation) গড়ে যত কাল জীবিত থাকে,

তাহাকে মীন্ ডিউরেশন্ অব্ লাইফ্, বলে। যাহারা এক বৎসরে

জন্প্রহণ করে, তাহাদের মৃত্যুকালীন বয়স যোগ করিয়া, জন্ম সংখ্যা দ্বারা
ভাগ করিলে, এই মীন্ ডিউরেশন সংখ্যা পাওয়া যায়।

এক্সেক্শেন, অব্লাইফ্ (expectation of life)—কোন
ব্যক্তির ভবিষ্যৎ আয়ুকে, বা যত কাল জীবিত থাকিবার সম্ভাবনা থাকে
তাহাকে, এক্সেক্সেন্ অব্লাইফ্ বলে। বিলাতের আয়ুতালিকা
পাঠে জানা যায় পঞ্চম ব্যে জীবিত থাকিবার সম্ভাবনা স্কাপেক্ষা অধিক।



# তৃতी स जन्मास।

## (केंग्रे, सिष्मीन्।

পিনেল কোডের চতুর্দ্দশ অধ্যাত্ম বাস্থ্য সম্বন্ধ অনেকগুলি বিধি রহিয়াছে। যে ব্যক্তি জ্ঞানতঃ এমন কোন কার্য্য করে মদারা ইন্ফেক্শাদ্ ডিজিজ্ ব্যাপ্ত হয়, ২৬৯ ধারা অনুসারে তাহার কারাদণ্ড বা অর্থদণ্ড কিম্বা উত্তর প্রকার শাস্তি হইতে পারে। কলিকাতার একজন ধোপা নিজ গৃহে বসত্তের আবির্ভাব সত্ত্বেও অপরের বস্ত্রাদি গ্রহণ ও প্রক্ষালন করিয়াছিল বলিয়া এই ধারা অনুসারে একমাদ কারাদণ্ড ভোগ করিয়াছিল; এবং একটা বালক বসত্তের মামড়ী শরীরে লয় থাকিতেও রাস্তায় বেড়াইতেছিল বলিয়া ১৫ দিন কারাদণ্ড প্রাপ্ত হইয়াছিল। খাদ্য দ্রব্যে ভেজাল দিলে, ২৭২ ধারা অনুসারে কারাদণ্ড বা অর্থদণ্ড কিম্বা উত্তর প্রকার শান্তি হইতে পারে।

কলিকাতা মিউনিসিপালিটীর আইনের ৩০৭ ধারা অনুসারে, বাড়ীতে ২৪ ঘণ্টার অধিক জ্ঞাল রাখিলে, অর্থদণ্ড হয়। ডেনুণ, গোশালা, অশ্বশালা প্রভৃতি রীতিমত পরিষ্কার না রাখিলে শাস্তি হয়। আইন অনুসারে গৃহ, পাইখানা প্রভৃতি নির্মাণ না করিলে মিউনিসিপালিটীর লোক ভাঙ্গিয়া দিতে পারে। খোলার ঘরে স্থব্যবস্থাহীন অবস্থায় কোন ব্যক্তি কলেরা কি বসস্ত রোগে আক্রান্ত হইলে ৩২৪ ধারা অনুসারে তাহাকে হাসপাতালে পাঠান যায়। যে সমুদর জিনিস সংক্রামক-বিষ-দৃষ্বিত, ৩২৭ ধারা অনুসারে তাহা দগ্ধীভূত বা শোধিত করা যায়। সংক্রামক-বিষ-দৃষ্বিত বস্ত্রাদি পুষ্করিণী প্রভৃতি সাধারণের সমাগম স্থলে প্রক্রালিত করিলে ৩২৭ ও ৩৩০ ধারা অনুসারে ৫০ পর্যান্ত জরিমানা দিতে হয়। বসন্ত বা কলেরা রোগীর ব্যবহৃত গাড়ী বা পান্ধী শোধিত না করিয়া,ইহাতে অন্ত লোক বহন করিলে ৩২৯ ধারা অনুসারে শান্তি প্রাপ্ত হয়। সংক্রামক-রোগ-দৃষ্বিত কোন বস্তু ডিস্ ইন্ফেক্ট না করিয়া কোগাও প্রেরণ করিলে ৩০০ ধারা অনুসারে শান্তি প্রাপ্ত হয়। সংক্রামক-রোগ-দৃষ্বিত কোন বস্তু ডিস্ ইন্ফেক্ট

চিকিৎসক তাঁহার রোগীর মৃত্যুসংবাদ জানিয়াও ৭ দিনের মধ্যে হেল্থ্ আফিসে সংবাদ প্রেরণ না করেন, ১৮৭ ও ১৮৮ ধারা অনুসারে তাঁহার ২০১ পর্যান্ত অর্থ দণ্ড হয়। যে চিকিৎসক সংক্রোমক রোগীর চিকিৎসা করিয়া হেল্থ্ আফিসে শীঘ্র সংবাদ প্রেরণ করেন না, ৩২১ ধারা অনুসারে তাঁহার ৫০ টাকা পর্যান্ত দণ্ড হয়।

১৮৮৪ मালে যে বেঙ্গল মিউনিসিপাল য়াঠি প্রচলিত হয়, তাহার ২৪৫ ধারা অনুসারে ভূসামীদিগকে অস্বাস্থ্যকর বস্তির গৃহ, পথ, ভেণ প্রভৃতির উন্নতি সাধন করিতে বাধ্য করা যায়। বাজারের ঘর, ডেণ প্রভৃতি পরিষার ও স্বাস্থ্যকর অবস্থায় না রাখিলে ২৪৯ ধারা অনুসারে শান্তি হয়। ২৫০ ধারা অনুসারে পচা মাছ, তরকারী প্রভৃতি থাদ্য বিনষ্ট করা যায়। ছ্গ্ন স্বত প্রভৃতিতে ভেজাল দিলে ২৫১ ধারা অনুসারে ১০০, পর্যান্ত জরিমানা হইতে পারে। ২৫১বি ও ২৫১দি ধারা অনুসারে কমিশনরগণ কিমা তাঁহা-দের কর্ম্মচারী বাজার পরিদর্শন করিয়া পচা মাছ প্রভৃতি অস্বাস্থ্যকর থান্য মালিকের সম্মতিক্রমে ফেলিয়া দিতে পারেন; মালিক অসমত হইলে মাজিস্-টে টের আদেশে সমুদয় খাদ্য বিনষ্ট হইতে পারে এবং মালিকের ১০০, পর্য্যন্ত অর্থদণ্ড হইতে পারে। মিউনিসিপাল কর্মচারী পরীক্ষার্থ কোন থাদ্য উচিত মূল্যে ক্রয় করিতে চাহিলে যদি কেহ বিক্রয় করিতে অসমত হয়, ২৫১ডি ধারা অনুসারে তাহার ৫০ পর্য্যন্ত দণ্ড হয়। কোন গৃহের ডেন অপরিষার বা স্থান জঙ্গলাকীর্ণ হইলে ১৯৫ ধারা অনুসারে গৃহস্থকে ডেণ ও স্থান পরিষ্ণার করিতে বাধ্য করা যায়। পুষ্করিণী, কূপ প্রভৃতির জ্ব সংক্রামক विष-नृषिত वा अপরিকার হইলে প্রধান মেডিকেল অফিসারের সার্শিটফিকেট नहेगा, ১৯৯এ धाता जनूमारत, हेशांत जन वावशांत खनि कता यात्र। २०० ধারা অনুসারে পুন্ধরিণী,কৃপ প্রভৃতি ভরাট করিতে মালিককে বাধ্য করা যায়।

১৮৮০ দালের বেঙ্গল ড্রেণেজ্ য়্যাক্ট্ অম্পারে ভূস্বামীদিগকে ড্রেণ প্রস্তুত করিতে বাধ্য করা যায়।

টীকা আইন অনুসারে দেশীয় টীকা সর্ব্বথা দণ্ডনীয়, এবং কোন কোন স্থানে ইংরাজী টীকানা দিলে শাস্তি হয়।

# পরিশিফ ক।

# কলিকাতা মিউনিসিপাল আনালিস্ট্ ডাক্তার যোগীন্দ্র নাথ দত্ত বি-এ, এম-বি, ও ডাক্তার শশিভূষণ ঘোষ এম-বি কর্তৃক লিখিত।

## ১। হুশ্ন পরীকা। (Milk Analysis)

সাধারণ পরীক্ষা—নাধারণতঃ ল্যাকটোমিটার দারাই হুগ্গের পরীক্ষা চলে। বাতাসা
দারা জলমিশ্রিত হুগ্গের গুরুত্ব বর্দ্ধিত হুইয়া থাকিলে আখাদ দারাই বুঝিতে পারা যায়।
ল্যাকটোমিটারের দারা জলের পরিমাণ এক প্রকার স্থির করা যায়। বিশেষ ভাবে পরীক্ষা
নিম্নলিখিত প্রণালীতে করিতে হয়। তজ্জন্ম নিম্নলিখিত দ্রবা চাইঃ—

একটা ভাল নিক্তি বা কেনিকেল বাালেন্স ( Chemical balance )

একটা প্লাটিনম পাত্র।

একটা ডেসিকেটর ( dessicator )

একটা ওয়াটার বাত্ (Water bath)

রটিং কাগজ। সলফিউরিক য়াসিড

একটা স্পিরিট ল্যাম্প্। -একটা কাঁচ দণ্ড।

ইথার।

একটী কাঁচের বিকার ( beaker )

किलिश्न मिलिউमन।

একটা বেল জার (bell jar)

মোট কঠিন পদার্থ (Total Solid)—প্রথমতঃ একটা প্লাটিনন পাত্র ও কাঁচ দও ওজন কর, তৎপরে ঐ পাত্রে ১০ গ্রাম (gramme) ছগ্ধ ওজন করিয়া লও এবং পাত্রটী ওয়াটার বাতে (water bath) বসাইয়া দাও অথবা একটা পাত্রে জল ফুটাইয়া ঐ প্রীমের উপর ছগ্ধপাত্র রাথ। মধ্যে মধ্যে কাঁচ দও দারা ছগ্ধ নাড়িতে থাক। ছগ্ধ ক্রমে ঘন হইয়া আদিবে। যতই ঘন হইবে ততই কাঁচদও দারা উহা নাড়িতে হইবে। ক্রমে সমস্ত জল শুদ্ধ হইয়া যাইবে। তথন কাঁচদও দারা অবশিস্ত সলিড বা রেসিডিউ (residue) চুর্ণীকৃত করিতে হইবে। তৎপর পাত্রের বহিস্থ জল মুছিয়া ফেলিয়া ট্রং সল্ কিউরিক য়াাসিড্ পূর্ণ ডেসিকেটারের (dessicator) উপর পাত্রটা বসাইবে, এবং একটা বেল জার (bell jar) দিয়া ঢাকিয়া রাগিবে। সাবধান, সল্ ফিউরিক য়াাসিড্ যেন ছগ্ধপাত্রে না লাগে। অবশেষে পাত্রটা ওজন করিয়া, উহা হইতে পাত্রের ও কাঁচ দণ্ডের ওজন বিয়োগ করিলে, ১০ গ্রাম ছগ্গের মোট কঠিন পদার্থের পরিমাণ জানিতে পারিবে। দুয়াশ্তঃ—

পাত্র ও কাঁচদণ্ডের ওজন ৫৪ গ্রাম।

হুশ্বের ওজন	٥٥ ,,
মেটি ওজন	<b>48</b> "
শুক হইবার পর ওজন	ee ,,
জল	۵ ,، ه

স্তরাং ছঞ্জের মোট কঠিন পদার্থ শতকরা ১০। ( ৭৪ পৃষ্ঠা দেখ )।

য়্যাব (ash) বা ভস্ম—১০ গ্রাম ছগ্ধ ওজন করিয়া লইয়া ম্পিনিট ল্যাম্পের উপর অল্প তাপে বদাইয়া দাও। ক্রমে ক্রমে জল বাপ্পীভূত হইয়া ঘাইবে এবং রেদিডিউ পুড়িয়া দালা হইবে। তৎপরে ঐ রেদিডিউ ওজন করিলে ভস্মের পরিমাণ জানা ঘাইবে। ভাল ছঞ্জে ভস্ম শতকরা.৭ ভাগ।

ফ্যাট (fat) বা ঘৃত—মোট সলিড্ নির্দ্ধারণের পর মোট ক্যাট্ নির্ণয় করা যায়।
ইথার (ether) দ্বারা মোট সলিড্ ক্রমান্বরে ঘুটিতে হইবে এবং প্রত্যেকবার একটা ওজন করা
কাঁচের বিকারের মুখে রটিং পেপার দিয়া ঐ পেপারের উপর ঐ ইথার সলিউশন ঢালিতে হইবে।
শেষ ঘুইবার গরম ইথার দ্বারা বেশ করিয়া ঘুটিয়া লইতে হইবে। বতক্ষণ পর্যান্ত রটিং কাগজে
ফ্যাট দৃষ্ট হইবে ততক্ষণ পর্যান্ত ইহা ইথার দ্বারা ধোত করিতে হইবে। তৎপর প্রাটিনম্ পাত্রটী
অল্ল তাপে শুক্ত করিয়া ওজন করিতে হইবে। ইথারের সঙ্গে সমুদ্র ঘৃত চলিয়া আসিয়াছে।
স্বতরাং প্লাটিনম্ পাত্রে ঘৃতশূন্য সলিড্ রহিয়াছে। এখন প্লাটিনম্ পাত্র ওজন করিলে ঘৃতশ্ব্য স্লিডের পরিমাণ জানা যায়।
স্বতরাং মোট সলিড হইতে ঘৃত শূন্য সলিডের ওজন বাদ
দিলে ঘৃতের পরিমাণ জানা যায়।

চিনি বা স্থগার—ফিলিংস্ সলিউশন (Fehling's solution) দারা যেরূপে প্রপ্রার ক্রার নিরূপণ করা যায়, হুদ্ধের স্থগারও সেই নিয়মে নির্দারণ করিতে হইবে।

## ২। য়ত পরীক্ষা (Ghee Analysis)।

খ্বতের পরীক্ষার জন্য নিম্নলিখিত দ্রব্যের প্রয়োজন :--

এक ही कि भिरक न वा लिस

একটা বিউরেট (burette)

একটা পিপেট (pipette)

একটা ওয়াটার বাত্

একটা স্পিরিট ল্যাম্প

একটা লিবিগ্স্কভেনার (Leibig's condenser)

কাঁচের টি নলের কর্ক (T-tubed cork)

একটা ফ্লান্ক্ (flask)

রবারের টিউব

ি পিঞ্চ কক (pinch cock)

কস্টিক সোড়া সলিউশন (caustic soda solution, 50 grammes soda to 100 cubic centimeter of water).

সলফিউরিক্ য়াসিড সলিউশন (Sulphuric acid solution, 1 in 40)

আলকহল

ডেসি-নশ্মাল সলিউশন অব কন্টিক সোডা (deci-normal solution of caustic soda)

किनल थिलन मलिউ भन

রাইকার্ট উল্নীর প্রথা—একটী ফ্লাক্ষে ৫ গ্রাম ঘৃত ওজন করিয়া লও। তৎপর ২ c.c. (কিউবিক সে টিমিটার) পরিমাণ কন্টিক নোড! সলিউশন ও ১০ c. c. পরিমাণ আলকহল ইহাতে মিশাও। ফ্রান্কটা ওয়াটার বাতে চড়াইয়া ইহার মুখ একটা টি-নলসংযুক্ত কর্ক দারা বন্ধ কর। ঐ টি-নলের ছুই মূথে ছুই থও রবারের টিউব সংলগ্ন কর। একটা নল লিবিগ্স কন্তেসারের সহিত সংলগ্ন কর এবং অপরচী পিঞ্চ কক দারা বন্ধ কর। (১নং চিত্র দেখ)। ম্পিরিট ল্যাম্প জালাইয়া দাও। জল ফুটলে দেখিতে পাওয়া যাইবে যে, ফ্রাকস্থিত আলকহল কণ্ডেন্সারের মধ্যে পুনঃ পুনঃ যাইতেছে এবং ফ্রাস্ক মধ্যে নিপতিত হইতেছে। অদ্ধি ঘণ্টা কাল कुष भवाष्ट्र घृठ এই तथ প্রক্রিয়া প্রাপ্ত হইলে টি-নলের পিঞ্ কর্কটী গুলিরা দাও এবং কৃষ্ণিটী ঘুরাইয়া নলের মুখ নিম্ন দিকে আন। ২০ মিনিটের মধ্যে সমস্ত আলকহল ঐ নল দিয়া নির্গত হ**ই**বে, এবং ফাস্কস্থিত ঘূত সাবানে পরিণত ও শুক্ষ হইয়া যাইবে। ১০০ c. c. ফুটস্ত জন ঐ জুাস্কে ঢাল, কর্কটী খোল এবং ফুাস্ক্ বারস্বার ঘুরাইয়া দাবান জলে দ্রবীভূত কর। তৎপরে জল শীতল হইলে ৪০ c. c. সলফিউরিক য়াাসিড সলিউশন উহাতে ঢাল। য়াাসিড দিবা মাত্র ছতের য়াসিড গুলি বিশ্লেষিত হইয়া ছুগ্ধের নাায় খেতবণ ধারণ করিবে। চুরটের নল ভগ্ন করিয়া হুইটা ক্ষুদ্র খণ্ড ফাস্কের মধ্যে ফেলিয়া দাও এবং একটা কাঁচের বক্র নল দ্বারা ঐ ফাস্ক কণ্ডেন্সারের সঙ্গে সংলগ্ন করিয়া স্পিরিট ল্যাম্পের উপর বসাইয়া দাও। স্বতের বিউটারিক য়ানিড্ (butyric acid) বাপোর দঙ্গে চোয়াইয়া কণ্ডেন্সারে যাইবে। তথা হইতে একটী ১১০ c. c. পরিমিত ফুাঙ্গে উহা সংগ্রহ কর। ঐ সংগৃহীত জলে কি পরিমাণ বিউটারিক য়াানিড্ আছে তাহা ডেনি-নর্মাল দলিউশন অব কদ্টিক সোডা (deci-normal solution of caustic soda) দারা জানা যায়। প্রথমতঃ ২ c. c. ফিনল্ থেলিন ঢালিয়া তৎপর বিউরেটে পূরিত ডেনি-নর্মাল সলিউশন অব কসটিক সোডা অল্লে অল্লে ঢালিতে হইবে। স্থলর বেগুণী লাল রং উৎপন্ন হইয়া নিলাইয়া যাইবে। ঐ রং স্থায়ী হওয়া মাত্র ডেসি-নর্মাল সলিউশন ঢালা স্থগিত করিবে এবং কত পরিমাণ ঢালা হইল বিউরেটের দাগ পাঠ করিয়া নির্দ্ধারণ করিবে। বিশুদ্ধ গাওয়া ঘৃতের ৫ গ্রামে ২৪ হইতে ২৭ c. c. দোড়া দলিউশন এবং ভৈঁৰা ঘৃতে ৩৯ c.c. পৰ্য্যন্ত লাগিয়া থাকে। ১ c. c. সোড়া সলিউশন = . ০০৮৮ গ্ৰাম বিউটারিক য়াদিড্, স্তরাং ভাল গাওয়া ঘৃতে .২১ গ্রান হইতে .২৩ গ্রান এবং ভাল ভৈঁষা ঘৃতে .৩৪ গ্রাম বিউটারিক য়াাসিড আছে। যে সকল পদার্থ ঘৃতের সহিত ভেজাল দেওয়া হয়, তাহাদের কোনচীতে এই পরিমাণ বিউটারিক য্যাসিড থাকে না।

মেণিটিং পরেণ্ট দারা পরীক্ষা—যে তাপে কোন পদার্থ বিগলিত হয় তাহাকে ইহার মেণিটিং প্রেণ্ট (melting point) বলে। বিশুদ্ধ ও ভেজাল ঘূতের মেল্টিং প্রেণ্ট বিভিন্ন। শীতকালে ঘূত, নারিকেল তৈল, মহুয়া তৈল, এবং তজাতীয় অনেক দ্রব্য জমিয়া যায়, এবং প্রীক্ষকালে গলিয়া তরল হয়। ভিন্ন ভিন্ন দ্রব্য ভিন্ন ভাপে গলিয়া থাকে। অতএব কোন দ্রব্য কত উত্তাপে গলিয়া যায় তাহা জানা থাকিলে পরীক্ষণীয় দ্রব্য বিশুদ্ধ কি ভেজাল-মিশ্রিত

5.6-1

তাহা বুঝা যাইতে পারে। একটা ৩।৪ ইঞ্চি প্রমাণ ক্যাপিলারী টিউবের এক মুথ বিগলিত স্ত্ত ডুবাইয়া ধর; কৈশিক আকর্ধণে মৃত উক্ত নলের কিয়দংশ পর্যান্ত উচিবে। তৎপর নলটা বরক্তের মধ্যে রাথিয়া দাও। একটা বড় ও একটা ছোট কাঁচের বিকার জলে পূর্ণ কর। এক এও টিনের পাত মধ্যে দিয়া ছোট বিকারটা বড় বিকারের মধ্যে রাথ। একটা থাম মিটারের বল্বের (bulb) সঙ্গে ঐ ঘৃতের টিউব্টা একটা ছোট রবারের রিং দারা বাঁধিয়া থাম মিটারটা ছোট বিকারত্ব জলের মধ্যে ঝুলাইয়া রাথ। বড় বিকারের নিমে ম্পিরিট ল্যাম্প জালাইয়া টিউবিহত মৃত পর্যাবেক্ষণ কর। যে উত্তাপে মৃত গলিয়া যাইবে তাহা লক্ষ্য কর। মৃত গলিয়ামাত্র টিউব্সত মধ্যে উথিত হইবে। আমাদের দেশে অনেক স্থলে গ্রীম্মকালে বরফ দিয়া মৃত জমাইতে হয়, নতুবা পরীক্ষা করিতে পারা যায় না। বরক্ষের অভাবে জল মিশ্রিত সোরাও নিশাদল ব্যবহার করা যাইতে পারে। বিশুদ্ধ মৃত ৩২°.৫ বা ৩৬° C অর্থাৎ ৯৫°.৯/৮ উত্তাপে গলিয়া যায়; চর্ম্বি মিশ্রিত হইলে ইহা বিগলিত হইতে ৩৮—৪২° C বা ৯৬°.৮ মি পর্যন্ত উত্তাপের প্রয়োজন হয়।

## ৩। শরিষার তৈল পরীক্ষা।

তৈলকে ফিল্টার কর। তৎপর একটা টেন্ট্ টিউবে অল পরিমাণ তৈল লইয়া তাহাতে সমভাগ ট্রং দল্ফিউরিক য়াদিড্ ঢালিয়া দাও, এবং টেন্ট্ টিউবটী অল অল নাড়িয়া য়াদিড ও তৈল মিশাও। বিশুদ্ধ তৈল হইলে তৎক্ষণাৎ দব্দ্ধ বণ হইয়া যাইবে এবং কিয়ৎক্ষণ পরে লাল জরদা বণ হইবে।

# পরিশিষ্ট খ।

## খাদ্য-তালিকা।

নির্দারণের নিয়ম—নির্দিষ্ট থাদ্যে উপযুক্ত পরিমাণ প্রোচীড্, ফ্যাট্,কার্বোহাইড্রেট্ ও সণ্ট্ আছে কিনা, তাহা জানিতে হইলে ৭২ পৃষ্ঠায় যে তালিকা আছে তাহার প্রত্যেক ঘরে যে সংখ্যা আছে, তাহাকে খাদ্যের পরিমাণ দারা গুণ করিয়া ১০০ দারা ভাগ করিতে হইবে। নাই-ট্রোজেন ও কার্বনের পরিমাণ জানিতে হইলে ৭৩ পৃষ্ঠার তালিকার প্রত্যেক ঘরে যে সংখ্যা আছে, তাহাকে খাদ্যের আউন্স পরিমাণ দারা গুণ করিতে হইবে। দৃষ্টান্তঃ—

तम्भीय रिमग्र-त्वाभीत इस-अथा :--

75 K	8 X X 8 C	₩ × · 8	2. X X X X X X X X X X X X X X X X X X X	* C = C = C = C = C = C = C = C = C = C	<b>ə</b> °
कारवी-श्रेष्ट्रे	8 9	80 × 8.4 000	56.6 = 5.36 × 9.	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	୯୫.୭୧
र्गाक	A. X 80	A8.0 = 0.00 × 0.	0 2.	•	<i>چې.</i> د
्खांगैर.	8 X 8 C	8 × 8 × 8 × 0 × 0 × 0 × 0 × 0 × 0 × 0 ×	0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	0 0 0	\$°¢
পথ্য	हानऽ8 व्याउँम	(2) ····································	िमिः ३	न्यवन क्र	टम्ट

পথ্য	নাইট্বোজেন <u>গ্</u> রেণ	কাৰ <b>িন</b> গ্ৰেণ
চাল · · · ১৪ আউন্স হ্ৰাফ · · ১৪ চিনি · · ২ , লবণ ই ,	58×9.0=05 (到す 80×そか=55そ "	>8 × >90 = >800 >8 × >90 = >800
মোট	১৬৩	800%

## वऋरमभीय পরিপ্রাশশীল কয়েদীর দৈনিক আহার ঃ—

<b>খ</b> াদা আউন্স	<b>প্রো</b> টীড আউস	ফ্যা <b>ট</b> ্ আউ <b>স</b>	কাৰ্বোহাইড্ৰেট খাউল	সণ্ট আউস	নাইট্রোজেন গ্রেণ	কাৰ'ন গ্ৰেণ
চাল	১ আউন্স	0.38	<b>\$%.</b> \\$	0.50	90.0	0000
<b>मान</b> • 8 ,,	۰.60 ,,	0.06	२.५२	٥.٥٥	৬১.৬০	৬২৪
*মাছ২ <sup>৯</sup> "	0.85	0.06	• • •	०,०२	25.5	১০৯.৭১
<b>*</b> তৈল ⋯ৢ "		0.99			• • •	२३४.१৫
नवगराई .,	• • •		A * *	0,00		
भगांवां… ₹ ,,	****		* * *	* * *	***	**3
তরকারী৫🛊 "		***	•••	•••	b.69	٦>8.2٤
মোট ৩৩ 🗟	২.২৯	.৯৬	১৮.৭৬	.95	১৬৮.৯৭	8৫৬৬.98

উপরোক্ত তালিকা অনুসারে মোট খাদ্যের পরিমাণ একজন ১।/৫ সের ভারি ব্যক্তির পক্ষে যথেষ্ট বটে, কিন্তু নাইট্রোজেনের পরিমাণ অপেক্ষাকৃত অল্ল। উক্ত দেহভার যুক্ত ব্যক্তির দৈনিক ব্যবস্থা—প্রোটীড্ ৩.৪১ আউন্স্লাট্ ২.০৯ আউন্স্কার্বেরিইন্ট্রেট্, ১০.৪৫ আউন্স্লাট্ ৭.০৯ আউন্স্লাইট্রোজেন ২২০ থেগ এবং কার্বন ৩০০০ গ্রেগ।

<sup>\*</sup> পাক্দের মতে বাটা জাতীয় মাছের এক আউলে ১২.৬ গ্রেণ নাইট্রোজেন ও ৪৮ গ্রেণ কার্বন আছে এবং তৈল বা ফ্যাটের শতকরা ৭৫ ভাগ কার্বন। এই হিসাবে এক আউল বা ৪৩৭.৫ গ্রেণ তৈলে ৩২৮.৬২ গ্রেণ কার্বন।

একজন মধ্যবিধ পরিশ্রমশীল বাঙ্গালী ভদ্রলোকের জন্ত নিম্নালিথিত ব্যবস্থা করা যাইতে পারেঃ—

थाना	(खांकीरु	र्गाक	कार्याश्वरिष्ट है	A SE	नार्टरहे रिजन	क्रांस्
ब्रास्ट्रम	ब्राटिय	बाउम	ष्ट्रभ	बांस्य	લ્કાન	গ্রেখ
ग्रें	, p	<i>% c</i> .	50.05	ÿ	০ ক ৬	०.०५५४
मानग्र	05.5	6	53.4	γ̈́,	99.0	0.046
<u>म</u>	o√ o⊤	<i>?</i> .		8000	න ං ව	33%·o
ওরকারী…8	,	•	e e e	9.	° 3	<u>,</u>
रेडन, घटग्र	•	0		• • •		
্	0 0	0 0 0		0 &.		
改 答 3	వి	<b>ల</b>	2) 6.0	<i>c</i> .	% % %	8 4° ° ° °
00 6- 0 4	26.9	54.6	56.98	3°.5	₹.88% \$	°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°°

# পরিশিফ গ।

# হাউদ্-ড্রেন ও দূয়ার।

ইন্ক্রিনেশন্ (inclination) বা ঢালুতা— হাউদ ড্রেন বা গৃহের ড্রেন অন্থূন পাকাশ ফুটে এক ফুট (I in 50) ঢালু হওয়া উচিত। ভূনি হইতে এক ফুট উচ্চ লম্ব ( perpendicular ) টানিয়া, লম্বের উপর হইতে ভূমির ৫০ ফুট পর্যান্ত একটা কর্ব ( hypotenuse) টানিলে যদ্রগ ঢালু হয়, গৃহের ড্রেন তদ্রপ ঢালু হওয়া উচিত,বধাঃ—

	হা	<sup>डे</sup> न्	ভূেণ	
३.क्षे.				
	,	৫০ ফুট		

সদর রাস্তার স্থার অন্ততঃ ২৪৪ ফুটে এক ফুট ( 1 in 224 ) চালু হওয়া উচিত। ভিলসিটি ( velocity ) বা বেগ—স্থেজের বেগ মিনিটে অন্ততঃ ৩ ফুট না হইলে স্থার পরিষ্ঠার থাকে না।

ট্রাপ (trap) ও ভেণ্টিলেটার (ventilator)—হয়ার গ্যান রাস্তা হইতে গৃহের ড্রেন দিয়া গৃহে প্রবেশ করিয়া কিরূপে ডিফ্থিরিয়া, টন্দিলাইটিন, টাইক্য়েড ফিভার প্রভৃতি রোগ উৎপাদন করে, তাহা ইতিপ্রের বলা হইয়াছে। এই সমুদ্র দ্রুথটিনা নিবারণের জন্ত সাধারণতঃ দুইটা উপায় অবলম্বিত হইয়া থাকে; (১) হয়ার ও হাউন্ ড্রেনের মধাস্থলে জল-পূর্ণ ইংরাজী U অক্ষরাকার নল বা সাইফন্ ট্রাপ (siphon trap) নির্মিত হয়। গৃহ-নিঃহত জলের কিয়দংশ ঐ ট্রাপে সর্বরণাই থাকে এবং হয়ার গ্যানের গৃহের দিগে গতি কন্ধ করে (২ নং চিত্র দেখ)। (২) হয়ারের অভ্যন্তরে বায়ু সঞ্চালনের উপায় অবলম্বন করিয়া হয়ার গ্যাসন্থিত বিষ ডাইলুট করা হয় এবং গৃহ হইতে দূরে হয়ার হইতে গ্যাস নির্গননের ব্যবহা করিয়া গ্যানের পরিমাণ হ্রাস করা হয়। সাধারণতঃ এই উদ্দেশ্যে রাস্তার মধাস্থলে মান্-হোল্ (man-hole) নামক ঝাঝির কিয়া ক্ষুদ্র রাস্তায় উচ্চ ভেণ্টিলেটিং সাক্ ট্ (ventilating shaft) বা নল প্রস্তুত করা হয়।

# পরিশিষ্ট ঘ।

## হাদপাতাল নির্মাণ।

হাসপাতাল বলিতে ওয়ার্ড, আউট্-ডোর, আফিন্, গোস্ট্ মটে মৃ রুম্ ইত্যাদি ব্ঝায়। এখনে কেবল ওয়ার্ড নির্মাণ বিবেচিত হইল। সাধারণতঃ চতুকোণাকারে ৩০—১০০ ফুট দীর্থ ও ২০—৩০ ফুট প্রস্থ ওয়াত্, নির্মাত হইয়া থাকে। দ্বিতলের উচ্চতলেই ওয়াড্ হওয়া কৈটিত। প্রত্যেক রোগীর জন্ম ১০০—১২০ বর্গ ফুট জ্বোরস্পেন্ ও ১৫০০—২০০০ কিউবিক ফুট কিউবিক স্পেন্ রাখিতে হইবে। সাজি কেল ওয়াডে অপেক্ষাকৃত অধিক হান ও অল্প শ্যার ব্যবস্থা করা কর্ত্তব্য । একটা ওয়াডে ১৬—৩২টা শ্যা রাখা যাইতে পারে। ওয়াডের ছুই পার্থে দেওয়ালের নিকট সমান্তরাল ভাবে শ্যা সজ্জিত করিতে হইবে। ছুইটা শ্যার মধান্তলে অন্ততঃ ৫ ফুট স্থান ও একটা জানালা রাখিতে হইবে। ২০ জন রোগীর ওয়াডে ২২টা জানালার প্রয়োজন। প্রতি ৭০ কিউবিক ফুট স্থানে একটা এক বর্গ ফুট পরিমিত জানালা রাখিলে চলে।



# পরিশিষ্ট ও।

## QUESTIONS ON HYGIENE

CALCUTTA MEDICAL COLLEGE.

SECOND L. M. S. & M. B. EXAMINATION.

1886

#### Ex. Dr. BOMFORD.

- 1. What is the object of ventilation of sewers? Describe how it can best be arranged?
- 2. How would you estimate roughly the purity of a drinking water? Explain clearly how you would draw the line between usable and unusable waters?
- 3. What is the value of salts and oils in food, and how far are they replaceable by carbo-hydrates?
- 4. What is the use of a disinfectant? Mention three in common use, explaining how they should be used and any particular purpose they serve.

#### 1887

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

(Ex.-Dr. Simpson.)

1. If you are attending a case of small pox, what precautions would you recommend to prevent the spread of infection? How long does a small-pox patient remain infectious?

- 2. Name any three disinfectants; explain what you would use them for, in what quantity and how would you use them. Explain also their action. What is the difference between a deodorant and a disinfectant.
- 3. In a crowded and unventilated room, what impurities would you expect to find in the air? What importance would you attach to each? Describe how the air may be examined.
  - 4. Describe some of the usual methods adopted for purifying water.
- 5. What are the chief dangers incurred by drinking water contaminated with sewages? Discuss some of the theories on this subject.
- 6. In the underground drainage system of a house, what is meant by a trap? Give a rough sketch of a trap and explain its action.
- 7. How is the death-rate of a town determined? Given a town with 20,000 inhabitants and 30 deaths a month, work out what the death-rate is per annum.
- 8. What influence does exercise exert over the muscles, circulation and nervous system?

#### M. D.-(Ex.-Dr. Simpson.)

- 1. What is the composition of cow's milk? What changes does the milk undergo when exposed to the air? What are the poisonous effects of "blue milk," and to what is the blue colour and deleterious properties due? Describe the common methods.
- 2. A case of cholera has been imported into a house,—to what sanitary arrangements in and around the house should special attention be directed, and what sanitary precautions should be taken to prevent an outbreak?
- 3. Give the names of some of the common disinfectants, describing their properties and methods of using them, which might be employed for the disinfection of,
  - (a) Cess pools and privy vaults.
  - (b) Cellars and stables
  - (c) Rooms.
  - (d) Utensils.
  - (e) Bed, bedding curtains and clothes.
- 4. What are the sanitary principles which should be our guide in the construction of a Hospital, as regards site, aspect, construction of buildings, relation of buildings to one another, width of the ward, ventilation of the wards, floor space, latrines, drainage, provisions for nursing and administration.

5. What is meant by the "limit of respiration impurity"? How would you examine the quality of the air?

#### M. B. (Ex.-Dr. Simpson.)

- 1. What is the composition of cow's milk? What changes does the milk undergo when expose I to the air? What are the poisonous effects of "blue milk' and to what is the blue colour and deleterious properties due? Describe the common method of judging of the quality of milk without a chemical analysis.
- 2. A case of cholera has been imported into a house; to what sanitary arrangements in and around the house should special attention be directed, and what sanitary precautions should be taken to prevent an outbreak?
- 3. Give the names of some of the common disinfectants, describing their properties and the methods of using them which might be employed for the disinfection of
  - (a) Cess pools and privy vaults.
  - (b) Cellars and stables.
  - (c) Rooms.
  - (d) Utensils.
  - (e) Bed, bedding curtains and clothes.
- 4. Explain in detail why it is necessary to change the air of an inhabited room.
- 5. Give an ordinary classification of soils. Which are considered to be most healthy? What diseases are attributed to a damp soil?
- 6. Describe an Artesian well. In what way does it differ from other wells?

#### т888.

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

#### (Ex.—Dr. Simpson.)

- 1. What circumstances favour the spread of Enteric Fever?
- 2. How would you stamp out a local outbreak of small-pox?
- 3. In vaccinating a child, what things are to be specially alluded to as regards—
  - (1) State of the child?
  - (2) Selection of the lymph?
  - (3) Insertion of the lymph?

What are the characteristics of a true vaccine vesicle?

- 4. What are the sources of water supply? On what do their purity and wholesomeness depend?
- 5. Describe some of the methods available for the purification of water, and explain their action.
- 6. Given a case of Diphtheria to attend, what precautions should be taken to check the spread of the disease? What disinfectants would you recommend, and what directions would you give as regards the quantity and manner of using the disinfectants recommended?

#### M. D.-( Ex.-Dr. Mahendralal Sarkar.)

- 1. Hygiene has been defined to be "the art of preserving health." Criticize this definition. Give a definition of your own corresponding to its modern development. State fully the scope and objects of Public Hygiene.
- 2. What are the diseases peculiar to the extreme periods of human life? To what extent are they preventable, and by what means?
- 3. Discuss the merits of the chief methods of disposal of sewage. Criticize the drainage system of Calcutta.
- 4. Enumerate the diseases which have been traced or ascribed to impurities under each. State the sources, general and local, which are calculated to contaminate the water supply of Calcutta.
- 5. Give statistical evidence of the evil effects of over-crowding both on man and the inferior animals.
- 6. Discuss the merits, sanitary and other, of the various methods of disposal of the dead.
- 7. The Germans are the most myopic nation in the world. Discuss in this connection the chief causes of myopia. What would be the result if precautions were not taken for the removal of these causes?

Give short practical rules for the eyes, especially in children.

#### M. B.—(Ex.—Dr. Simpson.)

- 1. What are the conditions of soil which usually generate malaria? Give examples of places where these conditions are likely to be present, and mention the sanitary precautions and remedies that should be adopted.
  - 2. Describe the different methods of ventilation.
- 3. Describe the various means which may be adopted for the purification of water.
  - 4. What is Trichinosis? How may it be avoided?

- 5. Which are the principal Epizootic diseases that are communicable to man? In what way are they communicated?
  - 6. In Vital Statistics what is understood by-
  - (a) The mean age at death?
  - (b) The expectation life?
  - (c) The mean duration of life?

#### 1889

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

#### (Ex.—Dr. Simpson.)

- 1. What would you recommend as a proper mode of treating the discharges of a patient suffering from Dysentry, Cholera or Typhoid fever?
- 2. How long does a small-pox patient remain infective? What precautions are necessary to prevent the spread of the disease from an infected house?
  - 3. Describe the different methods of purifying water,-
  - (a) Without filtration.
  - (b) With filtration.
- 4. Describe how the soil-pipe of a water-closet may be ventilated, and explain the arrangement for the disconnection of a house-drain from the sewer.

#### SECOND M. B. (Ex.—Dr. SIMPSON.)

1. State the differences between ground water and moisture of the soil. What forms of disease are favoured by an excess of moisture in the soil?

What impurities would ordinarily be found in the air of an inhabited room? How can the impurities be detected?

- 3. What are effects on Health likely to be induced by the use of drinking water which is impure.
  - (a) by reason of an excess of mineral substances?
  - (b) by the presence of vegetable matter?
  - (e) by the presence of animal organic matter?

4. Give the names of half a dozen substances used for deodorization of sewage, explaining their chemical value and their relative value as deodorants.

#### 1890

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

(Ex.-Dr. Simpson.)

[ Each question has the same value, only four to be answered. ]

- 1. Give a list of the most important Entozoa which affect man in India; describe the means by which they enter the body and the method to be adopted for their prevention.
- 2. Give the period of incubation and the duration of infection in the following diseases:—Small-pox, Measles, Diphtheria, Typhoid fever and Cholera.
- 3. Describe the impurities likely to be forced in a crowded room, the effect of these impurities on health, and the means that should be adopted to secure purity of air.
- 4. In an outbreak of Cholera in a house what measures should be taken to prevent the further spread of the disease?
- 5. Describe the different methods which may be employed for the purification of water.

#### SECOND M. B.—(Ex.—Dr. SIMPSON.)

- 1. What are the dangers to health of defective drainage of a house? How should the drainage of a house be arranged and constructed to keep it in a sanitary condition?
- 2. How is Small-pox spread; and what are the precautions to be taken to prevent its spreading?
- 3. Describe the different methods of disposal of house refuse and of sewage.
- 4. What are the diseases likely to be caused by the drinking of impure water?

What are the usual impurities? What steps should be taken in each case to prevent further pollution? And describe the methods of purification which could be adopted before allowing the water to be used.

#### M. D.-(Ex,-DR. GIBBONS)

- 1. Describe any two methods for the disposal of sewage; select those methods which you consider applicable to a city in the tropics.
- 2. Give a short account of a construction of an Isolation Hospital for twenty small-pox patients, ten beds for men and ten for women. Describe the system of ventilation, the quantity of space you would allow for each patient and the means you would adopt for the renewal of air.
  - 3. Describe any two arrangements for disconnecting a house-drain.
- 4. What is meant by "constant" and by "intermittent" water supply? What are the advantages and disadvantages of each?

#### 1891

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

#### (Ex.—Dr. SIMPSON.)

- 1. What are the chief sources of drinking water? Describe briefly the methods adopted for testing the purity of drinking water.
- 2. In an outbreak of Diphtheria, what precautions should be taken to check the extension of the disease? Give reasons for adopting the several precautions which you mention.
- 3. What are the effects on the system likely to result from eating decomposed fish? What points should be attended to in examining fish to judge of its freshness and wholesomeness.
- 4. How is the birth-rate and death-rate of a town determined? Work out an example of each.
- 5. Describe some of the methods in use for the disposal of excreta and other refuses.

#### SECOND M. B. (Ex.-DR. SIMPSON.)

- 1. What are Ptomaines and Leucomaines? How are they formed and what are their general properties?
- 2. Enumerate and describe the more important animal parasites which affect the human body, and state the manner by which they gain entrance into the body.
- 3. Describe the effect of regular exercise on the body, also the effect of too severe and too prolonged exercise.

- 4. Describe in detail the precautions which should be taken in an outbreak of Cholera, and give the reasons for such precautions.
- 5. Describe the impurities likely to be present in the air of an inhabited room and the methods adopted for their detection.

#### M. D. (Ex.—Dr. SIMPSON.)

- I. Enumerate the diseases of animals likely to affect man: explain the manner of communication and give the most; recent views and experiments on the subject.
- 2. What principles should be kept in view in the construction of a hospital for infectious diseases? Give a rough sketch of the kind of hospital you would recommend with a description of the details.
- 3. Mention the adulterations likely to be added to give or butter and describe the usual methods employed for the detection of such adulteration.
- 4. What substances have been used largely for deodorisation of sewage? Explain the action of each and its value.

#### 1892

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

#### (Ex.-Dr. Simpson.)

- 1. Name four of the more common parasitic diseases in man. Describe the parasites to which the diseases are due and the measures of prevention that should be adopted.
- 2. To what processes of disinfection would you subject clothing infected with:—(1) Cholera, (2) Small-pox, (3) Diphtheria?
- 3. Define what is meant by death-rate. If in one town with 93,000 inhabitants, 2,130 persons died in the year and in another town with 207,000 inhabitants 4050 persons died: which has the higher death-rate? Give the figures showing the processes by which the conclusion is arrived at.
- 4. What are the dangers to be apprehended from the escape of sewer gas into a dwelling house? What are the precautions to be taken in the construction of house-drains to prevent the entrance of sewer gas.
- 5. Describe the impurities to be generally found in the air of an inhabited room and the methods by which these impurities may be detected.

#### SECOND M. B. (Ex.-Dr. SIMPSON.)

- 1. What are the characteristics of pure and wholesome water? What substances ought to be absent in drinking water and what diseases are attributed to impure water?
- 2. How would you judge as to the sufficiency of the ventilation of a room? Describe in detail what ought to be done to test this.
- 3. Give the experimental and clinical evidence bearing on the contageous nature of tuberculosis, and describe the preventive measures which should be adopted to check its spread.
- 4. Describe the chief methods which may be employed in the disposal of sewage.

#### 1893

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

#### (Ex.-Dr. Green.)

- 1. Describe shortly the different methods for removing excreta by the Conservancy System (i. c., other than by drains and sewers), and remark upon them.
- 2. A case of Small-pox has occurred in a house. What measures would you adopt to prevent the spread of the disease?
- 3. Draw up a form of report for entering the details of an analysis of water. How do you estimate the permanent hardness of water?
- 4. What changes take place in the air by respiration? How much CO<sub>2</sub> does an adult male give off per hour during repose? What minimum cubic air space would you allow in hospitals and in dwellings?

#### SECOND M. B. (Ex.—Dr. GREEN.)

1. What does the oxidisable matter in water consist of ?

How would you estimate the amount of Nitrous acid present, and what inferences would you draw from its presence?

- 2. A sample of tea is sent to you for report. Describe your method of examination.
- 3. You are requested to report on the ventilation of a building. State shortly, the steps for your investigation and your reasons for them.

4. Explain what is meant by Hydraulic Mean Depth. What velocity of flow will keep a sewer clean? Describe some form of Flush-tank.

#### 1894

#### SECOND L. M. S. EXAMINATION.

#### (Ex.-Dr. Simpson.)

- 1. State the difference between the properties of disinfectants and antiseptics. Name six disinfectants and describe the manner in which they may be used, giving strength and quantity.
- 2. What Tænia have been founed in man? Trace out their life and history.
- 3. What is the incubation period of Small-pox, the period of its infection and the manner in which the disease spreads?

State any fact that you may know regarding the influence of vaccination in modifying or preventing Small-pox.

4. Describe the different methods employed for the disposal of sewage.

#### M. B. (Ex.—Dr. Simpson.)

- 1. What are the most common methods employed for the purification of water?
- 2. What are principal intestinal parasites found in man in warm climates? Give a brief account of their life history and also of the preventive measures to be taken against them.
- 3. Mention the chief condition productive of malarious fever and the measures likely to lessen the prevalence of such fever.
- 4. Describe some effluvium nuisance connected with trade or business and the manner in which they can be mitigated or removed.

#### CALCUTTA MEDICAL SCHOOL.

#### SECOND LICENSE EXAMINATION.

1889-90.

(Ex.-Dr. P. D. Bose, M.B.)

1. What is a Disinfectant? Mention those that are in common use.

#### 1890-91

(Ex.—Dr. M. L. Day, M.B.C.M.)

1. An epidemic of cholera breaks out in a village where you practise; what precautions and preventive measures would you adopt?

#### 1892-93

(Ex.—Dr. R. Sen, M.B.)

- I. What are the influences on human health of,
- (a) Sun Light?
- (b) Air?
- (c) Water?
- (d) Soil?

and the methods of purifying water?

- II. Describe the principal preventive measures to be undertaken against outbreaks of communicable diseases in general and specially of Cholera and Small-pox.
- III. What are the principal points to be attended to in the Construction of Dwellings?
- IV. What are the relative merits of surface and underground channels for the removed of filth, and what methods of disposal of filth would you suggest (a) for a village (b) for a town in a tropical climate?

#### 1893-94

#### (Ex.-Dr. NIL RATAN SARKAR, M.A., M.D., F.C.U.)

- I. What are the ordinary impurities in tank water in our villages? What measure would you take when allowing it to be used for drinking purpose?
  - II. Name some diseases that are caused by bad ventilation.

#### 1894-95

#### (Ex.-Dr. M. N. Banerjee, M.R.C.S.)

- I. What prophylactic measures would you take to prevent the spread of infection while attending a Cholera patient; and how would you disinfect the room of a patient suffering from Small-pox?
- II. What is meant by ventilation? How does the air of a room become impure by the association of too many men?
- III. What diseases are generally produced by drinking impure water? Mention the ordinary means by which water can be purified.

